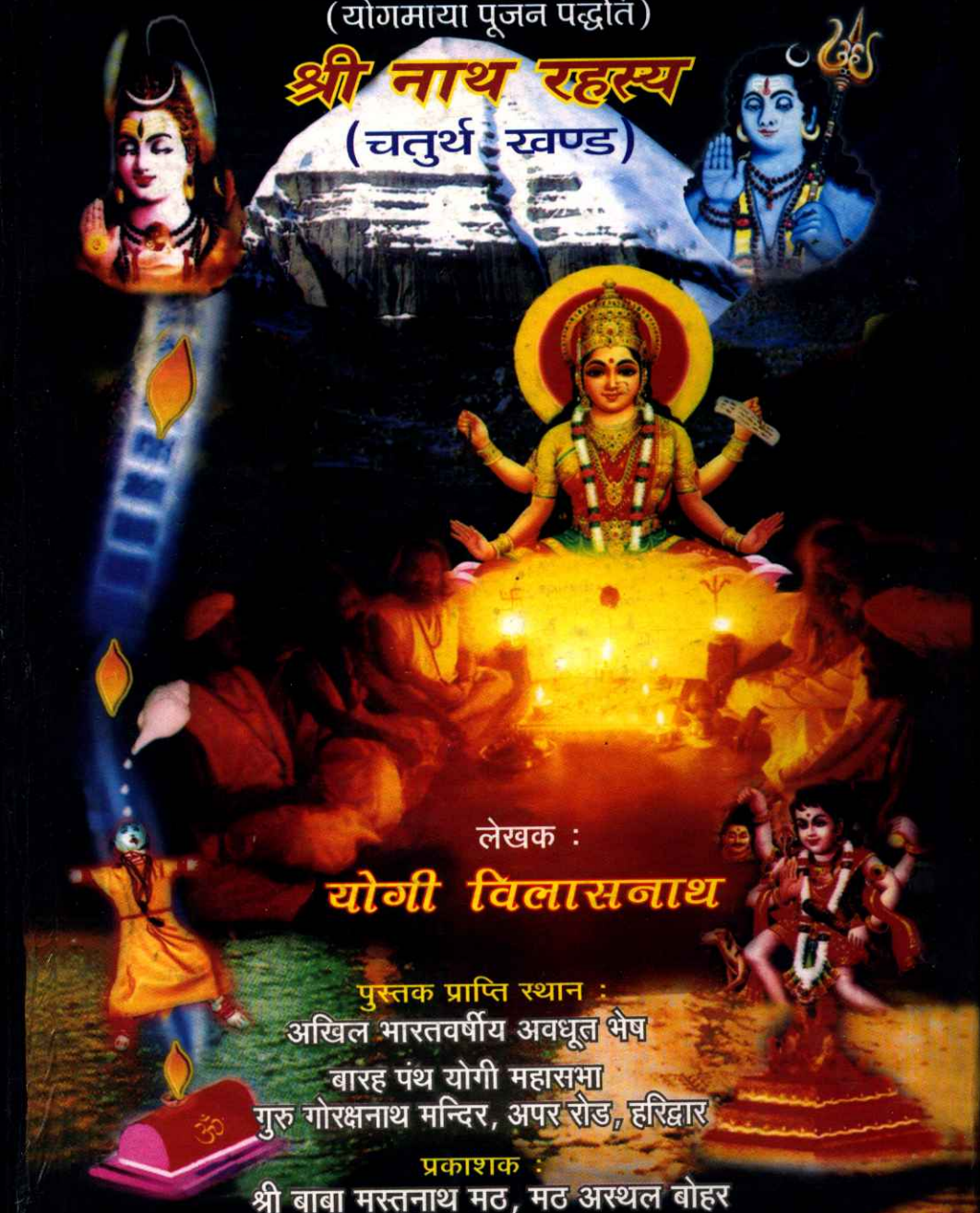
श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल

(योगमाया पूजन पद्धति)

श्री नाथ रहस्य

(चतुर्थ खण्ड)



लेखक :

योगी विलासनाथ

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष

बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार

प्रकाशक :

श्री बाबा मस्तनाथ मठ, मठ अस्थल बोहर

जिला रोहतक (हरियाणा)

श्री नाथ रहस्य

(चतुर्थ खण्ड)



(योगमाया पूजन पद्धति)

विशेष – बिना गुरु मार्ग दर्शन के कोई भी योगेश्वर या भक्त जन पुस्तक में वर्णित इन मन्त्र क्रियाओं को करने की दृढ़ता न करें।

श्री योगी आनन्दनाथ जी
(महामंत्री)
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

लेखक
योगी विलासनाथ

प्राप्ति स्थान
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
फोन : 01334 – 226583

प्रकाशक
श्री बाबा मस्तनाथ मठ, मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा

द्वितीय हिन्दी संस्करण
कार्तिक कृष्ण चौदस विक्रम संवत २०६६
तदनुसार – १७ अक्टूबर सन् २००९

मुद्रण संख्या – २००० प्रतियाँ

लेखक : योगी विलास नाथ
© सर्वाधिकार सुरक्षित
रजि० नं० एल–26618/2006

मुद्रक :– शिव शक्ति प्रिन्टर्स
पालीवाल धर्मशाला, अपर रोड, हरिद्वार
फोन : 01334–228796

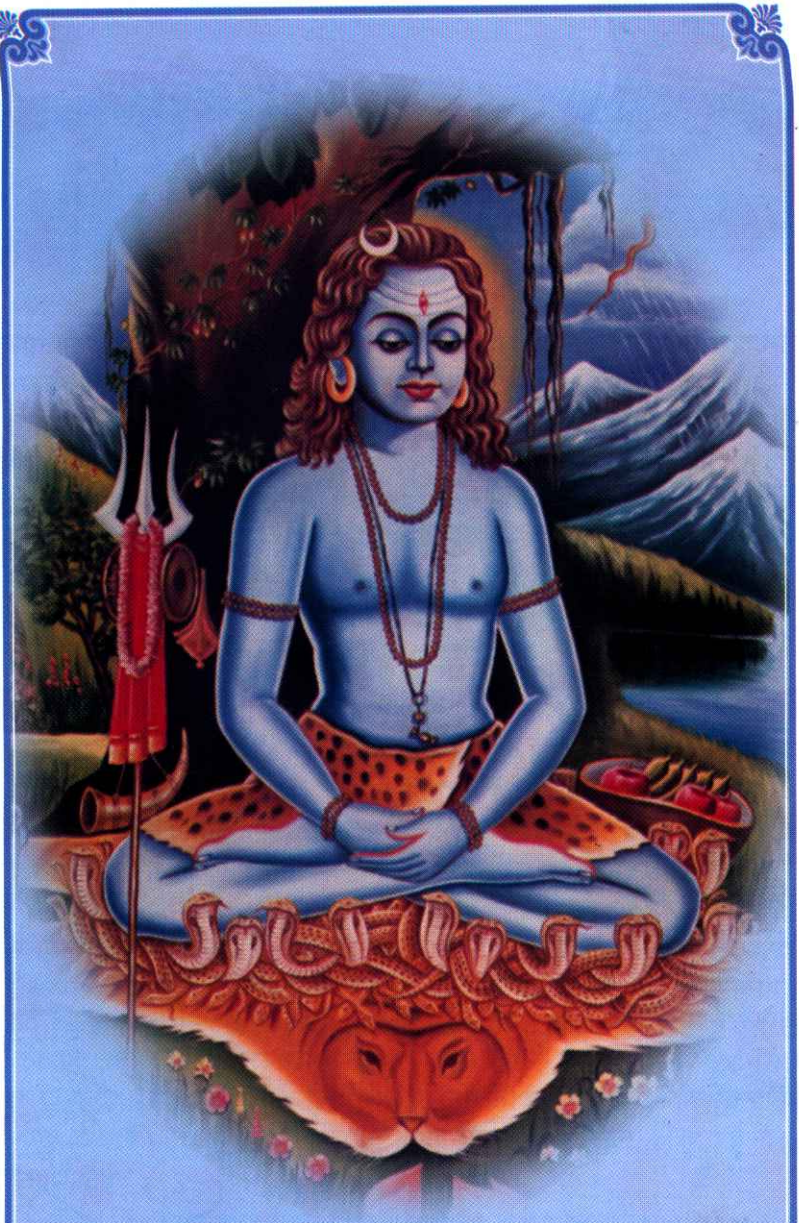
पूजा-पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
ॐ नाथ पुस्तक भण्डार
194, दरीबा कलां, दिल्ली-6, दूरभाष 23275344

मूल्य : रु. २५०/–

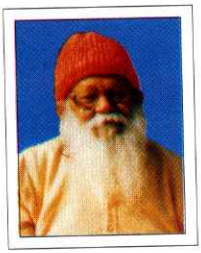
प्राप्ति स्थान :
अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष
बारह पंथ योगी महासभा
गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड,
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
फोन : 01334–226583
website : www. yogigorakshnath.org
e-mail : media@yogigorakshnath.org

प्रकाशक:
श्री बाबा मस्तनाथ मठ,
मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा

इस ग्रन्थ के किसी भी अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा



मृगस्थली स्थली पुण्या, भाल नेपाल मण्डले।
यत्र गोरक्षनाथेन, मेघमालासनी कृता।।



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

आपका पत्र मिला यह जानकर अति प्रसन्नता हुयी है कि आपने नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित एक नये ग्रन्थ की रचना की है। जिसका नाम "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" है। इस सनातन नाथ सम्प्रदाय में शंखढाल जैसे कर्मकाण्ड की परम्परा अनन्त काल से चली आ रही है। लेकिन शंखढाल कर्म काण्ड के अवसर पर किन–किन मन्त्र–तन्त्र विधि विधान का उच्चारण एवं अनुकरण किया जाना चाहिए। ऐसे ग्रन्थ की अब तक किसी ने रचना नहीं की थी।

अतः इसी तरह के योग तथा मन्त्र–तन्त्र से सम्बन्धित अनके ग्रन्थों को प्रकाशन हुआ है। नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वर भी धीरे–धीरे इन सिद्धान्तों को भूलते जा रहे थे।

आपने अब तक सभी विषयों पर ग्रन्थों को प्रकाशित कर नाथ सम्प्रदाय का बहुत बड़ा कार्य किया है। इसलिये आप भविष्य में अनेक समय तक याद किये जायेंगे। क्योंकि आपका यह कार्य नाथ सम्प्रदाय की एक बहुत बड़ी धरोहर होगी। जिसके द्वारा नाथ सम्प्रदाय के केवल सिद्धान्तों, आचार–विचार ही नहीं बल्कि विशेष पूजन विधि की आवश्यकता थी। इसके अनुसार जिनको ऐसे पुस्तकों की अभी तक आवश्यकता थी उन साधकों को मन्त्र–तन्त्र विधि विधान न मिलने के कारण साधना अधूरी रहती थी। आपके इस प्रयास के कारण सभी साधक योगेश्वरों को समयानुसार अपने सम्प्रदाय के पूजन विधि विधान के ग्रन्थों से सम्प्रदायिक पूजन विधियां इन ग्रन्थों द्वारा उपलब्ध हुये हैं। इसलिये आप बधाई के पात्र हैं। इस महान कार्य के लिये आपके प्रति मेरी हार्दिक शुभ कामनायें है।

शुभेच्छुक:

(महन्त अवेद्यनाथ जी)
सभापति (योगी महासभा)
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा (हरिद्वार)
श्री गोरक्ष पीठाधीश्वर गोरक्षनाथ मन्दिर
गोरखपुर पूर्व सांसद (लोक सभा)



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आप के द्वारा एक और नाथ पंथ से सम्बन्धित "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" नामक ग्रन्थ की रचना की जा रही है। शंखढाल की परम्परा महायोगी दादा गुरु मत्स्येन्द्रनाथ जी द्वारा शुरु की गई थी, ऐसी नाथ पंथ की मान्यता है। यह परम्परा अभी तक गुरु–शिष्य के बीच मौखिक रुप से आदि काल से आज तक चली आ रही है इस कर्मकाण्ड का कोई प्रमाणिक ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं है आज के युग में ऐसे ग्रन्थ की बहुत आवश्यकता थी। ऐसे ग्रन्थ की रचना कर के आपने निश्चित रुप से पुण्य का कार्य किया है।

पूर्व में भी आप ने नाथ पंथ की परम्परा से सम्बन्धित यंत्र–मन्त्र–तन्त्र तथा योग के रहस्यों को बताने वाले ग्रन्थों की रचना की है इस के लिये आप को हमेशा याद रखा जायेगा।

शंखढाल क्रिया कर्म के अवसर पर जो विधि विधान किये जाते है उन का वर्णन आप ने पुस्तक में बड़े ही सहज और सरल भाव से किया है तथा सम्पूर्ण विषय को पूर्णता के सहित बताया है। इसलिये यह ग्रन्थ अपने आप में एक धरोहर से कम नहीं हैं अनेक नाथ योगेश्वरों को समय–समय पर शंखढाल क्रिया कर्म करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था अतः इस ग्रन्थ की रचना के बाद ये सभी दिक्कतें स्वतः समाप्त हो जाएगी। इस पुस्तक के द्वारा शंखढाल से सम्बन्धित वह सभी सुलभ होगी जो कि गोपनीय होने के कारण लुप्त–प्रायः हो गई थी। अतः अनेक योगेश्वर पंथ से सम्बन्धित साधनाओं के बारे में प्रायः अनिभज्ञ रह जाते थे। इस कमी को इस ग्रन्थ से दूर किया जा सकेगा। आप निश्चित रुपेण बधाई पात्र है। इस पुण्य के कार्य के लिये मेरी ओर से आप को बधाई तथा शुभाशीर्वाद।

सिद्ध शिरोमणी बाबा मस्तनाथ जी से ग्रन्थ के सफल प्रकाशन की कामना करते हुये पुनः शुभाशीर्वाद देता हूँ।

आपका हिताकांक्षी

(महन्त चांदनाथ योगी)
मठ अस्थल बोहर
रोहतक (हरियाणा)



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

यह जानकर अति प्रसन्नता हुयी है कि इस ग्रन्थ रचना में श्री नाथ सिद्ध परम्परा के अनुसार जो गुप्त एवं गूढ़ विद्यायें, तन्त्र और मन्त्र साधनाओं को "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" नामक ग्रंथ रुप में प्रगट करने का एक यशस्वी प्रयास किया गया है। अनेक नाथ सिद्ध, योगिओं एवं सिद्ध सतगुरुओं के आशीर्वचन प्राप्त करके यह साहस प्राप्त हुआ है कि भविष्य में यह ग्रन्थ अनेक नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वरों को तथा अन्य धर्मानुरागी जो इस मार्ग का अवलम्बन करना चाहते है उनके लिये यह ग्रंथ पूर्ण रुप से पूरक तथा मार्गदर्शक होगा, क्योंकि यह ग्रंथ अनेक प्रकार से, सहज एवं सुलभ प्रगट करने का विस्तृत रुप से प्रयास किया है। फिर भी प्रत्यक्ष बिनु गुरु कृपा के कुंजी नहीं प्राप्त होती इसलिये यह ग्रंथ नाथ गुरु शिष्य परम्परा में अनिवार्य हुआ है। जो सतगुरु का महत्व नहीं जानते है वह भी इस परम्परा में प्रवेश करके गुरु–शिष्य परम्परा समझने लग जायेंगे, जो कि अदृश्य शक्तियाँ प्रगट कराके पंचकर्म संस्कार (तंत्र–मंत्र आदि) करके देह आत्मा का जड़–चेतन का) सम्बन्ध अलग–अलग करने का ही नाम मुक्ति मार्ग है।

नाथ योग प्रणाली में आत्मा को ही अजर अमर मानते हुये देह संस्कारों से मुक्ति दिलाना है। अतः नाथ सिद्ध स्थूल देह सहित मुक्त होकर विचरणें लगते है जो कि साधना द्वारा काया को अजर अमर करके विचरते है। मुक्ति प्राप्त करने का अर्थ यह है कि सत्य–असत्य का निर्णय ही मुक्ति है। सत्गुरु का ज्ञान सत्य माना गया है, और शिष्य का अज्ञान–असत्य माना गया है। असत्य को नष्ट करके शिष्य को ही ज्ञान द्वारा गुरु पद की प्राप्ति होती है। अतः गुरु ही ज्ञान है, गुरु ही सत्य है। अर्थात् सतगुरु ही मुक्ति है। इसी प्रकार गुरु ही धर्म है संसार के अन्दर शरीर प्राप्ति करने के पूर्व गुरु कृपा ही ईश्वर कृपा है। इसलिये यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि इस योगमाया मार्ग में प्रवेश करके सतगुरु कृपा प्राप्त करना अनिवार्य है।

अतः गुरु शिष्य परम्परानुगत अमर संजीवनी अर्थात् अमरकथा के रुप में आदिनाथ जी शिव के मुखारबिन्द से उदयनाथ पार्वती को यह विद्या प्राप्त हुई और उदयनाथ जी द्वारा यह शक्ति स्वरुप विद्या अन्य शिष्यों को प्राप्त होकर ज्ञान हुआ जो शिव शक्ति का प्रकट भाव गुरु के माध्यम से शिष्यों तक पहुंचाये जायें जैसे समुद्र उछलकर अपने में ही समा जाता है, उसी प्रकार यह गुरु–शिष्य परम्परा अपने आप में प्रकट होकर अपने आप में परिपूर्ण समा जाना हो जाता है।

अतः गुरु शिष्य परम्परा का ही नाम मुक्ति मार्ग है।

शुभकामना करते हुये पुनः शुभाशीर्वाद देता हूँ।

इति शुभम्!

आपका हिताकांक्षी

(योगी आनन्दनाथ जी)
महामन्त्री
अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ,
योगी महासभा गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर
अपर रोड़, हरिद्वार 249401



(उपदेशी सतगुरू)

आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

यह देखकर अति प्रसन्नता हुयी है कि आपने जो योगी सम्प्रदाय परम्परा के विषय में एक नयी रचना की है जिसका नाम "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" है। यह ग्रंथ देखते हुये यह ज्ञात हुआ कि ऐसे गुप्त तथा सूक्ष्म मन्त्र विद्या, जो कि गुरु शिष्य परम्परानुगत मोक्ष मुक्ति का सुगम मार्ग है इसकी अतिषय सूक्ष्म तथा यथा योग्य संजीदा, ढंग से रचना करके नाथ सम्प्रदाय के नाथ सिद्धों की तथा अनुयायियों की मन्त्र, तन्त्र विद्या की पूर्णता की गयी है जिससे वह यथा योगमाया का कर्मकाण्ड कर सकते है।

इस विषय का ग्रंथ इससे पूर्व उपलब्ध नहीं था। अतः यह उत्तम उपलब्धी करके नाथ सम्प्रदाय का बहुत उत्तम योगदान किया है जो हमेशा स्मरणार्थ रहेगा।

अतः सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ जी के कृपा और अनुकंपा से आप अपने कार्य में हमेशा यशस्वी रहोगे और भविष्य में भी ऐसे उत्तम रचनाओं का निर्माण करते रहोगे ऐसे महान कार्य के लिये आपको मैं शुभ आशीर्वाद देता हूँ।

इति शुभम्

शुभेच्छुकः

कृष्णनाथ

(राजगुरु योगी कृष्णनाथ जी)
मंदिर काली स्थान
नाहन हिमाचल प्रदेश



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

यह देखते हुये हर्ष होता है कि आपने नाथ सम्प्रदाय के विषय में एक नये ग्रंथ की रचना की है, जिसका नाम "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" है। इस ग्रंथ में आपने नाथ सिद्धों के गुरु शिष्य परम्परा की तंत्र–मंत्र विद्या का योग द्वारा तथा कर्मकाण्ड द्वारा मोक्ष मुक्ति का सुगम मार्ग प्रकाशित किया है।

यह शंखढाल कर्मकाण्ड पुरातन तथा सनातन नाथ सम्प्रदाय की धरोहर है जिसका आपने बड़े ही सजीव एवं विस्तृत भाव से वर्णन किया है। इस कर्मकाण्ड की नाथ अनुयायी तथा सिद्ध सम्प्रदाय को पूर्वकाल से आवश्यकता थी जिसका पूर्णता आपके इस ग्रंथ द्वारा हो रही है। जिसके द्वारा वह यह योगमाया अर्थात् शंखढाल कर्मकाण्ड यथा उचित, ढंग से कर सकेंगे।

इस ग्रंथ उपलब्धी से नाथ सम्प्रदाय का अति उत्तम योगदान किया गया है जो हमेशा यादगार रहेगा।

अतः श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ जी के कृपा अनुकंपा से आप ऐसे ग्रंथ निर्माण में यशस्वी होते रहेंगे और भविष्य में रचनाओं का निर्माण करेंगे। ऐसे उत्तम कार्य के लिये मैं आपको शुभ आशीर्वाद देता हूँ।

इति शुभम्

शुभेच्छुकः

पीर पारस नाथ

(श्री पीर पारस नाथ जी)
गोरक्ष टिल्ला, अम्बाला शहर
हरियाणा



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

आपका पत्र मिला यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आपने नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित एक नये ग्रन्थ की रचना की है जिसका नाम "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" है। इस सनातन नाथ सम्प्रदाय में शंखढाल जैसे कर्मकाण्ड की परम्परा में किन–किन मन्त्र–तन्त्र विधि–विधान का उच्चारण एवं अनुकरण किया जाना चाहिए। ऐसे ग्रंथ का अभी तक अभाव था।

अत: आप का यह प्रयास सराहनीय है, मुझे विश्वास है कि उक्त ग्रंथ में आप प्रमाणिक जानकारी देकर नाथ सम्प्रदाय में शंखढाल कर्मकाण्ड की विधि को इस पुस्तक द्वारा नयी दिशा प्रदान करेंगे।

इस शुभ कार्य के लिये आप बधाई के पात्र है, इस महान कार्य के लिये आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

इति शुभम्

आप का शुभेच्छुक:

शांतीनाथ

(पीर शान्तिनाथ जी)
सिरे मन्दिर, जालोर (राजस्थान)



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

यह बड़ी हर्ष की बात है कि आपके द्वारा जो नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" नाम का ग्रन्थ रुप रचना की गयी है। यह तन्त्र मन्त्र क्रिया विधान अब तक गुरु शिष्य परम्परा में मुखोद्गत होती आ रही थी। अतः यह अतिषय गुप्त विद्या कर्मकाण्ड का अब तक कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं था तथा यह विद्या नाथ सम्प्रदाय में लुप्त हो रही है। अतः आपने इस ग्रंथ में योगमाया पूजन का एक सम्पूर्ण विधि विधान का बड़े ही सहज एवं सरल भाव से वर्णन किया है। जो अतिषय प्रशंसनीय एवं बधाई पात्र है।

निश्चित रुप से शिव शक्ति कृपा से और नाथ सिद्धों एवं सतगुरु कृपा से आपको यह ग्रंथ लिखने की प्रेरणा मिली है। जो आने वाले नाथ सिद्धों को अत्यंत लाभदायक होगी।

यह ग्रंथ रचना में परिश्रम करके आपने नाथ सम्प्रदाय के लिये बड़ा महत्वपूर्ण योगदान तथा पुण्य कर्म किया है जो नाथ सम्प्रदाय आपको याद रखेगा।

इससे आगे भी आप नाथ सम्प्रदाय विषय में ग्रंथों की रचना करेंगे ऐसी शुभ कामनायें देते हुये शुभ आशीर्वाद देता हूँ।

आपका हिताकांक्षी

कैलाशनाथ

(पीर योगी कैलासनाथ जी)
मु० पो० पलासनी, जोधपुर
स्थान–श्री चिड़िया नाथ जी
की समाधि, राजस्थान



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

यह देखते हुए अति प्रसन्नता हो रही है कि अपने नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के विषय में एक और ग्रंथ की रचना की है, जिसका नाम 'श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल' है। जिसमें पूर्व कालीन नाथ सिद्धों की गूढ़ एवं रहस्यमय तन्त्र मन्त्र क्रियाओं का समावेश है। यह नाथ सिद्धों के गुरु शिष्य परम्परा का मुखोद्गत उपदेश एवं कर्मकाण्ड हे। इसे योगमाया पूजन भी कहा गया है जो पूर्व समय मायारूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी ने अपने काल में शुभारंभ किया था। अतः यह गोपनीय ज्ञान विद्या का अभी तक कोई भी प्रमाणित ग्रंथ उपलब्ध नहीं था। जिस कारण सन्तों को कर्मकाण्ड करने में दिक्कतें आती थी। वह इस ग्रंथ से सुचारू बद्धता एवं मार्गदर्शनीय होगी।

गोपनीयता के कारण यह विद्या लुप्त होंने लगी थी, जिसका अपने ग्रंथ रूप में उजागर करके नाथ सम्प्रदाय का बड़ा ही योगदान किया है। आपने इस नाथ सिद्धों के रहस्यमय तन्त्र–मन्त्र यन्त्र गूढ़ विद्या का अत्यन्त सुचारूबद्ध सरल एवं विस्तृत रूप में वर्णन किया है। जो समझने में और समझाने में सहजता होगी और साधारण से साधारण जन मानस साधु सन्त समाज को उत्तम उपलब्धी होगी आपके यह अथक प्रयास और पुण्य कर्म देखकर, आप निश्चित रूप से प्रशसनीय एवं बधाई के पात्र हो। जो नाथ सम्प्रदाय में आप हमेशा स्मरणार्थ रहोगे। निश्चित रूप से आपको नाथ सिद्धों की सिद्ध गुरु, पीरों, महन्तों की महान कृपा अनुकम्पा प्राप्त हुई है।

अतः श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी एवं योगमाता योगमाया देवी को प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में आप ऐसी उत्तम रचनाओं की उपलब्धी में यशस्वी हो और शुभकामनाओं के साथ शुभ आशीर्वाद देता हूँ।

आपका हिताकांक्षी

महन्त योगीसोमनाथ

(श्री महन्त सोमनाथ जी)
१८ के (जमात रमतो के महन्त)
बाबा शान्तिनाथ कुटी, ग्राम पियाला,
तह. बल्लभगढ़ जिला फरीदाबाद
हरियाणा



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

आपके द्वारा लिखित "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" नामक ग्रंथ को देखते हुये यह स्पष्ट लग रहा है कि नाथ सम्प्रदाय के गुरु शिष्य परम्परा में जो मौखिक रुप में अत्यंत गूढ़ एवं गुप्त तंत्र–मंत्र, साधनायें, जिनकी आपने बड़े ही विस्तृत तथा संजिदा भाव से रचना की है। इस विषय में अब तक कोई भी प्रमाणित ग्रंथ न होने के कारण नाथ साधु संत एवं अनुयायीओं को यह शंखढाल अर्थात् योगमाया कर्मकाण्ड करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। अतः आपके इस ग्रंथ निर्माण द्वारा यह दिक्कतें अपने आप ही समाप्त हो गयी है।

आदिकाल से चली आ रही यह नाथ सिद्धों की योगमार्ग द्वारा कर्मकाण्ड द्वारा तंत्र–मंत्र द्वारा मोक्ष मुक्ति प्राप्ति का बड़ा ही सरल–सुगम मार्ग बताया गया है। ऐसे सम्पूर्ण ग्रंथ की नाथ सिद्ध सम्प्रदाय को तथा भक्त अनुयायीओं को बहुत आवश्यकता थी। अतः इस ग्रंथ उपलब्धी के कारण सभी लाभान्वित होंगे। ऐसे उत्तम कार्य के कारण आप बधाई के पात्र हो।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के कृपा आशीर्वाद से आपका यह ग्रंथ सफल कार्य की कामना करते हुये आपको शुभ आशीर्वाद देता हूँ।

इति शुभम्

आपका हिताकांक्षी

महन्त अम्बाईनाथ

(श्री महन्त अम्बाईनाथ जी)
मु० पो० किरतपुर
जि० बिजनौर (उत्तरप्रदेश)



आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ जी
सप्रेम आदेश आदेश।

यह देखते हुये अति प्रसन्नता हो रही है कि श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की कृपा अनुकंपा से आपने नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के अतिषय गूढ़ विषय में "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" नाम के ग्रंथ की रचना की है। यह अत्यंत पुरातन काल की श्री मायारुपी दादा मत्स्येन्द्र नाथ जी और गुरु गोरक्षनाथ जी इन गुरु शिष्य परम्परा की मुखोद्गत मंत्र तंत्र कर्मकाण्ड किया है, जो अत्यन्त गोपनीय थी। आगे इस सनातन नाथ सिद्धों में चलती आयी गुरु शिष्य परम्परा की यह गूढ़विद्या योगमाया कर्म अर्थात् नाथ सिद्धों की शंखढाल नाम से प्रचलित हुयी। इस विषय में अब तक कोई प्रमाणित ग्रंथ उपलब्ध नहीं था। अतः नाथ सिद्धों को तथा नाथ अनुयायियों को कर्म काण्ड करने में बड़ी दिक्कतें होती थी, आपके इस ग्रंथ उपलब्धी के कारण उन्हें कर्मकाण्ड करने में सहजता एवं समाधान प्राप्त होगा।

आपने इस रहस्यमय शंखढाल कर्मकाण्ड में जो तंत्र–मंत्र के विधि विधान का वर्णन किया है। वह बड़े ही सहज सरल और विस्तृत भाव से जो सम्पूर्ण भाव में पूर्णता से बताया गया है। जो कि समूची सामग्री सुलभ और प्रमाणित प्राप्त होगी। निश्चित रुप से नाथ सिद्ध गुरुओं की कृपा शक्तिपात आपको प्राप्त हुआ है।

जो कि आपके आन्तरिक नाथ सिद्ध संस्कार जाग्रत होकर आप यह ग्रंथ रचना के लिये प्रेरित हुये है। आज के युग में यह गोपनीय विद्या लुप्त होने जा रही थी, जो कि आपने इस ग्रंथ की रचना करके नाथ सम्प्रदाय को जीवित रखने का उत्तम प्रयास किया है। जो अत्यंत प्रसंशनीय और बधाई के पात्र है।

आपका यह पुण्य कर्म एवं योगदान नाथ सम्प्रदाय को हमेशा स्मरणार्थ रहेगा। भविष्य में आप ऐसे ही नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के विषयों में ग्रंथ रचनायें करेंगे। ऐसी शुभ कामनायें देते हुये शुभ आशीर्वाद देता हूँ।

आपका हिताकांक्षी

महन्त अतराईनाथ

(श्री महन्त योगी अतराई नाथ जी)
अम्बली (इमली) नारायण गढ, हरियाणा

भूमिका

हमारे अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा के नाथ साहित्य प्रकाशन में, हमारे नाथ सिद्धों की संस्कृति को उजागर करते हुये नाथ सिद्धों की गुरु शिष्य परम्परा, तन्त्र-मन्त्र संस्कार एवं नाथ सिद्धों की सनातन सिद्ध परम्परा को संजिदा रखते हुये और प्रकाशन को मूर्तरुप देने के फलस्वरुप यह श्री नाथ रहस्य के चतुर्थ खण्ड, "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" नाम के ग्रंथ प्रस्तुति हो रही है। जिसमें नाथ सिद्धों की मोक्षमुक्ति के विषय में योगमाया पूजन पद्धति अर्थात् शंखढाल कर्मकाण्ड विशेष कर्म सम्पन्नता की पूर्णता करने का प्रयास किया है।

अत: योगमाया पूजन का अर्थात् शंखढाल कर्मकाण्ड का विनियोग हर क्षेत्र में यथायोग्य दीर्घ विधान से करने हेतु हमारे नाथ सिद्ध सन्तगण तथा साधक भक्त सेवकों एवं समस्त प्राणी मात्र की अपेक्षा-आग्रह एवं इच्छा को मद्देनजर रखते हुये मेरे सद्गुरुजी योगी आनन्दनाथ जी (महामन्त्री-योगी महासभा) इन्हीं की कृपा, आदेश प्राप्त होने पर तथा मेरे उपदेशी सतगुरु राजगुरु योगी कृष्णनाथ जी (राजगुरु नाहन हि०प्र०) इनकी विशेष कृपा अनुकम्पा होने पर यह "श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल" नामक ग्रन्थ की रचना करने का अहोभाग्य मुझे प्राप्त हुआ।

यह शंखढाल कर्मकाण्ड पूर्व काल से मायारुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथजी ने इस परम्परा को प्रारम्भ किया था। जिसमें सम्पूर्ण अत्यंत गुप्त एवं गूढ़ मन्त्र विद्या का समावेश है। यह गुप्त क्रियायें तथा मन्त्र साधनायें कही गुप्तता के रहस्य में लुप्त ना हो जायें इस उद्देश्य से यह ग्रन्थ बनाने की सहृदय प्रेरणा श्री महन्त योगी अवेद्यनाथजी (पूर्व सांसद) सभापति योगी महासभा, श्री गोरक्ष पीठाधीश्वर, गोरखपुर, (उ०प्र०) इन्होंने कृपा आर्शिवाद से मुझे दी।

हमारे गुरु गद्दी मठ अस्थल बोहर मठाधीश महन्त योगी चाँद नाथजी महाराज (उपसभापति, योगी महासभा) इन्हीं की कृपा आशीर्वाद

से मुझे यह लक्ष्य की प्राप्ति हुई।

इस ग्रन्थ में मन्त्र-तन्त्र, कर्मकाण्ड साधना द्वारा नाथ सिद्ध मृतात्मा को मोक्ष मुक्ति दिलाने के लिए अपने तपोबल द्वारा क्रिया करते हैं। जिसका आपको विस्तृत भाव से वर्णन मिलेगा। इस ग्रन्थ में पंचम रहस्यों का समावेश है। जिसमें प्रथम रहस्य में-समाधि विधान, द्वितीय रहस्य में-दिन में करने का कर्मकाण्ड, तृतीय रहस्य में-रात्रि का कर्म, चतुर्थ रहस्य में-आठमान पीरों का भण्डारा, पंचम रहस्य में मृत्यु तथा मोक्ष-मुक्ति का वर्णन मिलेगा। जो सरल और विस्तृत भाव में लिखा गया है। जो हर एक व्यक्ति सहजता से एवं सुलभता से समझ सकता है।

इस ग्रन्थ रचना में मेरे गुरु भाई योगी राकेशनाथ जी (सहायक मन्त्री), योगी प्रमोदनाथजी (प्रबन्धक), योगी मोतीनाथजी (उप-प्रबन्धक) तथा नाथ सम्प्रदाय के नाथ सिद्ध योगी जनों के सहृदय, सदप्रेरणा के लिए मैं सभी का आभारी हूँ।

मुझे पूर्ण आशा है सभी नाथ सिद्ध योगेश्वर सन्त भक्तगण इस ग्रन्थ से लाभान्वित होंगे।

निवेदनः- ग्रन्थ सुधार के सम्बन्ध में जो भी सुझाव होंगे वे देने का कष्ट करें।

(टंकण में हुई अशुद्धियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।)

आपका

योगी विलासनाथ

योगी विलासनाथ
गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर
अपर रोड, हरिद्वार
उत्तराखण्ड

अनुक्रमणिका

(प्रथम रहस्य)

अनु०	विषय	पृष्ठ संख्या
१.	**समाधि (उत्तर क्रिया विधि)**	१
	(क) मृत योगेश्वर की प्राथमिक विधि	४
	(ख) जल समाधि विधि	११
	(ग) जीवित (जिन्दा) जल समाधि	१४
	(घ) जीवित (जिन्दा) थल (भूमि) में समाधि	१६
	(ङ) थल (भूमि) में समाधि विधि	१८
	(च) मृत्यु के पश्चात् योगेश्वर की परलोक गती (प्रयोग)	२३
२.	**मृतात्मा का तिया (तिसरे दिन) विधि**	२५
	(क) समाधि विधान	२६
३.	**हरड़ पूजन भण्डारा**	२७
	(क) हरड़ पूजन	२९
	(ख) शंखढाल का उद्देश्य	३२
	(ग) शंखढाल का मुहूर्त	३३
	(घ) निमन्त्रण पत्र (आठमान भण्डारा)	३३
	(ङ) कुछ नियम	३७
४.	**योगमाया का स्वरुप**	३९
	(क) योगमाया विवेचन	४३
	(ख) योग साधना दृष्टि से अन्दर का कर्म	४५

द्वितीय रहस्य

(दिन का कर्म)

५.	**नित्यकर्म**	५०
	(क) उपदेशी महात्माओं (उत्तराधिकारी-पीरजी तथा अन्य योगेश्वरों) का नित्यकर्म	५०
	(ख) योगमाया पूजन सामग्री (सूची)	६१
	(ग) कुछ नियम	६४

६. **योगमाया पूजन (शंखढ़ाल) की पूर्व तैयारी** ६५
(क) सुरक्षा विधि ६५
(ख) योगमाया कक्ष में स्थान नियुक्ति ६७
(ग) आटा बनाने की विधि ६८
(घ) चना बनाने की विधि ६८
(ङ) हलवा बनाने की विधि ६८
(च) पंचमेवा पात्र ६८
(छ) भैरव (भांग) पात्र बनाने की विधि (जुगत पिण्ड) ६९
(ज) जुगती का कुण्डा (पात्र) बनाने की विधि (भैरव अमृत प्याला) कुण्डापात्र ६९
(झ) केशर पात्र बनाने की विधि ६९
(ञ) साखियाँ बनाने की विधि ६९
(ट) ज्योतियाँ बनाने की विधि ७०
(ठ) बाला सुन्दरी या माई की कमल ज्योत या मुख्य अखण्ड ज्योत बनाने की विधि ७२
(ड) बाला सुन्दरी चौक (पाट) माण्डन के चार गणों की चार ज्योत एंव हिंगलाज माता की ज्योत बनाने की विधि ७२
(ढ) भैरव ज्योत एवं कैलाश में गत गंगा की ज्योत बनाने की विधि ७३
(ण) कैलाश के ऊपर की चार जुग की ज्योत बनाने की विधि ७३
(त) भण्डार ज्योत बनाने की विधि ७३
(थ) गणेश ज्योत एवं कलश ज्योत बनाने की विधि ७४
(द) पुतला बनाने की विधि ७६
(ध) पौड़ी (सीढ़ी) बनाने की विधि ७७
(न) ज्योत पूजन पात्र बनाने की विधि ७८
(प) कुछ नियम ७९
७. **स्थापना विधि** ८१
(क) भण्डार स्थापना (श्री गणेश एवं भण्डार ज्योत स्थापना) ८१
(ख) योगमाया ज्योति पाट या माई का पाट अर्थात् बाला सुन्दरी चौक माण्डण ८८

(ग) (काल भैरव का) जुगत पिण्ड की स्थापना ९२
(घ) मृतात्मा के गति की प्रचिति-स्थापना ९४
(ङ) माता हिंगलाज ज्योत स्थापना ९७
(च) भैरव ज्योत स्थापना ९८
(छ) बाला सुन्दरी चौक (पाट) स्थापना ९९
(ज) बाला सुन्दरी (पाट) चौक के ऊपर ज्योतियों की स्थापना १०३
(झ) कलश स्थापना १०९
(ञ) कुछ नियम ११६

८. कैलाश स्थापना ११७

(क) कैलाश (शिवलोक मुक्तिधाम) और पौड़ी (सिढ़ी) बनाने की विधि ११७
(ख) ठीकरा स्थापना १२३
(ग) कुण्डा स्थापना १२३
(घ) पात्र स्थापना १२९
(ङ) कर्म तैसी गति १३३
(च) कुछ नियम १३५

९. आसन व्यवस्था (स्थापना) १३६

(क) कुछ निषिद्ध आसन साधानायें १३९
(ख) खीरे (अंगार) प्रकाश बनाने की विधि १४०
(ग) मानधारियों का चुनाव १४२
(घ) कुछ नियम १४३

तृतीय रहस्य
(रात्रि का कर्म)

१०. मुख्य प्रवेश १४५

(क) मानधारियों का प्रवेश १४५
(ख) खीरे (अंगार) प्रकाश विधि १५१
(ग) कुछ नियम १५६

११. अथ् कर्म १५७

(क) ज्योत जागरण (ज्योत चेतना) १५९

(ख) श्री गणेश ज्योत जाग्रती (ज्योत चेतना) १५९
(ग) महामाया बाला सुन्दरी जोत जाग्रती १६०
(घ) चार जुगों की ज्योत जाग्रती १६१
(ङ) कलश ज्योत जाग्रती १६३
(च) हिंगलाज जोत जाग्रती १६४
(छ) भैरव ज्योत जाग्रती १६६
(ज) कैलाश ज्योत जाग्रती १६७
(झ) गत गंगा ज्योत जाग्रती १६८
(ञ) आह्वान पूजन १७६
(ट) आरती (माता हिंगलाज की)-१ १९०
(ठ) कंगन विधि १९१
(ड) माई का भोग विधि १९३
(ढ) भैरव भोग विधि १९६
(त) हरड़ विधि १९९
(थ) पंच-पात्र दान २००
(द) कुछ नियम २०२

१२. पुतला संस्कार विधि २०३

(क) पुतले को (फुँका) मन्त्र संस्कार २१३
(ख) उपदेश एवं स्थापना २१५
(ग) कुछ नियम २१७

१३. आदेश-नमन एवं शंखढाल विधि २१९

(क) पीरजी का आदेश नमन विधि २१९
(ख) गादी नमन विधि २२५
(ग) पुतले को शंख ढालना विधि २३०
(घ) जोगन का आदेश नमन विधि २४४
(ङ) गादी नमन विधि २४५
(च) पुतले को शंख ढालना विधि २४७
(छ) साखियाँ का आदेश नमन विधि २५१
(ज) पुतले को शंख ढालना विधि २५२

(झ) महावीर का आदेश नमन विधि २५५
(ञ) पुतले को शंख ढालना विधि २५५
(ट) कुबेर भण्डारी का आदेश नमन विधि २५८
(ठ) पुतले को शंख ढालना विधि २५८
(ड) टैलुवा का आदेश नमन विधि २६२
(ढ) पुतले को शंख ढालना विधि २६२
(त) कोतवाल का आदेश नमन विधि २६५
(थ) पुतले को शंख ढालना विधि २६६
(द) जुगती का कुण्डा (भैरव अमृत कुण्डा) विधि २७१
(ध) कुछ नियम २७४
१४. नया चेला बनाने की विधि २७६
(क) नये चेले का प्रवेश २७६
(ख) उपदेशी गुरु मन्त्र दिक्षा विधि २७८
(ग) श्री गुरु मन्त्र का महात्म्य २७९
(घ) अथ् गुरु मन्त्र (बाला सुन्दरी) रहस्य २८०
(ङ) कुछ अन्य विधि २८७
(च) पुतले को शंख ढालना विधि २९२
(छ) सूचना २९५
(ज) कुछ नियम २९७
(झ) नया चेला बनाने की विधि का भावार्थ २९८
१५. दर्शनार्थी उपदेशी योगेश्वरों की पुतले पर शंखढाल विधि ३०२
(क) प्रवेश ३०२
(ख) दर्शनार्थी उपदेशी का आदेश नमन विधि ३०२
(ग) पुतले को शंख ढालना विधि ३०३
(घ) कुछ नियम ३०६
१६. मृतात्मा के भक्तों को दर्शन विधि ३०८
(क) उपदेशी भक्त का आदेश नमन विधि ३०८
(ख) पुतले के ऊपर शंख ढालना विधि ३०९
(ग) कुछ नियम ३१२

१७.	**उत्तराधिकारी कर्म विधि**	३१४
	(क) उत्तराधिकारी का आदेश नमन विधि	३१४
	(ख) पुतले को शंख ढालना विधि	३१५
	(ग) कुछ नियम	३१९
१८.	**अनन्त गादी का विधि**	३२०
	(क) अनन्त गादी का आदेश नमन विधि	३२०
	(ख) गादी नमन विधि	३२१
	(ग) पुतले को शंख ढालना विधि	३२३
	(घ) कुछ नियम	३२८
१९.	**उत्तरार्ध आरती विधि**	३२९
	(क) आरतीयाँ	३२९
	★ आरती योगमाया की	३२९
	★ माई की ज्योत आरती	३३२
	(ख) भोग विधि	३३४
	(ग) चक्र पूजा (नवग्रह)	३४०
	(घ) कुछ नियम	३४५
२०.	**पुतले को कैलाश जाने की विधि**	३४६
	(क) मन्त्र संस्कार	३४६
	(ख) अथ पौड़ी विधि	३४८
	(ग) परिक्रमा विधि	३५४
	(घ) समाधि विधि को ले जाना	३५९
	(ङ) कुछ नियम	३५९
२१.	**पल्लू विधान**	३६१
	(क) पल्लू की झोली विधि	३६१
	(ख) पल्लू पखालने की विधि	३६४
	(ग) वीर की कमाई शोधन विधि	३६७
	(घ) कुछ नियम	३६९
२२.	**पुतले पर समाधि संस्कार (चौथा पहर)**	३७२
	(क) समाधि विधि	३७२

(ख) कुछ नियम ३७८
२३. **कलीयुग आगमन विधि** **३७९**
(क) सिद्धि (प्रसाद) विधि ३८०
(ख) चक्र छूटने की विधि ३८२
(ग) कुछ नियम ३८४
२४. **हवन विधि (प्रातः)** **३८६**
(क) पूर्व तैयारी ३८६
(ख) शक्ति हवन ३८९
(ग) भैरव हवन ३९०
(घ) बलि पूजन ३९४
(ङ) विसर्जन विधि ३९६
(च) कुछ नियम ३९७

चतुर्थ रहस्य

२५. **योगमाया शक्ति का सन्मान** **३९८**
(क) पूर्वकाल की चतुर्दिशा-योगमाया पूजन विधि ३९८
२६. **विशाल भण्डार (आठमान भण्डार)** **४००**
(क) रस्म गद्दी ४००
(ख) अभिषेक पूजन ४०१
(ग) भोज (प्रीती भोजन) भण्डारा ४०२
(घ) बिदाई ४०३
(ङ) कुछ नियम ४०३

पंचम रहस्य

२७. **मोक्ष-मुक्ति** **४०४**
(क) मोक्ष-मुक्ति के मार्ग ४०७
(ख) मोक्ष-मुक्ति एक विवेचन ४०८
२८. **नाथ सिद्धों का सृष्टि सृजन सिद्धान्त** **४१४**
(क) पिण्ड ते ब्रह्माण्ड ४१७
(ख) आत्मा-ज्ञान ४२७
(ग) उपासना ४२९

२९. **मृत्यु** ४३७
(क) क्या है मृत्यु ? ४३७
(ख) कैसे होती है मृत्यु ? ४३८
(ग) मृत्यु के क्षण और मृत्यु के पश्चात् ४३९
३०. **नाथ सिद्धों की मुक्ति** ४५१
(क) नाथ सिद्धों का महा प्रयाण ४५५
(ख) योग साधना के द्वारा मुक्ति ४५६
(ग) परम गति (मुक्ति की ओर) ४६५
(घ) शिव-शक्ति पिण्ड विस्तार (पिण्ड पंचक) ४६९
३१. **यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र-योग** ४७७
(क) मनोगत ४८४
३२. **आरती** ४८८
३३. **उपसंहार** ४९०

चित्र (आकृति) सूची

१. जल समाधि (अ)
जिवित (जिन्दा) जल समाधि (ब)
२. थल समाधि
पक्की समाधि
३. योगमाया पूजन कक्ष (नक्शा)
४. भण्डार कक्ष
५. ज्योत बनाने की विधि
६. कुशा की जड़ का पुतला, धातु बांस अथवा कुशा की ७ पौड़ी की (सिड़ी)
७. बाला सुन्दरी चौक तथा हिंगलाज और भैरव जोत स्थापना एवं आसन व्यवस्था
८. माई (बाला सुन्दरी) का पाट माण्डन
९. कैलाश मुक्ति धाम
१०. श्री नाथ सिद्धों के नाद जनेऊ का ॐकार स्वरुप रहस्य

मन्त्र अनुक्रमणिका

अनु०	मन्त्र	पृष्ठ संख्या
१.	आसन मन्त्र-१	४
२.	(पंच गौव्य संस्कार) मन्त्र	५
३.	जल गायत्री	५
४.	लंगोट मन्त्र	६
५.	भगवे का मन्त्र	६
६.	कुण्डल (दर्शन) मन्त्र	७
७.	नाद जनेऊ मन्त्र	७
८.	झोली मन्त्र	८
९.	भस्मी मन्त्र	८
१०.	आसन मन्त्र-२	९
११.	जल गायत्री (संक्षिप्त)	१०
१२.	मृतक के आसन बिठाने का मन्त्र-१	११
१३.	ठीकरा मन्त्र-१	१२
१४.	जल समाधि गायत्री	१२
१५.	मृतक के आसन बिठाने का मन्त्र-२	१८
१६.	समाधि गायत्री बीज मन्त्र	१९
१७.	जोत जगाने का बीज मन्त्र	२०
१८.	ठीकरे का मन्त्र-२	२०
१९.	समाधि गायत्री (मन्त्र)	२१
२०.	हरड़ा मन्त्र	२९
२१.	हल्दी चढ़ाने का मन्त्र	२९
२२.	अक्षत (चावल) मन्त्र	३०
२३.	दुब (दुर्वा) एवं पुष्प चढ़ाने का मन्त्र	३०
२४.	★ जल गायत्री (संक्षिप्त)	३०
२५.	गायत्री भोग मन्त्र (बीज)	३०

२६.	तिलक दान	३१
२७.	कंगल (कलावा) मन्त्र	३१
२८.	धरत्री गायत्री	५०
२९.	★ जल गायत्री	५१
३०.	★ जल गायत्री (संक्षिप्त)	५२
३१.	स्नान मन्त्र	५२
३२.	★ लंगोट मन्त्र	५३
३३.	भस्म गायत्री	५३
३४.	जटा बन्धन मन्त्र	५४
३५.	भगवे का मन्त्र	५५
३६.	बाघांम्बर मृगछाला का मन्त्र	५५
३७.	★ आसन मन्त्र	५५
३८.	गणेश (कुंजी) मन्त्र	५६
३९.	वैदिक मन्त्र (श्री गणेश)	५६
४०.	गुरु गोरक्ष गायत्री	५७
४१.	★ दर्शन (कुण्डल) का मन्त्र	५७
४२.	★ नाद जनेऊ पहनने का मन्त्र	५९
४३.	सिन्दुर मन्त्र-१	५९
४४.	रक्षा मन्त्र	६६
४५.	ज्योत (रुई की बत्ती) बनाने का मन्त्र	७०
४६.	ज्योत में सार डालने का मन्त्र	७१
४७.	ज्योत में सार डालने का मन्त्र (घृत)	७१
४८.	कुशा लाने का मन्त्र	७५
४९.	अथ गणपति पूजन (स्थापना) मन्त्र	८५
५०.	अथ: भण्डार स्थापना मन्त्र	८७
५१.	★ सिन्दूर मन्त्र	८९
५२.	★ श्री गणेश कुन्जी	८९
५३.	शक्ति मन्त्र	९०

५४.	जुगत उतारने का मन्त्र	९२
५५.	सिन्दूर मन्त्र-२	९२
५६.	काल भैरव स्थापन मन्त्र	९३
५७.	धरती पर जल छिड़कने का मन्त्र	९६
५८.	ॐ हिंगलाज देवी मन्त्र	९७
५९.	भैरव ज्योत स्थापना मन्त्र	९८
६०.	लेपन की पवित्री (मन्त्र)	९९
६१.	(पाट) चौका देने का मन्त्र	१००
६२.	आखा (चावल) मन्त्र	१००
६३.	अथ पाट पूरण मन्त्र	१०१
६४.	अखण्ड ज्योति स्थापना मन्त्र	१०४
६५.	धरती के ऊपर जल छिड़काने का मन्त्र	११०
६६.	★ लेपन मन्त्र	११०
६७.	धर्ती गादी मन्त्र	११०
६८.	धान स्थापना मन्त्र	१११
६९.	पात्र आसन मन्त्र	१११
७०.	जल पूरणे का मन्त्र	११२
७१.	पंच पल्लव मन्त्र	११२
७२.	श्री फल (नारियल) मन्त्र	११२
७३.	गन्ध-अक्षत मन्त्र	११३
७४.	अक्षत (चावल या आखा) बरसाने का मन्त्र	११३
७५.	★ भगवा मन्त्र	११३
७६.	★ नाद जनेऊ मन्त्र	११४
७७.	कुण्डल (मुद्रायें) मन्त्र	११४
७८.	कलश ज्योत स्थापना का मन्त्र	११५
७९.	कलश स्थापना का मन्त्र	११५
८०.	भूमि पर जल छिड़काने का मन्त्र	११७

८१. अथः पौड़ी (सीढ़ी) स्थापण मन्त्र ११९
८२. (अमर बाला) चार जुग जोत स्थापना मन्त्र १२०
८३. गत गंगा जोत स्थापना मन्त्र १२१
८४. अथः कैलाश (मुक्ति धाम) स्थापना मन्त्र १२१
८५. ठीकरे का मन्त्र (स्थापन) १२३
८६. कुण्डा स्थापन मन्त्र १२४
८७. कुण्डा (कलश) जल मन्त्र १२४
८८. पंचामृत बनाने का मन्त्र १२७
८९. केशर मन्त्र १२८
९०. शंख गायत्री मन्त्र-१ १२९
९१. पवित्री स्थापना मन्त्र १३०
९२. सामग्री बरसाने (स्थापने) का मन्त्र १३१
९३. करद का मन्त्र १३१
९४. पात्र स्थापन मन्त्र १३२
९५. खिरे का मन्त्र १४१
९६. पायल मन्त्र १४१
९७. आखा मन्त्र १४५
९८. आसन मन्दर में जाने का मन्त्र १४६
९९. अथ जाग्रत विधान १४७
१००. अथः आसन विधान (मन्त्र) १४८
१०१. पीर आसन मन्त्र १४८
१०२. अथः योगिणी मन्त्र १४९
१०३. अथः साखियाँ मन्त्र १४९
१०४. अथः वीर आसन मन्त्र १४९
१०५. अथः भण्डारी गादी (मन्त्र) १५०
१०६. अथः अनन्त गादि (मन्त्र) १५०
१०७. आसन मन्त्र १५१
१०८. खिरिया पवित्री मन्त्र १५२

१०९. खीरे (अंगार) प्रकाश मन्त्र १५२
११०. हिंगोल मन्त्र जाप १५३
१११. अथ: कर्म मन्त्र १५७
११२. गत गंगा जोत प्रकाश (खीरे) १५७
११३. साखियाँ पवित्री प्रकाश १५८
११४. अथ: गणेश गायत्री १५९
११५. अखण्ड संस्थाप्य महामाया मन्त्र १६१
११६. सतयुग (गण) जोत मन्त्र १६१
११७. त्रेतायुग (गण) जोत मन्त्र १६२
११८. द्वापरयुग (गण) जोत मन्त्र १६२
११९. कलयुग (गण) जोत मन्त्र १६३
१२०. कलश जोत मन्त्र १६३
१२१. हिंगलाज माता की जोत जगाने का मन्त्र १६४
१२२. भैरव ज्योत मन्त्र १६६
१२३. कैलाश पर जोत जगाने का मन्त्र १६७
१२४. गत (गंगा) जोत प्रकाश (मन्त्र) १६८
१२५. अथ बीज बाला (मन्त्र) १६८
१२६. भण्डार ज्योत (मन्त्र) १७२
१२७. धूप वासना मन्त्र १७७
१२८. (आखा) अक्षत बरसाने का मन्त्र १७८
१२९. अथ् श्री सुन्दरी बाला जाप बीज मन्त्र १७८
१३०. इति आह्वान मन्त्र १८१
१३१. चक्रघट मन्त्र पाठ १८१
१३२. अथ: कैलाश दर्शन मन्त्र १८४
१३३. केशर (चढ़ाने का) मन्त्र १८५
१३४. जोत का बीज मन्त्र १८५
१३५. हुकुम जाप १८६
१३६. कंगन (कलावा) मन्त्र १९२

१३७. भण्डारा खोलना (परदा हटाना) मन्त्र १९३
१३८. भोग लाने का मन्त्र १९४
१३९. पात्र थापने का मन्त्र १९४
१४०. परदा भोग (मन्त्र) १९५
१४१. भोग लगाने का मन्त्र १९५
१४२. भैरव जी के (पात्र) कुण्डा (मन्त्र) १९६
१४३. जुगती का कुण्डा स्थापना मन्त्र १९६
१४४. जुगती कुण्डा में केशर चेताने का मन्त्र १९८
१४५. भैरव बीजियाँ शोधन मन्त्र (भोग मन्त्र) १९८
१४६. ज्योत केशर चेताने का मन्त्र १९९
१४७. हरड़ा चढ़ाने का मन्त्र १९९
१४८. पंच पात्र मन्त्र २०१
१४९. अथः सूर जीवन बाला (मन्त्र) २०८
१५०. चिरा मन्त्र २०८
१५१. दर्शन मन्त्र २०९
१५२. ★ भगवे का मन्त्र २०९
१५३. ★ नाद जनेऊ मन्त्र २१०
१५४. तिलक दान २११
१५५. गोरक्ष पंच मात्रा २१३
१५६. अथः पुतले को फूंका देने का मन्त्र २१४
१५७. अथ उपदेश (मन्त्र) २१५
१५८. प्रार्थना मन्त्र २१९
१५९. अक्षत मन्त्र २१९
१६०. बाला सुन्दरी ज्योत को पगे लगाने का मन्त्र २२०
१६१. बाला सुन्दरी चारों ज्योत को पगे लगाने का मन्त्र २२१
१६२. हिंगलाज ज्योत पगे लगाने का मन्त्र २२१
१६३. भैरव ज्योत पगे लगाने का मन्त्र - १ २२१
१६४. भैरव जोत पगे लगाने का मन्त्र - २ २२२

१६५. गणेश ज्योत पगे लगाने का मन्त्र २२३
१६६. भण्डार ज्योत पगे लगाने का मन्त्र २२४
१६७. गत गंगा ज्योत पगे लगाने का मन्त्र २२४
१६८. चार जुग की ज्योत पगे लगाने का मन्त्र २२४
१६९. अखण्ड जोत (बालासुन्दरी) जोत नमन २२५
१७०. पीर गादी पगे लगाने का मन्त्र २२७
१७१. जोगन गादी पगे लगाने का मन्त्र २२७
१७२. साखियाँ गादी पगे लगाने का मन्त्र २२८
१७३. वीर गादी पगे लगाने का मन्त्र २२८
१७४. भण्डार गादी पगे लगाने का मन्त्र २२९
१७५. अनन्त गादी पगे लगाने का मन्त्र २२९
१७६. टैलुवा गादी पगे लगाने का मन्त्र २२९
१७७. कोतवाल गादी पगे लगाने का मन्त्र २३०
१७८. टहल की पवित्री का मन्त्र २३१
१७९. अथ शंख बाला २३२
१८०. अथ पांच शंख २३८
१८१. अथ् बाला बीज मन्त्र २४२
१८२. अथ् धर्मराज गुरू भावली २४८
१८३. मोक्ष गायत्री २५१
१८४. अथ यम जंजीरा २५२
१८५. यम-पार-गली-स्तवन मन्त्र २५४
१८६. ओं वैराट मन्त्र २५६
१८७. विर अस्त्र (मन्त्र) २५७
१८८. अथ भण्डारी-पंच शंख २५९
१८९. अथ भण्डार मन्त्र २६०
१९०. अथ टहलवा गायत्री २६३
१९१. अमृतबाला (मन्त्र) २६४
१९२. अथ कोटवाली २६६

१९३.	संजीवन बाला	२७०
१९४.	जुगत (कुण्डा) बरसाने का मन्त्र	२७१
१९५.	जुगत मन्त्र कौली	२७२
१९६.	ऋषि (ऋष) मन्त्र	२७३
१९७.	देवद्वारे समीपे प्रार्थना मन्त्र-२	२७६
१९८.	उपदेशी गुरू मन्त्र (अथ उपदेश मन्त्र)-१	२७८
१९९.	इत्युपदेश	२७८
२००.	योगमाया उपदेशी मन्त्र-२	२७९
२०१.	अथ गुरू मन्त्र -३	२७९
२०२.	श्री गुरू मन्त्र का महात्म्य (मन्त्र)	२७९
२०३.	महात्म्य	२८०
२०४.	बाला सुन्दरी बीज मन्त्र	२८७
२०५.	उपदेशी मन्त्र-४	२८९
२०६.	उपदेशी तारक मन्त्र -५	२९०
२०७.	योगमाया महात्म्य पाठ	२९०
२०८.	उपदेशी मन्त्र-६	२९१
२०९.	★ करद (कर्द) मन्त्र	२९१
२१०.	अथ साधक कर्म (मन्त्र)	२९२
२११.	शंख गायत्री मन्त्र- २	२९३
२१२.	पुतला पूजन मन्त्र - १	२९४
२१३.	परदा (द्वार) खुलने का मन्त्र	३०२
२१४.	अथ शंख गायत्री -३	३०३
२१५.	पूतला पूजन मन्त्र -२	३०६
२१६.	पिचान शंख गायत्री	३०९
२१७.	पुतला पूजन मन्त्र -३	३११
२१८.	ब्रह्म ज्ञान मन्त्र जाप	३१५
२१९.	सुमरण मन्त्र	३१८
२२०.	अथ् धर्म शंख	३२४

२२१.	काल गायत्री	३२६
२२२.	अथ संख्या ढाल अन्त कर्म	३२७
२२३.	(भण्डार में से) भोग लाने का मन्त्र	३३४
२२४.	पात्र स्थापन मन्त्र	३३४
२२५.	परदा भोग (मन्त्र)	३३५
२२६.	कर पखालने का मन्त्र	३३५
२२७.	अथ नीम मन्त्र	३३५
२२८.	मिठ्ठी माई मन्त्र	३३६
२२९.	नीम का बीज मन्त्र	३३६
२३०.	अथ दश बिल पात्र	३३९
२३१.	चक्र गायत्री मन्त्र	३४०
२३२.	सरजित बाला मन्त्र	३४६
२३३.	हंस बाला मन्त्र	३४७
२३४.	मृतक बाला मन्त्र	३४७
२३५.	कैलाश जाने का मन्त्र	३४८
२३६.	अथ पौड़ी मन्त्र	३४९
२३७.	अथ सात सीढ़ी मन्त्र	३५१
२३८.	जम (यम) फारखती	३५६
२३९.	अघोर चेतने का मन्त्र	३५८
२४०.	पल्लु की पवित्री मन्त्र	३६१
२४१.	अथ जवाहरा (ज्वाहरा) बीजाने का मन्त्र	३६२
२४२.	पल्लु झूलन मन्त्र	३६२
२४३.	अथ् पल्लु मन्त्र -१	३६४
२४४.	झोली का मन्त्र	३६५
२४५.	अथ् पल्लु मन्त्र -२	३६६
२४६.	विर झेलने का मन्त्र	३६७
२४७.	कमाई शोधन मन्त्र	३६७
२४८.	कमाई चेतने का मन्त्र	३६८

२४९. अथ: ठोकरे का मन्त्र ३७२
२५०. अघोर बाला मन्त्र ३७३
२५१. अथ: अघोर गायत्री ३७४
२५२. पुतले को समाधि देने का मन्त्र ३७५
२५३. अथ समाधि गायत्री ३७६
२५४. कलयुग जोत समाप्ति मन्त्र ३७९
२५५. नख का मन्त्र ३८१
२५६. अथ मुर्ला मन्त्र ३८१
२५७. कुण्डा उठाने का मन्त्र ३८२
२५८. श्री फल (मन्त्र) ३८३
२५९. कलश उठाने का मन्त्र ३८३
२६०. आसन उठाने का मन्त्र ३८३
२६१. चक्र छूटने का मन्त्र ३८४
२६२. जल गायत्री (संक्षिप्त) ३८७
२६३. तिलक मन्त्र ३८७
२६४. ★ आखा मन्त्र (अक्षत मन्त्र) ३८८
२६५. अमृत बून्द (मन्त्र) ३८८
२६६. शक्ति (हवन) मन्त्र ३८९
२६७. भैरव मन्त्र पाठ ३९१
२६८. पद्मावती (मन्त्र) ३९५
२६९. विसर्जन (मन्त्र) ३९६



श्रीनाथ सिद्धों की-शंखढाल

(योगमाया-पूजन-पद्धति)

श्रीनाथ रहस्य - चतुर्थ खण्ड

प्रथम रहस्य

(१) समाधि

(उत्तर क्रिया विधि)

"मृत्यु" हर प्राणी के जीवन का एक कटु सत्य है। कोई मृत्यु का सामना करते हुये मृत्यु को अपनाता है तो कोई डर कर मृत्यु को प्राप्त होता है। कोई हंसते-हंसते, तो कोई दु:खी होकर मरता है। अर्थात् मृत्यु अवश्य होती है। इस प्रकार इस कटु सत्य को जानते हुए किसी को वैराग्य तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है तो कोई मृत्यु आने से पूर्व मौज-मस्ती, सुख-भोग, ऐशो-आराम आदि का उपभोग कर इच्छाओं को पूर्ण करने का प्रयास करते हैं।

साधु-सन्त, ज्ञानी-वैरागी, त्यागी-तपस्वी तथा ध्यानी-योगियों ने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अमरत्व पाने की कोशिशें की किन्तु मृत्यु एक अटल सत्य है। विधाता की कृपा है। सृष्टि का वरदान है। संसार का सार है। मुक्ति का मार्ग है। मृत्यु तो इस दुस्तर माया से स्वतंत्रता है।

हमारे नाथ सिद्धों ने मृत्युंजय होने की अनेकों कोशिशें की, फिर चाहे योग साधनों से, चाहे मंत्र-तंत्र से, चाहे (मृतसंजीवनी) वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों से, चाहे पुण्य कर्मों से, ऐसे अनेक प्रयास अमर होने के लिए किये। किन्तु कोई कोई बिरला ही इस अमरत्व को प्राप्त कर सकें। जो देवी-देवताओं को भी दुर्लभ है, और वह बिरला और कोई नहीं वह प्रत्यक्ष शिव स्वरुप, ज्योति स्वरुप, सम्पूर्ण जती, समस्त प्राणी मात्र के सतगुरु, गुरु गोरक्षनाथ जी हैं।

ऐसे गुरु गोरक्षनाथजी अपने नाथ सिद्ध योग साधना के अनुभव से

कहते हैं-

"मरौ वे जोगी मरौ, मरौ मरण है मीठा।
तिस मरणी मरौ, जिस मरणी गोरख मरि दीठा।।"

अर्थात् हे अवधूत, हे योगी, योग करो, साधना करो, योग साधना में मर मिट जावो जहाँ मरण मृत्यु एक मीठा अमृत है। नाथ सिद्धयोगियों की यह परम उच्च अवस्था है। जहाँ योगी साधना में मन चित्त अहंकार का निरोध करके जीव अवस्था से आत्मा अवस्था में (स्थूल से सूक्ष्म में, द्वैत से अद्वैत में) प्रवेश करता है। और यही उसकी जगत माया के दृष्टि कोण से मृत्यु अवस्था है। जिसमें वह अमृतपान करता है और यही अमृतपान, मीठा मरण है। अर्थात् समाधि अवस्था में मन-चित्त -काया-इन्द्रियों का उसे ज्ञान नहीं रहता और वह मीठा अमृतपान करता रहता है। ऐसे ही अमृतपान, मीठा मरण को गोरक्षनाथजी ने स्वयं प्राप्त किया है।

जिस प्रकार अपने सक्षम साधना में योगी मीठी मृत्यु का अनुभव करता है। उसी प्रकार इस भौतिक मायामय इहलोक से देह त्याग करके निर्वाण पद को प्राप्त कर लेता है। अर्थात् अपने काया इन्द्रियों तथा मोहमाया को छोड़कर परलोक सिधार जाता है।

आदि अनादि पूर्व काल में नाथ सिद्ध योगेश्वरों के प्रयाण काल में स्वर्ग से पुष्पक विमान लेने आते थे। और योगेश्वर स्व-शरीर के साथ स्वर्ग लोक जाते थे। कोई बिरला तो अपनी काया को साथ ले उड़कर आकाश (स्वर्ग में) गमन करते हुए जीवन लीला समाप्त करते थे इनको केवल पवनगामी, पवनहारी इत्यादि कहते हैं। इस प्रकार स्वकाया स्वर्ग सिधारना नाथ सिद्ध योगी सुन्दरनाथजी ने किया था। कुछ सिद्ध महात्मा अचानक अदृश्य हो जाते हैं कोई योगेश्वर धरती को फाड़कर धरती में विलीन हो जाते हैं। जैसे माता सीता ने धरती समाधि

ली थी।

आगे-आगे समय अनुसार तथा समय परिवर्तनानुसार स्व इच्छा से योगेश्वर जीवित जल या थल समाधि लेने लगे, आज भी लेते हैं। कुछ सिद्ध महात्मा योगेश्वर स्वेच्छा से अर्थात् शरीर के सभी कर्म, व्यवहार को सम्पूर्ण त्यागकर केवल ईश्वर चिन्तन करते-करते जीवन त्यागते हैं। तथा कोई महात्मा संतजन अपना उत्तरार्ध जीवन पर्वतीय क्षेत्र हिमालय या किसी धाम में या पुरी में जहाँ मुक्ति प्राप्ति स्थान हो वहाँ बिताते हैं। अन्तकाल में पाँच पाण्डव तथा शंकराचार्य इत्यादि ने हिमालय क्षेत्र में प्रयाण किया था।

बहुत से सिद्ध योगीजनों को अपनी मृत्यु की सूचना मृत्यु से पूर्व ही हो जाती है। और वह अपने शिष्य एवं भक्तों को समाधि (प्रयाण) का वर्ष-दिन यहाँ तक कि समय भी बता देते हैं। उत्तर क्रिया कैसे निभायी जाये? लेन-देन-व्यवहारिक कर्म-धर्म-धूनी-पाणी, पूजा-पाठादि सभी कर्म का वह पहले ही ज्ञान करवाते हैं। प्रिय शिष्य को उत्तराधिकार-स्थान मकान के व्यवहार इत्यादि का स्पष्टीकरण पहले ही करा देते हैं। ताकि बाद में किसी को कोई सन्देह ना रहे। सारे प्रश्न पहले ही हल कर देते हैं। तथा समय अनुसार अपने पास जो कुछ भी हो वह सब सत्कर्म-दान धर्म में लगाकर समाधि लेते हैं। ताकि आशा-इच्छायें, संकल्प विकल्प तोड़ना इत्यादि माया मोह से निवृत्त होकर मोक्ष मुक्ति को प्राप्त कर सकें।

नाथ सिद्ध योगी सम्प्रदाय भेष बाहर पंथ सतनाथ (ब्रह्मा के) योगेश्वरों को संम्प्रदाय के सभी पंथ के मृत योगेश्वरों के समाधि विधियों का विधि विधान करने का अधिकार है, अगर सतनाथ के योगी उपलब्ध नहीं हो तो धर्मनाथी या राम के योगी समाधि विधि विधान कर सकते हैं। समय पर कोई भी नहीं हो तो मृत योगेश्वर का शिष्य या भक्त जन भी

इस ग्रन्थ के मार्गदर्शन अनुसार विधि कर सकते हैं।

(क) मृत योगेश्वर की प्राथमिक विधि

जब नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वर अपनी स्थूल देह त्यागकर निर्वाण पद को प्राप्त करते हैं। अर्थात् समा (मृत) जाने के पश्चात् माननीय साम्प्रदायिक अधिकारी तथा विशेषत: सतनाथ पंथ के योगेश्वर मृत योगेश्वर के शिष्य गण एवं भक्त मण्डल सेवक तथा नाथ योगेश्वरों को सन्देश देकर आमंत्रित किया जाता है। सर्वप्रथम सतनाथ के योगी पूर्व तैयारी करके और साहित्य जुटाकर प्रथम उस मृत योगेश्वर को निम्न मन्त्र से चौकी ऊपर बिठाते हैं।

आसन मन्त्र-१

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी मन मारु मैदा करु, करु चकनाचूर। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो बैठू आसन पूर। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

मृतक के चारों दिशा में परदा लगाते हैं। वातावरण के अनुकूल गरम या ठंडा जल द्वारा सब मिलकर स्नान कराते हैं। यहाँ अधिकारी निर्देशन अनुसार कर्म कराते हैं। तथा सतनाथ ब्रह्मा के योगेश्वर सभी क्रियाओं के मन्त्रोच्चार करते हैं अगर सतनाथ पंथ नहीं हो तो धर्म नाथी या राम के योगी भी मंत्रोच्चार कर सकते हैं।

[**विशेष:**- योग साधना, जप, अनुष्ठान, ध्यान को बैठते समय इस मन्त्र को ११ या २१ चावल लेकर ११ या २१ बार जपकर आसन के चारों तरफ छोड़ें। आसन सिद्ध होकर साधना में रुची आयेगी।]

बना बनाया गौ (गाय का) पंचगव्य जिसमें गौ-घी, गौ-दूध, गौ-दही, गौ का थोड़ा गोबर और गौ का थोड़ा मूत्र (गौमूत्र) यह सब एक पात्र में मिलाकर तैयार करते हैं। और स्नान के समय मृत योगेश्वर

के शीश-शरीर पर डालते हैं। और निम्न मन्त्रोच्चार करते हैं।

(पंच गौव्य संस्कार) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी।। ॐ तन धोये मन धोये भये सकल संस्कार। गौ माता कामधेनू पिण्डप्राण उद्धार। माता गंगा को शीश नवाय हुक्म गुरु का पाय, शिव पूंजू शक्ति पूंजू, पूंजू गुरु के पाव, पाँच महेश्वर आज्ञा करे तो पंचगव्य दे बरसाय। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- इस मन्त्र से ४१ दिन स्नान के जल में थोड़ा पंचगव्य डालकर स्नान करने से बाहरी या ऊपरी बाधायें नष्ट होती हैं। काया अशुद्ध से शुद्ध होती है।]

तद्पश्चात् गंगा जल से निम्न जल गायत्री मन्त्रोच्चार करते हुए सभी स्नान करवाते हैं।

जल गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जल मन्जन, जल देवता, गुरु मन्जन गुरु ज्ञान। हाथ मन्जन धर्तरी अलष पुरुष का ध्यान। पानी पानी महापानी सोती काया अमर कर जानी। उड़े न हंस बिखरे न काया, शिव शक्ति ने ध्यान लगाया। ॐ अलील आदि अलील, अलील पुरुष की माता क्वारी, पिता यति, नित्ययोगी धरे धीर, निरोग हो काया, वज्र हो शरीर झड़े पारा पीवे योगी उड़े काया अलख निरन्जन तेरी माया। ॐ जल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात। इतना जल गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

सभी योगेश्वर मृतक के शिष्य तथा भक्त जन स्नान करवाते हैं।

नये तौलिया से शरीर सुखाते हैं। अत: निम्न मन्त्र से नया लंगोट पहनाते हैं।

लंगोट मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अजरका वज्र करु, वज्र का बन्द लगाऊं? शील का लंगोट, सन्तोष का धागा। ऊन का आडबन्द कमर में लागा। नागा पहिरे नागफणि, हनुमन्त पहिरे लंगोट। गुरु महाराज का बाल गोपाल कोपिन पहिरे, नवनाथ चौरासी सिद्धों की ओट। अदल की कोपीन-वज्र का धागा, योगीश्वर कोपीन चढ़ावन लागा। शिव निर्माण पारा डिंगे अलष पुरुष की आन। पारा पारा महापारा, पारा राखे गुरु हमारा पारा उतरे सहस्रधारा? सन्त रहे काल से न्यारा। पारा नाक रास्ते उतरे नासकेतु की दुहाई? कान रस्ते उतरे कर्ण की दुहाई? मुख रस्ते उतरे ब्रह्मा की दुहाई? गुदा रस्ते उतरे गणपति जी की दुहाई? लिंग रस्ते उतरे हनुमन्त जती की दुहाई? उल्टा पारा काया को चढ़े, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई स्फुरे! इतना लंगोट मन्त्र सम्पूर्ण भया श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: मृत योगेश्वर को नये भगवा वस्त्र पहनाते हैं। (वस्त्र सिलाई किये हुए नहीं पहनायें) तथा शीश पर साफा बांधते हैं। और निम्न मंत्रोच्चार करते हैं।

भगवे का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी ॐ सोहं धुन्धुकारा शिव-शक्ति ने मिल किया पसारा, नख से चीर भग बनाया-रक्त रुप में भगवा आया। अलष पुरुष ने धारण किया तब पीछे सिद्धों को दिया। आवो सिद्धों धरो ध्यान, भगवा मन्त्र भया प्रमाण

इतना भगवा मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

मृतात्मा दर्शणी हो तो उनके कानों में मृतीका के कुण्डल डाले जाते हैं कलियुग में मृतीका के कुण्डल शुभ एवं वरदान मानते हैं। अत: निम्न मंत्र से मृतीका के कुण्डल डालना चाहिए।

कुण्डल (दर्शन) मन्त्र

सतो नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ नाद सों मुद्रा, कौन मुद्रा खेचरी बोलिये? कौन मुद्रा भोचरी बोलिये, कौन मुद्रा धरे ध्यान कौन मुद्रा कथे ज्ञान? ॐ गुरुजी ताँबे की मुद्रा खेचरी बोलिये, स्फटिक की मुद्रा भोचरी बोलिये। गण्डे की मुद्रा धरे ध्यान; मृतक की मुद्रा कथे ज्ञान, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के कान नीचे धरत्री, ऊपर आकाश, रक्षा करे श्री दादा मत्स्येन्द्र नाथ। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

निम्न मन्त्र से नादी पावित्री का जनेऊ डाला जाता है। जिसे नाथ सिद्धों का बाना कहा जाता है।

नाद जनेऊ मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! आदि में शून्य, शून्य में ओंकार? आओ सिद्धो नाद बिन्द का करो विचार। नादे चन्द्रमा, नादे सूर्य, नाद रहा घट पिण्ड भरपूर, नाद काया का पेखना, बिन्द काया की राह। नाद बिन्दे योगिया तीनों एक स्वभाव? बाजे नाद भई प्रतीत, आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अतीत। नाद बाजे काल भागे, ज्ञान की टोपी गोरक्ष साजे। डंकनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्दाई, बाडे घाटे टल्ल जागे। सुन सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई। टिल्ला शिवपुरी का स्थान-चार युग में मान,

मूल चक्र मूल स्थान? पढ़ मन्त्र योगी नाद बजावे छत्तीस भोजन अमृत कर पावे। बिना मन्त्र पढ़े योगी नाद बजावे तीन लोक में कही ठौर न पावे। जो जाने नाद बिन्द का भेव-आप ही कर्ता आप ही देव? सन्ध्या शिवपुरी का बेला-अनन्त कोटि सिद्धों का युग युग मेला इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण भया। नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

मृतयोगेश्वर के बायें भुजा (कन्धे पर) सवा मीटर भगवे वस्त्र की झोली बनाकर उसमें श्री नाथजी का कच्चा रोट, ४-५ मीठा बुन्दी का लड्डु, सवा रुपया तथा मृतात्मा को कोई व्यसन (शौक) हो तो सुलफा-गांजा या भांग भी रख सकते हैं या तो उनका प्रिय पदार्थ रखना चाहिए। ऐसी झोली तैयार करके निम्न मन्त्र से झोली पहनायें।

झोली मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कौन दिल कुन दुरवेश कौन पुरुष ने मुण्डे केश। ॐ गुरुजी दिल दरयाव मंत्र दुरवेश। अलख पुरुष ने मुण्डे केश। झोली हमारी कामधेनु, संसार हमारी बाड़ी। गुरु प्रताप से भिक्षा मांगू अन्त काल में सारी। जारो बल का नगर में खबर कर। नागा निर्वाणी अवधू आया है। जाग तो जंजीर जड़ा, पग जड़ा तोड़ा गले माला पैर धागा। गुरु देवन के चरण कमल में चित्त लागा। इतना झोली जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त करोड़ सिद्धा में गादी बैठ गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भस्मी मन्त्र से त्रिपुण्ड भस्म मस्तक पर लगावे।

भस्मी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। भभूत

माता भभूत पिता, भभूत तरण तारणी। मनुष्यते देवता करे, भभूत कसट निवारणी। सो भस्मती माई, जहा पाई तहा रमाई। आदके योगी अनाद की भभूत सत के नाती धरम के पूत।। अमृत झरे धरती फुरे, सो फल माता गायत्री चरे। गायत्री माता गोवरी करी, सूरज मुख सुखी अग्नि मुख जरी। अष्ट टंक भभूत नव टंक पाणी, ईश्वर आणी पार्वती ने छाणी सो भस्मती हस्तक ले मस्तक चढ़ी। चढ़ी भभूत दिल हुवा पाक, अलख निरन्जन आप ही आप। इतना भभूती मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- उपरोक्त लंगोट, भगवा, कुण्डल, नाद जनेऊ, झोली भस्मी मन्त्र सिद्धि विधि श्रीनाथ रहस्य खण्ड तृतीय में पृ.सं. = ४८६, ४९२, ५१६, ४६७, २०५, ५२१ दिया है।]

मृत योगेश्वर को उच्चासन बनाकर निम्न मन्त्र से बिठावें।

आसन मन्त्र-२

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आसन पूरो सिहांसन पूरो, पूरो कंचन काया। सर्वस्व त्याग गुरु वचन धरती माता तेरे मे शरण आया। मन मारु तन वश करु, करु चकनाचूर। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो बैठू आसन पूर। इतना आसन मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

उपरोक्त आसन की भूमि गोबर से लिपे हुये जो दर्भासन या कुशासन से बिछौने से संस्कार किये हुये भूमि स्थान पर मृत योगेश्वर को बिठाना चाहिये क्योंकि इस संस्कारित भूमि मण्डल के सामीप्य ब्रह्मा, विष्णु रुद्र एवं अग्नि बैठते हैं। बिना मण्डल करने से पिशाच, भूत-प्रेत, राक्षस तथा यम दूत प्रवेश करते हैं। मृत योगेश्वर के गले में फूल पुष्प माला चढ़ावे तथा सम्पूर्ण शरीर पर इत्र छिड़के तथा गुलाब

पानी, स्प्रे इत्र छिड़कें। उनके मुख में स्वर्ण रत्न डाले या एक मुखी रुद्राक्ष का अभिषेक किया हुआ (गंगाजल) जल मुख में डालें या कैलास मानसरोवर जल-त्रिवेणी संगम जल या सप्त सरोवर का जल डालें और निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

जल गायत्री (संक्षिप्त)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गंगाजल बिम्बाय विद्महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इससे मृत योगेश्वर पवित्र होकर पुनजन्मों को योनियों से छूटकर शिवलोक को जाता है। (मृत्यु समय गंगा मां का केवल नाम स्मरण करने मात्र से मोक्ष मुक्ति को प्राप्त होता है। "हे गंगा माता मुझे शिवलोक में ले चलने की कृपा करें" ऐसे कहते ही मृतात्मा शिवलोक कैलास को जाता है।)

इसके पश्चात् गोरक्ष गायत्री नवनाथ जाप, गोरक्ष स्त्रोत या वेद, गीता, उपनिषद के पाठ करने से मृतात्मा की मुक्ति होकर वायुलोक या शिवलोक में जाते हैं।

इस प्रकार मृतात्मा को उच्चासन बिठाया जाता है। तब वहाँ उनके शिष्यगण तथा नाथ सम्प्रदाय के अधिकारी तथा मानधारी, पीर महन्त एवं त्यागी तपस्वी तथा अन्य योगी जन मृतात्मा को सम्मान देते हुये चिप्पी (दान) करते हैं। पुष्प तथा पुष्पमाला चढ़ाते हैं। कोई कम्बल, चद्दर, भगवा वस्त्र चढ़ाते हैं। और नादि आदेश करके सम्मानित करते हैं। भक्त लोक भी इच्छानुसार चिप्पी दान, वस्त्रदान आदि भेंट चढ़ाते हुए नमस्कार करते हैं। शंख बजाया जाता है। इच्छानुरुप ढोल, बाजा, शहनाई आदि का इंतजाम कर जुलूस भी निकालते हैं।

इस प्रकार प्राथमिक क्रिया कर्म होने के पश्चात् मृतात्मा योगेश्वर को जल समाधि या थल समाधि निम्न विधि से दी जाती है।

प्रथम जल समाधि विधि निम्न प्रकार है।

(ख) जल समाधि विधि

जल समाधि विशेषत: बड़ी बड़ी नदियों के किनारे निवास करने वाले महात्मा अपनाते है (गंगा, जमुना, कृष्णा, कावेरी, नर्मदा आदि) अर्थात् यह जल समाधि जल उपलब्धि अनुसार दी जाती है। मृतात्मा के स्नान, आसन, श्रृंगार, आदेश नमस्कार इत्यादि क्रिया विधि उपरोक्त मन्त्र विधि से करने के पश्चात् मृतात्मा का जुलूस निकालकर या किसी वाहन द्वारा नदी किनारे (श्मशान) घाट पर ले आते है। यहाँ पर एक ५ × ५ × ५ फुट का लकड़ी के फट्टे वाला बक्सा बनाकर उसमें मृतात्मा को पद्मासन लगा के बिठाते है। तथा सतनाथ ब्रह्मा के योगेश्वर निम्न मन्त्र बोलते है।

मृतक के आसन बिठाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। बीज मन्त्र तत परवाना काया खोजो जोत समाना। अलख कूट अलख उपाया। तीन लोक ब्रह्मा मिल छाया। तीन लोक त्रिकुटि द्वारा। जगमग जोत हुई प्रकाशा। इस बीज मन्त्र का अंत किस विरले ना पाया। गुरु वचन योगेश्वर को पात्रासन बिठाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अब मृतात्मा का सभी साहित्य फूल, मालायें, वस्त्रादि बक्से में रखते हैं और उनके शीश पर मिट्टी का ठीकरा उल्टा थापकर रखते हैं। ठिकरा मस्तक पर रखने का अर्थ ऐसा है कि खोपड़ी फूटकर हंस उड़ता है। अन्त समय योगी योग द्वारा प्राण को सहस्त्रगार या ब्रह्मरन्ध्र

अर्थात् मस्तक में लाकर रखते हैं। ठीकरा मस्तक पर चढ़ने पर प्राण सुरक्षित होते हुये योगी की समाधिस्थ अवस्था में शीघ्र ही मुक्ति होती है।

अत: शीश ठीकरा रखते समय निम्न मन्त्र सतनाथ पंथ के योगेश्वर बोलते हैं।

ठीकरा मन्त्र-१

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी।

ॐ ठीकरा सोंह ठीकरा धर्ती ठीकरा ठाट।।

सों ठीकरा आगे धरा गत गंगा के घाट।।

पवन मुख सुखा, अग्नि मुख जरा सो ठीकरा से माथे धरा। ठीकरा नहीं यह ठाट है। उरध घाटिका बाट है।। पढ़ो गुणों योगेश्वर ठीकरे का तत्सार। सत की पौड़ी पग धरे हंसा उतरे पार।। इतना ठीकरा मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। अनंत कोट सिद्ध में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अब बक्से में कुछ चीनी कुछ वजन हेतु पत्थर डालकर ४-६ योगेश्वर मृतात्मा को गंगाजी में प्रवाहित (बहाकर) कर देते हैं। या गहरे जल में डुबो देते हैं। तब सतनाथी योगेश्वर निम्न मन्त्र बोलते हैं।

जल समाधि गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी।

ॐ आदि में सत्य, सत्य की धरती, धरती माता तोय पीवे, तोया तेज में जले बले, तेज वायु वासना वासलै। वायु ग्रास लै आकाश गलै। हंस उड़ै, सत्त की काया गले। तिसकी रक्षा जती गुरु गोरक्षनाथ जी करे। ॐ जले हिन्दु मुसलमान को दबाया।

अलील पुरुष तुम जागो योगेश्वर तुम्हारे शरण में आया। कहोरे बालका कहां से आना कहां जाना है। ॐ गुरुजी। अगम से आया, निगम को जाना है।

मांस गलै अलील पुरुष लाजै। चाम गलै तो महादेव लाजै। हाड़ गलै तो गुरु गोरक्षनाथ जी लाजै। पड़े पिण्ड निरंजन लाजै।

पड़े पिण्ड उड़े हंस सद्गुरां का हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति गुरु शबद का वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड उड़े हंस मनसा अलील ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति अलीलपुरी में वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड उड़े हंस विष्णु महालक्ष्मी ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति विष्णुपुरी का वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड उड़े हंस ब्रह्मा सरस्वती ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति ब्रह्मपुरी में वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड उड़े हंस शिव शक्ति ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति शिवपुरी में वासा, रक्षा करे गुरु गोरखनाथ जी बाला।

पड़े पिण्ड उड़े हंस अंत गोरखनाथ ने हुकम चलाया। आवो रे प्राणी मोक्ष मुक्ति परम धाम (अलखपुरी) में वासा, रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।

इतना जल सामधि मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। अनंत कोट सिद्ध में बैठकर गुरु गोरक्षनाथ जी पढ़ कथ कर सुनाया। श्री नाथजी

गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इसप्रकार उपरोक्त मन्त्र द्वारा समाधि क्रिया पूरण करते हैं। यहां जल गायत्री तथा अलील गायत्री भी बोली जाती है। अत: वापसी में सभी योगेश्वर-भक्त गंगा स्नान करते हैं या हाथ पैर धो लेते हैं, साथ में जल गायत्री भी बोलते हैं। [चित्र क्र० - १ में (अ) देखें]

कुछ नाथ सन्त महात्मा जल में जिन्दा समाधि लेते हैं।

(ग) जीवित (जिन्दा) जल समाधि

कुछ सिद्ध योगी जीवित जल समाधि लेते हैं। कोई कोई सार्वजनिक सभी को जाहिर करते हैं कि हम जल समाधि ले रहे हैं। फिर उनका सभी स्वागत करते हैं गले में पुष्पमाला ड़ालते हैं, ढोल ताशे बजाते हैं जुलुस निकालते हैं। सभी इच्छा का त्याग करके केवल जल तत्व में विलीन होकर मुक्ति पाना यही उनकी इच्छा होती है। कोई कोई एक अकेले एकान्त में जल समाधि ले लेते हैं। विषेशत: जिनको जल वसी सिद्धि प्राप्त होती है। उनकी आत्मा अन्त में जल में जलमय होती है। जैसे सन्त मीरा अन्त में श्रीकृष्ण में विलीन हो गयी थी।

यह जिन्दा जल समाधि में योगी अपने योग साधना के द्वारा, अर्थात् (श्रेष्ठ प्राणायाम) प्राणायाम का सक्षम अभ्यास करके बहुत ही कम मात्रा में प्राणवायु को काया के अन्दर लेते हैं। जो कि उनकी श्वासोच्छ्वास क्रिया बहुत ही धीरे-धीरे चलती है। और काया अन्दर कुम्भक क्रिया ज्यादा समय तक प्राण का संयम करते हैं। और प्राण को शीश मध्ये सहस्रगार चक्र में स्थित करते हैं। इस अभ्यास के कारण वह जल के अन्दर ज्यादा समय तक ध्यान साधना करते हैं। वह काया को जड़त्व करके जल के तले आसन लगाकर बैठते हैं। धीरे धीरे शरीर पैरों के तले से सुन्न (चेतनारहित) होता है प्रथम पैर सुन्न होते हैं फिर

पिण्डलियाँ-फिर घुटने, फिर जांघें, फिर कमर, पेट ..... नाभी... छाती ..... गला आदि सुन्न होकर शीश ब्रह्मरन्ध्र ही केवल चेतन रहता है। जब तक उसमें प्राण है वह सुन्न नहीं होता, कुछ दिन पश्चात् प्राण निकल जाने के बाद योगेश्वर की जल समाधि प्रयाण पूर्ण हो जाती है। [चित्र क्र० - १ (ब) देखें]

किसी योगेश्वर को जल वशीकरण सिद्धि प्राप्त होती है जो जल में नहीं डूबते तथा जल को आह्वान करके सूखे अकाल में बारिश करवाते हैं। या जल प्रपात को भी रोक सकते हैं। यह यौगिक सिद्धि है। अन्त समय समाधि लेते समय वह पद्मासन लगाकर जल के ऊपर (तैरते हुए) बैठ जाते हैं। और सक्षम योग सिद्धि द्वारा जब प्राण (आत्मा) को शीश मध्य सहस्रागार में लाकर स्थित करते हैं। कुछ दिन तक वह निर्वाण समाधि में रहते हैं। तत्पश्चात् वह पृथ्वी तत्व का आवाहन करते हैं। आवाहन मन्त्र द्वारा या योग द्वारा करते हैं। जिससे उनकी काया में जड़त्व आता है अब वह जल के तले जाकर बैठते हैं। ऐसे उनके योग प्रताप या सिद्धि प्रताप के कारण जलचर प्राणी तथा जल का कुछ भी प्रभाव नहीं होता जब तक प्राण (आत्मा) उनके शीश में स्थित होता है। वह गाढ़ समाधि में स्थित होते हैं। अगर इच्छा हो या कोई कार्य काज करना हो तो वह पुनः जीवित होकर आ सकते हैं। अतः कुछ दिन पश्चात् जब प्राण (आत्मा) काया के बाहर निकल जाता है। जो जल तत्व में विलीन होता है। जैसे जल से भरा हुआ मटका जल में होते हुए फूट गया तो मटके का जल, जल में विलीन हो जाता है वैसे ही इनकी आत्मा शरीर से बाहर आते ही जल में विलीन होती है। क्योंकि आत्मा सर्वव्यापक है। तदनन्तर योगी का शरीर जल में गल जाता है। या जलचर प्राणी शरीर को खा जाते हैं।

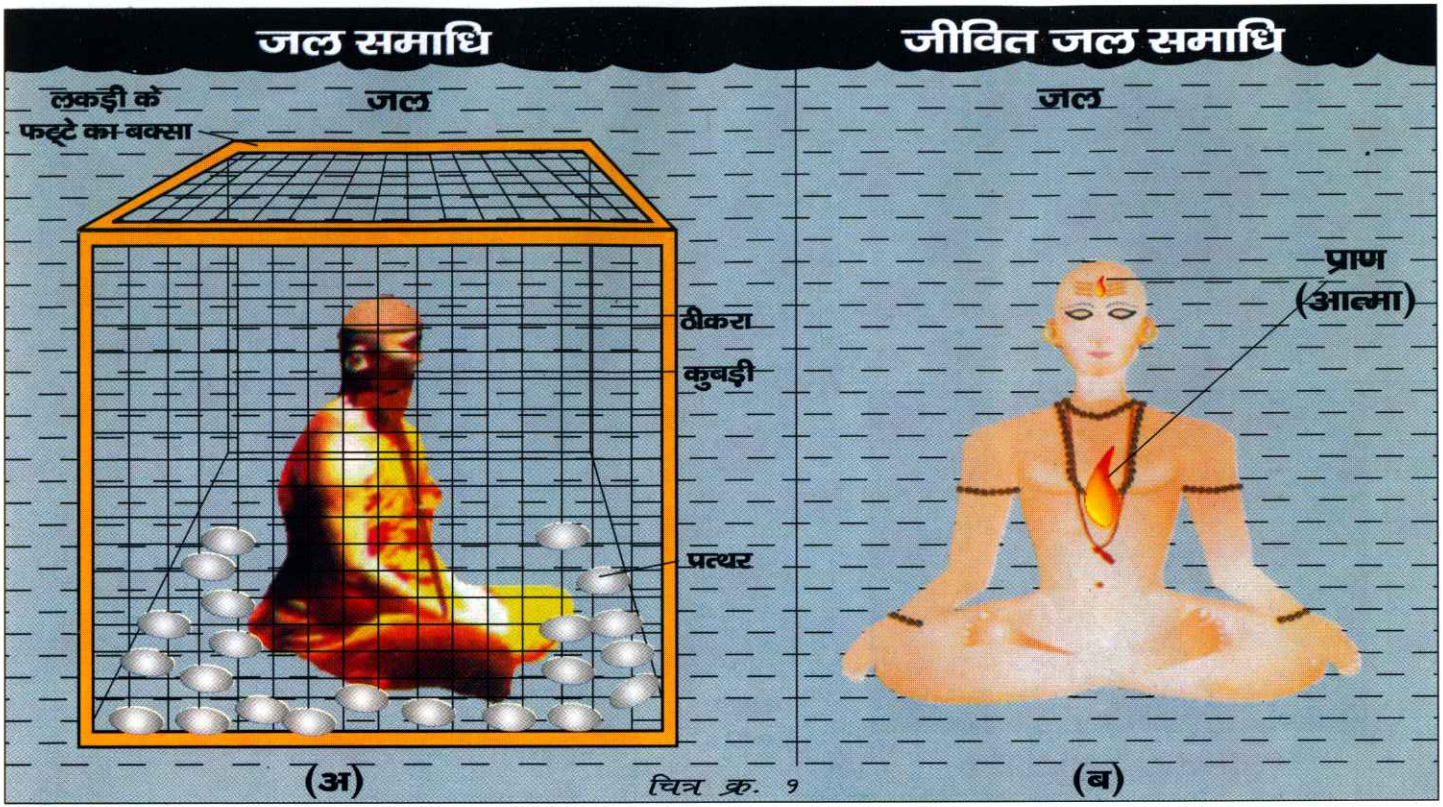
त्रेतायुग में प्रभु रामचन्द्र ने ऐसी ही जल समाधि सरयु नदी में सभी

भक्त सेवकों की उपस्थिति में ली थी। महाभारत में दुर्योधन को भी जल के अन्दर स्थित रहने की कला आती थी। इस प्रकार जल तत्व में समाधि लेते विलीन हो जाते हैं। इसी तरह भूमि में भी जिन्दा समाधि लेते हैं।

(घ) जीवित (जिन्दा) थल (भूमि) में समाधि

कुछ सिद्ध योगेश्वर जिन्दा थल समाधि लेते है। इसमें नियुक्त की हुई समाधि स्थान पर ६ × ६ फिट का गड्ढा बनाते है। उसमें ४ × ४ फुट की योगी गुफा बनाते है। और योगी समाधि का दिन समय निश्चित करके सभी शिष्य-भक्तों को बुलाकर स्पष्ट रुप से समाधि के विषय में बताते है। फिर जुलूस वगैरा निकालते है। योगेश्वर गुफा सन्मुख आकर सभी को आर्शीवाद देकर अपने उचित समय (मुहर्त) में गुफा में प्रवेश करते है। जोकि बाहर न आने का उनका दृढ़ संकल्प होता है। हठयोग से वह अन्दर पद्मासन या सिद्धासन लगाके बैठते है। अपने सक्षम प्राणायाम योग बल से अपने भूमध्य त्रिकुटी में प्राण लाकर स्थिर करते है। वहां उनकी स्थूल से सूक्ष्म अवस्था होती है। वह अपने आप सभी काया इन्द्रियादि को भूल जाते है। वह अपने सभी गुण संस्कार का खण्डन कराते है। सब कुछ विस्मरण होते होते शून्य अवस्था में रहते रहते वह केवल इतना ही महसूस करते है कि मैं आत्मा हूँ। आगे आगे मैं अर्थात् वह अहंकार भी खत्म होता है फिर केवल आत्मा ही आत्मा को देखता है। इस समय योगी के जगत के सभी व्यवहार खत्म हो जाते है। शिष्य भक्त समझते है कि गुरुजी अब नहीं रहे वह नमस्कार कर गुफा का मुख बन्द करते है। आगे भक्त उसी जगह समाधि स्मारक बनाके पूजते है।

यही योग क्रिया बल से कुछ योगेश्वर अपने बैठे आसन में ही काया त्याग कर परलोक (आत्मारुप) में सिधार जाते है। बाद में उनकी उपरोक्त विधि से समाधि बनाते है तथा पूजते है।



चित्र क्र. १

थल समाधि



(अ)

पवनगामी (समाधि)





पक्की समाधि (ब)

चित्र क्र. २

ऐसी जीवित जिन्दा थल समाधि सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ जी के शिष्य, बाबा रणपत मान धाताओं ने मठस्थल बोहर (रोहतक) हरियाणा में ली थी। तथा महाराष्ट्र में नेवासा ग्राम में योगी ज्ञानेश्वरनाथ जी तथा त्रयम्बकश्वर में योगी निवृत्तोनाथजी ने ऐसी समाधि सर्वसाक्षी ली थी।

कुछ योगेश्वर ऐसा ही गड्ढा बनाकर उसमें अपने आसन में बैठते हैं। और ऊपर से गड्ढा बन्द करने को कहते हैं। गड्ढे के अन्दर से एक नली लगाते हैं उसका एक छोर अपने मुख में और दूसरा छोर गड्ढे के बाहर निकालते हैं। अत: नित्य रोज उस नली में दो या एक समय दूध अथवा जल डालते हैं जो कि महात्मा अन्दर से उसे पी लेता है यह सब इसलिए करते हैं कि अपने चंचल काया इन्द्रियों को हठ योग में स्थिर करने के लिए उन्हें बन्दिस्त करते हैं। कुछ दिन साधना द्वारा प्राण को मस्तक में लाने के बाद दूध या जल पीना भी छुट जाता है। अपने आपको सुन्न करते हैं। सम्पूर्ण शरीर सुन्न होने पर केवल मन ही आत्म स्वरुप हो जाता है चित्त बुद्धि वहाँ खत्म हो जाती है। यह क्रियायें अतिषय धीरे-धीरे होती है जब अन्तिम समय आता है तो योगेश्वर आत्मस्वरुप आत्मानन्द में विलीन होकर, अर्थात् स्थूल से सूक्ष्म में जाकर जगत व्यवहार से मुक्त होता है। वहां माया उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अत: योगी आत्मरुप होकर परम-आत्मतत्व में विलीन हो जाता है।

इधर गड्ढे के बाहर नली द्वारा दूध या जल डालना रुक जाता है। तब यह शिष्य-भक्त जान जाते है कि अन्दर योगेश्वर मृत हो गये और वह समाधि बनाकर उनका पूजन करते है।

आजकल ऐसी जिन्दा थल या जल समाधियाँ योगेश्वर स्वेच्छा से गुप्त विधि से लेते है। सरकार तथा कानून इसे आत्महत्या का प्रयास समझती है और ऐसे महान प्रयाण पर वह जबरदस्ती रोक लगाते है यह

भी माया का ही असर होगा।

अत: जो योगेश्वर प्राकृतिक रुप से मृत होते है उनकी थल समाधि निम्न विधि से लगाते है।

(ङ) थल (भूमि) में समाधि विधि

अत: प्रकृति स्वभाव से नाथ सम्प्रदाय के योगी अपना स्थूल देह को त्यागकर स्वर्ग लोक प्रयाण करते है। अर्थात् मृत हो जाते है जब पूर्व वर्णित आसन-स्नान-बैठक-आदेश-नमस्कार-मान सम्मान आदि क्रिया होती है तब तक इधर जहां मृत योगेश्वर को समाधिस्थ करने हेतु जो भूमि निश्चित की जाती है। वहां कम से कम ५ × ५ फुट चौड़ा एवं ७-८ फुट ऊँचाई का गड्ढा तैयार करते है और इस गड्ढे में साढ़ तीन फुट ऊँची और दो-ढाई फुट गहरी एक गुफा बनाते है अत: गड्ढे के पास ईटें, पत्थर एक बोरी चीनी, पांच सर घी, मिट्टी का ठिकरा, मिट्टी का दीपक, लोटा, पानी वाला गीला नारियल, तसला, फावड़ा इत्यादि साहित्य लाकर रखते है।

अत: जुलूस वगैरा करते हुए मृतयोगेश्वर को इस समाधि स्थान पर लाया जाता है। अत: नीचे बनाये हुए गुफा में पांच-दस ईटें बिछाकर उस पर भगवा या लाल वस्त्र बिछाकर आसन तैयार करते हैं। अत: नाथ सम्प्रदाय के सतनाथ योगी निम्न मन्त्र पढ़कर मृतात्मा को उस आसन पर पद्मासन लगाके बिठाते हैं।

मृतक के आसन बिठाने का मन्त्र-२

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। सुन्न सुन्न महासुन्न तले धरती ऊपर आकाश। जहां रहे जोगेश्वर का बास। हंस उडन्त काया गढंत, हंस हसं निरन्जन साढे तिन हाथ गुफा बनाया, खोजो काया अलख उपाया तीन लोक त्रिकुटी द्वारा जगमग

ज्योत भयी प्रकाशा। गुरु शब्द आसन बिठाया। रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- इस मन्त्र से गुफा, नदी किनारे पीपल वृक्ष के नीचे या भूमि के नीचे आसन लगाया जाता तो शून्य समाधि में शीघ्र ही समाधि लगती है।]

इस प्रकार गुफा में मृतात्मा बिठाने के पश्चात् सतनाथ के योगीश्वर उनके सन्मुख एक मिट्टी का लोटा (मटका) जल से भरकर उसके ऊपर पांच वट वृक्ष या पीपल के पत्ते कमल सदृश रखकर उसके ऊपर एक नारियल (पानीवाला) रखते हुए निम्न मन्त्र से कलश स्थापित करते हैं।

समाधि गायत्री बीज मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! पानी का बून्द पवन का थंबा देवल देख भया अचम्बा। जागत नगरी दीजै वास हंसा छोड़ चल्या कैलाश।। आओ सिद्धो जोगी जमाति सोधो धर्ती खोदो समाधी। कितनी समाध बोलिये कितनी गुफा बोलिये। अहूठ हाथ समाध बोलिये, सवा हाथ कि गुफा बोलिये। सवा हाथ का हाड़ बोलिये चार अंगुल का मास बोलिये।। तिल भर चाम बोलिये, चार अंगुल रोमावली बोलिये। सुन नासिका सुन समाध, शब्द बोलिए एकोंकार।। जपो समाध बीज गायत्री पीवो दूध दोहो धरित्री। ब्रह्मा धर्ती विष्णु कुदाली ईश्वर गौर माटी डाली।। पढ़ गुण मन्त्र समाधि दीजै तैयाक़ा भण्डारा कीजै।। दूध भात का भोग लगाया प्राण पुरुष अमरा पुरहया।। जोगी पूजै पाँव पखाली चूरी चिप्पी चादल थाली। बिना मन्त्र समाधि देवे सो प्राणी जमपुरी में रोवै।। पढ़ो समाध गायत्री सार, प्राणी पावै मोक्ष द्वार।। इतना समाध बीज गायत्री मन्त्र जाप सम्पूर्ण भयी। अनन्त कोट सिद्धों में

श्री नाथजी गुरुजी ने कहाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश!! आदेश!!!

अत: सतनाथ के योगी एक मिट्टी का दीपक (गौघृत का) निम्न जोत जगाने का बीज मंत्र बोलकर चेतन करते हैं।

ज्योत जगाने का बीज मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! निरन्जन निराकार बीज मन्त्र तत्सार पीवो पीवो चराचर चरे-सो प्राणी वैकुण्ठ तरे-गगन मण्डल में जय जय जपे-नौ करोड़ देवता अपने ग्रह में तपे। त्रिकुटि में शब्द ढुंडो ढुंडो एक ओंकार नाथ जोत दसवें द्वार निर्मल ज्योत भयी प्रकाश। बीज मन्त्र किसी निरन्जन योगी के पास। अमर योगी अमर काया सोधे मन भरे पिण्ड-विनसे नहीं काया परमोधे काया, ॐ सोहं सिद्धो काया बीज मन्त्र अखण्ड छाया। बीज मन्त्र जो नर पढ़े वह चौरासी फेरे में ना पड़े। बिना मन्त्र ज्योत जगावे सो नर नरक में जावे। इतना ज्योत जगाने का बीज मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: वह धूप अगरबत्ती लगाते हैं। दीपक के चारों तरफ ईंटें लगाकर उसका घोंसला बनाया जाता है। तदपश्चात् मृतात्मा के शीश ऊपर (माथे ऊपर) मिट्टी का खप्पर (ठीकरा) पलटा मारकर रखते हैं और निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

ठीकरे का मन्त्र-२

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! पढ़ो पढ़ो महेश्वर करनी से उतरो पार करनी होय तो पौढ़ी चढ़े बिन करणी कहा गुरुजी कैसे तरे। ओं ठीकरा नहीं कोई ठाठ है। पांच तत का

घाट है। धरती मुख उत्पन्ना, पवन मुख सुखा अग्नि मुख जरा सो ठीकरा सब सन्तन के आगे चला हाथ में चलावे राजा प्रजा को चितावे। शिर पर धारे तो समाधि करे। ओ किसने मुकुट मान्या कौन जगाई ज्योत। कौन तेरी साख भरे, कौन रहते तेरे कोल। शिव ईश्वर मुकुट मान्या, शक्ति जगाई जोत ब्रह्मा तेरी साख भरे, विषणु रहे तेरे कोल। अमर जोगी अमरापुर चढ़े सत्य शबद की ओट। सत्य का शबद का करो विचार, करनी अपनी उतरोगे पार। ॐ सोहं ठीकरा जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: मृतक योगेश्वर के चारों ओर थोड़ी नून शक्कर (चीनी) डालते हैं तथा थोड़ा घी डालते हैं। फिर मिट्टी डालते हैं। और साथ साथ ईंट पत्थर चारों तरफ रचनात्मक ढंग से रचाकर रखते हुए मृतक की समाधि भरते रहते हैं। साथ में शंख बाजा, ढोल इत्यादि बजाते हैं। शिष्य-भक्त-सेवक फूल अक्षद डालते हैं। और मृतक योगेश्वर के नाम का जय घोष साथ-साथ जयकार करते हैं और अन्य सभी योगेश्वर शिष्यगण एवं अधिकारी पांच पांच मुट्ठी नून शक्कर मिली मिट्टी तथा घी डालते रहते हैं साथ में सतनाथ पंथ के योगेश्वर समाधि गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं। यहाँ पर धरत्री गायत्री, द्वादश गायत्री, गोरक्ष गायत्री, नवनाथ गायत्री भी बोल सकते हैं।

सामधि गायत्री (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! मैं तेरा पूत तू मेरी माता, आदि की धर्ती अनादि की माया। सत्य का योगी वज्र की काया। अमर होय धर्ती वज्र हो काया। फुरो फुरो ज्वालामुखी तू फुरो! ऋद्धि फुरे सिद्धि फुरे, अगम निगम माता धर्ती कहे

पिण्ड प्राण बालक स्वरूपी सदा रहे! मरिया मरे नहीं काटेया कटे नहीं गाड़ेया, गड़े नहीं किसने कही किसने खुदाली किसने उसमें मिट्टी डाली। ब्रह्मा कही विष्णु खुदाली। ईश्वर गौरा मिट्टी डाली। आओ ईश्वर जी करो विचार। इस प्राणी को दीजे मोक्ष मुक्ति फल द्वार। ईश्वर सदाशिव सिमरु तोहे, ब्रह्मा पढ़े पाठ धर्ती माता राह देवो मोहे। एक राह उत्तर को गया। एक राह पश्चिम को गया। एक राह दक्षिण को गया। एक राह पूर्व को गया। चार दिशा चार खूंट राह देवो मोहे। दूहे धर्ती पावे खीर अमर हो काया वज्र हो शरीर। मांस गले मच्छेन्द्र लाजे, हाड गले गोरक्षनाथ लाजे, जिभ्या गले सद्गुरु लाजे, यम को मार काल को भखे। अपना शरीर आग ही रखे। इस पिण्ड हो आकुल व्याकुल करे तो कोटान कोट श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई। धर्ती माता जी के चरन कमलों में नमस्ते। ॐ गुरुजी। प्रथमे धर्ती माता बोलिये, द्वितीय नाम आकाश। तृतीये सिद्धि किया प्रकाश। चतुर्थे आदि अलील, पांचवे पांच भूत! धर्मराजा धर्म गुसांई सुध बुध भरो सुन सेजा माई, हम तुम न होय तो तीन लोक धर्ती प्रलय हो जाये। पहिली मुट्ठी उठाई ॐकार ने खबर पाई-धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।१।।

दूसरी मुट्ठी उठाई चन्द्र सूर्य ने खबर पाई, धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।२।।

तीसरी मुट्ठी उठाई तीन लोक के वासुकि नाग ने खबर पाई। धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।३।।

चौथी मुट्ठी उठाई, चार वेद के ब्रह्मा ने खबर पाई। धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।४।।

पांचवी मुट्ठी उठाई, पांच तत्वों ने खबर पाई। धर्ती माता पिण्ड प्राणी आये तेरे पास ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख।।५।।

पांच तत्व के रूप न रेख, भज ले बन्दे आप अलेख। समाधि धरती, समाधि आकाश, समाधि जल पवन प्रकाश। इतना समाधि जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

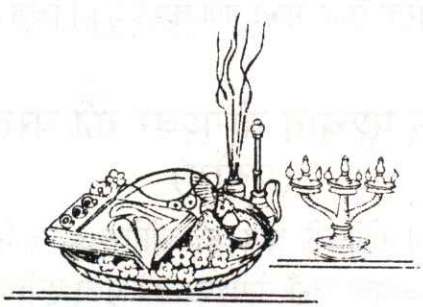
इस प्रकार ईंट पत्थर एवं नून शक्कर घी मिट्टी द्वारा जब मृतात्मा पूर्ण रुप से ढ़क जाता है तब ऊपर से मिट्टी तथा थोड़ा-थोड़ा जल 'जल गायत्री' या 'अलील गायत्री' बोलकर वह समाधि युक्त गड्ढा पूर्ण भरते हैं। गड्ढा भरने के बाद और उसके ऊपर २-३ फुट मिट्टी कलश जैसे आकार का बना कर उसके ऊपर पानी छोड़कर अच्छी तरह थपथपाकर मजबूत किया जाता है। और सबसे ऊपर ईंटों का घोंसला बनाकर उसमें घी का दीपक (अखण्ड जोत) पुर्वोक्त वर्णित जोत मन्त्र का उच्चारण करके लगायी जाती है। और समाधि ऊपर फूल पुष्प मालायें बिल्ब पत्र आदि चढ़ाकर मृतात्मा समाधि सम्मानित करते हैं। अत: सभी नाथ योगेश्वर तथा मानधारी अधिकारी नादि आदेश करते हैं। अत: वह दीपक मृत योगेश्वर के तिया अर्थात् तीन दिन तक चेतन रखते हैं स्थान मठ मन्दिर में इष्ट पूजन आरती करने के साथ साथ समाधि को भी आरती पूजा भक्त गण करते हैं। [चित्र क्र० २ में 'अ' देखें]

(च) मृत्यु के पश्चात् योगेश्वर की परलोक गती (प्रयोग)

समाधि क्रिया होने के बाद मृत योगेश्वर के शिष्य या भक्त समाधि स्थान पर अथवा जहाँ योगेश्वर की मृत्यु हुयी है उस स्थान के

ऊपर मिट्टी के कसोरे में वस्त्र से छनी हुई भभूती रखते हैं। वहां एक घी का दीपक चेतन करके रखते हैं। भभूती के पृष्ठभाग को थपथपाकर या दबाकर उस पृष्ठभाग को चिकनाई बनाकर रखते हैं जो की उसपर कोई भी निशान दिख सके उसे लाल या काले वस्त्र से ढ़ककर रखते हैं। दूसरे या तीसरे दिन अर्थात् तिया के दिन उस भभूत के पृष्ठभाग पर जो भी निशान आयेगा या आकृति आयेगी उस निशान (आकृति) के जरिये उस मृतात्मा को प्राप्त हुई गति का अनुमान लगाया जाता है। अर्थात् उदाहरणार्थ-भभूती ऊपर शिवलिंग के निशान (आकृति) आये तो मृतात्मा शिवलोक को गये, अगर चक्र का निशान या शंख का निशान आया तो वैकुण्ठ (विष्णु लोक), कमलपुष्प या संस्कृत अक्षर के निशान से ब्रह्मलोक, चन्द्र सूर्य के निशान से चन्द्रलोक, सूर्यलोक में, गौ के पैर आये तो गौलोक आदि निशान (आकृति) दिखने पर गती का अनुमान लगाया जाता है।

उपरोक्त गती की विधि मृत योगेश्वर उपदेशी (योगमाया शक्ति उपासक) हो तो त्रिशूल, खप्पर, खन्जर आदि शक्ति वर्धक निशान आना चाहिए, अत: एवं भभूती के ऊपर कुछ भी निशान या आकृति आयी तथा शक्तिवर्धक निशान आये तो, मृतात्मा की शंख ढाल करनी पड़ती है। तथा निशान स्मरण रखते हुये वैसा ही दान-मान तिया के दिन सतनाथ (ब्रह्मा के) योगेश्वर को देना पड़ता है।



(२) मृतात्मा का तिया (तिसरे दिन) विधि

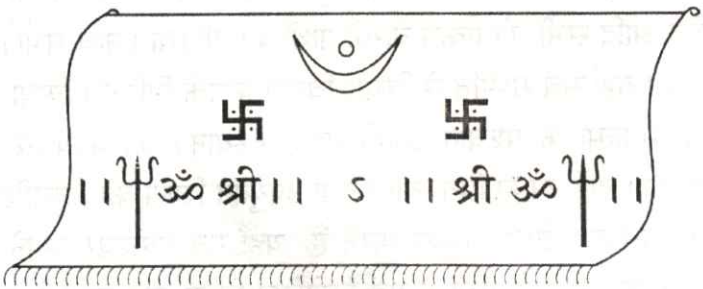
नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के परम्परा के अनुसार मृत योगेश्वर के तिसरे दिन तिया भण्डारा किया जाता है। जिसमें विभिन्न क्षेत्र से मानधारी, पीर महन्त तथा सब योगेश्वरों को मृत योगेश्वर के स्थान (मठ) में आमन्त्रित किया जाता है। उस दिन विशेषत: मृतयोगेश्वर का कोई प्रिय खाद्य पदार्थ, खीर खाण्ड, मीठा मिष्ठान इत्यादि पदार्थ बनाये जाते हैं। भण्डारा सिद्ध होने के पश्चात् सतनाथी (ब्रह्मा के) योगी या मृतात्मा के शिष्य समाधि सन्मुख भोग लगाते हैं। तथा सतनाथ योगेश्वर को वहीं आसन लगाकर उसे वहीं पर भोजन, वस्त्र दान-दक्षिणा, (मृतक का प्रिय) भोजन, ५ बर्तन, कम्बल, चद्दर, उपरोक्त गती का निशान दान आदि देकर उन्हें सम्मानित किया जाता है। यहाँ सतनाथी योगेश्वर नहीं हो तो धर्मनाथी या राम के योगी को यह मान दे सकते हैं। कोई भी नहीं मिले तो मृतात्मा के प्रिय शिष्य को दे देवें। तत्पश्चात् सभी योगेश्वर मानधारियों को भोज भण्डारा देते हैं। वस्त्रदान देते हैं। भेट पूजा (चिप्पी) देते हैं। और सभी को सम्मान दिया जाता है।

तद उपरान्त नाथ सम्प्रदाय (योगी महासभा) के अधिकारी, मानधारी, पीर महन्त, मृतात्मा का प्रिय-योग्य एवं उपयुक्त शिष्य और शिष्यगण एवं भक्त गण तथा गांव पंचायत तथा सम्बन्धित माननीय व्यक्ति आदि सभी को एकत्र करके नाथों का दलिचा (नाथ सभा) भरा जाता है। वहां सर्व सम्मति से विचार विमर्श कराके निश्चित किया जाता है कि मृतात्मा के पश्चात् उनकी गद्दी (स्थान) का कार्यभार कौन संभालेगा। यहां उनका प्रिय-योग्य तथा उपयुक्त शिष्य को उत्तराधिकारी घोषित करके गद्दीपर नियुक्त करते हैं यहाँ मृत योगेश्वर अपने प्रिय शिष्य (लायक) को मृत्यु से पूर्व नियोजित किया हुआ होता है या वह अपने मृत्यु पत्र में भी लिखकर गुप्त रखता है। अत:

सर्व सम्मति से हस्ताक्षर से कागज पत्र स्टैम्प वगैरा बनाये जाते हैं। अगर उपयुक्त मृतात्मा का शिष्य उपलब्ध नहीं होगा तो योगी महासभा वहां नाथ सम्प्रदाय के किसी योग्य योगेश्वर को नियुक्त कर सकते हैं। तदनन्तर सबको बिदाई देकर अपने अपने स्थान मकान पर चले जाते हैं।

(क) समाधि विधान

इस प्रकार मृतात्मा का तिया होने के पश्चात् साधारण एक डेढ़ साल के अन्तर्गत मृतात्मा की समाधि के स्थान पर पक्की समाधि बनाते हैं। विशेषत: मृतात्मा की मूर्ति बनवाकर प्रतिष्ठान करने का निश्चय करते हैं और समाधि की वैसे ही रचना से पक्की बनाई जाती है। मूर्ति बनवाने हेतु नौता देते हैं। कोई छत्र बनाते हैं तो कोई मन्दिर तो कोई दरगाह बनाते हैं। यह सब उत्तराधिकारी एवं भक्तों पर निर्भर होता है। तथा मृतात्मा के कार्यकारणी-सिद्धि-आचरण-लोक जन सम्पर्क-तपस्या-अनुभूति उनके जीवन के कार्य साम्प्रदायिक प्रतिष्ठा आदि बातें विचाराधीन होकर तय किया जाता है। मूर्ति प्रतिष्ठा शंख ढाल में ही होती है समाधि की पूजन पाठ आरती नित्य होती है। समाधि पीरजी-महन्त-मठाधीश मानधारी-अधिकारी आदि प्रतिष्ठित हो तो निम्न प्रकार चद्दर उस समाधि के ऊपर चढ़ाई जाती है। [चित्र क्र० २ में 'ब' देखें]



चदर जिसके ऊपर चिन्ह, अक्षर आदि लिखे जाते हैं।

(३) हरड़ पूजन-भण्डारा

मृत योगेश्वर का तिया होने के पश्चात् साधारण एक वर्ष छः महीने के बाद यह हरड़ पूजन भण्डारा मनाते हैं। हरड़ पूजन = का अर्थ सभी साधु सन्त महापुरुषों का एकत्रीकरण होता है। नाथ सिद्ध परम्परा के अनुरुप सभी आठमान अर्थात् आठ मानधारी पीरजी को आमंत्रित किया जाता है। जो विभिन्न (भारतवर्ष के) क्षेत्र प्रदेश के होते हैं। सभी महन्तों, मठाधीशों तथा मानधारी अधिकारियों को बुलाया जाता है। एवं देश के विभिन्न क्षेत्र के नाथ योगेश्वरों को नौता देकर बुलाते हैं। अतः नियुक्त किये हुये हरड़ पूजन दिन को सभी उपस्थित हो जाते हैं।

इस हरड़ पूजन भण्डारा में तय किया जाता है कि शंखढाल भण्डारा आठमान करना है या ३२ धूनी का भण्डारा करना है या १०८ धूनी भण्डारा करना है या देश भण्डारा करना है या रमतो के साथ भण्डारा करना है।

१. **आठमान भण्डारा :-** इसमें आठ प्रकार के [अर्थात् १२ पंथों में विशेषतः पंथ आई, के एक बाकि महंत पंथ सननाथ के १, २ पीर बाकि महंत पंथ राम के पीर, पंथ नटेश्वरी के पीर, पंथ भर्तृहरी बैराग के पीर, पंथ गंगनाथी पीर, बाकि सब महंत मठाधीश, राजगुरु, राजाजी, तपस्वी, दुधाधारी, फलाहारी, खडेश्वरी इत्यादि पुजारी कोठारी इत्यादि] पीर जी मठाधीश, महन्तों को मान सम्मान देकर बुलावा दिया जाता है। साथ में जमात भी होती है। राज गुरुओं, राजा जी इत्यादि को भी मान सम्मान से बुलावा देते है। तथा विभिन्न क्षेत्र से योगेश्वर आते है।

२. **३२ धूनी भण्डारा या १०८ धूनी भण्डारा (देशभण्डारा):-** इसमें समुची सभी पक्ष, प्रान्त तथा पंथों के योगेश्वर सम्मिलित होते है इसमें ८ मान को डबल चिप्पी, डबल मान अर्थात् ३२ या १०८ के मानधारी और ८ मान के मानधारी पीरों ऐसी डबल मान चिप्पी मिलती है। इसमें पश्चिम मण्डल के योगेश्वर (माता हिंगलाज के) अर्थात् इनमें सौराष्ट्र सिन्ध,

पाकिस्तान सिन्ध, काबुल कन्धार, अफगानिस्तान के भी योगेश्वर पधारते हैं। जिनका रूढ़ि परम्परा थोड़ी निराली है। जिनके साथ उत्तरी मण्डल जिन्हे सिद्ध एवं आत्म साक्षात्कारी योगेश्वर नाम से प्रचलित है। यह भी पधारते हैं। इसमें मुख्यत: उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, नेपाल, चीन, तिब्बत, भूटान आदि स्थानों के पीर, राजगुरु एवं धर्मगुरु, राजाजी, पीर महन्त आदि का समालोचन होता है। पूर्व मण्डल के योगेश्वर मुख्यत: कर्मकाण्डी, अघोरी एवं चमत्कार युक्त योगेश्वर शक्य तो फक्कड़ होते हैं। इन्हें भी आमन्त्रित किया जाता है। इस पूर्व मण्डल में मुख्यत: नेपाल, नागालैण्ड, भूटान, तिब्बत, चीन, आसामी, मनीपुर, मीजोरम, मेघालय, अण्डमान, निकोबार आदि देश विदेश के योगेश्वर भारी संख्या में पधारते हैं। और अपना योगदान कराते हैं। इसी प्रकार दक्षिण मण्डल के योगेश्वर भक्ति साधना, कर्मयोगी, तन्त्र-मन्त्र के ज्ञाता योगेश्वर आते हैं। जिसमें कर्नाटक, कदलीमठ तथा त्रिया राज्य विशेषता श्री लंका के रावल के योगी केरल, तामील, आन्ध्र के पाव पंथ के योगेश्वर पधारते हैं। इस प्रकार से विभिन्न देश-विदेश के योगेश्वर जब इस शंखढाल में सम्मिलित होते है तो यह एक नाथ सिद्धों के कुम्भ मेला ही लगता है। सभी गुरु, शिष्य, भक्त, सिद्ध योगी, तांत्रिक, योगिक, कर्म, राजयोगी संत सभी अपने-अपने क्षेत्र विद्या ज्ञान साधनाओं का लेन देन करके अपने प्रेम आदेश करते है। इस प्रकार इसे देश भण्डारा भी कहा जाता है। इसमें सभी को योग्य मानधन दिया जाता है।

सम्पूर्ण मठ सजाया जाता है, मण्डप में लाईट से रोशनी करते हैं, बीच में बड़ी-बड़ी दरियाँ, गद्दे, गोल तकिये आदि डालते हुए आसनों की तैयारी करते हैं। आठ मानधारी पीरों का अलग से आसन लगाते हैं। सभी अपने-अपने प्रतिष्ठित आसन को ग्रहण करते हैं। अत: सतनाथ ब्रह्मा के पीरजी हरड़ पूजन को प्रारम्भ करते हैं।

(क) हरड़ पूजन

सतनाथी पीरजी एक थाली में दो हरड़ को मौली बांधते हुये निम्न मन्त्र से पूजन करते हैं। जिसमें हल्दी, अक्षद (चावल) दूब (दूर्वा) से पूजन करते हैं। अत: दोनों हरड़ों को मौली (लाल सूत) बांधते हुए निम्न मन्त्र बोलते हैं।

हरड़ा मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ सोंह हरड़ा आय मात का लीजे दो कर जोड़-पांच महेश्वर आज्ञा करे तो कंटक का सिर फोड़-पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर की गत का मेला-सन्त आय बहु जात-वहां हरडा हुवा असबात, हरडा हर बरताओ -आवागमन मिटावो-कर चढ़े मुख पड़े तिसकी रक्षा गुरु गोरक्षनाथजी करे। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

हरड पर हल्दी चढ़ाते हैं और निम्न मन्त्र बोलते हैं।

हल्दी चढ़ाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! आदि अनन्त गादी बेअन्त माया-शिव-शक्ति ने मिल खेल रचाया-बाले गोरख मार्ग चलाया, शिव पूजू शक्ति पूजू, पूजू गुरु के पाव पाँच महेश्वर आज्ञा करे तो हलदी चढ़ाऊ सरजन हार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

३२ या १०८ धुनी भण्डारा या देश भण्डारा का हो तो चावल की जगह मिश्री (बड़ी खाण्डवाली) को चढ़ाते है प्रसाद रुप में बांटते है तथा एक बड़े पात्र या थाली में चीनी की राशि लगाकर उसपर हरड़ को स्थापित करके पूजन करते है।

अक्षत (चावल) चढ़ाते हैं और निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अक्षत (चावल) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! सतगुरु शबद ब्रह्मज्ञानी। पूजा करु भई कमाई। पाच महेश्वर आज्ञा करे तो अक्षत बरसे जोगन माई। अक्षत चढाऊं शीश नमाऊ सतगुरुजी के पाव। गोरख बैठे आसन मार भरे धर्म कि साख। जैसा देखा वैसा कहे। पाप पुन्य से न्यारा रहे। शिव पूजू शक्ति पूजू, पूजू गुरु के पांव पाँच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू सद्गुरु जी के पांव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: हरड के ऊपर दूब तथा पुष्प चढ़ाते हैं तथा निम्न मंत्र कहते हैं।

दूब (दूर्वा) एवं पुष्प चढ़ाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ उत्तर दिशा से जोगन आयी दोनों कर से दूब ले आयी, चढ़े दूब चढ़े फूल अलष पुरुष तेरी दुहाई श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: गंगा जल का लोटा मौली बांधकर रखते हैं।

★ जल गायत्री (संक्षिप्त)

ॐ गुरुजी अलख निरन्जन तेरी माया। ॐ जल बिम्बाय विद्महे निल पुरुषाय धीमहि तन्नो अलील प्रचोदयात।

अत: गुड़ का भोग लगाते हैं तथा निम्न मन्त्र बोलते हैं।

गायत्री भोग मन्त्र (बीज)

ॐ गुरुजी, ॐ अन्नपूर्णाय विद्महे महाअन्न पूर्णाय धीमहि तन्नो अन्नपूर्णी प्रचोद्यात। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

आदेश।। आदेश।।।

अत: हरडा को तिलक निम्न मन्त्र से लगाते हैं।

तिलक दान

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ सोंह धुन्दुकारा पांच तत का किया पसारा उल्टी पवन गगन में डोले देव गुरुओं के तिलक लगावे। आदेश नाम करो उपाय रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरखनाथ। श्रीनाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।।।

अत: उपरोक्त तिलक दान मन्त्र से सभी मानधारी-पीर-अधिकारियों को प्रथम तिलक दान (तिलक लगाया) जाता है। और उनके दाहिने हस्त कलाई पर कलावा (मौली) बान्धते हैं। जोकि मानधारी अपने दाहिने हाथ में कुछ दक्षिणा मुठ्ठी बांधकर रखते हुए हाथ कलाई बान्धने के लिये आगे करते हैं। सतनाथ पीरजी तब उनके हाथ के नीचे हरड़पूजन थाली को रखते हैं और मानधारी के कलाई में कलावा (मौली) बांधते हैं और निम्न मन्त्र बोलते हैं।

कंगण (कलावा) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ गुरुजी, पीरजी बोले कौन कंगन धातू साज कौन कंगन मायी जात। ॐ गुरुजी, कंगन माही सोना नहीं चाँदी नहीं सर्व, कंगन धातु साज। सूत का कंगन, सूत का धागा सब सन्तन को बांधने लागा। बिना हुक्म गुरु का ले चढ़े माई काली के दांत। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार मन्त्र उच्चारण करते हुए कलावा बांधते हैं। मानधारी हाथ मुठ्ठी छोड़ता है तो दक्षिणा नीचे पूजन के थाली में गिरती है। फिर

मानधारी हरड़ पूजन करते हैं, और दक्षिणा चढ़ाकर नमस्कार करते और अपनी उपस्थिति का इजहार देते हैं। इसी क्रिया विधि से सभी सन्त महात्मा पीर महन्त, मठाधीशों सभी को पूजन पात्र लेकर कंगन (कलावा) बांधा जाता है।

अत: सभी पीरजी, महन्त, मठाधीश, मढ़ी मकान वाले, सम्प्रदाय-अधिकारी, मृतात्मा के शिष्य गण भक्त-गांव पंचायत सबको एक साथ बैठाकर नाथ-पंचायत या दलिचा भरा जाता है। वहाँ विचार विनिमय, स्थान-समय-अर्थ व्यवस्था आदि पर सोचकर शंखढाल का दिन एवं कार्यक्रम निश्चित किया जाता है स्थानीय पंथ का पंख यहाँ पंथ गद्दी के (पीरजी के) पंख अलग होते हैं तथा सम्पूर्ण सम्प्रदायिक पंख जिसका सार्वजनिक चुनाव होता वह अलग होता है। यह पंख सम्प्रदायिक कार्यक्रम में कार्य करता है और पंथ का पंख पंथ कार्य करता है। अत: मृतात्मा के पंथ का पंख हाँक लगाकर (ऊँची आवाज में) जाहिर करता है कि फलां की शंखढाल फलां तारिख को फलां दिन को सम्पन्न होगी सभी नाथ सम्प्रदाय नाथ सिद्ध भक्तों को आमंत्रित करते हैं।

अत: निम्न प्रकार पंख ऊँची आवाज में हाँक लगाकर कहते हैं - **"सिद्धों सही करना फलां फलां की** (यहां मृतक का नाम उनके गुरु जी का नाम पंथ स्थान बताते हैं) **शंखढाल फलां फलां तारिख को फलां फलां दिन को सम्पन्न होगी ..... सिद्धों सही करना।"**

[**विशेष:-** यह हरड़ पूजन किसी भी सार्वजनिक धार्मिक कार्य में जहाँ जन जनता, साधु सन्त एकत्रित होते हैं। वहाँ ४ हरड़ की उपरोक्त पूजन करके स्थान के चारों दिशा में रखें कार्य निर्विघ्न सिद्ध हो जावे।]

(ख) शंखढाल का उद्देश्य

मृत योगेश्वर अगर उपदेशी है फिर वह किसी भी (१२ पंथ में से) पंथ का हो तो भी उसकी शंखढाल अवश्य करनी पड़ती है। यह नाथ

साम्प्रदायिक मर्यादा है तथा शंखढाल क्रिया किये बिना उन्हें मोक्ष मुक्ति की प्राप्ति नहीं होती यह नाथ सम्प्रदाय की आध्यात्मिक-तन्त्र मन्त्र योगियों की निश्चित रूप से भावना है। अत: शंखढाल करना आवश्यक होता है।

(ग) शंखढाल का मुहूर्त

यह शंखढाल मृतात्मा के जल या थल समाधि लेने के बाद एक वर्ष छ: महीने के बाद मनायी जाती है तथा इसका मुहूर्त महीने के कृष्ण पक्ष के ग्यारस-बारस-तेरस दिन में सम्पन्न करना पड़ता है और भी अगर मृतात्मा की मूर्ति बनाकर प्रतिष्ठा करना तथा नाथ सिद्धों को, आठमान पीरों को भण्डारा देना, तथा उस स्थान पर उत्तराधिकारी को नियुक्त करना आदि सभी प्रकार के कर्म विधान विधि वक्त सम्प्रदाय नियम के अनुसार किया जाता है।

अत: सभी प्रकार के शंखढाल का तथा आठमान पीरों का भण्डारा आदि कार्यक्रम, नियुक्त होकर सभी को आमंत्रित करने हेतु निम्न प्रकार आमन्त्रण पत्रिका बनाना चाहिए। **उदाहरणार्थ**- (१) आठमान - भण्डारा (२) शंखढाल, (३) रस्मगद्दी, (४) मूर्ति प्रतिष्ठा आदि मुख्य शीर्ष नामों से निमन्त्रण पत्र (कार्ड) बनाते हैं।

(घ) "निमन्त्रण पत्र"

(आठमान भण्डारा)

।। ॐ शिव गोरक्ष योगी ।।

श्री मान .....

सप्रेम आदेश आदेश आदेश।।।

मान्यवर,

नम्र निवेदन है कि ब्रह्मलीन परमपूज्य गुरुदेव .....

श्री श्री १०८ पीर/महन्त/योगीराज/ .....
(यहां मृतात्मा के नाम लिखे) महाराज जी की शंखढाल महीना .....
..... कृष्ण पक्ष .....
ग्यारस/बारस/त्रियोदश/ ..... तिथि सम्वत .....
तदानुसार दिनांक ..... दिन तथा आठमान
भोज भण्डारा महीना .....
ग्यारस/बारस/त्रियोदश/ ..... दिनांक .....
दिन ..... वार ..... को परम पूज्य
श्री ..... यहाँ सम्प्रदायिक
उच्च मानधारी जैसे अध्यक्ष-उपअध्यक्ष-महामंत्री .....
(पीर आदि के नाम डालें).....
महाराज के अध्यक्षता में होना निश्चित हुआ है। आप सभी से सादर अनुरोध है कि इस पावन अवसर पर दर्शन देकर कृतार्थ करें।

--कार्यक्रम--

प्रथम दिन - दिनांक ..... (ग्यारस कृष्णपक्ष)
मूर्ति पूजा ..... समय .....
मूर्ति नगर परिक्रमा एवं कलश यात्रा ..... समय .....
शंखाढाल ..... समय - रात्री ८ बजे से प्रातः ५ बजे तक
द्वितीय दिन - दिनांक ..... (बारस कृष्णपक्ष)
मूर्ति प्रतिष्ठा ..... प्रातः ..... बजे
तृतीय दिन - दिनांक ..... (त्रयोदशी कृष्णपक्ष)
रस्म गद्दी (चद्दर ओढ़ना) ..... समय .....
भोज भण्डारा ..... समय .....

मुख्य अतिथि अध्यक्ष

श्री ..... श्री .....
स्वागताध्यक्ष उत्तराकांक्षी
श्री ..... श्री .....
निमन्त्रक कार्यअध्यक्ष
श्री ..... श्री .....
दर्शनाभिलाषी .....
(यहां स्थान का पूरा पता लिखना चाहिए।)

विशेष :- सम्प्रदायक सभी स्थान मठ मन्दिर के देश-विदेश के पतों की पुस्तक ['प्राचीन भर्तृहरि गुफा महात्म्य' इस नाम की पुस्तक] योगी महासभा हरिद्वार में उपलब्ध है। (सभी प्राप्त कर सकते हैं।)

इस प्रकार आठमान भण्डारा एवं शंखढाल की निमन्त्रण पत्रिका बनाकर सभी पंथ के पीरों को महन्तों को नाथ सिद्ध योगेश्वर के स्थान-मठ मकान मढ़ियों-टिल्ला आदि देश के विभिन्न स्थानों पर भेजा जाता है तथा समय आने पर सभी आमंत्रित योगेश्वर इस स्थान में पधारते हैं और कार्यक्रम के तीन दिन तक रहते हैं। (जमात) रमते योगेश्वर तथा १२-१८ के महन्त भी पधारते हैं। वह मैदानी धूना चेतन करके इष्ट देवता की स्थापना कर सभी अपने-अपने आसन धूना मैदान में चक्री आसन लगाकर बैठते हैं। जिसमें तपस्या-योग साधना-भजन-नित्यकर्म- प्रवचन आदि कर्म करते हैं। पीर महन्तों तथा सम्प्रदाय अधिकारी अध्यक्ष-उपअध्यक्ष-महामंत्री-सहायक मंत्री-संचालक-कोठारी- भण्डारियों, पुजारी तथा पीर, महन्त, मठाधीश, टिल्लाधीश अन्य नाथ महात्मा सभी को आस-पास स्थान में अलग-अलग, उनके मान प्रतिष्ठा अनुसार कमरे दिये जाते हैं। और स्नान ध्यान खान-पान आदि सभी उत्तम व्यवस्था की जाती है तथा

शंखढाल कर्म करने वाले महात्मा तथा उत्तराधिकारी की भी उत्तम अलग से व्यवस्था की जाती है।

अत: आठ मान पीर-भण्डारे के प्रथम दिन अर्थात् कृष्णपक्ष ग्यारस को कार्य कर्म विधि.....

प्रथम दिन

प्रात: मृतात्मा की मूर्ति के साथ में अगर अपने इष्ट के मन्दिर की स्थापना करनी हो तो उस इष्ट की मूर्ति का पूजन करते हैं यथा सामुपचारे अभिषेक मूर्ति का किया जाता है।

मूर्ति पूजन-अभिषेक प्राणप्रतिष्ठा पूजन-हवन आदि सभी क्रियायें, शाबर मन्त्र विधि विधान से किया जाता है। जो नाथ सिद्ध योगी महा सभा बारह पंथ में सतनाथ ब्रह्मा के योगी शास्त्रोक्त शाबर मन्त्र विधि विधान (श्री नाथ रहस्य ग्रंथ में वर्णित) से करते हैं।

दोपहर १-२ बजे उक्त मूर्तियों की पूर्ण नगर-शहर-गांव में परिक्रमा, अर्थात् जुलूस निकाला जाता है ढोल-बाजा आदि संगीत बजाते हैं। हाथी-घोड़े तथा गाड़ियाँ भी जुलूस में सम्मिलित करते हैं। सम्प्रदाय के पीर महन्त, अध्यक्ष-उपअध्यक्ष महामन्त्री आदि सभी को अपने अपने मान प्रतिष्ठा में जुलूस में वाहन देते हैं। कोई हाथी पर अम्बारी में तो कोई घोड़े सवार तो कोई ऊँट सवार हाथों में भगवा ध्वज लेते हुए आदि सब कुछ जुलूस शोभनीय एवं भव्य निकलते हैं। जुलूस के मध्य में गाड़ी ५ घोड़ों के रथ को फूल पुष्प मालाओं से सजा कर ऊपर सिंहासन बनाकर उस पर मूर्तियाँ सजी सजाई रखते हैं। इस रथ के पीछे अनेक सुहागन और कन्याएँ गंगा जल का कलश शीश पर लेकर तथा स्वयं सज धजकर चलती हैं वह भक्ति गीत गाते हुयी चलती हैं। जुलूस में नाथ योगेश्वर तथा शिष्य गण और अथाह भक्त समूह चलता है। वह सब जय जय कार करते हुए चलते हैं। इसके पीछे अनेक प्रकार के

वाहन, गाड़ियाँ-कार-मोटर, ट्रैक्टर आदि और शोभा में जुलूस चलता है। ढोल-ताशे-नगारे-बजते हैं, नागफनी शंख की ध्वनी गूँजती है। भक्ति गीतों के स्वर गूंजते हैं। बड़ी ही चैतन्य आनन्द उत्साहित शोभा-यात्रा-जुलूस सम्पूर्ण नगर बस्ती की परिक्रमा करते हुये स्व-स्थान में आते हैं फिर भोजन भण्डारा सभी के लिए करते हैं फिर विश्राम लेते हैं। बिल्कुल इसी समय और इसी दिन, रात्री को ८ बजे उस मृतात्मा की शंखढाल का अर्थात् योगमाया पूजन का, आत्मा को मुक्ति मोक्ष कैलास गमन का कार्यक्रम होना होता है।

उपदेशी योगमाया कर्म करने वाले सभी उपदेशी इसी योगमाया कर्म के तैयारी में इस प्रथम दिन जुटे रहते हैं विशेषत: शंखढाल कर्म के उत्तराधिकारी पूर्ण दिन भर एक अलग सा कमरा लेकर सभी व्यवस्था तथा तैयारी में जुट जाते हैं।

यह योगमाया पूजन कर्म करने वाले पीर या उत्तराधिकारी तथा उपदेशी योगेश्वर शंखढाल के दो दिन पूर्व ही पधारते हैं ताकि शंखढाल की सभी साहित्य-सामग्री तथा कर्म काण्ड व्यवस्था योग्य समय पर उपलब्ध हो जाये।

(ङ) कुछ नियम

(१) समाधि विधान के समय नाथ सम्प्रदाय सम्बन्धित योगी महासभा के अधिकारियों को तथा सतनाथ पंथ के योगेश्वर को निमंत्रित करना आवश्यक है।

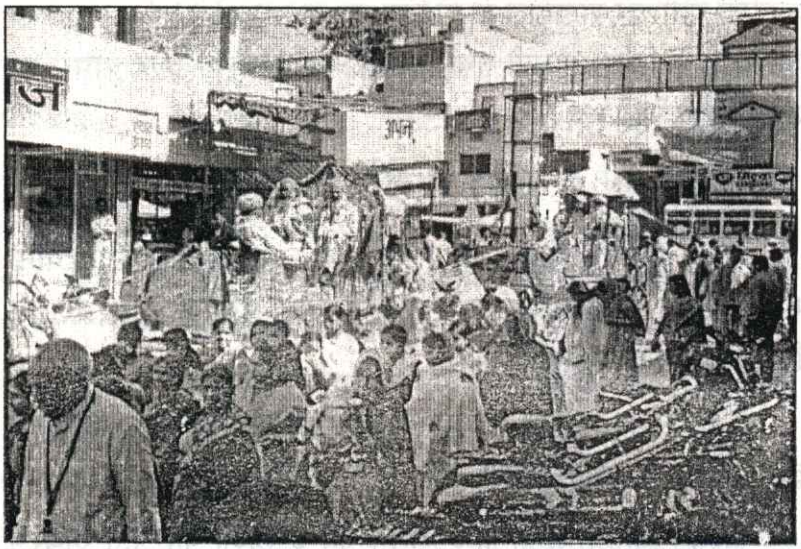
(२) समय अनुसार मृतात्मा के विषय में योगी महासभा को पोस्ट द्वारा, या फोन द्वारा, सन्देशा तुरन्त देना चाहिए।

(३) मृतात्मा के समाधि विषय की इच्छाओं की पूर्ति अवश्य करनी चाहिए।

(४) समाधि क्रिया विधि योग्य समय अन्तराल में ही होनी चाहिए।

(५) योगी महासभा के सम्बन्धित अधिकारी या मानधारियों के मार्गदर्शन अनुसार मृतात्मा का तिया विधि, हरड़ पूजन भण्डारा, शंखढाल मुहूर्त, निमन्त्रण आदि विषय में विधि विधान से करना चाहिए।

(६) समय के अनुसार, योगी महासभा के दूरो अन्तर अनुसार नजदीक के प्रान्तीय योगी महासभा कार्यालय के मार्गदर्शन पर ही यह कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।



जुलूस-परिक्रमा

(४) योगमाया का स्वरुप

योगमाया, योगमाता, योगलीला, योगशक्ति, योग युक्ति, योग भक्ति, योगिनी, योगमाई, योग संगिनी, योग वृढ़ा, शिवा, शिवानी, शान्करी, शाम्भवी, शर्वाणी, शारदा, शीलदेवी, शीतला माता, श्यामा देवी, पार्वती, परमेश्वरी, पूर्णेश्वरी, पराशक्ति, गौरी गंगा, गिरन्दाजा, गुह्येश्वरी, गुह्यकाली, गिरिजा, गिरिजात्मका, गिरिकन्दरी माता, ॐ कारेश्वरी, उमादेवी, अम्बा, अमराम्बिका, अग्निका, आनन्देश्वरी, अपर्णा, अन्नपूर्णा, अन्द्रिजा, अखिलेश्वरी, आनन्दमयी, आदिमाता, महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली मातंगी, मायादेवी, ममतेश्वरी, महामंगला, माहेश्वरी, महेशानी, महामंगला मेनकात्मजा मन:कामना मल्लीका मालिका महामांगल्यदेवी, महामायादेवी, काली कल्याणी, कात्यायनी, कपालिनी, कामाक्षा कोलम्बा कालिन्दी, कौमारी कालरात्री, कनकसुन्दरी, वाग्देवी, वाग्देवता, वाग्वादिनी, दुर्गा, महादुर्गा, दुर्गाभवानी, भ्रामरी, भुवनेश्वरी, भद्रकाली, भीमा, भैरवी, रणभैरवी, भूचरी, वीनादेवी, वैष्णवी, वज्रयोगिनी, विंध्यवासिनी, बिन्दुवासिनी, बालासुन्दरी, त्रिपुरसुन्दरी, जगद्जननी, जगदम्बा, जानकी, जतीश्वरी, सतीश्वरी, हेमवन्ती, रुद्राणी, चण्डी, चण्डिका, महाचण्डी, ईश्वरी, प्राणेश्वरी, ईशानी, सिद्धयोगिनी, तुलजाभवानी, सहजा, त्रिकुटा, दक्षिणकाली, चतुर्भुजी, अष्टभुजी, सप्तश्रृंगी, ज्वालामाई, ज्वालामुखी, हिंगुला, हिंगलाज माता, हेरम्भा, हंसवाहिनी, हंसवृढ़ा, चिन्तपूर्णा, जालपा, चम्पा, रणसेनी, नन्दा, पूर्णेश्वरी, नीलसरस्वती, मुम्बादेवी, चामुण्डा, खेचरी, तारा, त्रिकुटा, तोतला इत्यादि योगमाया शक्ति के, योगमाया स्वरुप के ऐसे असंख्य नाम हैं, जैसे काम वैसे नाम और इन नाम शक्तियों में अलग अलग विशेष विशेषतायें हैं।

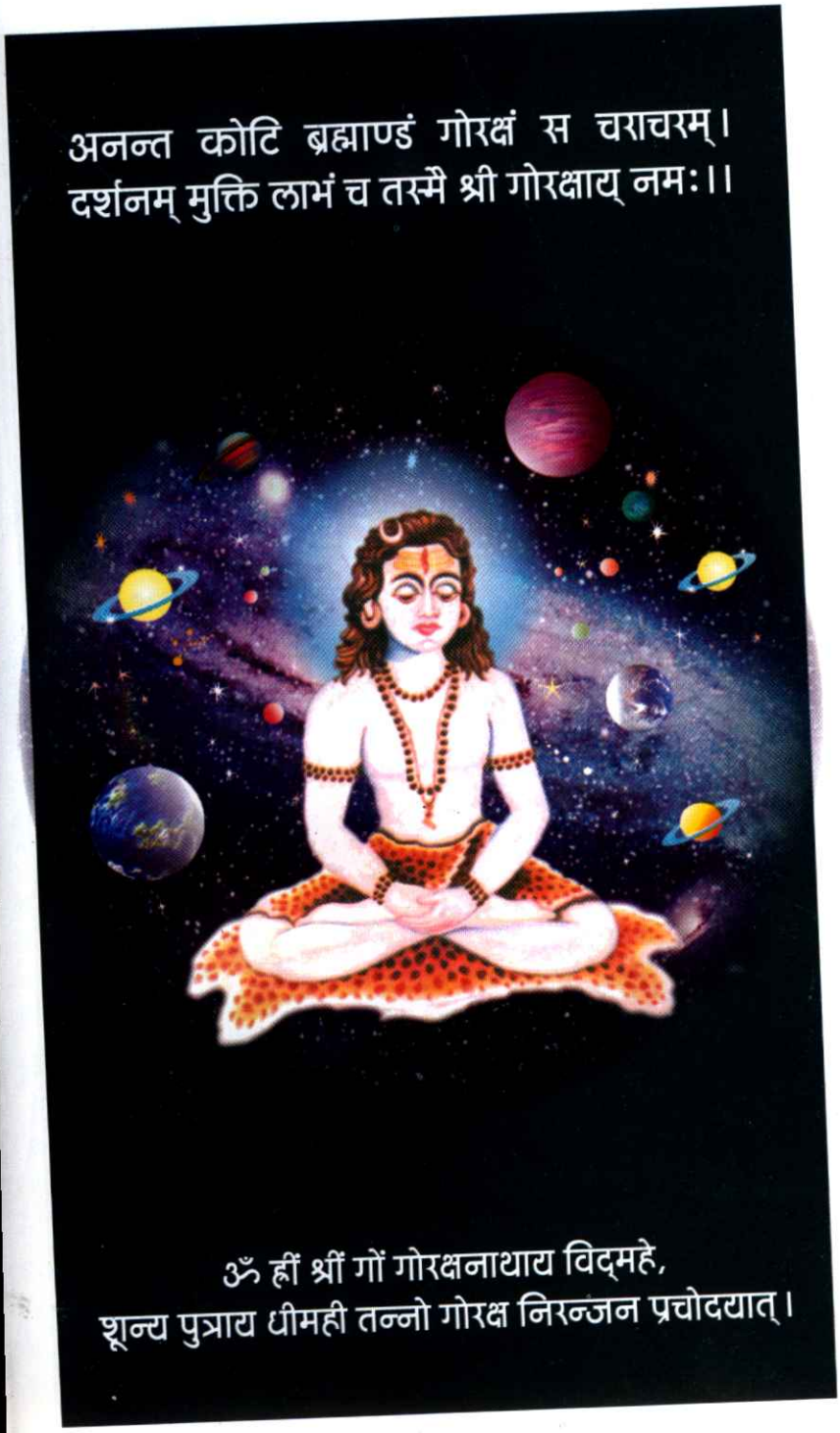
अधर्म अर्थात् दुष्टों पापियों का नाश करके धर्म की स्थापना तथा

धर्म की सुरक्षा एवं भक्तों की रक्षा के लिए यह योगमाया शक्ति के अनन्त स्वरुप, अनन्त नाम-अवतार लेकर प्रगट हुयी है।

पूर्णकाल में देव-दानव युद्ध में दैत्यों ने स्वर्ग पर विजय पाकर देवताओं को भगा दिया था। तब सभी देवताओं ने अपने बल, शस्त्र, तंत्र-मंत्र आदि का एकीकरण करके एक शक्ति का निर्माण किया, उन सभी दैवी शक्ति को एकरुप योग कर यह योगमाया शक्ति ने काली, दुर्गा, तारा, चण्डी, महिषासुर मर्दिनी आदि रुप धारण कर अनेक असुर, चण्ड-मुण्ड, शुम्भ निशुम्भ राक्षसों का संहार किया और देवताओं को पुनः स्वर्ग प्राप्ति करा दी एवं धर्म की रक्षा कर भक्तों को सुख दिया। तबसे सभी देवता, नर-नारी, सुर-असुर, ऋषिमुनि, साधु-सन्त इस योगमाया शक्ति की भक्ति पूजन आराधना स्तुति इत्यादि करने लगे।

अतः नाथ सिद्ध योगेश्वर भी शक्ति पूजा, शक्ति साधना, तंत्र शक्ति मन्त्र शक्ति विषेशतः योगशक्ति की साधना करने लगे। ऐसे योगमाया महाशक्ति की उपासना तथा साधना करते करते उन्होंने कुण्डलिनी शक्ति, अमृतशक्ति, सूक्ष्मशक्ति, पराशक्ति, अपराशक्ति, निजाशक्ति, आदिशक्ति, अनादिशक्ति, ऋद्धि-सिद्धि शक्ति, सत्ताशक्ति, सृष्टि तत्व शक्ति, परमतत्व शक्ति, हंस, परम हंस शक्ति, स्फुरन शक्ति, चैतन्य शक्ति, संवेदन शक्ति ऐसे अनंत शक्तियों को अपने नाथ सिद्ध योग द्वारा, आत्म साक्षात्कार द्वारा साधना एवं उपासना करके मोक्ष मुक्ति को प्राप्त किया और इसी को योगमाया पूजा पद्धति कहने लगे। ऐसे योगमाया शक्ति की भक्ति उपासना तथा साधना करने से वह सुख दुःख के परे एवं आधि व्याधि से निवृत्त होकर अमर काया सिद्ध हुये तथा शत्रु, दुष्ट, संकटों से मुक्त होकर अभय निर्भय हो गये विशेषतः उन्होंने त्याग वैराग्य शक्ति को अपनाकर मुख्यतः अज्ञान का नाश होकर सुख,

अनन्त कोटि ब्रह्माण्डं गोरक्षं स चराचरम्।
दर्शनम् मुक्ति लाभं च तस्मै श्री गोरक्षाय् नमः।।



ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथाय विद्महे,
शून्य पुत्राय धीमही तन्नो गोरक्ष निरन्जन प्रचोदयात्।



।। माता बालासुन्दरी ।।

आनन्द, महाआनन्द, परमानन्द, आत्मानन्द को प्राप्तकर, अन्त में मोक्ष मुक्ति को प्राप्त किया।

हमारे नाथ योगी सिद्ध सम्प्रदाय में पूर्वकाल से सनातन गुरु-शिष्य परम्परा की मान्यता है जो कि आदिनाथजी ने उदयनाथ पार्वती को एकान्त में अमर संजीवनी का मूल मन्त्र देकर अमरता का भेद बताया था। इसी वक्त नाथ सम्प्रदाय की गुरु-शिष्य परम्परा की शुरुआत हुयी, आगे यही अमर विद्या मत्स्येन्द्रनाथजी तथा गुरु गोरक्षनाथजी एवं नवनाथ तथा ८४ सिद्धों को प्राप्त हुई आगे यह गुप्त मुक्ति मार्ग अनन्त कोट सिद्धों को प्रदान किया गया अतः आज भी योगमाया पूजन अर्थात् शंखढाल विधि रूप में यह सनातन कर्म चलता रहा है।

गुरु शिष्य परम्परा अर्थात् ज्ञान रुपी सद्गुरु अज्ञान रुपी शिष्य को ज्ञान देकर उसका अज्ञान (अन्धकार) नष्ट करते हैं और इस प्रकार सत्य का ज्ञान होने पर शिष्य मुक्ति मार्ग पर चलने लगता है। अतः सतगुरु ही मुक्ति का द्वार है। ऐसे आत्मसाक्षात्कारी सतगुरु मुक्तिदाता, ज्ञानदाता, उद्धारकर्ता होते हैं। ऐसे सतगुरुजी की प्राप्ति ही योग्य शिष्य को मुक्ति प्राप्ति करवाती है। अर्थात् सतगुरु ही मुक्ति है। योगमाया का दूसरा नाम आत्मज्ञानी सतगुरु अर्थात् मुक्ति है।

पिण्ड ते ब्रह्माण्ड अर्थात् जो सूक्ष्म रुप में (आत्मा) हमारे काया के अन्दर (पिण्ड के अन्दर) विराजमान है, वही स्थूल रुप में विश्व ब्रह्माण्ड में ही है और यही सूक्ष्म अन्तरआत्मा ही समस्त विश्व-सृष्टि का मूल है। इस आत्मज्ञान द्वारा हमारे नाथ सिद्धों को (जिन्हें आत्मसाक्षात्कारी कहा जाता है) तथा जीव को जब ज्ञान हो जाता है (सतगुरु कृपा द्वारा) वह अनुभव सिद्ध हो जाता है। आत्मा की प्रत्यक्ष प्रचिती आ जाती है। तो वह, शिष्य (साधक, योगी, जीव) मोक्ष मुक्ति को प्राप्त कर लेता है और मोक्ष मुक्ति की प्राप्ति को अखिल मनुष्य

प्राणी का सत्यधर्म कहा जाता है। जिसको धर्म जागरण भी कहा जाता है। अर्थात् मोक्ष मुक्ति के स्वरुप धर्म के प्रति जाग्रत होना इसी को धर्मजागरण अर्थात् योगमाया उपासना कहा जाता है।

अत: इस योगमाया कर्म को योगमाया जुमला जगाना भी कहते हैं। जुमला का अर्थ शिव शक्ति का ऐक्य, शिव और शक्ति का योग **"शिव माहि शक्ति रमाया"** यह नाथ पंथ में कहावत है। अर्थात् शिव माहि शक्ति, शक्ति माहि शिव है। अर्थात् योगमाया का (शक्ति का) शिव में अर्थात् जीव का शिव में मिलन योग जिसे शिव सामरस्य, शिव सायुज्य या शिवत्व कहा है। अर्थात् जीव को शिव में (शिवधाम -मुक्तिधाम) में ले जाने को योगमाया पूजन (कर्म) कहा गया है।

इसे जागती जोत जागृति या ज्योत जागृति कहा गया है। जहाँ आत्मा ज्योति स्वरुप है यह नाथपंथ की मान्यता है कहते हैं:- **जागी जोत भागी छोत। या जागे गोरख भागे भूत। अज्ञान से दूर योगी अवधूत।** ॐकार प्रणव से सात्विक राजस तामस गुण दर्शाते हैं। अर्थात् अ ऊ: म: अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश-ब्रह्मी लक्ष्मी गौरी, सृष्टि स्थिति प्रलय, भूत भविष्य वर्तमान, उत्तम मध्यम प्रथम, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, स्वर्ग मृत्यु पाताल आनन्द-मोक्ष-मुक्ति इत्यादि त्रिपुटी के योग से ॐकार बनता है। किन्तु यह सभी ॐकार त्रिपुटी अर्धमात्रा जो शक्ति रुप में ॐकार के ऊपर [ँ] है उस अर्धमात्रा शक्ति के बिना तथा उसके बिन्दी या बिन्द जो नाथ सिद्धों का योग बीज है इनके बिना ना ही ॐकार में पूर्णता है और ना ही उन त्रिगुण त्रिपुटीओं की पूर्णता है। अर्थात् ॐकार के तीनों प्रणव अ, ऊ, म, ब्रह्मा विष्णु महेश या अन्य त्रिपुटी बिन्द रुपी योग, नाथ सिद्ध योग या साधना किये बिना अर्धमात्रा शक्ति को प्राप्त करके योग साधना पूर्ण कर उसे त्यागे बिना मुक्त नहीं हो सकते। अर्थात् योग द्वारा, योगमाया शक्ति (अर्धमात्रा

बिन्द) को प्रसन्न कर (प्राप्त करके) माया से विरक्त होकर मुक्ति को पाना यही ॐकार स्वरुपी योगमाया पूजन है।

प्रत्येक जीव का अहो रात्र जपा अजपा अर्थात् प्रत्येक श्वास प्रश्वास जो ओहं सोहं नाद निर्माण होता है वह २१६०० संख्या में सहज जाप करता रहता है। वह ॐ सोहं वही ओम्, ओम्म, अम्म, अम्मा, अम्बा आदि सभी उसी योगमाया शक्ति माँ का शब्द उच्चारण है। अर्थात् इन्हें भी योगमाया कहा गया है।

अर्थात् यह ॐ का जप करते हुये संकल्प विकल्पादि मन चित्त अहंकार को शून्य कर शिव में लीन होना या निर्विकल्प समाधि में जाना भी योगमाया का नाम है।

(क) योगमाया विवेचन

हमारे नाथ सिद्ध योगी सम्प्रदाय में इस कर्म-काण्ड को अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता है तथा यह कर्म काण्ड अनेक नामों से प्रचलित है जिसका मतितार्थ एवं उद्दश्य भी सिद्ध सम्प्रदाय को उपदेशक-अनुकरणीय-उपकारक और धर्म कर्म योग क्रिया मंत्र-तन्त्र, तप-जप एवं समची एकाग्र साधना के लिए सहायक सिद्ध होता है। निम्न प्रकार विभिन्न नामों से यह योगमाया पूजन कर्म जाना जाता है।

(१) योग माया पूजनः- यह महामाया के सर्वत्र व्यापक शक्ति का मन्त्र योग द्वारा साधना, तन्त्र योग द्वारा पूजन एवं भक्ति योग द्वारा श्रद्धा विश्वास अर्पण करते हुये इस माया शक्ति को प्रसन्न कराकर योगमाया से ही महामाया के ऊपर विजय पाकर माया से विरक्त हो जाना या माया से विरक्त कराना-ऐसे कर्मकाण्ड को योग माया पूजन कहते हैं।

(२) योग माया कर्म या माई का कर्म :- तन्त्र योग की सहायता से माया में फंसे हुये महात्मा को माया से विरक्त कराकर मुक्ति मोक्ष

को प्राप्त करवाना इसे माई का कर्म या योगमाया कर्म कहते हैं।

(३) माई की जोत या ज्योति पूजन :- इस योगमाया कर्मकाण्ड में मुख्यता ज्योतियों का अर्थात् शक्ति का ही तन्त्र मन्त्र से पूजन होता है। जिससे मृत योगेश्वर की ज्योति स्वरुप आत्मा माया से मुक्त होकर ब्रह्म में अर्थात् ज्योति स्वरुप गोरक्षनाथजी में विलीन हो जाती है। इसे ज्योति पूजन या माई की जोत कहते हैं।

(४) मार्गी पूजा:- नाथ सिद्धों की अत्यंत गुप्त मार्ग से तन्त्र मन्त्र योग पूजन को मार्गी पूजा कहते हैं। जो जानकार (कर्म जानने वाले) योगेश्वरों के लिये ही मर्यादित होता है।

बीज मार्गी :- इसमें पुतला चढ़ाते है। तब जोड़ा (नर-नारी) को चढ़ाते है। इस बीज मार्गी को आत्म उद्धार कहते है। जो नाथ पंथी ही है। यह पश्चिमी संस्कृति है इन्हे रामापीर, वामपंथी इत्यादि कहते हैं।

विशेष :- पालीनाथ श्री कृष्ण अवतार राजस्थान में रनोजा क्षेत्र में तथा हिमाचल प्रदेश में बाबा बालक नाथी गोविन्द सरोवर भागड़ा नांगल डैम के क्षेत्र में यह बीज मार्गी प्रसिद्ध है।

(५) अन्दर का कर्म (गुप्त कर्म):- यह योगमाया पूजन का कर्म काण्ड अतिषय गुप्त विधि से किया जाता है। यह कर्म वही योगेश्वर करता है जो उपदेशी नाथ योगेश्वर हो तथा कर्म विषय में विशेष जानकार हो या इस योगमाया पूजन का उत्तराधिकारी हो वही योगेश्वर एक बन्द कमरे में (एकान्त में) मर्यादित उपदेशी योगेश्वर मिलकर तन्त्र मन्त्र का कर्मकाण्ड करते हैं। सर्वसाधारण व्यक्ति या योगेश्वर का इस कर्म काण्ड कक्ष में प्रवेश निषिद्ध होता है। इसलिये इसे अन्दर का कर्म कहते हैं या गुप्त कर्म कहते हैं। गुप्त अर्थात् सूक्ष्म रुपी आत्मा को तन्त्र मन्त्र द्वारा अधिष्ठित या अनुष्ठान करके स्थूल रुप में अर्थात ज्योति रुप में लाकर योगेश्वरों के तपोबल, (शुद्ध आचरण) योग

साधना बल से (गुरु कृपा) तथा नाथ सिद्धों के शुद्ध संकल्प (निस्वार्थ भाव) अर्थात् निरपेक्ष भाव से अन्तरमुख होकर ज्योति (आत्मस्वरुप या योगमाया के स्वरुप) का पूजन करके तथा नवनाथ चौरासी सिद्धों के आर्शीवाद से उस ज्योति स्वरुप (मृतात्मा योगेश्वर के)आत्मा को पुनः सूक्ष्म में मुक्ति पथ अर्थात् कैलास शिव धाम को भेजना। ऐसे कर्मकाण्ड को अन्दर का कर्म कहते हैं और यह कर्मकाण्ड केवल विरक्त-वैरागी-त्यागी-तपस्वी ज्ञानी एवं विशेषतः आत्मसाक्षात्कारी योगेश्वर ही कर सकते हैं यह इन्हीं का अधिकार है।

(ख) योग साधना दृष्टि से अन्दर का कर्म

नाथ सिद्ध योगेश्वर जब योग साधना करते अन्तर्मुख होकर ध्यानस्थ होते हैं अर्थात् सूक्ष्म में प्रवेश करते हैं तब वह दशम द्वार में अर्थात् सहस्त्रगार में आकर, मस्तक में उस आत्मा को जो सूक्ष्म है वह ज्योति रुप में अर्थात् स्थूल रुप में दर्शन करते हैं अर्थात् उसकी मानसिक पूजा करते हैं और यह योगी का (योग साधना का) अन्दर का कर्म कहा जाता है। अर्थात् नाथ योगेश्वर योग साधना अत्यन्त गुप्त विधि से (सूक्ष्म) ध्यान करके निरन्जन निराकार ज्योति का आत्म साक्षात्कार करते हैं। जो ज्योति स्वरुप आत्मा अपने दशम द्वार में लाकर स्थित करते हैं। वही ज्योति का (आत्मा का) ज्योति पूजन करते हैं। अर्थात् योगसाधना करते हैं। यही ज्योति का दर्शन योगमाया शक्ति का स्वरुप है और आत्मरुपी ज्योति से मृत योगेश्वर को मुक्ति दिलाना यह सूक्ष्म कार्य गुप्त कार्य या अन्दर का कर्म कहलाते हैं।

अर्थात् रात्री में अन्दर बन्दिस्थ आवास में चाहे योग साधना के द्वारा कहो या तंत्र मंत्र कर्म काण्ड द्वारा कहो यह सभी अत्यंत गुप्त कर्म किये जाते हैं।

(६) शंख उद्धारः- इस योगमाया कर्मकाण्ड में मृत-योगेश्वर के

नाम के बने हुये पुतले के ऊपर सभी नाथ उपदेशी योगेश्वर शंख द्वारा गंगाजल-पंचामृत मन्त्रोच्चार करके चढ़ाते हुये उसकी मुक्ति की कामना करते हैं। अर्थात् पवित्र से पवित्र शंख द्वारा उस मृतात्मा योगेश्वर का उद्धार किया जाता है ऐसी क्रिया कर्म को मूलतः शंख उद्धार या शंखोद्धार कहा जाता है।

(७) शंखढालः- शंख उद्धार को ही शंखढाल अपभ्रंश देशी भाषा में कहते हैं। यह शंख जल तत्व में अर्थात् जल के अन्दर उत्पन्न होने वाला जो अत्यंत पवित्र शुद्ध माना जाता है। ऐसे शंख द्वारा पुतले (मृतयोगेश्वर) को पवित्र एवं मुक्ति हेतु जो शंख मन्त्र तन्त्र द्वारा गंगा जल को या पंचामृत को ढाले जाते है इसे ही शंखढाल कहा जाता है। योगियों के लिए (अन्दर के गुप्त) साधना में परिपक्व अवस्था में नाद जैसे ढोल की आवाज, नागफनी की आवाज, बांसुरी की आवाज की अनुभूति होती है। किन्तु जब उसे शंख का नाद सुनाई देता है। तो उसका उद्धार होता है और वह योगी मुक्ति मार्ग पर आरुढ़ होता है। इसे शंखोद्धार या शंखढाल कहा जाता है।

(८) शक्ति-मार्गः- जैसे नाथ सिद्ध योगेश्वर साधक, तपस्वी सन्यासी, त्यागी, बैरागी, ब्रह्मचारी आदि साधक तन्त्र मन्त्र द्वारा शक्ति साधना करके माया शक्ति को जीत कर अपने इष्ट एवं आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त कर आत्मा के द्वारा मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करते हैं। इसे शक्ति मार्ग भी कहते हैं।

(९) अघोर कर्मः- इसे अघोर कर्म भी कहा जाता है।

(१) **घोर** अर्थात् माया (स्थूल) तथा नैसर्गिक या प्राकृतिक कर्मकाण्ड आदि व्यवहार जिसे ऐसे भी कहते हैं कि माया बड़ी (दुस्तर) घोर है।

(२) अघोर अर्थात् ब्रह्म (सूक्ष्म) तथा अनैसर्गिक या अप्राकृतिक

कर्मादि व्यवहार जैसे साधु सन्त विशेषत: नाथ सिद्ध अघोर कर्म या अप्राकृतिक कर्म प्रकृति के विरुद्ध कर्म करके प्रकृति पर विजय पाने की कोशिश। ऐसे प्रयास साधु सन्त करते हैं। जैसे सांसारिक भोग भोगना प्राकृतिक (घोर) कर्म हुआ। नाथ साधु सन्त अप्राकृतिक अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन कर सांसारिक भोगों से दूर रहते हैं इन्हें अघोर अर्थात् अप्राकृतिक कर्म कहते हैं। इसी प्रकार नाथ सिद्धों का हठयोग करना भी अघोर कर्म कहा जाता है। जो कि प्रकृति से हठ करके प्रकृति का भेद जानना आदि-

यहाँ योगमाया कर्म में मृतात्मा योगेश्वर को मुक्ति दिलाना, अर्थात् प्रकृति के परे में विलीन होना। माया के परे होकर ब्रह्म में विलीन हो जाना। मुक्ति अर्थात् अपने आप को नष्ट करना मैं को नष्ट करना, अहंकार को नष्ट करना और ब्रह्म में विलीन होकर ब्रह्ममय हो जाना, सत्यमय हो जाना आदि कर्म को भी अघोर कर्म कहते हैं। जो प्रकृति के परे अर्थात् अप्राकृतिक कहा जाता है।

(१०) योगमाया जुमला जगाना:- अर्थात् शिव शक्ति या शिव-शक्ति मिलन अर्थात् योग माने शिव तथा माया माने शक्ति इनके मिलन को जुमला कहते हैं। योगमाया उपासना को धर्मजागरण कहते हैं। अर्थात् रात्री में धर्म का जागरण (धर्म-जागना) जो जीव को शिव रुप करने में शक्ति उपासना करते हैं। अत: इसे जोगमाया जुमला जगाना कहते हैं।

(११) योगमाया शक्ति उपासना:- इसे नाथ सिद्धों की योग-शक्ति का धर्म जागरण कहा जाता है।

(१२) माई का चक्र पूजन:- अर्थात् योगमाया के सभी परदा-माई का पाट-कैलास-भण्डार-साखियाँ आदि तन्त्रोक्त पूजन रचना को माई का चक्र पूजन कहते हैं। विशेषत: इनमें वीरचक्र (इसमें पशु-विर तथा

दिव्य साधना जो मछिन्द्रनाथजी की कौल साधना कहते है। इसमें ३-५-९ महात्मा मिलकर चक्री पूजा करके शक्ति पूजन करते है।) पूजन होता है। यह योगमाया कर्म को माई का चक्र पूजन पूर्व दिशा के (कामाख्या दिशा के) योगेश्वरों में प्रचलित है।

(१३) षोड़ष चक्र पूजनः- यह भी उपरोक्त सोलह कला तन्त्रोक्त पद्धति से पूजन करते हैं।

(१४) बाला सुन्दरी या हिंगलाज पूजनः- इस नाम से पश्चिमी मण्डल योगेश्वर यही योगमाया कर्म करते हैं।

(१५) महाकाली योग माया पूजनः- इस नाम से भी पूर्व एवं दक्षिण मण्डल के योगेश्वर यह योगमाया कर्म करते हैं।

(१६) महागौरी योगमाया पूजनः- इस नाम से उत्तरी मण्डल के योगेश्वर यह योगमाया कर्म करते हैं।

इस प्रकार यह योगमाया कर्मकाण्ड अर्थात् श्रीनाथ सिद्धों की शंखढाल अलग-अलग दिशाओं में अलग-अलग पद्धति, विधि से तथा अलग-अलग नामों से (थोड़ा बहुत फरक से) यह योगमाया कर्म करते हैं।

इस प्रकार उपरोक्त विभिन्न नामों से योगमाया पूजन को जानते हैं। यह योगमाया कर्मकाण्ड वही योगेश्वर कर सकते हैं जो इस कर्मकाण्ड के जानकार हों और वही इस कर्म को करने का अधिकारी होता है। यह ७-८ उपदेशी योगेश्वर मिलकर कार्य करते हैं और इनमें जो योगेश्वर योगमाया पूजन का समुचित सभी कार्य या कर्मकाण्ड करवाता है उसे उत्तराधिकारी योगेश्वर कहा जाता है या यह कर्म चुने हुये पीरजी भी करवाते हैं और इन्हीं के मार्गदर्शन एवं आदेशानुसार बाकी सभी उपदेशी योगेश्वर कर्मकाण्ड करते हैं। जो योगेश्वर योगमाया पूजन कर्म में दीक्षित होता है उसे उपदेशी शिष्य या उपदेशी योगेश्वर कहा जाता

है और अन्य योगेश्वर या कोई भी व्यक्ति इस कर्मकाण्ड स्थान के अन्दर प्रवेश नहीं कर सकता।

हमारे नाथ सिद्ध परम्परा में योगी सम्प्रदाय के किसी भी कर्मकाण्ड, चाहे वह वैदिक हो या शाबर मन्त्र सिद्ध के कर्म हों तथा इष्ट पूजन, गुरुपूजन, नाथ साम्प्रदायिक धर्म कार्य, या विधि विधान हो, जप तप साधना हो या मन्त्र तन्त्र साधना हो उपासना, अनुष्ठान हो, या सेवा भाव हो, इस प्रकार के सभी साम्प्रदायिक कर्म करने से पूर्व उस साधक, उस योगेश्वर या नाथ सिद्ध को नाथ परम्परा के नियमानुसार काया-वाचा-मन-चित्तादि शुद्ध पवित्र एवं सुर्चिभुत तथा चैतन्य पूर्ण होना अनिवार्य है।

अतः यह योगमाया पूजन अर्थात् शंखढाल कर्मकाण्ड अत्यन्त सात्विक-पवित्र एवं शुद्ध कार्य है जिसमें मृतात्मा योगेश्वर को शिव कैलास धाम (ब्रह्म) में विलीन कर मोक्ष मुक्ति स्वरुप को प्राप्त करवाना होता है।



जय जय महाकाली माता

द्वितीय रहस्य

(दिन का कर्म)

(५) नित्यकर्म

अत: यह शंखढाल-ज्योति पूजन कर्मकाण्ड करनेवाले सभी उपदेशी योगेश्वर तथा मुख्य उत्तराधिकारी या पीरजी को निम्न नित्यकर्म नियमानुसार, पूर्व तैयारी करते हुये सुर्चिभुत शुद्ध होना चाहिए।

(क) उपदेशी महात्माओं (उत्तराधिकारी-पीरजी तथा अन्य योगेश्वरों) का नित्य कर्म

प्रात: चौथे पहर में उठते ही दोनों हस्त अंगुली मुख सन्मुख लेकर हस्त दर्शन करके निम्न मन्त्र उच्चारण करे:-

हस्तांगुले गणनाथं च, हस्तमध्ये सतगुरुम्।।
हस्तमूले तु गोरक्षम्, प्रभाते कर दर्शनम्।।

ऐसा कहकर दोनों हस्त अंजली मुख पर रखें।

या

गुरु मंत्र उच्चारण करते हुये नमस्कार करें। तदनन्तर निम्न धरती गायत्री का जाप करते हुये अपने नासिका का जो स्वर चलता है वही पैर भूमि पर रखे, अत: दोनों स्वर चलें तो दोनों पैर भूमि पर रखे और निम्न धरत्री गायत्री बोलकर धरती को नमस्कार करें।

धरत्री गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! आद अलील अनाद उपाया सत्य की धर्ती जुहार लो काया पहले जल, जल पर कमल, कमल पर मच्छ, मच्छ पर कोरम, कोरम पर वासुकी, वासुकी

पर धौल बैल, धौल बैल पर सींग, सींग पर राई, राई पर श्रीनाथ जी ने नवखण्ड पृथ्वी ठहराई। प्रथमे धरत्री, द्वितीय विश्वंभरा, तृतीय मेरु मेदिनी, चतुर्थ चतुर्भुजि, पंचमें कृतिका, षष्ट में ब्रह्मचण्डी, सप्त में शिवकुमारी, अष्ट में बाला वज्र जोगिनी, नव में नवदुर्गा, दश में सिंहभवानी, एकादशे मृतिका नाम, द्वादशी वरदायनी। माता धरत्री पिता आकाश पिण्ड प्राण का तो पर वास। तोपर टेकू दोनो पाई आगमदे मै लागू पाई।। धरत्री माता तू बड़ी तुमसे बड़ा न कोय। जो पग टेकू तोपर मोपर कृपा सुहोय।। धर्ती द्वादशे नाम पठै गुणै मनमे धरै।। जोगी का सब काम, सिद्ध होय वाचा फुरै।। इतना धरत्री गायत्री द्वादश नाम जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटी सिद्धों में श्रीनाथ जी ने कहा श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

या

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ धरती माता औषधी पूरित पात्र दधाना सुमुखाम्बुजा सर्व सस्या लया शुभ्रा भूदेवी शरण भजे।। समुद्र वसने देवी। पर्वत स्तनमण्डले। विष्णु पत्नि नमस्तुभ्य पाद स्पर्श क्षमस्व मे।। इति श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- यह धरत्री गायत्री सिद्धि विधि श्रीनाथ रहस्य प्रथम खण्ड पृष्ठ सं० ४४ पर दिया है।]

अतः प्रातः की प्रातः विधि करके निम्न मंत्र से स्नान करें। स्नान मौसम के अनुसार गरम-ठण्डे जल से करें। प्रथम जल शीश पर लेकर स्नान करें तथा निम्न जल गायत्री का उच्चारण करें।

★ जल गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! जल मन्जन,

जल देवता, गुरु मन्जन गुरु ज्ञान। हाथ मन्जन धर्तरी अलष पुरुष का ध्यान। पानी पानी महापानी सोती काया अमर कर जानी। उड़े न हंस बिखरे न काया, शिव शक्ति ने ध्यान लगाया। ॐ अलील आदि अलील, अलील पुरुष की माता क्वारी, पिता यती, नित्ययोगी धरे धीर, निरोग हो काया, वज्र हो शरीर। झड़े पारा पीवे योगी उड़े काया। अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विद्‌महे नील पुरुषाय धीमही तन्नो अलील प्रचोदयात। इतना जल गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

या

★ जल गायत्री (संक्षिप्त)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! ॐ अलख निरन्जन तेरी माया। जल बिम्बाय विदमहे नील पुरुषय धी मही तन्नो अलील प्रचोदयात। इतना जल गायत्री मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

स्नान मन्त्र

ॐ हर गंगे हर नर्मदे हर जटा शंकरे। काशी विश्वनाथ गंगे, गंगा, गोदावरी तीर्थ बड़े प्रयाग। छालाबाड़ी समुद्र की पाप कटे हरिद्वार।। ॐ गंगेय ॐ यमुने चैव गोदावरी सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी, जल स्नान च करु।। सत्यशील दोय स्नान तृतीय गुरु वाचकं। चतुर्थ क्षमा स्नान, पंचम दया स्नान।। ये पांच स्नान निर्मल नित प्रति करत गोरषबाला। जो जानो स्नान ध्यान का भेद आपही कर्ता आपहि देव।।

हस्त पादादि सभी इन्द्रियों को स्वच्छ करें तथा अभ्यंग स्नान करें।

अत: लंगोट तथा आडबंद पहनते समय निम्न लंगोट मन्त्र कहते हुए लंगोट पहने।

★ लंगोट मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! अजरका वज्र करु, वज्र का बन्द लगाऊं? शील का लंगोट, सन्तोष का धागा। ऊन का आड़बन्द कमर में लागा। नागा पहिरे नागफणि हनुमन्त पहिरे लंगोट। गुरु महाराज का बाल गोपाल कोपिन पहिरे, नवनाथ चौरासी सिद्धों की ओट। अदल की कोपीन- वज्र का धागा, योगीश्वर कोपीन चढ़ावन लागा। शिव निर्माण पारा डिंगे अलष पुरुष की आन। पारा पारा महापारा, पारा राखे गुरु हमारा-पारा उतरे सहस्र धारा? सन्त रहे काल से न्यारा। पारा नाक रस्ते उतरे नांसकेतु की दुहाई। कान रस्ते उतरे कर्ण की दुहाई। मुख रस्ते उतरे ब्रह्मा की दुहाई? गुदा रस्ते उतरे गणपति की दुहाई। लिंग रस्ते उतरे हनुमन्त जती की दुहाई उल्टा पारा काया को चढ़े, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी की दुहाई स्फुरे। इतना लंगोट मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: निम्न भस्म गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हुये भस्मी स्नान करें। तपस्वी, रमते महात्मा हों तो सम्पूर्ण काया को भस्मी रमाते, लेपन करें। या यह भस्मी जटाओं में, मस्तक ऊपर, कर्ण, कुण्डलों पर, ग्रीवा कण्ठ में, वक्षस्थल, हस्थबाहु पर, हथेलियों पर, नाभी स्थान आदि स्थानों पर मन्त्र उच्चारण करते हुये भस्मी त्रिपुण्ड रुप में लगाये जिससे शुद्ध एवं पवित्र माने जाने वाली भस्मी से सम्पूर्ण काया, इन्द्रियाँ पवित्र हो जाये।

भस्म गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ भभूती

माता भभूती पिता भभूत तरण तारणी। मानुषते देवता करे, भभूत कसट निवारणी।। सो भस्मति माई, जहा पाई तहा रमाई। आदके योगी अनाद के भभूत सत के नाती धरम के पूत।। अमृत झरे धरती फुरे, सो फल माता गायत्री चरे। गायत्री माता गोवरी करी, सूरज मुख सुखी अग्नि मुख जरी। अष्ट टंक भभूत नव टंक पाणी, ईश्वर आणी पार्वती छाणी सो भस्मती हस्तक ले मस्तक चढ़ी। चढ़ी भभूती दिल हुआ पाक, अलख निरन्जन आप ही आप! इतना भभूती स्नान, भस्म गायत्री सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: जटा बन्धन मंत्र कहते हुये जटा बांधे अत: जटा नहीं हो तो चोटी को स्पर्श करें।

जटा बन्धन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। नीली पीली सिर जटा; जटा रमाई पाताल गंगा। नाम शतानि शिवजटा, अनन्त जटा भुजा पसार।। नाम सहस्रेन विष्णु जी ब्रह्मा, भेव जटा का शिव शंकर पाया। अगन प्रजाले ब्रह्मा जी बैठा, जटा अगन में होमे काया। तपी जटा तपी काया, ताका महादेव बन्दा पाया।। उरम धुरम सिर जटा ज्वाला, सिद्ध उनमन पलटे पारा। अनहद नाद बजे हमारा; सिद्ध मार्ग श्री गोरखनाथ कहाया।।

शबद का सुच्चा; गुरां का बन्दा; गुरु प्रसादे जटा जमाया। काम, क्रोध तजले माया; अक्षय योगी सबसे न्यारा। बिना मन्त्र पढ़ जटा जमाया; सो योगी नरक समायां पढ़ मन्त्र जटा जमाया; सो योगी शिवपुरी का वासा।। इतना जटा जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

तद्उपरान्त निम्न मन्त्र से भगवे वस्त्र धारण करें।

भगवे का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं धुन्धुकारा शिव-शिक्त ने मिल किया पसारा, नख से चीर भग बनाया-रक्त रुप में भगवा आया। अलष पुरुष ने धारण किया तब पीछे सिद्धों को दिया। आवो सिद्धों धरो ध्यान, भगवा, मन्त्र भया प्रमाण इतना भगवा मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार सुर्चिभुत होकर अपने इष्ट के पूजन-आरती-आदि धर्मकार्य करके इष्ट के सन्मुख (पूर्व दिशाभिमुख होकर) आसन ग्रहण करें। आसन बाघाम्बर हो या मृगासन हो तो निम्न मन्त्र पढ़ें।

बाघाम्बर मृगछाला का मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलष पुरुष बैठे आराधे अपनी खाल खाल में मिलाय-जब मृगा की खालपर, आसन लगाय श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघाम्बर, खाकाम्बर, चीताम्बर और मृगछाला पर आसन लगाय? बिना मन्त्र पढ़ आसन पर बैठे ऐसा डूबे थाह न पावे। पढ़ मन्त्र आसन पर बैठे सो योगी अमरापुर को जावे। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

आसन सूती-कम्बल-कुशा आसन या गद्दी हो तो निम्न आसन मन्त्र बोलकर आसन पर विराजे।

★ आसन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी मन मारु मैदा करु, करु चकनाचूर। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो बैठू आसन पूर। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अतः सन्मुख चौकी पर अष्टगंध अक्षत (चावल) द्वारा एक स्वास्तिक बनायें उसपर गणेश नाम से एक सुपारी, एक पान के ऊपर रखें।

अतः स्वास्तिकासन लगायें और ज्ञानमुद्रा के साथ श्री गणेश जी का नाम लेवें या निम्न गणेश कुंची का मन्त्र बोलें।

गणेश (कुंची) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। गणेश आया ऋद्धि-सिद्धि लाया, ऋद्धि-सिद्धि का भरे भण्डार। देह कुंची हिंगलाज की ज्ञान कुंची ग्रहों की कंठ कुंची गुरु गोरक्षनाथजी की लागी कुंची खुले कपाट अब देखो ब्रह्माण्ड का ठाठ। अक्षय घर का भरे भण्डार। अनन्त कोटि सिद्धों में खिर खाण्ड का होवे प्रवान। नावो धरो धनी का ध्यान, आगच्छ आगच्छ श्री गणेश एता श्री गणेश कुंची मंत्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश! आदेश!! आदेश!!!

या

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

या

वैदिक मन्त्र (श्री गणेश)

गजानन मह वन्दे गजकन्थड़ रुपिनम।
विघ्नहरणं सदा नौभि ऋद्धि सिद्धि प्रदायकम्।।१।।
नमस्ते सृष्टि रुपाय, नाद रुपाय ते नमः।
भक्त प्रियाय देवाय, नमस्तुभ्य विनायकं।।२।।

[**विशेषः**- उपरोक्त गणेश कुंची तथा वैदिक गणेश मन्त्र ब्रह्म मुहूर्त में इकतालीस दिन २१ दुर्वा दुब को जोड़ी गणेश जी को अर्पण करें। घृत, दीपक,

लाल फूल, चन्दन, तिलक, लड्डू का भोग लगावें और मन्त्र का १०८ बार जाप करें। विलक्षण बुद्धि स्मरण शक्ति का लाभ होगा। विशेषत: विद्यार्थी, उच्च शिक्षा आदि में लाभ होगा। यह विधि गणेश चतुर्थी, संकष्टी चतुर्थी तथा अमृत सिद्ध योग में करें।]

अत: योगेश्वर मस्तक पर सहस्रगार चोटी स्थान पर दाँया हस्त रखकर गुरु गोरक्षनाथ जी का स्मरण करें या निम्न मन्त्र का मनन करें।

गुरु गोरक्ष गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलख निरन्जन कौन स्वरुपी बोलिये। अलख निरन्जन ज्योति स्वरुपी बोलिये। ओंकारे शिवरुपी, संख्या ने साधरुपी, मध्याने हंस रुपी। हंस परमहंस दो अक्षर, गुरु तो गोरक्ष काया तो गायत्री, ॐ ब्रह्मा सोह शक्ति, शून्य माता अविगत पिता, अभय पंथ, अचल पदवी, निरंजन गोत्र, विहंगम जाति, असंख्य प्रवर अनन्त शाखा सूक्ष्मवेद, आत्मज्ञानी ब्रह्मज्ञानी - श्री ॐ गों गोरक्षनाथाय विद्महे- शून्य पुत्राय धीमही, तन्नो-गोरक्ष निरंजन प्रचोदयात। इतना गोरक्ष गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

या

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथाय विद्महे शून्य पुत्राय धीमही। तन्नो गोरक्ष निरन्जन प्रचोदयात।

या

ॐ ह्रीं श्रीं गों हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निरन्जनात्मने हुं फट् स्वाहा।

या

ॐ शिव गोरक्ष योगी

[**विशेषः**- यह मन्त्र सिद्धि विधि श्री नाथ रहस्य के प्रथम खण्ड पृष्ठ संख्या २४१ से २४४ तक दिया है।]

अतः योगेश्वर दर्शणी (कर्ण में कुण्डल हो तो) हो तो निम्न दर्शन मन्त्र का मनन करते हुये मृतिका के कुण्डल धारण करें। इस योगमाया कर्म विधि में मृतिका के कुण्डल धारण करना अत्यंत शुभ एवं आवश्यक है। युगानुसार कर्ण कुण्डल विधान

सतयुग में - सुवर्ण कुण्डल

त्रेतायुग में - चान्दी के कुण्डल

द्वापरयुग में - ताम्बे या अन्य धातु के कुण्डल

कलियुग में - मृतिका के कुण्डल

ऐसे युग अनुसार यौगिक-धार्मिक नाथ सम्प्रदाय प्रधान कर्म के लिए ऐसे कुण्डल धारण करना वरदान है।

कलयुग में मृतिका के कुण्डल कम से कम बारह वर्ष धारण करने चाहियें।

इस प्रकार दोनों मृतिका के कर्ण कुण्डल को दायें हाथ के अगुष्ठ एवं अनामिका अंगुली से स्पर्श कर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें। या मृतिका कुण्डल पहनते हुये मनन करें।

★ दर्शन (कुण्डल) का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नाद सों मुद्रा, कौन मुद्रा खेचरी बोलिये? कौन मुद्रा भोचरी बोलिये, कौन मुद्रा धरे ध्यान कौन मुद्रा कथे ज्ञान? ताँबे की मुद्रा खेचरी बोलिये, स्फटिक की मुद्रा भोचरी बोलिये। गण्डे की मुद्रा धरे

ध्यान; मृतक की मुद्रा कथे ज्ञान, श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के कान नीचे धरत्री, ऊपर आकाश, रक्षा करे श्री दादा मत्स्येन्द्र नाथ। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: निम्न मन्त्र पढ़कर नाद जनेऊ धारण करें तथा रुई से जनेऊ नादि को अत्तर (इत्र) लगाते हुये मन्त्र बोलें।

★ नाद जनेऊ पहनने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी! आदि में शून्य, शून्य में ओंकार आवो सिद्धों नाद बिन्द का करो विचार। नादे चन्द्रमा, नादे सूर्य नाद रहा घट पिण्ड भरपूर। नाद काया का पेखना, बिन्द काया की राह। नादे बिन्दे योगिया तीनों एक स्वभाव। बाजे नाद भई प्रतीत, आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी अतीत। नाद बाजे-काल भागे, ज्ञान की टोपी गोरक्ष साजे। डंकनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्दाई, बाडे घाटे टल्ल जागे। सुन सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई टिल्ला शिवपूरी का स्थान-चार युग में मान, मूल चक्र मूल स्थान। पढ़ मन्त्र योगी नाद बजावे, छत्तीस भोजन अमृत कर पावे। बिना मन्त्र योगी नाद बजावे, तीन लोक में कहीं ठौर न पावे। जो जाने नाद बिन्द का भेव-आप ही कर्ता आपही देव। संध्या शिवपुरी का बेला अनन्त कोटी सिद्धों का युग युग मेला। इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: निम्न मन्त्र से अपने मस्तक पर तिलक लगावें। तिलक चन्दन-केशर-सिन्दूर-अष्टगंध आदि किसी का भी लगायें।

इस योगमाया विधि में सिन्दूर तिलक लगावें।

सिन्दूर मन्त्र-१

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सिन्दुर

सिन्दुर महा सिन्दूर, सिन्दूर संधार कहां से लाये। कैलास पर्वत से ले आये। कौन कौन से ले आये। गौरी पुत्र गणेश लाये। लाये हतेली हनुमन्त विर, भैरव वसे कपार विन्द को माता सिन्दूर सोहे शिव सिन्दूर ग्रह चढ़े, माता सिन्दूर मस्तक चढ़े। नव ग्रह की आन। विच जाप सिन्दूर संधार ले चढवायी सो नर अमरा पद जायी। बिना मन्त्र सिन्दूर चढवाई सो नर अघोर नरक में जायी। इतना मन्त्र सिन्दुर सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने पढ कथ कर सुनाया। श्री नाथजी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- यह सिन्दूर मन्त्र ४१ दिन, २१ बार जप करें। सन्मुख एक पात्र में हनुमान सिन्दूर, श्मशान भस्मी या मिट्टी, लाल सिन्दूर और हवन कुण्ड की भस्मी मिलाकर रखें, ४१ दिन के पश्चात् इसका मस्तक तिलक लगाकर अपेक्षित कार्य के लिये जायें। अपेक्षित कार्य सफल होगा या व्यक्ति वशीभूत होंगे।]

अतः उपदेशी योगेश्वर को दाँया हाथ हृदय स्थान पर रखकर अपने सत गुरुजी का नाम एवं गुरु मन्त्र स्मरण करें तथा अपने योग साधना द्वारा कम से कम २१ प्राणायाम करें।

इस प्रकार सभी काया वाया मन से मन्त्र तन्त्र योग साधना आदि कर्म करते हुये जब उपदेशी योगेश्वर सम्पूर्ण सुर्चिभुत शुद्ध पवित्र अवस्था में होने के पश्चात् उसे उपदेशी सद्गुरुजी ने दिया हुआ गुरु मन्त्र (उपदेशी मन्त्र का) १०८ बार जाप करना चाहिए। विशेषतः एक घण्टा समय तक जप करना चाहिए जो कि योगमाया शंखढाल कर्म के प्रति शक्ति या ज्योति साधना के लिये योगेश्वर समर्थ-सशक्ति साधना एवं पवित्रता एवं चैतन्य पूर्ण हो जाये।

यह योगमाया ज्योति पूजन मुख्यतः सूर्यास्त के पश्चात् किया

जाता है। अत: सम्बन्धित उत्तराधिकारी या पीरजी को सम्पूर्ण दिन में समय के अनुसार अन्य सहायक उपदेशी योगेश्वर द्वारा निम्न प्रकार की योगमाया पूजन सामग्री जुटाकर लाना चाहिए।

(ख) योगमाया पूजन सामग्री (सूची)

(१) सप्त रंग = प्रत्येक रंग २-२ तोला
(२) रेतीली मिट्टी = एक कट्टा (रेता)
(३) ईंट = ३-४
(४) अभ्रक = १०० ग्राम या १ तोला
(५) शिराला = ५० ग्राम (काला दाना) या १ तोला
(६) कपूर = १ पैकेट
(७) अत्तर (इत्तर) = १ छोटी शीशी
(८) सुपारी = २ बड़ी, २० छोटी, २५ नग
(९) नारियल = ३ पानी वाले, ७ सूखे, (३ गिरी गोला मेवे में)
(१०) रुई (कपास) = १ बन्डल
(११) पंचमेवा = किशमिश = सवा किलो
काजू = सवा किलो गिरी बादाम = सवा किलो
गिरी अखरोट = सवा किलो
पिस्ता = सवा किलो
छुवारे = २५० ग्राम (आवश्यकता के अनुसार) सवा किलो
(१२) बताशा = १ किलो
(१३) मिश्री मोटो तागेवाली = सवा किलो, शहद = १ शीशी (बड़ी)
(१४) कमल गट्टा = २०-२५ नग, पंचअमृत = दूध, दही, घी शहद, (गंगा जल)
(१५) छिलके वाली साबुत मूँग दाल = २५० ग्राम

(१६) घी (देसी) = २.५-३ किलो

(१७) सरसों का तेल = १ किलो (शीशी में)

(१८) बासमती (सफेद अच्छे) चावल = ५ किलो, गेहूँ का आटा = २ किलो

(१९) देशी चना = २५० ग्राम

(२०) हलवा = सवा किलो (सूजी, चीनी आदि)

(२१) धूप अगरबत्ती = १ - १ पैकेट

(२२) सिन्दूर = ५० ग्राम

(२३) लवंग १०० ग्राम, इलायची १०० ग्राम, काली मिर्च ५० ग्राम

(२४) कुशा जड़ समेत धारा (ताजी) = १०० ज्यादा से ज्यादा

(२५) कलावा (लाल धगा मौली) = १०० बण्डल (कच्चा सूत) सूतली

(२६) ३ लोटा, ६ कटोरी (पंच धातु की या पीतल या स्टील की) १ गिलास (स्टील का)

(२७) चांदी की या सोने की सात पौड़ी वाली सीढ़ी कम से कम ११,१२ इंची

(२८) केशर = १ डिब्बी ३, ४ मासे

(१९) चौकी (लकड़ी की) = १(बड़ी) या २

(३०) बाँस = ६ या ७ फूटी

(३१) मिट्टी के दीपक = बड़ा १ मुखी, बड़ा ४ मुखी, छोटे ७, ४ नग
बड़ी कुलड़ी (मिट्टी की) - १+२ कलश के लिए

(३२) मटके तथा ठीकरा = एक, एक मिट्टी का (कुण्डा)

(३३) शंख (दक्षिण मुखी बन्द मुख वाला) = १ छोटा

(३४) पेन = १ कापी = १

(३५) कपड़ा = मार्किंग मोटी सूती ४० मीटर
= ५ मीटर लट्ठा सफेद (पाट के) सूती
= ५ मीटर लाल सूती कपड़ा
= सफेद= चौड़ाई = १½ मीटर, लम्बाई ३ मीटर, ऐसे ११ नग ३३ मीटर सफेद (लाल), ५ मीटर लाल १.५ मीटर लाल वस्त्र (पापलीन में) १ अंगोछा भगवा कपड़ा-१ मीटर पूतले के चोले के लिए

(३६) वस्त्र = ५ वस्त्र (पगड़ी कुर्त्ता धोती गमछा बण्डी)

(३७) बर्तन = ५ नग (थाली, कटोरी, लोटा, चम्मच, गिलास आदि)

(३८) सोने की या चांदी की अंगूठी = दक्षिणा आदि (आवश्यकता अनुसार)

(३९) भांग - १०० ग्राम, गुड़ - १०० ग्राम, सौंफ - ५० ग्राम

(४०) लड्डू = ५ देशी घी में बूंदी के

(४१) परने = ८, कुशा आसन = ७ - ८ या (दरी १, २)

(४२) बेल पत्री (बिल्ब पत्र)= पूजा में १०८ नग

(४३) लाल पुष्प (खुले)= पूजा के लिए

(४४) एक कैन भर के गंगा जल

(४५) आटा गेहूँ = ५ किलो

(४६) खाने के खाली पत्ते (पान) = ५० नग

(४७) हरड़ गाठ वाली हल्दी की ७ नग (खिचड़ी के लिए)

(४८) सप्त धन्य = गेहूँ, चावल, बाजरा, ज्वार, उड़द, जौ, तिल इत्यादि का आटा ३ किलो (आवश्यकता अनुसार)

(४९) अंगार के लिए लकड़ी या कच्चे कोयले १ किलो

(५०) हवन = हवन सामग्री, दही, पुराना गुड़, गुग्गल, काले तिल

(५३) हवन कुण्ड या ३ - ४ ईंटें

(५४) ताम्र पात्र

सूतली – २ बण्डल

कण्डे = ८–१० (टाक)

गठड़ी

खिचड़ी = गिरवान में बांध्ते है हल्दी, चावल, दाल, सुपारी, जायफल इत्यादि डालते

यह खिचड़ी की गठली जोगनी को दी जाती है। इसकी चिप्पी इत्यादि दान दिया जाता।

विर के लिए = पलु

पीर जी के लिए = ५ कपड़े, ५ बर्तन, अंगुठी

जोगनी के लिए = खिचड़ी

भण्डारी, अनंतगादी, साखियाँ के लिए = चिप्पी

(ग) कुछ नियम

(१) योगमाया कर्म करने का अधिकार केवल उपदेशी जानकार योगेश्वर को ही दिया जाता है अन्य योगेश्वर को नहीं।

(२) उत्तराधिकारी पीरजी तथा अन्दर कर्म करने वाले सभी उपदेशी योगेश्वर दर्शाये गये नित्यकर्म अनुसार सुर्चिभुत होना आवश्यक है।

(३) योगमाया साहित्य तथा सामग्री एक दिन पहले ही जुटाना चाहिए। आवश्यतानुसार सामग्री को घटा बढ़ा सकते है।

(४) कमरे में उत्तराधिकारी/पीरजी पूर्व तैयारी में सहयोग हेतु अन्य उपदेशी योगेश्वर ले सकते हैं।

(६) योगमाया पूजन (शंखढाल) की पूर्व तैयारी

यह योगमाया पूजन की तैयारी प्रातः सुर्चिभूत होकर शुरु करना चाहिये ताकि शाम तक सभी कर्मकाण्ड की तैयारी हो जाये।

(क) सुरक्षा विधि

अतः एक अलग-सा एकान्त साधारण २० × २० फिट का कमरा नियुक्त करके उसे जल से धोकर स्वच्छ करें। अन्दर एक दरी बिछाकर सभी योगमाया पूजन साहित्य एक जगह जुटाकर रखें।

सूचनाः- यह सामग्री एवं कमरा का कार्य योगमाया कर्म के एक दिन पूर्व भी कर सकते हैं।

ताकि दूसरे दिन प्रातः उत्तराधिकारी या पीर जी एवं उपदेशी योगेश्वर जल्दी उठकर नित्यकर्म स्नान ध्यान करके पूजन कर्म की तैयारी में जुट सकें।

अतः इस कमरा अर्थात् कक्ष में मुख्य उत्तराधिकारी या नियुक्त पीरजी प्रवेश करके पूजन सामग्री ऊपर तथा सभी कक्ष में निम्न मन्त्र से पुष्प या कुशा द्वारा गंगा जल छिड़ककर शुद्ध करें तथा जल गायत्री (पृष्ठ सं० ५) मन्त्र पढ़ें या गुरु मन्त्र बोल सकते हैं।

अतः धरत्री गायत्री (पृष्ठ सं० ४८) मन्त्र पढ़कर माता धरती का जल, गंध, पुष्प, फल, अक्षत आदि यथाउपचारे पूजन करना चाहिए। जो कि धरती माता को विनती करें कि हमें यह योगमाया कर्मकाण्ड करने हेतु इस कक्ष में स्थान प्रदान करें जिससे कि धरती के शयन-चेतना-कर्मादि के अवस्था नियमों में कोई बाधा न आये। क्योंकि धरती ऊपर जो भी कर्म-कार्य करवाने होते हैं तो प्रथम धरती का वास कहाँ है तथा क्या अवस्था है आदि पंचाग देखकर करते हैं। अतः यहाँ यह सरल उपाय यह है कि धरती माता का पूजन कर उनसे

पूजन कर्मकाण्डों के लिए स्थान तथा समय मांग लेना चाहिए। इससे दोष नहीं लगता। तत्पश्चात स्थान सुरक्षा या स्वः रक्षा हेतु पीरजी या उत्तराधिकारी अपने दाहिने हाथ में भभूत लेकर निम्न रक्षा मन्त्र का उच्चारण करते हुये कक्ष के सभी दिशाओं के तरफ फूँक मारे। या सभी दिशाओं के तरफ अपने दाहिने हाथ से चुटकी बजा के मन्त्र उच्चारण करें। इसी प्रकार नाथ सिद्धों के किसी भी धर्म कर्म में यह रक्षा मन्त्र कर्म करना चाहिए।

रक्षा मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलख अलख जी हंस बैठा, प्राण पिण्ड वज्र का कोठा। वज्र का पिण्ड, वज्र का हंस, वज्र भयो दशो दरवेस। गुरु मन्त्र से मन बान्धो, तन्त्र शक्ति से तन। चार खानी की जड़ बान्धो चार बानी को बन्ध, कमलारानी कमल रखे, जोत जगाय जोगन। चन्दसूर दो तन प्रकाश, बुद्ध राखे गणेश। चार जुग जोत जगाय गोरख किये अलख। अर्बद-नर्बद आकाश बान्धो, सात समन्दर पाताल बान्धों, बान्धो नव खूट की धरती। हात अस्त्र फास लिया, तिर तिरकस बान लिया। दसम दिशा कु राखी। हस्तक ले मस्तक ले कर मे अंकुश काल। दिन राती अखण्ड बाती करी रक्षा दसो कोतवाल।

वज्र का द्वार, वज्र कवाड, वज्र बान्धो मकान। पल पल पल्लु राखी वज्र बाला, ना राखी तो माता गौरया की आन। काशी कोतवाल भैरुनाथ भरे धर्म की साख, टैल टैलुवा, तेल तैलुवा ज्योत जगी अन्त प्रकाश। सौ योजन आगे पाछे, सौ योजन उपर निचे, सौ योजन दाये बाये, सौ सौ योजन ज्योत प्रकाश। उठो हनुमान करो हुंकार राम नाम का झन्कार, आते की सिमा बान्ध जाते की सिमा बान्ध ना बान्धे तो प्रभु रामचन्द्र की आन। राम का

बान चले, चले लक्ष्मण तीर, चौसट जोगन पाट राखे सात समुन्दर नीर। जल बान्धो थल बान्धो, बान्धो सकल संसार। तेज बान्धो तपन बान्धो, बान्धो सकल जंजाल। आटे-घाटे खप्पर जागे, ज्वाला माई कि जोत। काली कराली खन्जर चले नरसिंग करी चोट। भूत कू प्रेत कू भस्म कर भस्म भये पिशाच। दुष्ट को मुष्ठ करे, दैत्य दानव नष्ट करे नष्ट भये शमशान। अलख पुरुष ने हुकम चलायां चल भस्मी माता राख, राख, जती सती को रख पापी पाखण्डी को भख हमको रख दुष्ट को भख। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र वाचा, ॐ फट् स्वाहा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

उपरोक्त मन्त्र से भभूती बनाके सभी दिशा को फूँकें या सभी दिशा को चुटकी बजाके मन्त्र कहें। यह मन्त्र स्वरक्षा एवं स्थान रक्षा के लिए प्रयोग कर सकते हैं। जिसमें साबुत उड़द का प्रयोग करें।

[**विशेषः**- बाहरी बाधा, भूत प्रेत आदि तथा दुष्ट विद्याओं से स्वयं खुदकी तथा स्थान की सुरक्षा अवश्य होगी। होली, अमावस्या, दिवाली, नवरात्र तथा ग्रहण काल में १०८ बार जप करने पर तथा रोट, हलवा, ५ बुन्दी के लड्डु का भोग लगावें। लंगोट वाला वस्त्र, लाल वस्त्र, पीतवस्त्र सवा-सवा मीटर चढ़ावें। पंचोपचारे पूजन करें। मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।]

अतः पीरजी पूजास्थान कमरे के मुख्य द्वार में पूर्ण परदा लगावें और मुख्य द्वार पर गर्द लाल या सफेद रंग का परदा लगाना चाहिए। अतः निम्न प्रकार योगमाया पूजन की तैयारी करनी चाहिए।

(ख) योगमाया कक्ष में स्थान नियुक्ति

प्रथम योगमाया कक्ष (कमरे) में चार दिशा को चार स्थान निम्न प्रकार नियुक्त करें।

(१) बालासुन्दरी चौक (माई का पाट) माण्डण - यह दिवार को सटाके जिसका मुख उत्तर दिशा में होना चाहिए।

(२) कैलास (शिवलोक) - दूसरे स्थान पर कैलास बनावें इसका भी मुख उत्तर दिशा में आना चाहिए।

(३) भण्डार - तीसरे स्थान में भण्डार बनावे जहाँ सभी सामग्री यथा स्थिति रखी जाये।

(४) इस स्थान पर एक चौड़ी दरी बिछायें जहाँ आने वाले उपदेशी योगेश्वर बैठ सकें। [चित्र क्र० 3 देखें]

इस प्रकार स्थान नियुक्त करने के पश्चात् प्रथम भण्डार में पीरजी बैठकर सभी तैयारियाँ करें।

(ग) आटा बनाने की विधि

गेहूँ का आटा या सप्त धान्य अनाज (गेहूँ, बाजरा, ज्वार, मक्की, चना, चावल, उड़द आदि) का २ से ३ किलो आटा जल के साथ गूंथकर आटा को खूब ओसन लेवें, अर्थात् आटा गाढ़ा सा (पक्का सा) बनावें। [चित्र क्र० ४ में 'क' देखें]

(घ) चना बनाने की विधि

साधारण एक, सवा किलो चना एक पात्र में पानी में भिगो देवे तद्उपरान्त शाम को उसे उबालकर बढ़िया, जीरा, धनिया, हरी मिर्च आदि मसाला का घी में छोंक लगाकर बढ़िया चने की सूखी सब्जी बनावें और भण्डार कक्ष में रखें। [चित्र क्र० ४ में 'म' देखें]

(ङ) हलवा बनाने की विधि

इसी संध्या के समय एक पात्र में सूजी का मीठा सवा किलो हलवा बनाकर रखें। [चित्र क्र० ४ में 'ख' देखें]

(च) पंचमेवा पात्र

एक थाली में अलग अलग कटोरियों में पंचमेवा रखें, गिरी

बादाम, गिरी काजू, गिरी अखरोट, गिरी पिस्ता, छुवारे आदि। [चित्र क्र० ४ में 'छ' देखें]

(छ) भैरव (भांग) पात्र बनाने की विधि (जुगत पिण्ड)

सवा किलो भांग पानी में भिगोकर उसे उबालकर पत्थर के ऊपर बारीक पीस लेवें और एक पात्र में रखकर भैरव भांग पात्र तैयार करें। [चित्र क्र० ४ में 'ग' देखें]

(ज) जुगती का कुण्डा पात्र बनाने की विधि (भैरव अमृत प्याला) कुण्डापात्र

एक पात्र में, विशेषत: मिट्टी के बर्तन में पंचामृत (घी, शक्कर, शहद, दूध, दही) डालें उसमें थोड़ा सा भांग डालें और गुड़ (पुराना) डालकर उसे अच्छे से मिलावें और दूसरा बर्तन लेकर दोनों बर्तन से अलट पलट कर (ऊपर-नीचे) बढ़िया मिश्रण करके उस मिट्टी के पात्र में रखें। इसप्रकार जुगती का कुण्डा पात्र या भैरव अमृत प्याला तैयार करें। [चित्र क्र० ४ में 'घ' देखें]

इस प्रकार और भी साहित्य जैसे सरसों का तेल, घी, लौंग, इलायची, मिश्री, चावल तथा सभी प्रकार के बर्तन तथा वस्त्र पूर्व सूची अनुसार सभी सामग्री भण्डार कक्ष में रखें।

(झ) केशर पात्र बनाने की विधि

एक कटोरी में थोड़ा दूध लेकर उसमें केशर मिलाकर केशर पात्र तैयार करें। [चित्र क्र० ४ में 'ज' देखें]

(ञ) साखियाँ बनाने की विधि

साहित्य - दो बाँस की पतली लकड़ी, रुई (फोआ सा), कपूर, मौली (लाल सूत), घी।

विधि :- प्रथम दो बाँस की पतली सी लकड़ी साधारण १२-१५ इंच लम्बी सफाई करके लेवें। दो लकड़ी के टोक को (नोक पर) एक एक (फोवा) थोड़ी सी रुई (कपास) लपेटकर कपूर के साथ मौली (लाल सूत) से लपेट कर बान्ध देवें और घी में डुबोकर एक तरफ रख देवें। इनको साखियाँ कहा जाता है। अतः इसको सभी जोतियाँ चेतन करने के उपयोग में लाया जाता है। (यह साधारण मशाल जैसी ही होती है।) [चित्र क्र० ५ में 'अ' देखें]

सूचना :- एक या दो साखियाँ और बनाकर रखें।

(ट) ज्योतियाँ बनाने की विधि

इस शक्ति पूजन अर्थात् माई के जोत पूजन अर्थात् योगमाया पूजन कर्मकाण्ड में मुख्यतः बारह जोतियाँ बनायी जाती हैं। जैसे:-

(१) गणेश ज्योत, (२) बाला सुन्दरी या अखण्ड जोत, चौक की चार गणों की चार जोत, (३) सतयुग गण की, (४) त्रेतायुग गण की, (५) द्वापर युग गण की, (६) कलियुग गण की, (७) कलश जोत, (८) हिंगलाज जोत, (९) भैरव जोत, (१०) कैलास ऊपर चार जुग की जोत, (११) गत गंगा जोत, (१२) भण्डार जोत।

अतः योगमाया पूजन के लिये उपरोक्त सभी जोतियाँ जो कि फोवा अर्थात् रुई की जोत, खड़ी जोत या लम्बी जोत, जो भी हो, वह बनाते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

ज्योत (रुई की बत्ती) बनाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ धर्त्ती, सोहं आकाश; महा अंगधर्त्ती महाशून्य आकाश। उन्हां सिद्धा लिया निवास पांच महेश्वर छटी तलाई गुरुजी के वचन से बत्ती बनाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

ऐसी बत्तियाँ बनाने के पश्चात् जब ज्योतियों में अर्थात् दीपकों में जो भी मृतिका की या कटोरी की या प्याला (ग्लास) इनके अन्दर उपरोक्त रुई की बत्ती रखने के पश्चात् गौ धृत या सरसों का तेल जब इनमें सार रुप में डालें तब निम्न मन्त्र को बोलते हुये सार डालिये।

ज्योत में सार डालने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। सार सार महासार सार परसो ज्योत चेते भुजा पसार। शिव पूजू, शक्ति पूजू, पूजू गुरु के पाव। पांच महेश्वर आज्ञा देवे तो पूरावू जोत में सार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अथवा

विशेषत: ज्योत (दीपक) में घी (घृत) को सार रूप में डालते समय निम्न मन्त्र बोलना चाहिए।

जोत में सार डालने का मन्त्र (घृत)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कौन शबद से पिण्ड बनाया। कौन बनावन हार कौन पुरुष ने कलिया बनाई कौन सिंचन हार। ॐ गुरुजी अनहद शबद से पिण्ड बनाया। सतगुरु बनावन हार। अलख पुरुष ने कलि बनायी। शम्भु सिन्चन हार। दूध सो धोई सोध माखने सार जाकी वासना तिन लोक में जाय। करो पवित्र माई सार-आत्मसार-मन्त्र पढ़ ज्योत में सार पूरे सो सत अमरापूर जावे। बीना मन्त्र पढ जोत में सार पूरे सो सत नरक में जावे। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार उपरोक्त मन्त्रोच्चार विधि से निम्न जोतियाँ बनायें।

[**विशेष:-** उपरोक्त बत्ती बनाने और ज्योत में सार डालने का मन्त्र साधक सभी प्रकार के विधि विधान में जब भी धार्मिक कार्य के लिये ज्योत लगानी हो तभी इन मन्त्रों को उपयोग करें। कार्य सिद्ध हो जायेगा।]

अत: अपने सुविधानुसार अपने क्रम से जोत बनायें।

(ठ) बाला सुन्दरी की या माई की कमल ज्योत या मुख्य अखण्ड जोत बनाने की विधि

साहित्य :- बाँस की लकड़ी, रुई (फोवा), घी, आटा, कपूर, प्याला (ग्लास), मौली (लाल सूत) आदि।

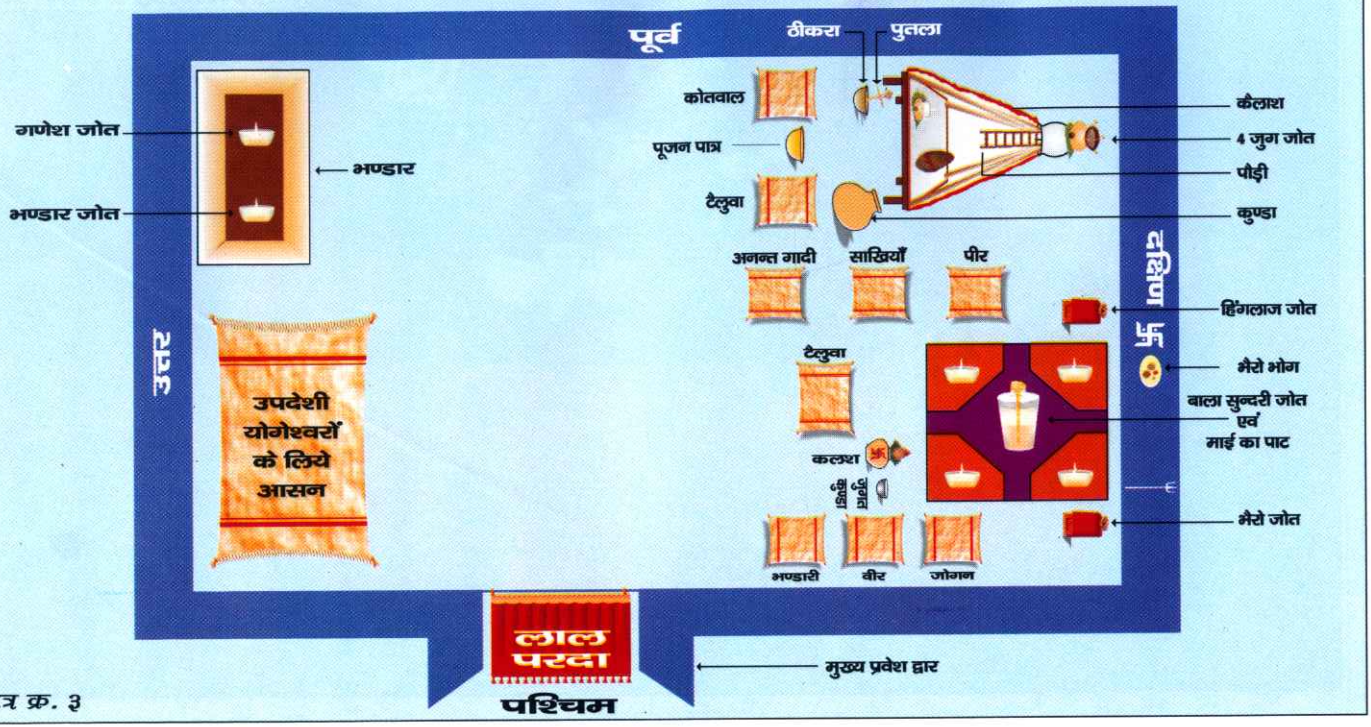
विधि :- प्रथम ५-६ इंच बाँस की पतली सी लकड़ी लें। रुई के ५-७ फोवे (रुई का गोला) बनायें। अत: बांस के एक नोक के ऊपर थोड़ी रुई (फोवा) को रखकर लाल सूत (मौली) से बान्धे फिर इसके इर्द गिर्द ५-७ दिशा तरफ से ५-७ फोवे (रुई के गोले) इस प्रकार मौली से ३६५ बार लपेटकर बान्धे जिसका ५-७ या ९ पंखड़ी वाला कमल बन जाये अत: इस कमल के मध्य फोवे पर एक कपूर की डली रखें, उसके ऊपर पुन: रुई (फोवा) रखकर मौली से बान्ध देवें। इस प्रकार बाला सुन्दरी की कमल जोत बनी। अत: एक साधारण ५ इंच ऊँचाई वाला प्याला (ग्लास) लेवे उसके तले में आधा ग्लास में गाढ़ा सा (ओसन) गुंधा हुआ आटा दबाकर डालें और उसमें यह बाँस की कमल जोत बीचोंबीच मध्य में खोंच कर खड़ी कर दें और बाकी ग्लास के आधे हिस्से में घी (घृत) डाल देवें। इस प्रकार बाला सुन्दरी की अखण्ड कमल ज्योत तैयार हुयी उसे अमर जोत भी कहा जाता है। अत: इसे भण्डार कक्ष में रख दें। [चित्र क्र० ५ में 'ब' देखें]

(ड) बालासुन्दरी चौक (पाट) माण्डन के चार गणों की चार ज्योत एवं हिंगलाज माता की जोत बनाने की विधि

साहित्य :- ५ पंचधातु की या स्टील की कटोरियाँ, रुई, आटा, घी।

विधि:- रुई की मोटी सी ५ खड़ी जोत बनायें और पांचों कटोरियां

योग माया पूजन कक्ष (नक्शा)



चित्र क्र. ३



भण्डार स्थापना

के तल में आधी कटोरी भाग में गाढ़ा गुंधा हुआ आटा रखें फिर उनमें सभी कटोरियों में मध्य में एक एक रुई की खड़ी ज्योत खोंचते (दबाते) हुये खड़ी कर दें और उनमें घृत सार डालकर तैयार करें। इस प्रकार चार गणों की चार एवं हिंगलाज माता की एक ऐसी पांच ज्योतियाँ तैयार करके एक तरफ भण्डार कक्ष में रखें। [चित्र क्र० ५ में 'क' देखें]

(ढ) भैरव ज्योत एवं कैलास में गत गंगा की ज्योत बनाने की विधि

साहित्य :- दो मृतिका के दीपक, घृत, सरसों का तेल, रुई।

विधि :- रुई की दो मोटी खड़ी जोत बनायें और मृतिका के दीपक में रखें उनमें भैरव जोत में सरसों का तेल (सार) डालें तथा कैलास पाट के गत गंगा जोत में घृत सार डालें इस प्रकार भैरव जोत एवं गत गंगा जोत तैयार करके भण्डार कक्ष में रखें। [चित्र क्र० ५ में 'ड' देखें]

(ण) कैलास के ऊपर की चार जुगों की जोत बनाने की विधि

साहित्य :- मृतिका का चार मुख वाला बड़ा दीपक, रुई, घी।

विधि :- प्रथम रुई की २-३ इंच लम्बी सी चार बत्ती बनाये और दीपक के चारों मुखों में एक एक बत्ती रखें। घृत सार डालें ऐसी कैलास की चतुयुगी जोत तैयार करके अलग से रख देवें। [चित्र क्र० ५ में 'ख' देखें]

(त) भण्डार ज्योत बनाने की विधि

साहित्य :- मृतिका का दीपक, रुई, घृत आदि।

विधि :- रुई की खड़ी बत्ती (जोत) बनाकर मृतिका के दीपक के मध्य में रखें, घृत सार डाल कर भण्डार जोत तैयार करके भण्डार कक्ष में रखें। [चित्र क्र० ५ 'ड' देखें]

(थ) गणेश जोत एवं कलश जोत बनाने की विधि

साहित्य :- दो कटोरी, आटा, रुई, घृत आदि।

विधि :- रुई की दो खड़ी जोत बनाकर दोनों कटोरी के तले में आटा रखें उस पर मध्य में खड़ी जोत रखते हुये घृत-सार डालें। इस प्रकार गणेश जोत एवं कलश जोत बनाके रखें। [चित्र क्र० ५ में 'क' देखें]

अत: इस कर्म काण्ड में मृत योगेश्वर (जिसकी शंखढाल है) उस के नाम से पतला बनाते है जो मुख्य कर्म माना जाता है। यह पुतला सप्त धान्य (गेहूँ, चावल, बाजरा, ज्वार, उड़द, जौ, तिल आदि) के ओसन आटे से बनाना चाहिए। पूर्व काल में नाथ सम्प्रदाय योगमाया पूजन में यह पुतला जल से बनाते थे। किन्तु जल में आटे का पुतला पिघल जाने लगा। इसलिये यह प्रथा बन्द होकर पुतला कुशा का बनाने लगे। अत: नाथ योगी सम्प्रदाय परम्परानुसार निम्न प्रकार पुतला बनाया जाता है।

प्रथम किसी सेवक (उपदेशी) को वन में भेज कर कुशा की जड़ तथा कुशा लाने को कहें। अत: कुशा जंगल (भूमि में) से डाव निकालते समय प्रथम इस कुशा (डाव वनस्पति) का सम्पुष्टि पूजन करना चाहिये अर्थात् वनस्पति जड़ में थोड़ा जल डाले फिर गंध या चन्दन लगाये, पत्र पुष्प चढ़ाये, कुछ मीठा प्रसाद भोग देवें और कुशा वनस्पति की प्रार्थना करें कि हमें हमारे इस कार्य में सहयोग करें। नाथ सिद्धों ने पूर्व काल से वनस्पतियों को बहुत मान दिया है। खूब अभ्यास किया। दवाइयाँ बनाई और रस सिद्ध हुये। अत: इन वनस्पतियों क

महान कार्य को देखते हुये उन्हें मान देना चाहिए। नवनाथों में सिद्ध चौरंगी नाथजी अठारह भार वनस्पति स्वरुप सिद्ध योगी हुये। नागार्जुन नाथ, चर्पटीनाथ, उदयनाथ आदि नाथ सिद्ध वनस्पतियों के ज्ञाता तथा रस सिद्ध थे। ऐसी वनस्पतियों का नाथ सिद्ध अनेक कार्य में अर्थात् तन्त्र मन्त्र विधि सिद्धि प्राप्ति के लिये, अनेक असाध्य बीमारियों का इलाज करने के लिए उपयोग करते हैं। कुछ वनस्पति के ऐसे गुण हैं जो खाने वाला व्यक्ति गुप्त हो जाता है। तो कोई वनस्पति खाने से छः छः महीनों तक भूख नहीं लगती है इनके सहयोग से योगी अपनी तपस्या निर्विघ्नता से करते हैं। अतः ऐसे वनस्पतियों को यथा योग्य मान सम्मान देना चाहिए।

अतः इस कुशा (डाव) वनस्पति का तन्त्र में सहयोग करने के कारण पूजन प्रार्थना के पश्चात् कुशा की भूमि में से जड़ निकालते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

कुशा लाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं का सकल पसारा राख लेवे धर्ती माता देव साथ हमारा हम योगी जुगत का आया आखा देव कुशा ले आया पिण्ड छेदकर पिण्ड रचाया, अजर अमर कर धर नाथ करत सेवा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

यह मन्त्र कहते हुये भूमि पर अष्टगंध मिश्रित चावल (आखा) रखते हुये कुशा को जड़ से उखाड़कर ले आवें।

इस प्रकार जंगल से कुशा तथा कुशा की जड़ लाने के पश्चात् निम्न प्रकार से कुशा का मृत योगेश्वर के नाम का पुतला बनाना चाहिए।

(द) पुतला बनाने की विधि

साहित्य :- कुशा तथा कुशा की बड़ी जड़, लाल सूत (मौली), लाल या भगवा वस्त्र, कैंची आदि।

विधि :- एक कुशा (डाव) की जड़ साधारण ९ इंच लम्बी लेवे और एक ७ इंच और दो ४-४ इंच की कुशा (डाव) लेकर चित्र क्र० ६ में 'अ' को देखते हुये उसके समान योगेश्वर के दो हाथ, दो पैर, कुशा के तथा शीश, मुख, दो कान, आँखें, नाक आदि सब पतली कुशा को लाल सूत से लपेटकर ऐसे बान्धे जो कि यथा स्थिति बढ़िया पुतला बन जाये। अत: पुतले को भगवा पहनने का मन्त्र पृष्ठ सं० ६ को कहकर भगवा बाना पहिनाइये।

मृत योगेश्वर पीर-महन्त-स्थानधारी होगा तो उसे धोती बन्डी, कुरता, शीश पर साफा इनके भगवे वस्त्रों को लाल सूत से लपेटकर बान्धे।

अगर तपस्वी, विरक्त, रमता राम होगा तो पुतले को अल्फी आंचला साफा पहिनाइये।

मृत योगेश्वर नर हो या नारी हो उपरोक्त विधि नाथ सिद्ध सम्प्रदाय में की जाती है।

गृहस्थ जोगियों में नर को लाल वस्त्र तथा नारी को सफेद वस्त्र पहनाते हैं।

अत: कुशा के दो कुण्डल (दर्शन) नादि पवित्री तथा लाल सूत (मौली) का जनेऊ बनायें और कुण्डल (दर्शन) मन्त्र पृष्ठ सं० ७ तथा नाद जनेऊ मन्त्र पृष्ठ सं० ७ को उच्चारण करते हुये पुतले को कुण्डल तथा नाद जनेऊ पहनाइये। इस प्रकार मृत योगेश्वर के नाम पुतला बनाया जाता है तथा एक अतिरिक्त पुतला ज्यादा बनाया जाता है जिसे भूला भटका या भूला बिसरा कहते हैं और यह भूला भटका नाम का

पुतला जब बनाते हैं जब केवल एक मृत योगेश्वर की शंखढाल हो। अन्यथा नाथ सम्प्रदाय में यह शंखढाल कर्म सामूहिक सम्प्रदायिक परम्परा को जुड़ते हुये सामूहिक एक या अनेक मृत योगेश्वरों की शंखढाल करते हैं। जिसका नियम ऐसा है कि

१-३-५-७-९ ..... पुतलों की शंखढाल नहीं होती बल्कि जोड़ी का ही अर्थात् सम संख्या से २-४-६-८-१० ..... आदि योगेश्वरों की सामूहिक शंखढाल कर्म किया जाता है। उपरोक्त विधि से सप्तधान्य (अनाज) के आटा को पुतला बनाकर भी विधि कर सकते हैं।

इस प्रकार पुतला बनाकर तैयार होने के बाद कैलास की पौड़ी बनाते हैं।

(ध) पौड़ी (सीढ़ी) बनाने की विधि

साहित्य :- बाँस (डोंका) और लाल सूत (मौली)।

विधि :- दो डोंका या फल्डा भी कहते हैं अर्थात् बाँस १८ अंगुल अर्थात् ११-१२ इंच के लेवें तथा साढ़े तीन अंगुल के सात डोंका (फल्डा) अर्थात् बाँस लें उसे साफ सुथरा करके कच्चे लाल सूत (मौली) से दो-दो अंगुल फासले पर सात पौड़ी (सीढ़ी) बनाकर बान्ध देवें।

यह सीढ़ी (पौड़ी) उपरोक्त विधि से कुशा की भी बना सकते हैं।

विशेषत: यह पौड़ी सोने की तार या चान्दी की तार की बनायी जाती है। नाथ सिद्ध (उपदेशी) सम्प्रदाय में सोने की सीढ़ी की मान्यता है। यह सीढ़ी (पौड़ी) युग अनुसार भी बनायी जा सकती है। सतयुग = सोने की, त्रेतायुग में = चान्दी की, द्वापर युग में = ताम्बे की तथा कलियुग में = लोहे की या बांस की या कुशा की बनानी चाहिए।

विशेष :- विशेषत: नाथ सम्प्रदाय में निम्न प्रकार स्वर्ग सीढ़ी

(पौड़ी) बनाते हैं। प्रथम ९.२५ ग्राम लोहे की अठारह अंगुल के (११-१२ इंची) दो सरिये तार समाकार के बनायें और निम्न प्रकार सात पौड़ी (सीढ़ी) उनमे जोड़ दें।

१.२५ ग्राम, तीन साढ़े तीन अंगुल की सोने की प्रथम पौड़ी जोड़ें तदनन्तर १.२५, १.२५ ग्राम की ३-साढ़े तीन अंगुल की चान्दी की पांच पौड़ी जोड़े और अन्त में १.२५ ग्राम की ३-साढ़े तीन अंगुल की ताम्बे की पौड़ी जोड़ें।

इस प्रकार १८ ग्राम की पूर्ण पौड़ी बनाकर उपयोग में लायें। [चित्र क्र० ६ में 'ब' देखें]

इस प्रकार सभी साहित्य तैयार होने के बाद एक पूजन पात्र बनाना चाहिए।

(न) ज्योत पूजन पात्र बनाने की विधि

साहित्य:- एक बड़ा सा पात्र (परात, थाली आदि)

विशेषत: ताम्बे का ही लेना चाहिए। उसमें उपरोक्त तैयार की हुई सामग्री, सभी प्रकार की ज्योतियाँ, दीपक-पुतले, सीढ़ी संजोग करके रखें। अत: इस पात्र में कम से कम ५० पान पत्ते अर्थात् खाने के पान या पीपल, वटवृक्ष के पत्ते तथा २०-२५ बारीक (पूजा की) सुपारी जल से स्वच्छ धोकर रखें, पान डंठल वाले होने चाहिए। उसी प्रकार पात्र में खूब ओसन गाढ़े गुँधे हुये आटे के बड़े-बड़े १२-१५ पिण्ड (पेड़ा) सेब के आकार के बनाकर रखे जायें तथा इसी आटे के और मटर के आकार के बारीक बारीक ५०-६० पिण्डी (गोले) बनाकर रखे जायें। अत: इसी आटे की छोटी-छोटी नादी पवित्रियाँ या शक्य हो तो कुशा की ५०-६० नादि पवित्री बनाकर रखना चाहिए। अत: पात्र में लाल पुष्प तथा बिल्व पत्र, चन्दन, केशर तिलक, हनुमान सिन्दूर,

भांग का पात्र, पंचामृत, कपूर तथा आरती साहित्य, इत्तर, अक्षत (चावल या आखा), धूप -अगरबत्ती, लवंग, इलायची, मौली, लालसूत या कलावन, हरड़ आदि आवश्यक सामग्री रखें।

अत: पात्र में एक दक्षिण मुखवाला बढ़िया शंख रखें तथा कुशा जल में भिगोकर उसे लाल सूत में लपेटकर ही पवित्रियाँ (अंगूठी) बनाके रखें। इस प्रकार ज्योत पूजन पात्र तैयार करके भण्डार कक्ष में रखें। [चित्र क्र० ४ में 'ड, ढ, ण, न इत्यादि देखें]

(प) कुछ नियम

(१) इस शंखढाल विधि में शुरू से लेकर अंत तक सभी मन्त्रों का उच्चारण केवल मात्र उत्तराधिकारी या पीर जी कर सकते है तथा प्रत्येक अनुयायी भी अपने-अपने मंत्र उच्चारण कर सकते है।

(२)सुरक्षा विधि करना समय की बचत अत्यावश्यक है।

(३) एक दिन पूर्व ही सभी सामग्री जुटाकर लायी जायें और भण्डार कक्ष में एक ही जगह सभी साहित्य तैयार करके रखा जाये।

(४) दिन में प्रात: नित्यकर्म करके यह तैयारी करने की शुरुआत करें ताकि सभी तैयारी यथायोग्य तथा मन्त्रोच्चार विधि विधान से होनी चाहिए।

(५) सभी तैयार किये हुये साहित्य एक बड़े पात्र में रखे जायें ताकि समय पर उसे तुरन्त लेकर कार्य कर सकें।

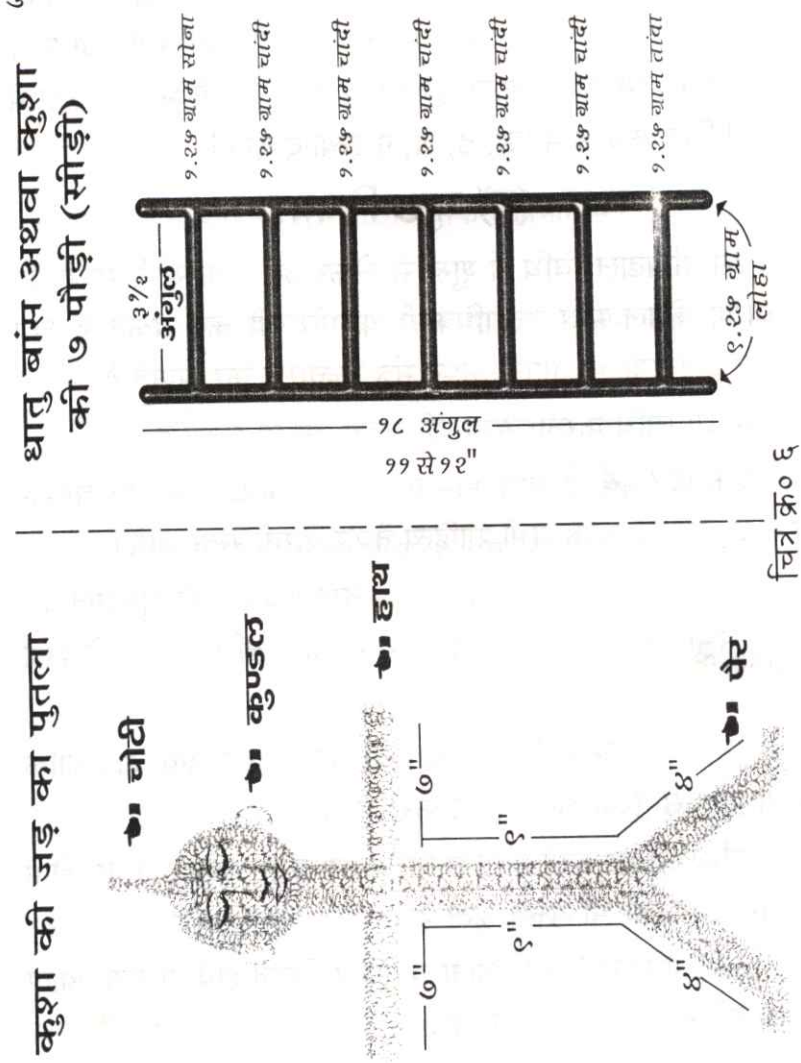
(६) साहित्य तैयार करते करते मन्त्रोच्चारण करना यथावत विधि होती है और समय की भी बचत होती है।

(७) १-२ साखियाँ ज्यादा बनाना चाहिये खण्डित होये तो यही ज्यादा बनाये हुये साखियाँ काम आते हैं।

(८) मिट्टी के दीपक भी १-२ ज्यादा बनाने चाहिए।

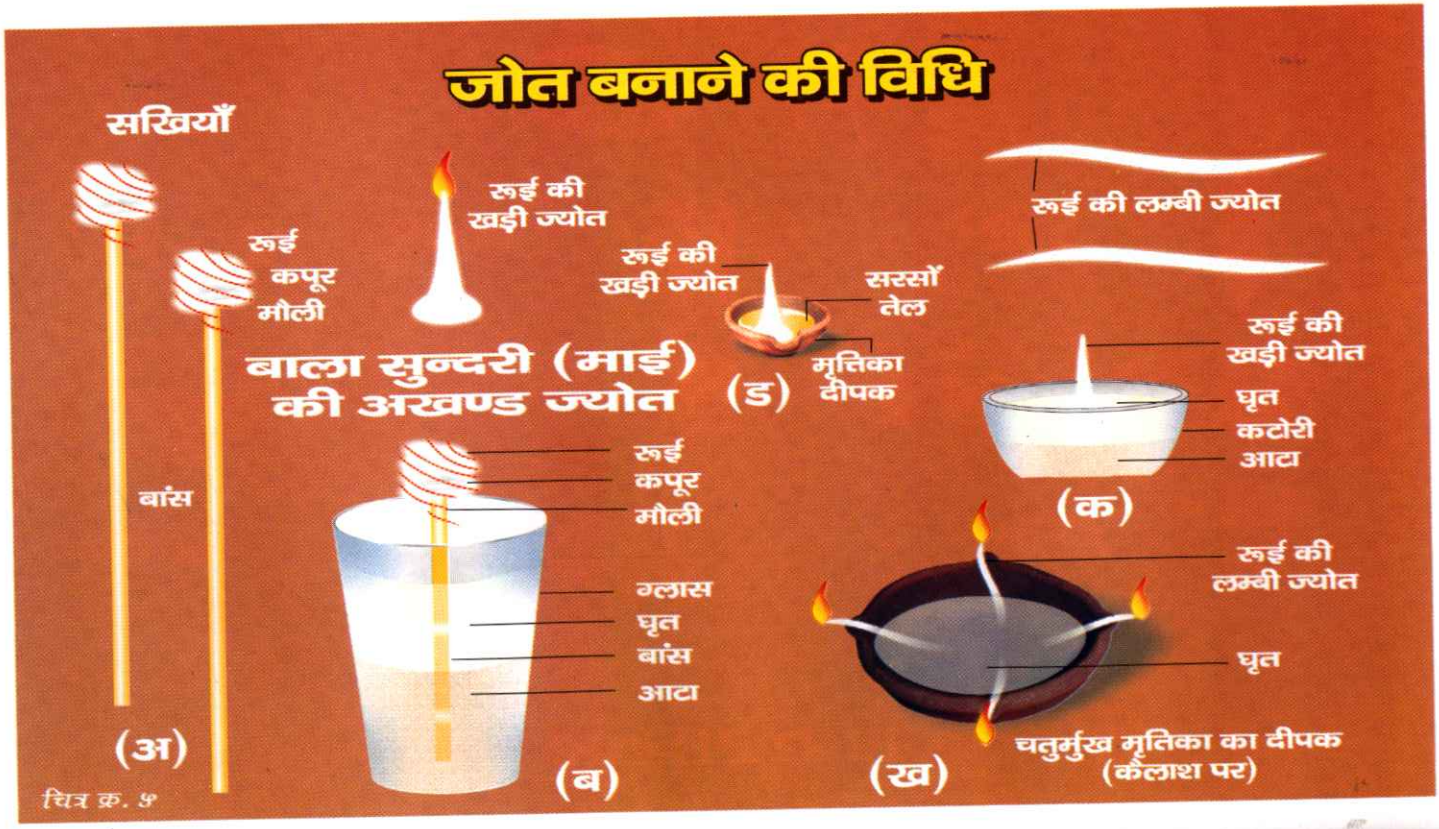
(९) शक्यतो, साहित्य यथायोग्य एवं मजबूत बनायें जो कि समय पर खण्डित नहीं होना चाहिये।

(१०) साहित्य आकृतियाँ (चित्र) के मार्गदर्शन से बनाये जायें जो सुविधाजनक होगा।




भण्डार कक्ष
भण्डार ज्योत
पान सुपारी
अक्षत राशि
आटा पिण्ड
(अ)
गणेश ज्योत
पान सुपारी
आटा पिण्ड
अक्षत का स्वास्तिक
(ब)
(क) गुन्दा आटा
(ख) हलवा
(म) चना
(ग) भंग गोला पिण्ड
(य) जुगती कुण्डा
(ड़) घृत
(च) गंगाजल कुण्डा
(छ) पंचमेवा
(ज) केशर
(झ) पांच बर्तन
वस्त्र
(ट)
(ठ) रूई
रूई
(ड) पूजन पात्र
(ढ) ज्योत पात्र
(ण) पुतले, पिण्ड तथा नादि
सरसों तेल
(न)
(प) ठीकरा
(फ) अंगार (खीरे)

चित्र क्र. ४


जोत बनाने की विधि
सखियाँ
रूई
कपूर
मौली
बांस
(अ)
रूई की
खड़ी ज्योत
बाला सुन्दरी (माई)
की अखण्ड ज्योत
रूई
कपूर
मौली
ग्लास
घृत
बांस
आटा
(ब)
रूई की
खड़ी ज्योत
सरसों
तेल
मृत्तिका
दीपक
(ड)
रूई की लम्बी ज्योत
रूई की
खड़ी ज्योत
घृत
कटोरी
आटा
(क)
रूई की
लम्बी ज्योत
घृत
चतुर्मुख मृतिका का दीपक
(कैलाश पर)
(ख)

चित्र क्र. ९

(७) स्थापना विधि

(क) भण्डार स्थापना

(श्री गणेश ज्योत एवं भण्डार ज्योत स्थापना)

भण्डार में गणेश ज्योत स्थापना-

साहित्य :- चौकी, लाल वस्त्र, अक्षत (चावल), एक मृतिका और एक कटोरी का दीपक, पूजन सामग्री पात्र, भण्डार सामग्री, चना पात्र, हलवा पात्र, भोग पात्र अर्थात जुगती का कुण्डा, पान-सुपारी, आटा आदि।

विधि :- पूर्व वर्णित नियुक्त किये हुये भण्डार स्थान पर [चित्र क्र० ३ में भण्डार] एक चौकी रखें, चौकी के ऊपर लाल वस्त्र बिछायें, चौकी के मध्य में एक तरफ आखा (चावल) द्वारा स्वास्तिक बनायें अर्थात स्वास्तिकासन बनायें। यहां चित्र क्र० ४ पर देखे

तांत्रिक अनुष्ठान विधि - अत: स्वास्तिक के ऊपर दो (डंठल वाले) खाने के पान (जोड़ा) रखें जिसका चिकनाई का पृष्ठभाग ऊपर आये, पान के ऊपर एक बारीक सुपारी रखें सुपारी के ऊपर गाढ़ा गुन्दा हुआ आटे का पिण्ड (पेड़ा) रखें पेड़े के ऊपर एक कटोरी वाला पूर्व वर्णित गणेश ज्योत रखें।

भावार्थ = स्वास्तिक बनाने का अर्थ है कि स्वास्ति = अर्थात् मंगल क्षेम, 'क' = अर्थात् कारक या करने वाला अर्थात् कार्य, कर्मकाण्ड आदि को शुभ करने वाला और उसकी गति-सिद्ध-चिन्ह है स्वास्तिक 卐 जिससे अध्यात्म दर्शाता है, देवी देवताओं के चारों ओर घूमने वाले आभामण्डल का चिन्ह स्वास्तिक होने के कारण तथा देवी देवता का प्रतीक होने के कारण शास्त्र में उसे शुभ-मंगल या शुभ लाभ माना गया हैं। स्वास्तिक का + का चिन्ह प्रथम चारों दिशाओं को

दर्शाता है और 卐 यह स्वास्तिक का चिन्ह चारों तथा सभी दिशाओं की गति अर्थात् दक्षिण वर्ती दक्षिण दिशा से घूमने वाली गति को दर्शाता है जो पूरे ब्रह्माण्ड में ग्रह तारे नक्षत्र इसी दक्षिण वर्ती दिशा से गतिशील हैं घूमते हैं। इसी गति से परिक्रमायें एक दूसरे की तथा अपने आपकी करते हैं और यही गति देवी देवताओं के आभामण्डल की है। इसलिये यह स्वास्तिक अति शुभ मंगल माना जाता है और आध्यात्मिक क्षेत्र में उसे प्रथम मान दिया जाता है। विशेषत: श्री गणेश पूजन में उन्हें मांगलिक कार्य शुभ कार्य के मंगल कार्य के लिये उपयोग में लाया जाता है। अत: श्री गणेश ज्योत स्थापना के लिये अक्षत द्वारा स्वास्तिक बनाने का यही आशय है कि स्वास्तिक शुभारंभ, पुरुषार्थ, यश, कीर्ति, लाभ, ज्ञान, ऋद्धि-सिद्ध इत्यादि शुभ गुण सूचक एवं परिपूर्णता से युक्त है। श्री गणपति को, श्री गणेश को यह स्वास्तिक अत्यन्त प्रिय एवं शुभ मंगल चिन्ह माना जाता है। श्री गणेश को मंगलमूर्ति भी कहा जाता है। जहां स्वास्तिक का निर्माण हुआ वहां श्री गणेश जी शुभ लाभ, ज्ञान सहित ऋद्धि-सिद्धियों को साथ लेकर उपस्थित होते हैं। इसमें स्वास्तिक अगर 卐 इस प्रकार बनायें तो यश कीर्ति, धन -सम्पदा, ज्ञान आदि का सूचक है तथा 卍 इस प्रकार उलट दिशा से निर्माण किया हुआ स्वास्तिक स्त्रीलिंगी नारी प्रकाश शक्ति सूचक माना गया है।

यहाँ स्वास्तिकासन चावलों से अर्थात् अक्षतों से बनाने का आशय भी यही है कि शास्त्रों में अक्षत अर्थात् चावलों को आध्यात्मिक कार्य तथा कर्मकाण्डों में अन्नपूर्ण-पूर्ण ब्रह्म तथा ऋद्धि सिद्धि की प्रधान मान्यता है। अपने इष्ट, देवताओं, शिव-शक्ति, सद्गुरुजी इत्यादि सभी को अक्षत अर्पण करने से वह प्रसन्न हो जाते हैं। पूजन कर्मकाण्डों में किसी चीज वस्तु अर्पण करने हेतु उपलब्ध नहीं हो तो उसकी जगह अक्षत अर्पण करने से उस चीज के विषय में पूर्णता हो जाती है। अत:

धार्मिक विधि विधानों में अक्षत को प्रधान स्थान दिया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अक्षत अत्यंत शुद्ध, पवित्र माना जाता है इनमें से विशेषत: बासमती चावलों से एक अत्यंत मधुर सुगंधी की लहरें उत्पन्न होती हैं। यह सुगंधित वायु जन्तु नाशक एवं वातावरण शुद्ध पवित्र करती है। जो कि धार्मिक क्षेत्र में उपयुक्त होती है। भौतिक दृष्टिकोण से यह चावल सहज सुलभ और हर जगह पर्याप्त प्रमाण में उपलब्ध होता है। महाभोज, अर्थात् भोजन में चावल न होने से अपूर्णता सिद्ध होती है। यह एक पौष्टिक अनाज भी माना जाता है।

यहाँ योगमाया कर्मकाण्ड में भी चावल या अक्षत को 'आखा' इस कोड भाषा में सम्बोधित करते हैं और इस शंखढाल कर्मकाण्ड में प्रारम्भ से लेकर अन्त तक इस 'आखा' का उपयोग किया जाता है।

अत: इस योगमाया पूजन के आसन अनुष्ठान विधि में दो डंठल वाले खाने के पान, इसके ऊपर पूजा की छोटी सुपारी और सुपारी के ऊपर आटे का पिण्ड रखने का आशय यह है कि यह एक तांत्रिक विधि है जो कि इस पान सुपारी, आटा के ऊपर जो भी (देवी-देवता, संत-साधु, नर-नारी या तामसी देवता) आसन ग्रहण करेंगे अर्थात् उन्हें मन्त्र द्वारा आसनाधीन होना पड़ता है तो उन्हें उनके कार्य-क्रिया-विधियों का उत्तरदायित्व करना ही होगा। जैसे व्यवहार में कहा जाता है कि फलाने व्यक्ति को फलाने काम के लिये सुपारी दी है अर्थात् करारबद्ध किया है उसी प्रकार यह भी उन देवी देवताओं को पान सुपारी (आसन) देकर कर्मकाण्ड के लिये करारबद्ध किया जाता है। अपितु पान सुपारी के ऊपर आटे का पिण्ड दबा के रखने से करारबद्ध सुपारी आटे के अन्दर छुप जाने का आशय है कि यह कार्य अतिषय गोपनीय गुप्त रीति से कार्य सिद्ध किया जाये इसी प्रकार से पानसुपारी के ऊपर पिण्ड दबाने के समय मन्त्र (तन्त्र-मन्त्र) उच्चारण करने के कारण वह

आसन में आसनधारी बन्ध जाता है।

इसी प्रकार से पान के ऊपर सुपारी रखने पर शिवलिंग की अर्थात् शिव की पिण्डी की स्थापना होती है तथा उसके ऊपर रखा हुआ आटे का पिण्ड, सृष्टि या पृथ्वी रुप माना जाता है।

योगमाया पूजन की प्रथा माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथजी ने प्रारम्भ की थी। मत्स्येन्द्रनाथ जी कुलाकूल सिद्ध अर्थात् कुल = शक्ति, अकुल = शिव के ज्ञाता थे तथा इसमें परिपक्व थे। उन्हें कौल ज्ञान की भी प्राप्ति थी। इनके इतिहास में उन्होंने उनतालिस करोड़ शाबर मन्त्रों की रचना की है। जिसमें कुलाकूल-कौल-घोर-अघोर, कपालिका क्रिया तन्त्र, तिब्बतीय, इन्द्रजाल आदि मन्त्रों के समावेश हैं। अत: इन तन्त्र मन्त्र विद्या ज्ञान को सिद्ध करने के लिये उन्होंने अपने जीवन में सभी प्रकार के उचित अनुचित मार्ग अपनाये और यथा सम्भव यशस्वी भी हो गयें।

अत: यह पान सुपारी + पिण्ड शिव-शक्ति का एकासन या कुलाकूल का प्रतीक या कौल का अनुष्ठान या घोर अघोर का क्रियासन इत्यादि भावार्थ समय तथा क्रिया विशेष एवं मन्त्र तन्त्र विशेष के अनुसार उपयोग में लाना चाहिए। नाथ सिद्ध परम्परा में योग साधना करते हुये अपने शरीर (अर्थात् यहाँ आटे के पिण्ड) का भार गुदा एवं लिंग के मध्य में अर्थात् मूलाधार चक्र के नीचे सुपारी रखकर सक्षम प्राणायाम करने पर कुण्डलिनी जल्द जाग्रत होती है।

हिमालय क्षेत्र गौरी कुण्ड क्षेत्र में गुफा में दादा मत्स्येन्द्रनाथजी ने सुपारी के ऊपर शीर्षासन लगाकर तपस्या की थी। इस प्रकार माया स्वरुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथजी जो अत्यन्त संयमी, अत्यन्त सक्षम, शक्तिशाली तथा परिपक्व विशेष पुरुषार्थ, माया से परे अत्यन्त विरले महासन्त है उन्हें सम्पूर्ण नाथ सम्प्रदाय के दादाजी कहा जाता है। नाथ

सम्प्रदाय को उन्होंने यही योगमाया पूजन कर्मकाण्ड, अर्थात् शंखढाल की विशेष देन दी है।

अर्थात् उपरोक्त सभी का आशय यह है कि पान सुपारी को आध्यात्म के तन्त्र मन्त्र योग साधना में अत्यन्त महत्व दिया जाता है। आटे के पिण्ड के ऊपर रखा हुआ दीपक सुरक्षित (बिना हिले-डुले) रहता है।

अत: यहाँ स्वास्तिक के ऊपर पान सुपारी, पिण्ड रखकर कटोरी वाला (दीपक) श्री गणेशजी की ज्योत निम्न गणपति पूजन (स्थापना) मन्त्र का उच्चारण करते हुये स्थापना करें।

अथ गणपति पूजन (स्थापना) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं कण्ठे बसे सरस्वति हृदय देव महेश। भूल्या अक्षर ज्ञान का जोत कला प्रकाश। सिद्ध गौरी नन्द गणेश बुध को विनायक सिमरीये, बल को सिमरीये हनुवन्त, ऋद्ध सिद्ध को श्री ईश्वर महादेव जी सिमरीये श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी तुम्हारे कन्त उमादेवी गौर्जा पार्वती भस्मती देवी हिरख मन अगर कुंकु केसर कस्तूरी मिला कूपिया तिसते भया एक टीका अमर सेंचो जी जीव संचिया शक्त स्वरुपी हाथ धरिया नाम धरियो श्री गणपतनाथ पूता जी तुम बैठो स्थान मैं जावा नहावण आवण जावण किसी को न दीजिये, अंकुस मार पर संग लीजिये बण खण्ड मध्य से आये श्री ईश्वर महादेव छूटी ललकारी ईश्वर देख बालक कोप भरिया ज्यों धृत बसन्तर धरिया शिवजी आनी मन में रीस फिरयों चक्र ले गयो शीश तीन भवन में भई हलूल श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई आ कहने लगी स्वामीजी पुत्र मारिया तिसका कौन बिचार देवी जी मैं नहीं जानो तुमरा पूत मैं जानो कोई दैत्य न दूत गजहस्ती का सीस लियाऊँ काट आन

अलख निरन्जन के पास बैठाऊ शंकर जी ल्याये हस्ती का सीस गंगा गौर्जा पार्वती माई जी करी असीस, जब गणपत उठंते खेल खेलन्ते महिमा उवरन्ते, गणपत बैठे स्थान मकान उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम ल्याये श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी के आगे स्वामी जी तुमको सिमरे सोची मोची तेली तम्बोली ठठिहार गनिहारा लुहारा क्षेत्र सिमरे क्षेत्रपाल अजूनी शम्भू सिमरे महाकाल लांबी सूंड बालक भेष प्रथमं सिमरो आद गणेश पांच कोस ऋद्ध उत्तर से ल्याऊ पांच कोस ऋद्ध दक्षिण से ल्याऊ पांच कोस ऋद्ध पूर्व से ल्याऊ पांच कोस ऋद्ध पश्चिम से ल्याऊ दस कोस ऋद्ध अज गायब से ल्याऊं इतनि ऋद्ध सिद्ध दिये बिना ना जाऊ श्री गंगा गौर्जा पार्वती माई जी तुम्हारी माया प्रथमे एकदन्त द्वितीये मेघवर्ण, तृतीय गजकरण, चतुर्थे लंबोदर, पंचमें विघ्नहरण, षष्टमे धूम्ररुप, सप्त में विनायक, अष्ट में भालचन्द्र, नवमे शील सन्तोष दसमे हस्तमुख एकादशे द्वारपाल, द्वादशे वरदायक एते गणपत गणेश नाम द्वादश। ॐ गणपति गुरु माथे मरु-खीरखाण्ड पात्र भरु तीन पैर नगर को जाऊं सब रुप को पाव लागु, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आना तैंतीस करोड़ देवत्या आना कुबेर भण्डारी आना ऋद्धि सिद्धी भरतार आना, मोती जोड़ सन्तोष: तिल जोड़ किवाड़ गंगा जमना सरस्वती त्रिवेणी के घाट-ऊं सोहं बौहडिया सतगुरु स्वामी आप-कहे महादेव सून पार्वती इन शब्दों से जो कान लगावे, आवागमन तुरन्त मिटावै। गणपति तुमको दिया बुध-ज्ञान अष्ठ सिद्धि नवनिधि, तिन लोक चौदा भुवन झेलो झेलो गणेश सकल सृष्टि का भार, हम ॐकार आदिनाथ इन्द्री के जती वाचाने सती अंग पहेरबा भगवा कंथा नगर खेड़े अलख जगायेंगे आदि से गजकंथड़ गलबेली गणेशनाथजी तीन लोक में किया पसारा ओंकार सुन्यऽऽधार मज्जन कीना गौरजा

दीनी मैल उत्तार धान को मान। गुरां को प्रणाम गत गंगा को हरनाम। साधो सन्त करो विचार सतगुरु शब्दों से उतरो पार इतना गणेश स्थापना मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश।

[**विशेषः**- गणेश जी की मूर्ति, पादुका या कलश या फोटो स्थापना करे सन्मुख चावलों का स्वास्तिक बनाकर उसपर दो खाने के पान, पान के ऊपर सुपारी, सुपारी के ऊपर आटे का पिण्ड रखें, उसपर गौ घृत का दीपक स्थापना करें और धूप दीप नैवेद्य इत्यादि पंचोपचारे पूजन करें। २१ दुर्वा, दुब बुन्दी के लड्डू या मोदक वस्त्र चढ़ावें और दीपक के शुरु से लेकर अन्तिम अर्थात् गौघृत दीपक बुझने तक उपरोक्त मन्त्र का पाठ करें। ऐसा ४१ दिन करने पर कार्य सफल होगा। बुद्धि स्मरण शक्ति तीव्र होगी। घर स्थान मकान में सुख शान्ति, धन लाभ, ऋद्धि सिद्धि से भरपूर होगा।]

अतः गणेश स्थापना स्वास्तिक के बगल में पांच मुट्ठी आखा (अक्षत) की राशी (पर्वतासन) बनावें और पुनः उपरोक्त विधि से प्रथम पान (जोड़ा) रखें फिर एक सुपारी और आटे के पिण्ड रखें तथा उस पर एक मृतिका की पूर्व तैयार की हुई भण्डार जोत रखें और निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

अथः भण्डार स्थापना मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गणपत गणपत राजकुमार ऋद्ध पर बैठे गणपत आप देवी पूजो केशर काफूर दोहरा कोट तेहरी खाई कंटक मार खप्पर में लीजे ऋद्धि टूटे नहीं विघ्न व्यापे नहीं हाजर हाजर गणपत की दुहाई गणपत पूजे अमृते सदा फल दीजे धर्म की डिब्बी पाताल का ठीया नौ नाथ चौरासी सिद्धा मिल भंडार किया भूरी पाली काली डिब्बी शिवजी के पास मढी मसाणी मै फिरा गुरु हमारे साथ धरत की डिब्बी ब्रह्म कपाली ब्रह्मा विष्णु मिल अग्नि जाली नीचे नीचे

आग ऊपर पानी तपे रसोई आद भवानी घ्रततो गणपत पूरे तत पूरे गणेश ऋद्ध सिद्ध तो श्री ईश्वर पूरे तब प्रसाद महेश अन्न पूर्णाय विद्महे महा अन्न पूर्णाय धीमहि तन्नो अन्न पूर्नी प्रचोदयात।

[**विशेष:**- सप्त धान्य की सात राशि रखें उनपर सात दीपक जलायें। पंचोपचार पूजन करें। और उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करें। ऐसा २१ या ४१ दिन तक करने पर घर में किसी चीज की कमी नहीं रहेगी।]

इस प्रकार गणेश ज्योत एवं भण्डार ज्योत की स्थापना होने के पश्चात् भण्डार कक्ष में सभी प्रकार की सामग्री विशेषत: भोग सामग्री सफेद वस्त्र या लाल वस्त्र से ढक दें या परदा लगा दें। [चित्र क्र० ४ 'अ, ब' देखें]

(ख) योगमाया ज्योति पाट या माई का पाट अर्थात् बालासुन्दरी चौक माण्डण

साहित्य :- हनुमान सिन्दूर, तेल, घी, चावल (आखा या अक्षत), घोटा हुआ भांग पात्र, पूजन पात्र, रेतीली मिट्टी या सप्तमातृका, [गंगा तट की, संगम, तालाब, गोशाला, राजद्वार, चौराहा, श्मशान भूमि, हाथी, घोड़े तबेले की, दीमक की (बाल्मीकि)] सप्तरंग (लाल, भगवा, नीला, हरा, पीला, काला, जामुनी) अभ्रक, काला दाना (शिराला) खाने के पान, सुपारी, पूर्व वर्णित माई के पाट की ४ (कटोरी) ज्योत, भैरव ज्योत, हिंगलाज ज्योत, सवा-सवा मीटर लाल तथा शुभ्र वस्त्र, २ आधा मीटर लाल वस्त्र, बालासुन्दरी की कमल ज्योत, दो ईंट आदि।

विधि :- पूर्व वर्णित बालासुन्दरी (योगमाया) चौक माण्डन के लिये नियुक्त किये हुये स्थान चित्र क्र० ३ में माई का पाठ पर उपरोक्त साहित्य ले आयें। प्रथम एक डिब्बी या कटोरी में हनुमान सिन्दूर एव


बाला सुन्दरी चौक तथा हिंगलाज और भैरव जोत स्थापना एवं आसन व्यवस्था
गणेश स्वास्तिक
जुगत
भैरो भांग गोला
शक्ति त्रिशूल
हिंगलाज ज्योत
सुपारी, पान
पिण्ड
ईंट
बाला सुन्दरी चौक
पिण्ड
भैरो ज्योत
सुपारी, पान
नारियल
पीर जी आसन
लाल सफेद वस्त्र
रेत
नारियल
जोगिनी आसन
नारियल
सखियाँ आसन
पूजन पात्र
कलश
जुगती का कुण्डा
नारियल
वीर आसन
नारियल
लाल और सफेद वस्त्र तथा कुशासन
अनंत गादि आसन
टैलुवा आसन
लाल और सफेद वस्त्र तथा कुशासन
नारियल
भण्डारी आसन
कैलाश मार्ग
भण्डार कक्ष मार्ग
प्रवेश द्वार

चित्र क्र. ७


मानधारियों की आसन व्यवस्था

उसमें थोड़ा सा सरसों का तेल मिलाकर निम्न मन्त्र से सिन्दूर बनावें।

★ सिन्दूर मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। सिन्दूर सिन्दूर महा सिन्दूर, महासिन्दूर कहा से आया, कैलास पर्वत से आया। कौन लाया, गौरी पुत्र गणेश लाया, कौन कारण लाया, माता कारण लाया, फुरे धर्ती बर्से आकाश, तारा त्रिकुटा तोतला तिनो बसे कपाल मस्तक बिन्दी सिन्दूर की सदा रहे निहाल पढ़ मन्त्र सिन्दूर लगावे सो योगी अमरापुर जाये, बीना मन्त्र सिन्दुर लगावे ऐसा डुबे थाह नहीं पाये, इतना सिन्दूर मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: इस सिन्दूर से अपने दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली द्वारा दीवार के ऊपर भूमि से कम से कम सवाहाथ ऊँचाई पर श्री गणेश प्रित्यर्थ एक स्वास्तिक निम्न मंत्र कहते हुये बनायें। स्वास्तिक बनाने का अर्थ शुभ कार्य का श्री गणेश अर्थात् शुरुआत होने के प्रित्यर्थ स्वास्तिक बनायें। [चित्र क्र० ७ पर देखें]

★ श्री गणेश कुंची

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। गणेश आया ऋद्धि सिद्धि लाया ऋद्धि सिद्धि से भरे भण्डार। देह कुंची हिंगलाज की ज्ञान कुंची ग्रहों की, कंठ कुंची गुरु गोरक्षनाथ जी की लागी कुंची खुले कपाट अब देखो ब्रह्माण्ड का ठाठ। अक्षय घर का भरे भण्डार। अनन्त कोटी सिद्धों में खीर खाण्ड का होवे प्रवान। लावो धरो धनी का ध्यान, आगच्छ आगच्छ श्री गणेश। इता गणेश कुंची (आवाहन) मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: स्वास्तिक से सवाहाथ दूरी पर समानान्तर बायीं दिशा को भूमि से सवाहाथ ऊँचाई ऊपर दायें हाथ की अनामिका अंगुली से एक शक्ति प्रित्यर्थ निम्न मन्त्र द्वारा त्रिशूल बनायें। (सिन्दूर देवी श्रृंगार अर्थात् मोहन आकर्षण तथा त्रिशूल यह शक्ति का प्रतीक है।) [चित्र क्र० ७ देखें]

शक्ति मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ धार सों धार लागू सिन्दूर लागू पाव। लागू न लोहा पाचे न धार त्रिगुण धारा की त्रिगुण वार। माता शक्ति शेर स्वार। दक्षिण दिशा की बाला सुन्दरी भूत प्रेत पलीत असूरी। अरीष्ट अनिष्ठ दल मारी। ॐ शक्ति माता हमको रखी दुष्टां भाखी। ॐ आद शक्ति विद्महे महामाई धीमहि तन्नो शिव प्रिये प्रचोदयात्। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेष:**- पूर्णिमा या अमावस्या या होली या छोटी दीपावली या नवरात्रों में नवदुर्गा या दशमहाविद्या की फोटो या मूर्ति या शक्ति के नाम एक कलश स्थापना करें। लाल वस्त्र धारण करें लाल तिलक धारण करें तथा सन्मुख कोई भी शस्त्र रखें। अत: देवी की और शस्त्र की पूर्व दिशा को मुँह करके पंचोपचार लाल फूल (माला), लाल चन्दन या सिन्दूर एवं लाल बुन्दी के लड्डू का भोग लगावें, लाल चुनरी, लाल वस्त्र या साड़ी अर्पण करें। व्रत रखें और उपरोक्त मन्त्र का १००८ बार जप करें। मन्त्र सिद्ध होने पर प्रचिति होगी। शत्रु नाश, संकट निवारण, सुख शान्ति की प्राप्ति होगी।]

भावार्थ :- अपने हाथ की अनामिका से तिलक लगाना या यन्त्र बनाना या अन्य धार्मिक कार्य करने का कारण अपनी अंगुलियाँ ब्रह्माण्ड की पांचों तत्व का प्रतिनिधित्व करती हैं और उनके कार्य अनुसार मन बुद्धि, चित्त तथा आत्मिक प्रभाव होता है, मध्यमा में आकाश तत्व तर्जनी में वायु अंगुष्ठ में अग्नि (तेज) कनिष्ठा में जल

और अनामिका में पृथ्वी तत्व है जिससे शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध यह सभी गुण प्रभावित होते हैं। अत: अनामिका के पृथ्वी तत्व में बाकी सभी तत्वों के गुण विद्यमान होने के कारण यह पंचगुणसार से अनामिका कार्य करती है। जिससे क्षमा सहनशीलता शान्ति आदि प्रतिभायें प्राप्त होती है। इनकी अलग अलग मुद्रायें हैं। जिसमें पृथ्वी मुद्रा जो अनामिका और अंगुष्ठ के अग्रभाग में मिलाकर शेष तीनों अंगुलियाँ सीधा करके पृथ्वी मुद्रा बनती है ऐसी पृथ्वी मुद्रा में आसन ध्यान जप करने से आध्यात्मिक शक्ति तथा सत्वगुण का विकास होता है। शारीरिक दुर्बलता एवं मोटापा दूर करती है। पाचक शक्ति बढ़ाकर योगी को स्फूर्ति, कान्ति तेजस्विता आती है। अगर अनामिका अंगुली को अंगुठे से मूल पर लगाकर अंगुठे से दबायें तो सूर्य मुद्रा होती है। जिससे संयमता, एकाग्रता आती है तथा मधुमेह यकृत (जिगर) के दोष ठीक हो जाते हैं।

योगसाधना, अभ्यास जिज्ञासु ज्ञान के साधु सन्त के लिये इस अनामिका का काया अन्दर से सीधा सुषुम्ना नाड़ी से सम्बन्ध है। अत: अध्यात्मिक कार्यों में विशेषत: तन्त्र साधना में अनामिका का विशेष उपयोग मुद्रायें-तिलक लगाना, यन्त्र बनाना आदि कार्य में विनियोग किया जाता है तथा पृथ्वी या सूर्य मुद्रा से पृथ्वी और अग्नि तत्व का मिलन होता है। अत: यह मुद्रा निरन्तर करने से सुषुम्ना के द्वार खुलकर षट्कमल (चक्र) भेदन सम्भव होता है। इस प्रकार अनामिका यह अंगुली योगियों को वरदान स्वरुप है तथा अध्यात्मिक क्षेत्र में उसका विशेष योगदान होने के कारण यहां योगमाया कर्म में अनामिका के द्वारा ही स्वास्तिक त्रिशूल तथा ॐ आदि बनाया जाता है, तिलक लगाना, पुष्प चढ़ाना, जल, केशर, गन्ध छिड़कना आदि कार्य में अनामिका वरदायिनी है।

(ग) (काल भैरव का) जुगत पिण्ड की स्थापना

अत: इस सिन्दूर के स्वास्तिक तथा त्रिशूल के मध्य में (बीचोंबीच) भूमि से सवाहाथ ऊँचाई पर दीवार के ऊपर प्रथम सिन्दूर से 'ॐ' शब्द बनायें और अपने दाहिने हाथ में जुगत पात्र अर्थात भांग पात्र में से भांग लेकर उसका साधारण सेब के आकार का गोला (पेड़ा) बनायें और कालभैरव नाथ जी के नाम प्रित्यर्थ हाथ के पंजे द्वारा दीवार के ऊपर ॐकार के ऊपर पिण्ड का एक ठप्पा अर्थात् छापा मारें साथ-साथ निम्न जुगत का मन्त्रोच्चार करें। [चित्र क्र० ७ पर देखें]

जुगत उतारने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि की जुगत-अनहद की माया-अखण्ड पूजा निर्भय छाया-अगम अगोचर से उतरी माया ब्रह्मा विष्णु महेश संग आया, आई अजरा जरन्ती, आई अमीया पिवन्ती, आई भैरव भखन्ती, आई जती सती से चलन्ती, आई पापी पाखंडी को भखन्ती, आई दाहिने कर के सार, बांय पंजा धीर, जुगत के सर उतार थान से गादी गोरक्ष पीर। इतना जुगत मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: इस जुगत (भांग) के (छापा) ऊपर सिन्दूर का तिलक निम्न मन्त्र से लगाईये।

सिन्दूर मन्त्र-२

ॐ गुरुजी। सिन्दूर सिन्दूर महा सिन्दूर, महा सिन्दूर कहा से लाया कौन लाया। गिरी कैलास परबत से आया तैतीस करोड़ देवी देवताओं ने मताकु लाया, ले तिलक श्री भैरव जी कै चढ़ाया ओहं हर हर हर ..... श्री नाथजी गुरुजी को आदेश!

आदेश!! आदेश!!!

अतः इस जुगत पिण्ड के ऊपर लाल पुष्प या आखा (अक्षत) चढ़ाकर निम्न मन्त्रोच्चार करना चाहिए।

काल भैरव स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं काल विस्तारा, काल भैरव काल निस्तारा। घोर काल अघोर काल भैरो तारे अनभय काल। काली कंकाली काली का पूत। शिव का दानी भस्मी भूत। कन्नी मुद्रा काला केश घोर बाना भगवा भेष। गल माल रुण्ड मुण्ड तैल ताम्बुल (भांग) लसे अंग हाथ खप्पर श्वान सवार लाल पुष्प लाल पाण रुप विक्राला शूल कपाल मुख भुजंग मार फुंकारं जटा जूट सरजन हार छत्तिस लक्षण रक्षपाल।

अगम निगम की चौकी ल्याऊ नवखण्ड की धरत्री ल्याऊ, दशम दिशा की चक्री ल्याऊ तैल जोत चैत चेताऊ। सौ सौ योजन जोत पुनाऊ सौ योजन ऋद्ध ल्याऊ सौ योजन सिद्ध ल्याऊ केशर पवित्री सिन्दुर ल्याऊ रोट लंगोट भोग ल्याऊ लोंग इलायची ताम्बुल (भांग) ल्याऊ त्र्यप्यन्ते, ज्यप्यन्ते सन्तोषी ल्याऊ भैरु बाबा ॐ हर हर .....

काल भैरु बावन वीर बैठा सात समुन्दर के तीर। भैरु बाबा चंगा वंगा, चौसठ जोगन खेले संगा। येल-गेल रस्ता मोय, नदी नाला नीर मोय, राजा परजा रानी मोय, नगर खेडा बस्ती मोय, देश दिशा दशा मोय, भैरु बाबा ॐ हर हर .....

शंखणी डंखणी भूतणी कू प्रेत पलित पलतानी कू ऊपरी लुपरी कुपरी कू, लाग लगट लम्पट कू, अलिया पलिया पराई कू,

धूल धक्का धूम कू, चौड़ चौखट कांचा कू, भूत छूत कलीपा को, जीन राक्षस बैरीया को, नष्ट कर दे, दुष्ट मुष्ठ करे, नजरा जड़ को ताला करे, इता काल, महाकाल, काल भैरो ना करे तो जती गोरक्षनाथजी की आन भरे। पिता महादेव की जटा तोड ताडगी करे। सतवन्ती सती नख चीर फाड भगवा करे। चल चल चंचला भैरु वार करे मार करे, खप्पर में खाय मसान में लेटे ऐसो काल भैरव की पूजा ना मेटे राजा मेटे राजपाट मेटे, प्रजा मेटे दुधपूत से मेटे योगी मेटे ज्ञान ध्यान मेटे ईश्वर वाचा फूरो मन्त्र ॐ फट् स्वाहा। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेष** :- यह मन्त्र सिद्ध करने पर भैरव दर्शन देकर अभीष्ट कार्य सफल करेंगे।

भैरव अष्टमी के दिन से या शनिवार से भैरव मन्दिर में या शक्ति पीठ में भैरव मूर्ति सन्मुख यह साधना करें, भैरव मूर्ति को तिल्ली के तेल से स्नान करायें, सिन्दूर, पान चढ़ायें, नारियल रखें, प्रतिदिन जप के समय सरसों तेल का दीपक जलायें, धूप, गुगुल दें, कपूर, केशर, लौंग, इलायची धूप में डालें और धूप से अचवायें, रात्रि में नित्य निश्चित समय पर उपरोक्त मन्त्र को ११ या २१ बार जपें ऐसा २१ दिन करें २१वें दिन भैरुनाथ दर्शन देंगे। लाल पुष्प माला चढ़ायें, पानी वाला नारियल चढ़ायें और ताम्र पात्र में दही और पुराना गुड़ मिले अमृत पान करायें। नमस्कार कर वर मांगें। कार्य सिद्ध हो जायेगा।]

(घ) मृतात्मा के गति की प्रचिति, स्थापना

अत: इस योगमाया कर्म अर्थात् शंखढाल द्वारा मृतात्मा मुक्ति के मार्ग कैलास को गया है या नहीं यह प्रमाण सिद्ध करने के लिये निम्न विधि करते हैं। इस जुगत के पिण्ड को अर्थात् इस भैरव भांग पिण्ड पर सिन्दूर, पुष्प, अक्षत चढ़ाने के पश्चात् एक सवाहाथ लम्बा सूत (धागा) या मौली लेते हैं और पूर्ण धागे को हल्की-हल्की रुई (कपास) लपेटते हैं और वह धागा उस जुगत पिण्ड पर उपर से नीचे तक लटकाते हैं और

जब पुतला-संमाधि विधि होती है तब धागे को साखियाँ गत गंगा जोत से चेतन करके नीचे से जलाते हैं अगर वह धागा नीचे से ऊपर तक जलता हुआ पूर्ण रुपसे जलता है। तो सभी समझ लेते हैं कि मृतात्मा मुक्त होकर कैलास को चले गये।

यह विधि शक्यतों गृहस्थ जोगी ही अपनाते हैं। नाथ सिद्धों में सूक्ष्म ध्यान योग द्वारा ज्योति रुप में प्रचिती लेते हैं विशेषतः आत्मसाक्षात्कारी उत्तराधिकारी या पीर या कोई सिद्ध महात्मा इस मुक्ति का संकेत सूक्ष्म रुप में देख लेते हैं।

भावार्थ :- इस योगमाया तन्त्र विधि में भैरवनाथ विशेषतः काल भैरव का अनुष्ठान, पूजन तथा हवन, भोग आदि क्रिया की जाती है। क्योंकि एक बार देवी देवताओं में प्रश्न हुआ कि सृष्टि में सबसे बड़ा कौन है। जब वह ब्रह्माजी के पास गये तब ब्रह्माजी ने अहंकार वश अपने आपको परब्रह्म कहकर सबसे बड़ा मैं ही हूँ ऐसा कहा। चारों वेद देवी देवता तथा श्री भगवान विष्णु ने उन्हें बहुत समझाया किन्तु ब्रह्माजी माने नहीं अतः वहाँ एक प्रचण्ड ज्योति प्रकट होकर रुद्र रुपी शिव आदिनाथजी प्रकट हुये। ब्रह्माजी ने उन्हें भी धुःतकार दिया। अतः क्रोध में आकर शिव ने अपने जटा में से भैरवनाथ को प्रगट किया जो महाभयंकर काल को जीतने वाला काल भैरवनाथ था। शिव आज्ञा से भैरवनाथ जी ने ब्रह्माजी का एक शीश काट दिया तबसे ब्रह्माजी चार मुख वाले हुये। शीश काटने पर ब्रह्म हत्या का दोष भैरवनाथ जी को लगा। यह ब्रह्महत्या निवारण हेतु शिव आदिनाथजी ने एक कपालपात्र (जो ब्रह्मा जी का काटा हुआ शीश को रखा हुआ पात्र) भैरवनाथ जी के हाथ में देकर सम्पूर्ण सृष्टि में परिक्रमा करके भिक्षा मांगने को कहा। जहाँ यह (शीश पात्र) कपाल पात्र धरती पर गिरेगा वहाँ तुम्हारी ब्रह्महत्या के दोष का निर्मूलन होगा और जब भैरवनाथ जी कपाल पात्र

लेकर तीर्थाटन को निकले तो ब्रह्महत्या कर्कशा नारी रुप में उनके पीछे-पीछे चलने लगी, सम्पूर्ण सृष्टि परिक्रमा करके जब काल भैरवनाथ जी पुण्य क्षेत्र काशी में पहुँचे तब कपाल पात्र भूमि पर गिरा और उसी समय वह ब्रह्महत्या भी भंग होकर जोर-जोर से चिल्लाते हुये भूमि में से पाताल चली गयी और उसी स्थान पर एक वनस्पति का उदय हुआ, भैरवनाथ मुक्त हुए वह काशी के कोटवाल बने। अत: वह वनस्पति भांग रुप में प्रचलित हुयी और उसी भांग का (जुगत) का पिण्ड कपाल पात्र के रुप में दीवार पर ठप्पा लगाया जाता है। जहाँ 'ॐ' ॐकार रुपी आदिनाथजी के मूल स्वरुप है। इस प्रकार यहाँ भी मृतात्मा के सभी दोष भंग होने से संकेत के कारण भैरव नाम से भांग (जुगत) का पिण्ड दीवार पर लगाया जाता है।

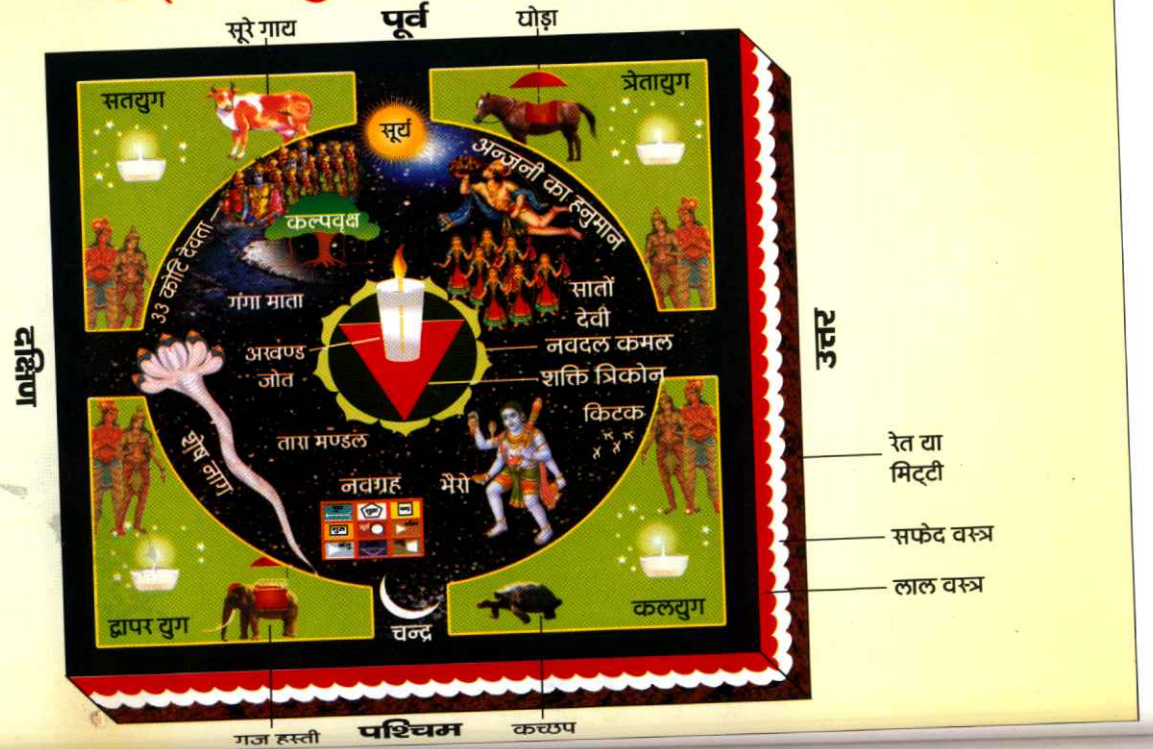
अत: गणेश जी का (स्वास्तिक), भैरव जी का (भांग), शक्ति जी का (त्रिशूल) के नीचे वाली भूमि के ऊपर माता हिंगलाज जोत और भैरव ज्योत स्थापना के लिये निम्न मन्त्र से गंगा जल फूल द्वारा या कुश के द्वारा भूमि पर छिड़कें।

धरती पर जल छिड़कने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। श्री विष्णुजी ने धर्ती पर जल छिड़काया कुण्डा बिठाया सूनो बाला का ध्यान। जिन्होंने पाया सत्गुरा से बाला का ज्ञान। जले बाला थले बाला रुखे बाला वृक्ष बाला बाला तोष, बाला गढ मण्डल में धर्मशाला पांच महेश्वर गुरु गोरखनाथ बाला। कलियुग मध्ये हनुमन्त बुलाया। बाये हाथ पुस्तक दाहिने हाथ माला रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।


श्री बालासुन्दरी का
ज्योत पूजन

माई (बाला सुन्दरी) का पाट माण्डण



चित्र क्र. ८

(ङ) माता हिंगलाज ज्योत स्थापना

अत: दीवार के ऊपर बने हुये स्वास्तिक के नीचे भूमि के ऊपर एक ईंट को लाल वस्त्र (आधा मीटर) में लपेटकर उसे खड़ी करके दीवार से सटाकर रखें और उसपर दो डंठल वाले खाने के पान, पान के ऊपर सुपारी तथा सुपारी के ऊपर आटे का (पेड़ा) पिण्ड दबाके रखें और पिण्ड के ऊपर एक घी वाली कटोरी का दीपक स्थापित करें तथा निम्न मन्त्र का पाठ करें। [चित्र क्र० ७ देखें]

ॐ हिंगलाज देवी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पश्चिम दिशा से जोगन आई, दो कर जोड़ आगे ब्रह्मा विष्णु महेश। पीछे देवी देवता तैतीस करोड़ करे सेवा पूजा आरती धूप ध्यान। जपो तपो श्री हिंगलाज माया, ओ जुग जुग मध्ये काहे का तेरा दीवाड़ा, काहे की तेरी बात, काहे के सिंहासन बैठे गुरु गोरखनाथ। ॐ गुरुजी जुग जुग मध्ये सत्त का दीवड़ा, सत्त की तेरी बात, सत्त के सिंहासन बैठे गुरु गोरखनाथ। पैले ओंकार जोग ओंकार मोक्ष मुक्ता का तृप्त हो जोगन महामाया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भावार्थ :- नाथ सिद्धों की शक्ति साधनाओं में भैरव शक्ति के समान, माता हिंगलाज शक्ति भी प्रधान शक्ति है। यह नाथ जोगन शक्ति रुप में कार्य करती है। माता हिंगलाज शक्ति पीठ पाकिस्तान में करांची क्षेत्र में हिंगोसा नदी के किनारे है। यहाँ गंधक पहाड़ो तथा रेतीला परिसर है। सती पार्वती शिवगण, राक्षस, रावण, भस्मासरादि, भूतोवली, आदि मायाजगत से विरक्त होकर शिव भगवान कैलास छोड़कर गुप्त रुप में इस हिंगोसा नदी क्षेत्र में जाकर तपस्यारत रहे, उन्हें ढूंढ़ते-ढूंढ़ते माता पार्वती

के यहाँ आने पर वहाँ शिव-शक्ति का योग संजोग हुआ अत: इस स्मृति प्रित्यर्थ वहाँ माता पार्वती ने हिंगलाज शक्ति रुप में वास्तव्य किया। वह अष्टभुजा रुप में विराजमान है। पहाड़ों के गुफा (कपार) में मूर्ति रुप में विद्यमान होने से वहाँ हिंगलाज माता का मन्दिर बना है। उन्हें हिंगला माता तथा नानी बिबी (पाकिस्तानी नाम) नामों से जाना जाता है यहाँ नाथ सिद्धों की प्रधान शक्ति भोमलोचन भैरव रुप में तथा शक्ति रुप में भैरवी विराजमान है। जो गुरु गोरक्षनाथ जी ने माता हिंगलाज को भेंट रुप में प्रदान किया था। वहाँ गणेश जी का भी वास्तव्य है।

अत: इन भैरव एवं हिंगलाज शक्तियों को इस योगमाया कर्मकाण्ड में प्रधान शक्ति रुप में आवाहन, स्थापना, पूजनादि कर्म नाथ सिद्ध करते हैं।

(च) भैरव ज्योत स्थापना

इसी प्रकार हिंगलाज ज्योत से सवाहाथ दूरी पर अर्थात् त्रिशूल के नीचे भूमि पर लाल वस्त्र या काले वस्त्र से लपेटते हुये एक ईंट दीवार से सटाकर खड़ी कर दें उसपर एक पान का जोड़ा, पान के ऊपर सुपारी, सुपारी के ऊपर आटे का पिण्ड रखकर आटे के पिण्ड के ऊपर पूर्व वर्णित तैयार किया हुआ भैरव जोत अर्थात् मृतिका का दीपक निम्न मन्त्र से स्थापना करें। [चित्र क्र० ७ पर देखें]

भैरव ज्योत स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ प्रथमे भैरवदेव देवाय द्वितीय भूत विडारन तृतीये रुण्डमाल चतुर्थे क्षेत्रपाल पंचमें बावरा बिवरालं षष्टमें महाबली सप्त में अनंत कोट सिद्धों के आज्ञावान अष्ट में बनारस जी के थान नवमें कमल नाभ दशमे बृजनाथ एकादशे कालसैन द्वादशे बटुकनाथ ऐसे भैरव जी के

द्वादश नामे संस्थाप्य नाम सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- उपरोक्त हिंगलाज एवं भैरव ज्योत मन्त्र नवरात्रों में, होली या दीपावली में दर्शित विधि से ज्योत लगाकर १००८ बार मन्त्र जाप, पूजन, १/१० हवन करने पर सिद्ध हो जायेंगे और अपेक्षित कार्य, मन्त्र पढ़कर करने पर सफल होंगे।]

(छ) बाला सुन्दरी चौक (पाट) स्थापना

इस प्रकार स्वास्तिक, भैरव भांग, त्रिशूल तथा हिंगलाज ज्योत एवं भैरव ज्योत स्थापना के पश्चात् बाला सुन्दरी का चौक माण्डन करें। अतः जल छिड़कते हुये उस भूमि के ऊपर रेतीली मृतिका या सप्त मृतिका लेकर दोनों ईंटों (ज्योत) के बीच सवाहाथ लम्बा × सवाहाथ चौड़ा चौथरा मृतिका का बनायें अर्थात् मृतिका हल्की सी जल से गीली करके चौकोर वर्गाकार चबूतरी साधारण ३ से ४ अंगुल ऊँचाई की (२, ३ इंच) बनायें अतः निम्न मन्त्र कहकर थोड़ा गौ-गोबर और जल से चौका लेपन अर्थात् समानान्तर करें। [चित्र क्र० ८ देखें]

लेपन की पवित्री (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। प्रथमे सत्य, सत्य पर धर्म-धर्म पर नीर, नीर पर क्षीर, क्षीर पर सूरा, सूरा पर राई, जिस पर गुरु गोरक्षनाथ जी ने सात द्वीप नवखण्ड पृथ्वी ठहराई। धीरे कैलास कूचा किना नाम गुसाई तेरा लिन्हा मिली सूरत, तैतीस करोड़ देवी देवता ॐ सोहं गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

उपरोक्त मन्त्र को कहते हुये हाथ से चौका समान्तर करें और थापिया से थपाके बढ़िया चौक बनायें अतः प्रथम चौक के ऊपर सफेद वस्त्र फैलाकर डालें तथा उसके ऊपर लाल वस्त्र भगवे का मन्त्र कहत

हुये बिछायें। अत: चौके के चारों दिशाओं में लाल धागा (मौली) चारों तरफ लपेटें और निम्न मन्त्र कहें।

(पाट) चौका देने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। गाय गोबर, गंगाजल पांच महेश्वर मिल ईश्वरी आनीं आसन बैठो घट पट राणी, बुद्धि विनायक बैठो, आई चौका देवे ऋद्ध सिद्ध आनन्दी माई श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

या

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। सूरै गाय गोबर गंगा का नीर चौका दिया बावन विर श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: निम्न मन्त्र द्वारा पात्र से आखा अर्थात चावल (अक्षत) लेकर चौक माण्डना प्रारम्भ करें।

आखा (चावल) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आखा लेलु, आखा छोडू, शीश नमाऊँ मात पांच महेश्वर आज्ञा करे तो युग युग लागु पाव मैं बलिहारी आपका आखा लेले आनन्दी माय श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अपने दाहिने हाथ से आखा द्वारा प्रथम चौक के ऊपर चार कोन वाला चौराहा बनायें, और चारों (कोन) खूँटो पर चार युग (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग) के चार कोठा बनायें। [चित्र क्र० ८ देखें] इन चारों कोठों में हमारे नाथ सिद्ध अनन्त कोट तारा मण्डल बनाते हैं तथा कोई-कोई विशेषत: नाथ गृहस्थ जोगी निम्न प्रकार से आखा (चावल) द्वारा सुन्दर युग चित्रांकन करते हैं। प्रथम सतयुग क

कोठा में शीलराजा एवं शान्ति रानी तथा सूरेगाय (गौ) आखा द्वारा बनाते हैं और त्रेतायुग के कोठा में राजा हरीशचन्द्र, तारारानी एवं घोड़ा चित्रित करते हैं। इसी प्रकार से द्वापरयुग के कोठा में राजा युधिष्ठिर एवं द्रोपदी रानी तथा गजहस्ती और कलयुग के कोठा में बली राजा एवं तारा रानी साथ में कच्छ का चावलों द्वारा निर्माण करते हैं।

अत: चौक पाट के मध्य में एक त्रिकोण तथा नवदलों का कमल (चावलों) आखा द्वारा निर्माण करें। इस कमल के चारों दिशाओं में अर्थात् सतयुग कोठा के दिशा में गंगा माताजी, कल्पवृक्ष, ३३ करोड़ देवी देवता बनायें। अत: त्रेतायुग कोठा के दिशा के तरफ अन्जनी का हनुमान, सातों सती बनायें और द्वापर युग कोठा के दिशा के तरफ शेषनाग, आकाश गंगा बनायें इसी प्रकार से कलियुग कोठा के दिशा के तरफ भैरुनाथ पतंग (किटक) बनायें। अत: पूर्व दिशा में सूर्य और पश्चिम दिशा में चन्द्र का निर्माण करें। अत: बचे हुये खाली जगह में, असंख्य तारा मण्डल या नवग्रह तारे नक्षत्र आदि का सुन्दर चौक पाट निर्माण करें। [चित्र क्र० ८ पर]

इस प्रकार आखा (चावलों) से चौक पूरण होने के बाद सभी चौक विभिन्न रंगों से सुशोभित करें जैसे आकाश गंगा = नीला, कल्प वृक्ष = हरा, गजहस्ती = काला, शेष = नीला, गंगा, घोड़ा तथा तारे नक्षत्र = सफेद, देवी देवता, हनुमान भैरु आदि = लाल पीला, राजा रानियाँ = पीला, जामुनी आदि चित्रांकन करते या चित्र क्र० ८ के अनुसार रंग भरते हुये चौक को सुन्दर आकर्षक बनायें।

अत: उपरोक्त चौक अर्थात् बाला सुन्दरी का पाट माण्डन करते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

अथ पाट पूरण मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ धर्म ता

माता कर्म तो सती, गोरक्ष तो जती बीज तो वनस्पति मनसा तो जोगनी दोलते का नाम अजरा जोत का नाम अनूप सतयुग मध्ये कौन कौन ज्योत बोलिये। कौन भरे धर्म की साख, कौन पुजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति। ॐ गुरुजी सतयुग मध्ये राजा शिल-शान्ति राणी की जोत बोलिये, सूरे गाय (गौ) भरे धर्म को साख शिव पूजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति। जोत बाला जोगनी को नमो नमः

ॐ गुरुजी त्रेतायुग मध्ये कौन कौन ज्योत बोलिये। कौन भरे धर्म की साख, कौन पूजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति। ॐ गुरुजी त्रेतायुग मध्ये राजा हरिश्चन्द्रजी राणी तारा सतवन्ती की ज्योत बोलिये। श्वेत अश्वनी भरे धर्म की साख, शक्ति पूजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति। जोत बाला जोगणी को नमो नमः

ॐ गुरुजी द्वापर युग मध्ये कौन कौन ज्योत बोलिये कौन भरे धर्म की साख कौन पूजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति। ॐ गुरुजी द्वापर युग मध्ये राजा युधिष्ठिर राणी द्रौपदी की ज्योत बोलिये गजहस्ताजी भरे धर्म की साख। विशनजि पूजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति। जोत बाला जोगणी को नमो नमः

ॐ गुरुजी कलयुग मध्य कौन कौन ज्योत बोलिये। कौन भरे धर्म की साख, कौन पूजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति। ॐ गुरुजी कलयुग मध्ये बली राजा तारा राणी की ज्योत बोलियें कच्छप रुपाजी भरे धर्म की साख ब्रह्मा जी पूजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति। जोत बाला जोगनी को नमो नमः

ॐ गण चतुर्थ कोठा, जागे ज्योति थाप्या, नौ लाख तारा तारण गत गंगा में हरनाम हो धरती, सप्त बाला से शेषनाथ जी, अंजली सुता हनुमन्ता आकाश होय प्रकाशा। क्षेत्रपाल भान तपा भैरुनाथ। ३३ करोड देवी देवता अपने अपने ग्रह में तापे। चन्द्र

सूर्य दो साख भरे। जती सती गोरख पूजन्ति धर्मवन्ति लाभवन्ति जोत बाला जोगनी को नमो नमः इतना पाट माण्डन मन्त्र सम्पूर्ण भया। प्रैलाद की मण्डली में बैठकर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(ज) बाला सुन्दरी पाट (चौक) के ऊपर ज्योतियों की स्थापना

उपरोक्त पाट माण्डन के पश्चात् सभी ज्योतियाँ ज्योति पूजन पात्र से लेकर चौक में निम्न प्रकार से स्थापित करना चाहिए।

बाला सुन्दरी माई की जोत स्थापना :- चौक के मध्य में आखा (चावलों) द्वारा निर्माण किये हुये नवदल के त्रिकोण के ऊपर दो (जोड़ा) खाने के पान को रखें जो कि पान का चिकनाई वाला पृष्ठभाग ऊपर आये, अतः इसके ऊपर एक पूजा की छोटी सुपारी रखें और सुपारी के ऊपर एक गाढ़ा गुन्दा हुआ आटे का (पेड़ा) पिण्ड दबाकर रखें, अतः पूर्व वर्णित तैयार किया हुआ बाला सुन्दरी का नवदल कमल ज्योति का प्याला (ग्लास) को उस आटे के पिण्ड के ऊपर दबाकर रखें।

अतः सतयुग कोठा के मध्य में दो खाने के पान, इनके ऊपर सुपारी तथा आटे का पेड़ा रखें और पूर्व वर्णित कटोरी की तैयार की हुई जोती की कटोरी दबाकर रख दें। इसी प्रकार त्रेता, द्वापर और कलियुग के मध्य में पान + सुपारी + आटा रखकर उसपर एक एक कटोरी जोत को स्थापित करें। [चित्र क्र० ८ देखें]

अतः उपरोक्त ज्योतियाँ स्थापित करते समय निम्न मन्त्र प्रत्येक ज्योत स्थापित करते समय उच्चारण करें।

अखण्ड ज्योति स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं ज्योत सोहं ज्योत, शिव ज्योत शक्ति ज्योत, चारों ज्योत मिल भयी इकट्ठी। हस्तक ले मस्तक धरी। आदि ज्योत कहाँ से आयी। हुकम से आयी, पीर (गुरुदेव) पैगम्बर (अवतारी) ने जगाई, नवनाथ चौरासी सिद्ध ने जगाई धवल कवल जगाई दर्शन ज्योत अमर भई काया। एता अखण्ड बीज बाला सम्पूर्ण भया। अखण्ड जोत स्थापना का हुक्म गुरु गोरक्षनाथजी ने अनन्त कोट में कहाया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

(**भेद :-** पीर पैगंबर अर्थात अवतारी सतगुरु अर्थात दादागुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी को कहते है।)

[**विशेष :-** यह मन्त्र आटे का चौमुख दीपक बनाकर सरसों के तेल में चेतन करें। नवरात्रों में नव दिन; माता (ज्योति की) पंचोपचारे पूजन करके नव दिन नव अलग अलग मिठाई का भोग लगावें और रोज एक घण्टा जाप करें। ९वें दिन कन्या (५ से १२ वर्ष उम्र की) का पूजन कर उसे वस्त्र दान, चुनरी तथा भोजन देना चाहिये। बाला सुन्दरी प्रसन्न होकर, मनोकामना पूर्ण करेंगी।]

बाला सुन्दरी चौक का भावार्थ :- इस योगमाया कर्मकाण्ड में बाला सुन्दरी का चौक या पाट माण्डना को विशेष महत्व दिया जाता है। यह योगमाया पूजन का मुख्य पूजन तथा मूलत: कर्म का सार है। इस योगमाया कर्मकाण्ड में मुक्ति मोक्ष उद्देश्य में गुरु गोरक्षनाथ जी का पिण्ड से ब्रह्माण्ड यह सिद्धान्त साकार रुप में स्थूल रुप में साकार होता है तथा सिद्ध होता है। इसमें पिण्ड की तुलना ब्रह्माण्ड से, एवं ब्रह्माण्ड (सृष्टि) की तुलना पिण्ड से करने का माध्यम प्रत्यक्ष यह योगमाया का माई का चौक अर्थात् चक्र मण्डप होता है। जिसमें मोतीचूर्ण, अक्षत (आखा), सिन्दूर, अभ्रक और विभिन्न रंगों से

अंकित किये हुये चौक (पाट) में नीचे रेत तथा वस्त्रों से सप्त पाताल (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल) दर्शाये गये हैं। उसी प्रकार अक्षद रंगों से सप्त स्वर्ग (भूर्भवः, स्वर्जनो, महस्तपः सत्यम्, ब्रह्मलोक, विष्णुलोक, शिवलोक) अंकित किये हैं। तो गंगा माता, जमुना, सरस्वती, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, कौशिकि, गण्डकी, शरयू, कावेरी, गोदावरी, गोमती, वेत्रावली, क्षिप्रा, पूर्णा आदि नदियों को वहाँ आवाहित किया है। ग्रह नक्षत्र अनंत तारा मण्डल, चन्द्र, सूर्य आदि से ब्रह्माण्ड को अंकित किया गया हैं कल्पवृक्ष रुप में अठारह भार वनस्पति तथा इच्छानुरुप प्राप्ति के रुप में कामधेनु रुप में सूरे गाय, सृष्टि सम्राट छाया रुप में अश्वमेघ का छत्र, बल के रुप में गज हस्ती तो कच्छप समस्त मन सन्कल्प विकल्प विकारों का संकोचित कर माया जगत में संयम करने को दर्शाया है। जो कि कलियुग में संयम करना अतिआवश्यक है। अतः शेष भगवान जो कि नवकुली नागों सह ने जो सृष्टि अपने शीश पर आधारित की है तथा सातों देवी-सप्त मातृका आदि प्राण रक्षक रुप में दर्शाया है। अंजनी सुत हनुमान, भैरव आदि शक्ति सुरक्षा कवच आदि पंच कोशी देवता रुप में अंकित किये गये हैं तथा पंच प्राण, पंचमहेश्वर एवं पंच ईश्वर अर्थात् ॐकार आदिनाथजी पंच तत्व, पंच सतगुरु, (नाथ पंथ के) पंच परमेश्वर, पंच अग्नि, हवनादि रुप स्वरुप में पंच ज्योति (चौक में) जगायी जाती हैं। इसमें मुख्य ज्योत अर्थात् बालासुन्दरी ज्योति का नवदल पुष्पासन, नवनाथ, नवदुर्गा, नवग्रह, नवविधा भक्ति स्वरूप नवखण्ड पृथ्वी, नवमास गर्भ, नौ रस, नौ रत्न, नौ रात्री, स्वरों के नव गुरु पिण्ड के नौ नाड़ी इत्यादि का आसनरुप में विद्यमानता को अंकित किया गया है। त्रिकोन, यंत्र तंत्र शक्ति का प्रतीक एवं विद्यमानता की गयी है जो बालासुन्दरी का प्रिय आसन है तथा पाट के सन्मुख आसनों के विधान

में पीर गादी में ॐकार आदिनाथ शिव, योगिनी पीठ में उदयनाथ पार्वती, साखियाँ (साक्षि) पीठ में सत्यनाथ ब्रह्माजी, वीर आसन में ध्वजनाथ (विरबंकनाथ) हनुमान, भण्डारी गादी में निधिनाथ कुबेर, अनन्त (आदि) गादी में अनन्त कोट सिद्धों के अधिष्ठान आदिनाथ महेश्वरानन्द नाथ, गुरु गोरक्षनाथ विराजमान होते हैं।

नवनाथ चौरासी सिद्धों के प्रतिनिधि साधु संत तथा ३३ कोटी देवी देवताओं के प्रतिनिधि साधक सेवक भक्त जती-सती होते हैं। उपरोक्तों की सबकी सत्संगात्मक सांझानाम ज्ञान गंगा गति गंगा या गत गंगा (जो कैलाश स्थापना में अंकित है) जो भी इस योगमाया जुमले में आनेवाले जिज्ञासु और मुमुक्षु नयेसाधक (नया चेला) शंख ढालने वाले, उपदेशी योगेश्वर सिद्ध साधक आत्मदर्शी साधक योगियों को इस गत गंगा स्रोत-प्रवाह में गति तथा मोक्ष मुक्ति को ले जाती है। यहाँ आत्मा को नदी कहा है। (कच्छप गुण विशेष अकुंचन) से संयम नियम के पवित्र घाट है, सत्य का जल भरा है, शील सदाचार के किनारे हैं, तट हैं, दया क्षमा की तरंगे लहरें हैं। तो मन चित्तादि पवित्री करके आत्मा का दर्शन साक्षात्कार करने वाले साधक इस आत्मनदी-ज्ञानगंगा गत गंगा योग माया में स्नान करते हैं। बाहरी जल से शुद्ध पवित्रता न होते हुये अन्तरात्मा नहीं दिखती। तो आत्मसाक्षात्कारी सतगुरु प्राप्ति कर गुरु ज्ञान से शुद्ध पवित्र, तेजस्वी, प्रकाशमान होकर अज्ञान, अन्धकार को दूर हटाकर ज्ञान (गत गंगा) द्वारा मुक्त हो जाते हैं, मोक्ष मुक्ति को पा जाते हैं।

अत: इस माई के पाट में दर्शाये हुये चारों युगों को कहा है कि सत्य व्यवहार का नाम सतयुग है। धर्म की मर्यादा त्रेतायुग है। अधर्म का नाश द्वापर युग है। निद्रा और कलह (काम क्रोधादि) विकार को कलियुग कहा है। रात्री को अज्ञान और अन्धकार कहा है। दिन को

ज्ञान का प्रकाश कहा है।

इस योगमाया मार्ग में कोई भी व्यक्ति यम-नियम, सन्त-सत्य के साथ रहते हुये भी परम गति को प्राप्त कर सकते हैं। गुरु गोरक्षनाथजी ने अष्टांगयोग-साधना, शून्य योग, ज्ञान योग आदि विभिन्न मार्ग से मोक्ष मुक्ति का मार्ग मानव प्राणी को वरदान रुप में दिया है।

इस योगमाया कर्म काण्ड में मूर्ति पूजा, तन्त्र पूजा, मन्त्र या इष्ट पूजा तथा गुरुपूजा आदि सब भाव योग पर निर्भर है। यह विधियाँ जिसका जैसा भाव है फल भी भावानुसार प्राप्त होगा।

इस योग माया पूजन में सम्बन्धित मृत योगेश्वर के वासना या इच्छा शरीर को चेतन कराके उसके ज्योति स्वरुप आत्मा को बुलाकर उसको मन्त्र द्वारा (सूक्ष्म से) बुलाकर स्थूल रुप में अर्थात् पुतला-यन्त्र की रचना तन्त्र इत्यादि करके, और कर्मकाण्ड पूजन करके उस मृतयोगेश्वर को आत्मज्ञान या आत्म प्रचिती देते हुये सभी मोह माया से मुक्त करके या स्वतन्त्र करके पुनः उसे आत्म (शरीर) रुप में अर्थात् स्थूल से सूक्ष्म रुप में परिवर्तित करके, कैलाश में शिवधाम में अर्थात् परमात्मा परमतत्व में विलीन करते है। यह सब कर्म करने वाले (आत्म साक्षात्कारी) योगेश्वर अपने तपस्या योग साधना से प्राप्त किये हुये आत्म शक्ति या आत्मबल द्वारा आत्मज्ञान द्वारा करते है।

यहाँ मृतात्मा के नाम बनाया हुआ पुतला यह स्थूल रुप है तथा अखण्ड ज्योत अर्थात् बाला सुन्दरी माया का चेतन स्वरुप नवदल ज्योत में प्रकट किया जाता है अर्थात् यह उनका स्थूल (ज्योति रुप) रुप में अर्थात् आदिमाया का ज्योति रुप में पूजन तन्त्र कर्मकाण्ड कर उसे प्रसन्न करके मृतयोगेश्वर को माया से मुक्त करते हैं। अर्थात् आदिमाया शक्ति के सहयोग से माया से मृतात्मा को मुक्त कराकर मुक्ति देना।

अतः इस बाला सुन्दरी चौक माण्डन में दिखाये हुये सतयुग म

शील राजा तथा शान्ति रानी, आदि नाथ जी से दीक्षित हुये थे और शीलनाथ शान्तिनाथ होकर महायोग ज्ञान द्वारा मुक्त हुये थे। इसी प्रकार ३३ कोटि देवी देवता भी योग से प्रभावित होकर दीक्षित होकर मुक्त हुये। इसी प्रकार त्रेतायुग में राजा हरिश्चन्द्र तथा तारा रानी भी आदिनाथ द्वारा दीक्षित होकर योग द्वारा मुक्त हुये। नाथ कृपा से उसी प्रकार द्वापर में राजा युधिष्ठिर, द्रौपदी, अर्जुन, भीमादि पंच पाण्डव भी गुरु गोरक्षनाथ जी से दीक्षित होकर योग साधना द्वारा हिमालय पर्वतारोहण करके मुक्त हुये। उन्होंने नाथ सम्प्रदाय के १२ पंथों में से धर्म पंथ चलाया तथा कलयुग में राजा बलि, रानी तारा भी नाथों से दीक्षा लेकर मुक्त हुये। यन्त्र में दर्शित सूरे गाय, नाथों ने गौवें चराकर गंगा माता आदिनाथ द्वारा, कल्पवृक्ष अठ्ठारह भार वनस्पतियों का नाथों को ज्ञान था शेष को पाताल में तो सप्तदेवी को मनीद्वीप में गुरु गोरक्षनाथजी ने योगज्ञान देकर मुक्त कराया। चन्द्र सूर्य को ज्ञान योग, तन्त्र योग, मन्त्र योग को प्रधान रखा भैरव तो प्रत्यक्ष नाथ जी का अवतार हैं घोड़ा (अश्वमेघ यज्ञ) हाथी, कच्छपादि सन्तोषनाथ विष्णुजी की कृपा से मुक्त हुये। अत: माई के पाट में चारों युगों के सभी राजा रानियाँ इस पूजन विधि में चारों कोनों में बालासुन्दरी योगमाया के गण कहे गये हैं। अत: इस कारण यंत्र के चारों कोठा में चार दीप जोतियाँ लगायी जाती हैं।

अत: इस प्रकार इन्हें मुक्ति मार्ग देने के कारण एवं ऐसे मुक्ति-ज्ञान-योग के आदर्श प्रित्यर्थ यह नाथ सिद्धों में प्रथा प्रचलित हुयी। अर्थात् इन देवी देवता, ग्रह नक्षत्र, राजाओं रानीयों, नरनारी, प्राणी आदि को मुक्ति मार्ग दिया बिल्कुल वैसे ही इस मृतयोगेश्वर को भी मुक्ति मार्ग नाथों के तपस्या बल कर्म काण्डों द्वारा दिया जाता है।

पूर्व काल में इस योगमाया पूजन में कर्मकाण्ड में बालासुन्दरी योगमाया देवी के रुप में बाला कुमारी अर्थात् ५ से १०, १२ वर्ष की

कन्याओं का पूजन किया जाता था। आज भी गृहस्थ जोगी यह पूजन करते हैं। नाथ सिद्धों में यह प्रथा अब नहीं चलती।

इस प्रकार बाला सुन्दरी चौक माण्डन पूर्ण होने के बाद चौक (पाट) के बायीं दिशा में अग्रभाग में एक कलश की स्थापना करें।

(झ) कलश स्थापना

नाथ सिद्ध परम्परा में किसी भी शुभकार्य में कलश की स्थापना अवश्य की जाती है। जो कि सभी शुभ कर्म एव कर्मकाण्ड बिना व्यत्यय निर्विघ्न पार होते हुये सिद्ध तथा सफल हो जायें।

साधना करनी हो, यन्त्र मन्त्र जाप करना हो या कोई सिद्धि की प्राप्त करनी हो तो अपने सतगुरुजी के नाम का कलश लगाना चाहिये इसमें कार्य साधना-सिद्धियों के सभी कार्य बिना संकट पार हो जाते हैं। साधक सूक्ष्म साधना में है तो सतगुरु सूक्ष्म रुप में सूचना भी देते हैं तथा कोई सामाजिक, साम्प्रदायिक सार्वजनिक धार्मिक कार्य हो तो अपने इष्ट के नाम का कलश स्थापित करना चाहिए। क्योंकि कलश यह पंचतत्व का ही एक प्रतीक है एवं हमारे होने वाले कर्म-कार्य के वह साक्षिभूत होता है। कलश सन्मुख किये हुये कोई भी कार्य प्रमाणित होते हैं यह नाथ सिद्धों की धारणा है।

यहाँ योगमाया कर्म में नाथ सिद्धों के एवं योगमाया के इष्ट गुरु गोरक्षनाथ जी हैं जो साक्षी भी हैं, रक्षा करने वाले भी हैं और कार्य सिद्ध करने वाले भी हैं। इसलिये उनके नाम का कलश यहाँ स्थापित करना चाहिए।

अत: प्रथम धरती के ऊपर गंगा जल पुष्प या कुशा से निम्न मन्त्र कहते हुये छिड़कें। [चित्र क्र० ७ पर देखें]

धरती के ऊपर जल छिड़कने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ विष्णु जी धर्ती पर जल छिड़काया। कुण्डा बिठाया। सूनो बाला का ध्यान। जिन्होंने पाया सतगुरा में बाला का ज्ञान। जले बाला थले बाला। रुखे बाला, वृक्ष बाला, बाला तपे बाला, गढ़मण्डल में धर्मशाला। पांच महेश्वर गुरु गोरखनाथ बाला। कलयुग मध्ये हनुमन्त बुलाया। बाये हाथ पुस्तक दाहिने हाथ माला। रक्षा करे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: गौ गोबर से धरती के ऊपर लेपन करें या फर्श हो तो गौमूत्र छिड़कें और निम्न मन्त्र का उच्चारण कीजिये।

★ लेपन मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ प्रथम सत्य, सत्य पर धर्म, धर्म पर नीर, नीर पर क्षीर, क्षीर पर सूरा, सूरा पर राई जिस पर गुरु गोरक्षनाथ जी ने सप्त द्वीप, नवखण्ड पृथ्वी ठहराई। धीर कैलास कूंचा किना नाम गुसाई तेरा लिन्हा मिली सूरत तैतीस करोड देवता ॐ सोहं गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: भूमि के ऊपर आखा (चावल) द्वारा नवदल कमल बनायें या आखा की राशि बनायें तथा निम्न मन्त्र का उच्चारण कीजिए।

धर्ती गादी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ वसुन्धरा कौन दिशा की बोलिये। वसुन्धरा पाताल लोक की बोलिये।

पाताल लोक का कौन राजा, कौन घोड़ा कौन अस्वार बोलिये। पाताल लोक का बासुकी राजा, नीला घोड़ा अस्वार बोलिये। मैं तुझे बुझु बासक राजाजी यह लो कुन्जी ताला खोलो देवपुरी दरबार कलश थापना कीजिए पाठ मांडता कीजिए नौ कोटी ग्रह भान तप्ता कीजिए जुमला जागना कीजिए चटपट चढ़ दीदार दीजिए साई को सलाम गुरु को प्रणाम जो को जुहारी गत गंगा को हरनाम। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अगर सप्त धान्य होगा तो निम्न मन्त्र से सप्तधान्य (अनाज) से नवदल कमल बनायें या राशि बनायें।

धान स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। प्रथम सुमिरो श्री गणेश। ऋद्ध-सिद्ध को ईश्वर महादेव। अन्न पुरे अन्नपूर्णा माई, सप्तम् धान की स्थापना करायी। इतना धान स्थापना मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: नवदल कमल के ऊपर एक कलश मृतिका का या अन्य किसी धातु का निम्न मन्त्र द्वारा स्थापित करें।

पात्र आसन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। धर्ती हमारी पात्र बोलिये आकाश हमारा थाल। सत्य शबद अगम भिक्षा ॐकार का बाल। कलश थाप्या जती गुरु गोरक्षनाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: कलश मध्ये गंगाजल या समुद्री जल या नदियों के संगम का जल निम्न मन्त्र से भरें।

जल पूरने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अलख पुरुष ने आज्ञा दीनी। सात समुन्दर नीर। कलश पूरो कर मिलयों आवो हनुमन्त वीर। पांच महेश्वर आज्ञा दीनी कलश पूरे श्री गुरु गोरक्षनाथ पीर। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: कलश के ऊपर पंच पल्लव (पत्र) आम या वटवृक्ष या पीपल या मुख्यता खाने के पान (सभी डंठल वाले हो) निम्न मन्त्र से चढ़ाकर कलश मुख पर ऐसे फैलाकर रखें जो कि पंचदल कमल बने।

पंच पल्लव मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पंच पल्लव प्रमाण भूले चूके अक्षद बखशे गुरु मेहरबान अलख पुरुष का ॐ कार नाद पंच पल्लव कोट बान्धा चौसट योगिनी खेले संगा। बावन बीर खेले साथ तले धर्ती उपर आकाश पिण्ड प्राण सूरत निरत सत्गुरा के पास पांच महेश्वर आज्ञा दीनी पल्लव चढाये हनुमन्त वीर। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

तद्उपरान्त पंचपल्लव के ऊपर श्री फल अर्थात् गीला नारियल जिसकी चोटी ऊपर हो वह रखें और निम्न मन्त्र पढ़ें।

श्री फल (नारियल) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। पीर जी बोले एक ओंकार जोगन मन में करे विचार अक्षद श्री फल कर पर धरे नीचे से पर्वत ऊपर से चीन्हा कहे महादेव अनन्त कोटी सिद्धों ने दिन्हा श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: तिलक मन्त्र कहते हुये कलश को तिलक लगावें। तिलक

सिन्दूर या चन्दन (केशर) या कुम्कुम का लगा सकते हैं।

गंध-अक्षत मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ माटी का कुण्डा दुध गंगा नीर। चन्दन बनाये हनुमन्त वीर, ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरे अक्षत लाये गौरी गणेश। चढ़े अक्षत चन्दन ज्योत जगाय महेश। देव देवत्या लागे ध्यान ब्रह्मा कथे ब्रह्मज्ञान। इति गंध अक्षत मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: कलश के ऊपर आखा (चावल) चढ़ावे तथा निम्न मन्त्र कहें।

अक्षत (चावल या आखा) बरसाने का मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। बरसे करसे कलश के गौरा गणेश के हात अलख निरन्जन माई का बाल। निपजे धरत्री बरसे आकाश पांच तत्व का भया प्रकाश। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: भगवे का मन्त्र कहते हुये भगवा या लाल वस्त्र कलश के ऊपर चढ़ायें।

★ भगवा मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं धुन्धुकारा शिव शक्ति ने मिल किया पसारा नख से चीर भग बनाया, रक्त रुप में भगवा आया अलख पुरुष ने धारण किया। तब पिछे सिद्धों को दिन्हा। आवो सिद्धों धरो ध्यान भगवा मन्त्र भया प्रमाण इतना भगवा मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

तद्पश्चात कलश के ऊपर जनेऊ, नादी पवित्री, रुद्राक्ष, मूंगा,

स्फटिक आदि चढ़ावें और निम्न मन्त्र पढ़ें।

★ नाद जनेऊ का मन्त्र

सत नमो आदेश गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि में शून्य शून्य में ओंकार आवो सिद्धो नाद बीन्द करो विचार नादे चन्द्रमा नादे सूर्य नाद रहा घट पिण्ड भरपूर। नाद काया का पेखना, बिन्द काया की राह। नादे बिन्दे योगीया तीनो एक स्वभावं बाजे नाद भय प्रतित, आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अतीत। नाद बाजे काल भागे ज्ञान टोपी गोरक्ष साजे, डंखनी शंखनी टिल्लै बाल गुन्दाई बाड़े घाटे टल्ले जागे। सुन सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई। टिल्ला शिवपूरी का स्थान। चार युग में मान-मूल चक्र मूल स्थान पढ मन्त्र योगी नाद बजावे छत्तीस भोजन अमृत कर पावे। बिना पढ़े योगी नाद बजावे तीन लोक में कही ठौर न पावे। जो जाने नाद बिन्द का भेव आप ही कर्ता आप ही देव। संध्या शिवपुरी का बेला, अनन्त कोटी सिद्धो का युग युग मेला। इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: कलश के ऊपर मुख्यत: मृतिका के कुण्डल तथा अन्य धातु के कुण्डल निम्न मन्त्र कहते हुये चढ़ायें।

कुण्डल (मुद्रायें) का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नाद सोहं मुद्रा कौन मुद्रा खेचरी बोलिये। कौन मुद्रा भोचरी बोलिये। कौन मुद्रा धरे ध्यान। कौन मुद्रा कथे ज्ञान। ॐ गुरुजी ताम्बे की मुद्रा खेचरी बोलिये। स्फटिक की मुद्रा भोचरी बोलिये। गण्डे की मुद्रा धरे ध्यान। मृतक की मुद्रा कथे ज़ान। श्री शम्भुजती गुरु

गोरक्षनाथ जी के कान नीचे धरती ऊपर आकाश। रक्षा करे दादा मच्छिन्द्रनाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: कलश ज्योत की स्थापना करे पूर्व वर्णित कटोरी में तैयार की हुयी ज्योत कलश के पास अक्षद मण्डल बनाके पान सुपारी के ऊपर आटा रखकर दीपक निम्न मन्त्र से स्थापना करें। [चित्र क्र० ७ देखें]

कलश ज्योत स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ज्योत ज्योत महा ज्योत, यह ज्योत कहा से आयी। कैलास पर्वत से आयीं कौन लायी गौरी गणेश जी ने लायी। कलश जोत थापना थापी रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ जती। इतना कलश ज्योत थापना मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इसके अतिरिक्त और इच्छानुरुप पूजन करें और अक्षत तथा लाल पुष्प चढ़ाकर निम्न मन्त्र उच्चारण कर कलश स्थापना थापें।

कलश थापना का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि शक्ति ले आगे खड़ी। आदि कमल के कुम्भ पर धरी तले बैठे ब्रह्मा, कन्ठ बैठे रुद्र, बैठे महाविष्णु शक्ति बैठी दो कर जोड़ देव मुण्डे तैतीस करोड़ बहे गंगा, बहे जमना, बहे सरस्वती। कलश थाप्या निरन्जन जती अखा तरे तिसकी रक्षा श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी करे। तार-तार माता तारिणी-सकल दु:ख निवारणी। पंच पाण्डव छठी तलाई धर कर कलश थाप्या आदशक्ति महामाई। थर्पे धर्ती थर्पे आकाश थर्पे सुमेर मण्डल कैलाश। कलश थापे रक्षा करे श्री शम्भु जती गुरु गोरक्षनाथजी बाला। इतना कलश थापना मन्त्र

सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(ञ) कुछ नियम

(१) आटा अत्यन्त गाढ़ा (सख्त) बनाना आवश्यक है।

(२) आटे के पिण्ड के ऊपर ज्योत रखते समय सावधानी बरतें ताकि ज्योत गिरे नहीं।

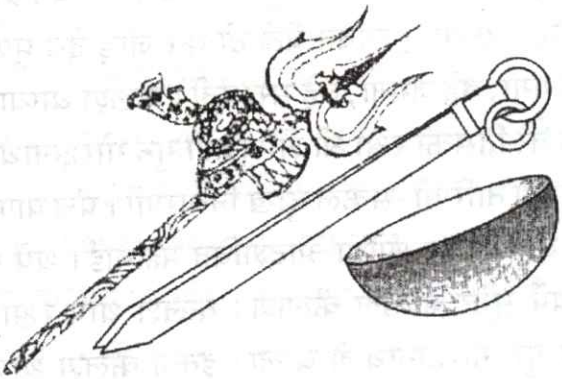
(३) माई के पाट के लिए सप्त मातृका लेना उत्तम है।

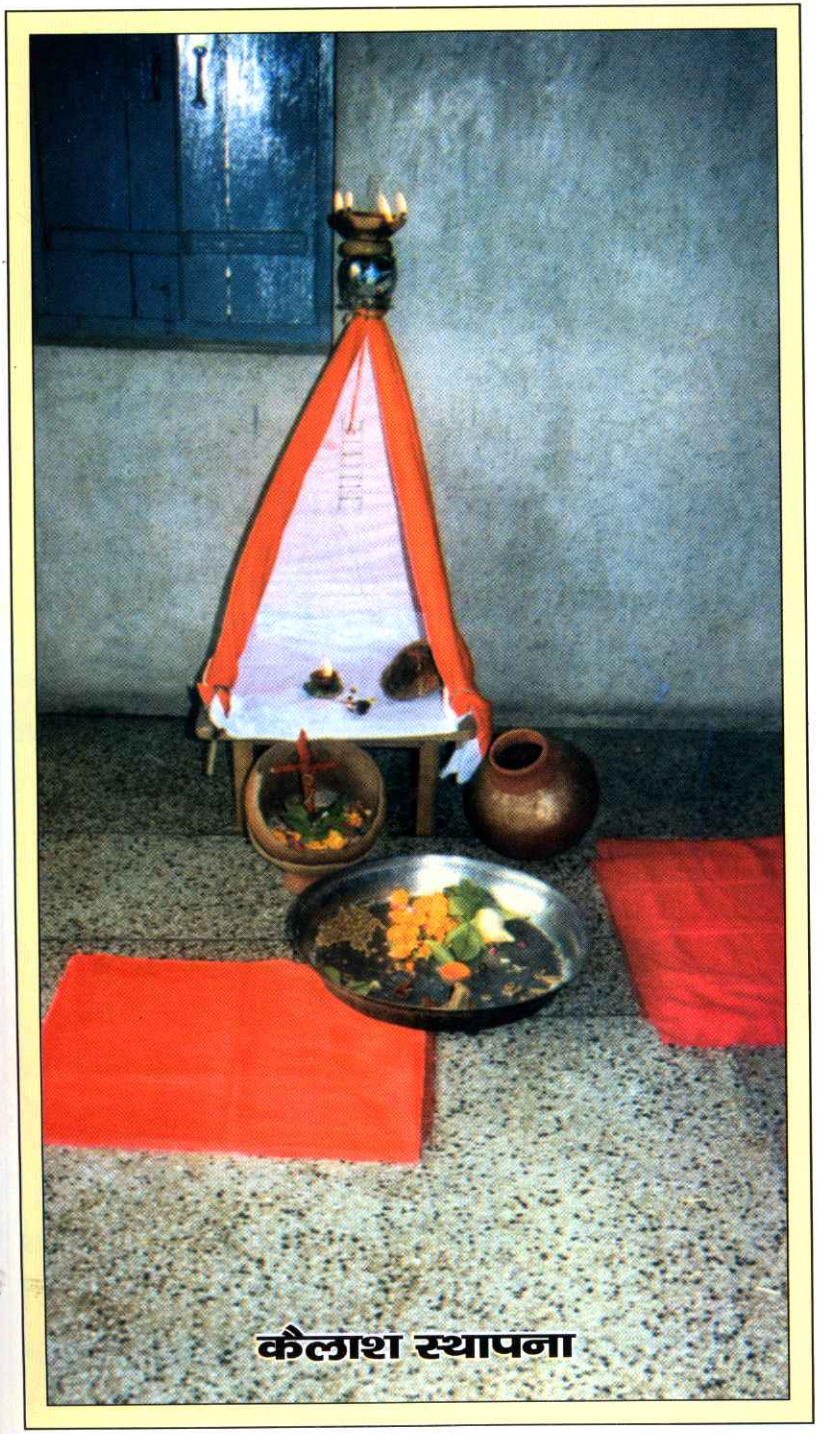
(४) भैरव भांग (जुगत पिण्ड) के ऊपर प्रत्यय के लिये रुई लपेटा सूत का धागा कोई भी लटका सकते हैं। यह एक दार्शनिक प्रयोग है।

(५) माई का पाट पूरते समय मन्त्र-तन्त्र एकाग्रता आवश्यक है। अर्थात् मौन साधके पाट बनायें। इस वक्त मंत्र उच्चार मन में किया तो भी चलेगा।

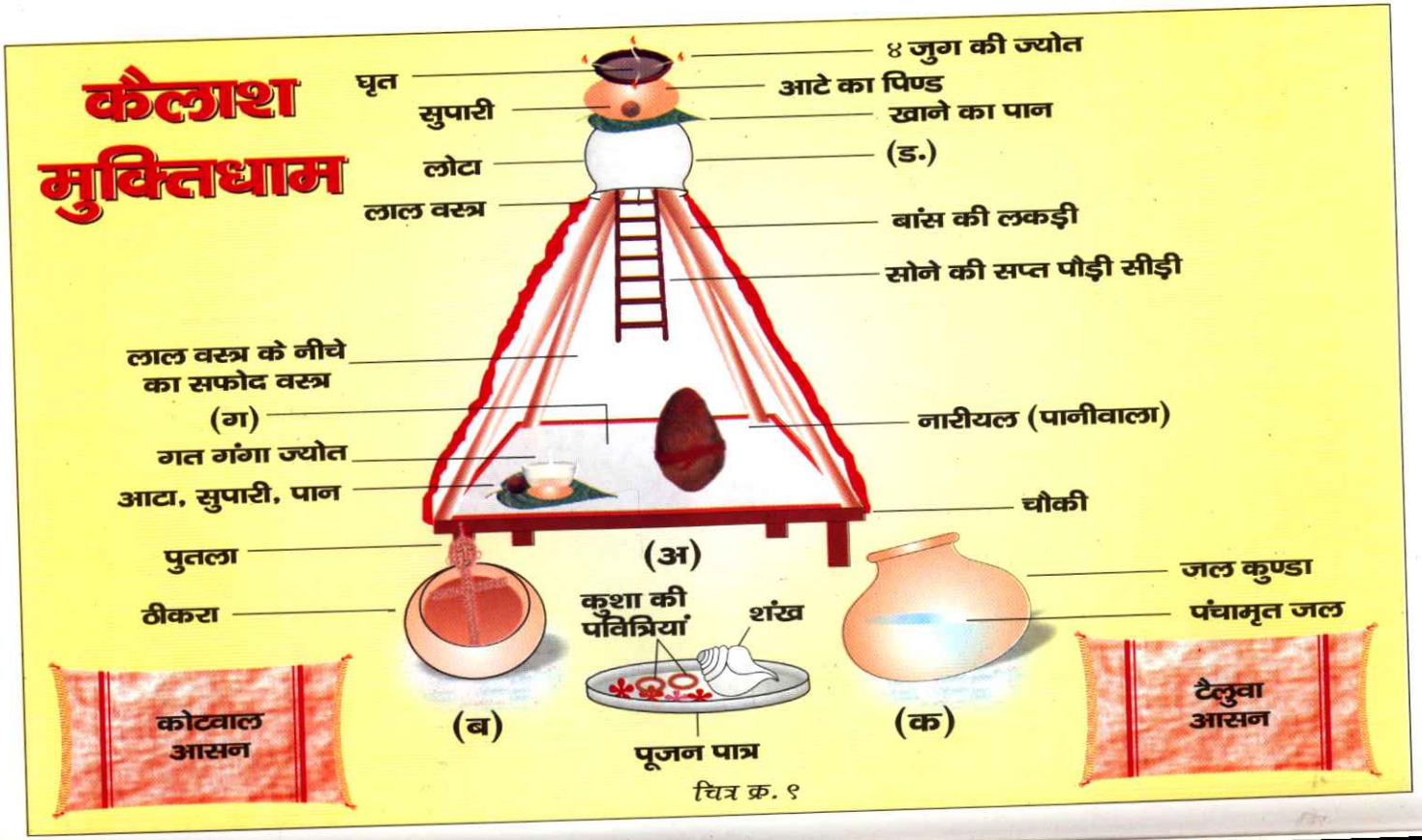
(६) बाला सुन्दरी या हिंगलाज माता के फोटो चित्र दीवारों के ऊपर लटका सकते हैं। या ताम्र पात्र में सुवर्ण-चान्दी-ताम्र आदि धातु का मुखौटा भी स्थापित कर सकते हैं।

(७) कलश स्थापना आवश्यक है। जो साक्षीभूत होता है।





कैलाश स्थापना


कैलाश
मुक्तिधाम
घृत
सुपारी
लोटा
लाल वस्त्र
४ जुग की ज्योत
आटे का पिण्ड
खाने का पान
(ड.)
बांस की लकड़ी
सोने की सप्त पौड़ी सीड़ी
लाल वस्त्र के नीचे का सफोद वस्त्र
(ग)
गत गंगा ज्योत
आटा, सुपारी, पान
पुतला
ठीकरा
नारीयल (पानीवाला)
चौकी
(अ)
जल कुण्डा
पंचामृत जल
कुशा की पवित्रियां
शंख
पूजन पात्र
(ब)
(क)
कोटवाल आसन
टैलुवा आसन

चित्र क्र. ९

(८)कैलाश स्थापना

इस प्रकार से माई का चौक तथा कलश स्थापना के पश्चात् पीरजी या उत्तराधिकारी पूर्व नियोजित, नियुक्त किये हुये कैलाश (शिवलोक मुक्तिधाम) के स्थान [चित्र क्र० ३ कैलाश]पर अपेक्षित साहित्य सामग्री लेकर आयें और निम्न विधि से कैलाश का निर्माण करें।

(क) कैलाश (शिवलोक या मुक्तिधाम) और पौड़ी (सीढ़ी) बनाने की विधि

साहित्य :- लकड़ी की एक चौकी, चार डोंका (फल्डा) अर्थात् बांस की ३ से ४ फिट की पतली लकड़ी, सफेद एवं लाल २-३ मीटर के वस्त्र, एक मौली (लाल सूत) सवा मीटर सफेद वस्त्र, एक लोटा पात्र (ताम्बा, पीतल या स्टील आदि) ठीकरा, कुण्डा (मटका या घट) पूजन का पात्र, सप्त पौड़ी की सीढ़ी (सोने की या चांदी की) या बांस (डोंका) की सीढ़ी नारियल, गत गंगा की ज्योत, खाने के पान सुपारी, आटा, चार जुग की ज्योत, (चतुर्मुख मृतिका का दीपक) आदि।

विधि:- प्रथम कैलाश के लिए नियुक्त किये हुये भूमि पर गंगा जल निम्न मन्त्र से छिड़कें।

भूमि पर जल छिड़कने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। विष्णु जी धर्ती पर जल छिड़काया। कुण्डा बिठाया सूनो बाला का ध्यान। जिन्हा ने पाया सत्गुरा से बाला ज्ञान। जले बाला थले बाला, रुखे बाला, वृक्ष बाला, बाला तपे बाला। गढ मण्डल में धर्मशाला पाच महेश्वर गुरु गोरक्षनाथ बाला। कलयुग मध्ये हनुमन्त बुलाया।

बाये हात पुस्तक दाहिने हाथ माला। रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार जल छिड़कने के बाद एक लकड़ी की चौकी (चौरंग) जो साधारण सवा हाथ लम्बी चौड़ी हो वह जल से धोकर कैलास स्थान पर चौकी रख दें।

इसे स्वच्छ करके उसके चारों कोन में चार छेद करें अत: चार डोंका अर्थात् चार बांस की पतली सी लकड़ी साधारण सवा दो हाथ अर्थात् ढाई से ३ फिट लम्बी लें उन्हें चौकी के चारों छेद में डालकर मौली से (लाल सूत से) खड़ी अवस्था में बांध दें। अत: बांस के ऊपर के चारों टोक एक दूसरे से मिलकर बांध दे और चारों दिशा में चार त्रिकोण तैयार होंगे अब प्रथम सवा मीटर सफेद वस्त्र उन्हें लपेटकर ऐसे बांधें जो उत्तर दिशा को खुला रहे फिर इसके ऊपर सवा मीटर लाल वस्त्र को भी लपेटकर बांध दें। एक लोटा लें, लोटा युग अनुसार, अर्थात् सतयुग में सोने का, त्रेता युग में चान्दी का, द्वापर युग में ताम्बे का, कलयुग में लोहे का अर्थात् स्टील का भी चलेगा। कोई-कोई अष्ट धातु या काँस्य धातु का लेते हैं। शास्त्र अनुसार चार युग का चार धातु (सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा) का मिश्र धातु का पात्र (लोटा) लेना चाहिए।

इस प्रकार से पात्र (लोटा) लेकर उसमें अन्दर आधा भाग में गाढ़ा सा गुन्दा हुआ आटा भरें और कैलाश के (जहां बांस की चारों टोक एक जगह बान्धे हैं) वहाँ ऊपर उल्टा (नीचे मुख ऊपर तल) खोंस दें। [चित्र क्र० ९ 'अ' देखें।] अत: लोटे के नीचे जहां चारों बांस बन्धे हुये कोने में सात पौड़ी वाली सीढ़ी टंगती हुयी मौली (लाल धागा) से बांध दें। यह सीढ़ी भी युग अनुसार उपयोग में लाई जाती है। सतयुग में स्वर्ण,

त्रेतायुग में चान्दी की, द्वापर युग में ताम्बे की, तो कलयुग में बांस की (डोंगा की) नाथ सिद्धों के योगमाया पूजन में सुवर्ण सीढ़ी की प्रथा है।

अत: उपरोक्त कैलाश सीढ़ी लगाते हुये निम्न मन्त्र का पाठ करें।

अथ: पौड़ी (सीढ़ी) स्थापण मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं धुन्द प्रकाशा, अगम निगम से बीज बनाया।अक्षय मण्डल सबसे न्यारा। ॐ अलिल आदि अलिल, अलिल पुरुष ने सुमेरु उठाया, कैलाश गिरी पर शिवशक्ति का भया निवासा।

विधाता ने कैसी चिज बनाई, दस हजार योजन दिंग पूनाई, पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर, ठोर ठोर की खबरे पाई। ॐकार सूमर से योगेश्वर आया, अलख पुरुष का ध्यान लगाया। चौरासी योजन भेद बताया। सप्त पौड़ी का सेज बिछाया। प्रथम पौड़ी गौरी गणेशनाथ की कहे, हात अंकुश पाठ पढ़े ! पडे पिण्ड अमरापुर जाये। दूजी पौड़ी सतनाथ ब्रह्मा की कहे हात पुस्तक ज्ञान पढ़े ! पडे पिण्ड अमरापुर चढ़े। तीसरी पौड़ी सन्तोषनाथ विषण की कहे, हात चक्र विचार करे। पड़े पिण्ड अमरापुर चढ़े। चौथी पौड़ी शिवभोलानाथ जी की कहे हात कमण्डल गत गंगा ज्ञान ! पडे प्राणी पावे मोक्ष धाम। पंचम पौड़ी शक्ति की, नाम जपो तपो हर हर नाम। कटे ताप कटे पाप प्राणी पावे मुक्ति धाम। छठी पौड़ी धर्मराज की कहो, खोजो आवागमन खोजो प्राण। पुछत प्राणी धर्म काज, प्राणी चढ़े मोक्ष धाम। सप्तम पौड़ी जती गोरखबाला, ॐ सों ज्ञान प्रकाशा। छाटे माया ब्रहा ज्ञान। अक्षय प्राणी मोक्ष धाम। इतना पौड़ी स्थापण मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार पौड़ी स्थापना के पश्चात् कैलाश के ऊपर के स्थापित

किये हुये धर्ती मुख लोटे के ऊपरी पृष्ठभाग पर प्रथम दो (डंठल वाले) पान पत्ते रखें उसके ऊपर छोटी सुपारी रखें, सुपारी के ऊपर आटे का पेड़ा (पिण्ड) दबाकर रखें अत: पूर्व वर्णित तैयार किया हुआ चतुर्मुख मृतिका का दीपक अर्थात चार युग की ज्योत को निम्न अथ बाला गायत्री मन्त्र पढ़कर स्थापना करें। [चित्र क्र० ९ 'ङ' देखें।]

(अमर बाला) चार जुग ज्योत स्थापना मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं बाला जाया आपे आप बाला जाया। माई न बाप बाला एक ओंकार जोग जुगता दुसरे ओंकार मोक्षमुक्ता, तीसरे ओंकार धूप दीप ले मोक्ष मुक्ता, चौथा ओंकार अमर बाला ले मोक्षमुक्ता, धूप दीप कहा जोत जगाई जहा बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी आशा माई ओं सोहं महेश्वरी बाला जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धा में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा।। इति बाला जाप ओं गुरुजी अखंडी कूंची वैकुण्ठ धाम कैलाश स्वरूपी दे दर्शन निरन्जन जोत स्वरुपी ओं सोहं जपे अजपा घर आवे सो जोत का होया प्रकाशा अमर गायत्री जापे अलख निरन्जन आपे आप अमरा गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार चार जुग की जोत स्थापित करने के बाद नीचे चौकी के ऊपर सवा मीटर सफेद वस्त्र फैलाकर डालें और कैलाश के दायीं तरफ उपरोक्त विधि से दो पान जोड़ा इसके ऊपर सुपारी, सुपारी के ऊपर एक आटे का पेड़ा (पिण्ड) रखकर पूर्व वर्णित कैलाश गत गंगा की ज्योत अर्थात् एक मृतिका की घृत ज्योत को निम्न मन्त्र से स्थापित करें। [चित्र क्र० ९ (ग) देखें।]

गत गंगा जोत स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। उत्तर दिशा से जोगन आयी दोनों कर ले ज्योत ले आयी। अलख पुरुष तेरी दुहाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: चौकी के मध्य भाग पर आखा की अर्थात् अक्षत (चावल) की छोटी सी रास बनायें और उसपर एक गीला नारियल जिसे मौली (लालसूत) लपेटकर, कैलाश अर्थात् शिवलोक अर्थात् शिवधाम, मुक्ति धाम या मोक्ष धाम प्रित्यर्थ निम्न मन्त्र से स्थापना करें।

अथ: कैलाश (मुक्तिधाम) स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ प्रथम सत्य, सत्य पर धर्म, धर्म पर शील, शील पर अलख निरन्जनजी की चरण पादुका, चरण पादुका पर नीर, नीर पर क्षीर, क्षीर पर कमल का फूल, कमल का फूल पर शेष, शेष पर धवल, धवल पर राई, राई पर श्रीनाथ निरन्जन ने नवखण्ड पृथ्वी ठहराई, जहां पर बैठी आनन्दी माई, तिन देवता की स्थापना थपाई, बह्मा विष्णु महेश, ॐ सोहं अलख निरन्जन परम हंस जी ने कैलास गिरी पर किया निवासा। निरन्जन जती ज्योति भयी प्रकाशा। नाथ निरन्जन ध्यान लगाया। चौरासी हजार योजन कैलास गिरी पर भया विस्तारा। जहां पर बैठे हात लिये छड़ी गौरी नन्द गणेश। दाता ने ऐसी चीज बनाई, क्या भेद बिनू बंसरी, गंगा जमुना सरस्वति ल्याया, हिदें गिदें साठ कोस उत्तर में सोने की सीढ़ी, साठ कोस पूरब में चान्दी की सीढ़ी, साठ कोस पश्चिम में ताम्बे की सीढ़ी, साठ कोस दक्षिण में लोहे की सीढ़ी, जहां पर बैठी जती गोरक्षनाथजी की चौकी सोलह लाख बहात्तर हजार हीरे मोती मानक लाल जवाहर जडेजा काने नोचे चार वेद चवदा शास्त्र अठरा पुराण चौबीस गावत्री सावत्री चौ वेदी भेद अन्ती निचे

गडे एक सौ आठ कुण्ड न्यारे न्यारे। जहा नहीं यम लोक नहीं यम का द्वार ना ही नरक द्वार वहा तो है स्वर्ग का द्वार ऐसा स्वर्ग मृत पाताल लोग होय जोत प्रकाशा ॐ गुरुजी कौन ज्योत गुरुजी का वास कौन ज्योत सत्गुरा का वास कौन ज्योत ब्रह्मा जी का वास कौन जोत विष्णुजी का वास कौन जोत शिवजी का वास कौन ज्योत तो होय प्रकाशा। ॐ गुरुजी ज्ञान ज्योत गुरुजी का वासा, चेतन ज्योत सतगुरुजी का वास, दया ज्योत ब्रह्माजी का वास परम ज्योत विष्णुजी का वास अखण्ड ज्योत शिवजी का वास अभय ज्योत तो होय अभय प्रकाशा। जोत जागी छूत भागी सब दिश भया उजियाला, रक्षा करे जती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। ओं साध सिद्ध आप कहो आप कहावो त्रिकुटी महल झरोखे वास तन पवन मन रिजत-सप्त ज्योत सप्त स्वर्ग-सप्त पाताल एक, एक खण्ड में करे निवासा जौ भर देवल तिल भर दर्वाजा खोले दर्वाजा श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। ॐकार आदि नाथय नमः घटे सूरज घटे चन्द घटे गंगा जमना सरस्वति आकाश तारा-मृतलोक-पाताल सर्वज्योर्ति को नमोस्तुतैः आद योगी जुगत की माया भया योगेश्वर पाप पुन्य से न्यारा, सत्य का योगी वज्र की काया टले पाप हत्या, अमृत ज्योत भये प्रकाशा अमृत अमर ज्योती कू कूरु कूरु स्वाहा। इता कैलाश स्थापना मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट में बैठकर जती गोरक्षनाथ जी ने पढ़ कथ कर सूनाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- यह कैलाश (मुक्ति धाम) मन्त्र मृत शय्या पर पड़े हुये व्यक्ति को मृत्यु के समय सुनाया जाये और सन्मुख गंगा जल भरे पात्र रखें। वही जल उसे पिलावें। व्यक्ति असाध्य बिमारी से मुक्त हो जायेगा या मृत्यु उपरान्त कैलाश गमन कर मुक्त हो जायेगा।]

(ख) ठीकरा स्थापना

इस प्रकार से कैलास स्थापित होने के पश्चात् पीरजी ने कैलाश के सन्मुख भूमि के ऊपर थोड़े से आखा (चावल) रखें या चावलों का स्वास्तिक बनाकर अर्थात् स्वास्तिकासन बनाकर उस आसन के ऊपर एक बड़ा सा (मृतिका का) ठीकरा थोड़ा तिरछा करके रखें और निम्न मन्त्र का उच्चारण करें। [चित्र क्र० ९ 'ब' पर देखें]

ठीकरे का मन्त्र (स्थापन)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। पढ़ो पढ़ो महेश्वर करनी से उतरो पार करनी होय तो पौढी चढे बिन करनी कहो गुरुजी कैसे तरे। ओं ठिकरा नहीं कोई ठाठ है। पांच तत का घाट है धरती मुख उत्पन्ना पवनमुख सुखा अग्नि मुख जरा सो ठिकरा सब सन्तन के आगे चला हात में चलावे राजा प्रजा को चितावे। शिर पर धारे तो समाधि करे। ओ किसने मुकुट मान्या कौन जगाई ज्योत। कौन तेरी साख भरे, कौन रहते तेरे कोल। शिव ईश्वर मुकुट मान्या, शक्ति जाई जोत ब्रह्मा तेरी साख भरे, विष्णु रहे तेरे कोल। अमर योगी अमरापुर चढे सत्य शब्द की ओट। सत्य शब्द का करो विचार, करनी अपनी उतरोगे पार। ॐ सोहं ठीकरा जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धो में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

(ग) कुण्डा स्थापना

इस प्रकार से ठीकरा स्थापित करने के बाद ठीकरे के बायें दिशा में पुनः थोड़ा आखा (अक्षत/चावल) भूमि पर रखकर या अक्षत का स्वास्तिकासन बनाकर उसपर एक कुण्डा (मृतिका का मटका) निम्न

मन्त्र से स्थापित करें। [चित्र क्र० ९ 'क' पर देखें]

कुण्डा स्थापन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरु जी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अजर-बजर धरत्री माता, अलिल पुरुष ने हुकम चलाया शिव शक्ति ने कीनी त्रिकुटी, करधर कुण्डा थाप्या-कपाली अपने हात, ॐ की थापना सोहं का ध्यान, सिद्धो अघोर बीज बाला भये प्रमाण, कहे सत्गुरा तो कुण्डाला कुण्डा सप्त सागर नीर पाच महेश्वर आज्ञा करें तो कुण्डा बिठाया गोरक्ष पीर। इतना कुण्डा स्थापन मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: कुण्डा में आधे से थोड़ा ज्यादा जल भरें, जल गंगाजल हो त्रिवेणी संगम नदियों का, पंचनदी का जल हो तो उत्तम है। अत: पीरजी ने या सम्बन्धित उत्तराधिकारी ने निम्न कुण्डा (कलश) जल मन्त्र कहते हुये कुण्डा में जल भरें।

कुण्डा (कलश) जल मन्त्र

सत नमो आदेश! गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ प्रथम अलिल नाम, द्वितीय उदक मेवाच तृतीय तौरेतवा नाम जल नाम चतुर्थे पंचमे पाणी नाम षष्ठ में ब्रह्म नाम सप्त में अचल नाम अष्ठ में आब नाम, नवमे नीर नाम दशमें वीर्य नाम, एकादशे आदिनाथ द्वादशे कुदरतनाथ पाणी ब्रह्मा पाणी विष्णु पाणी देव महेश जो प्राणी पाणी का सिमरन करे। सौ प्राणी भौ सागर तरे, जल जागो थल जागो गुरु कैलाश साध अभ्यांगत आय तुम्हारे पास विष्णवे नम: तीन बार पठ्ेत परमहंस परमहंस परामात्मा भगवान जले जिन्दा जिन्दा आकाश जिन्दा पाताल जिन्दा हैबी जिन्दा होसी भी जिन्दा

जहां सिमरिये तहां हाजर (उपस्थित) हजूर (आदरणीय) योगी जाहिर (प्रसिद्ध) जिन्दा पीर (अमर गुरु जी) जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भण्डार मध्ये कलश संस्थाप्य भण्डार ज्योत प्रकाश कृत्वा केसर जुगती कूंडा संस्थाप्य मंडान पूरयेत् ततो मन्त्र

ओं असंख्य जुगो पहले होती सुन होती स्या (अनन्त) नजार इक हजूर (आदरणीय) था इक मजूर (कर्मयोगी) था न थी धर्तरी न था आकाश न था पवन न था पाणी न था चन्दा न था सूरज न था सातकुली साहिर न था अष्ठ कुली पर्वत न था नौ कुली नाग न था ब्रह्मा विष्णु महेश न था कन्था कन्थी न था जोगी अर भोगी न था वेद अर बानी होता आप स्यानिजार एक बून्द अगम को गयी एक बून्द पश्चिम को गई एक बून्द पाताले गयी एक बून्द चरणांमृत रही जब नाभ कमल से निकली देवी आद कुवारी मुख से बोली वर प्राप्त करो मेरा सागर पाओ उठ देवी सूरत को साधो सुंन अधर दलीचा अरधन्त पाट बैठा अविनाशी आद सुंनका करो विचार अष्ठ कमल छे: पंखड़ी कमलासन मुख चार सुंन स्वरुपी ब्रह्मा धरते ध्यान जब देवी ब्रह्मा घर जावे ब्रह्मा का मण्डान न भावे न ब्रह्मा धारे युग वरनन का साक न ब्रह्मा धारे माई न बाप कर्ष दिल में रहा समाई ध्यान स्वरुपी रीझे पश्चिम की छोड़ अगम की कीजे न माता मेरे अंग से लावे देवी छोड़ा चक्र दिया चलाई ब्रह्मा गया परले माही उठ देवी महा सुनका करो विचार, नाभ कमल नौ पंखड़ी गरुड़ आसन मुख चार तत स्वरुपी विष्णु धरते ध्यान जब देवी विष्णु घर जावे विष्णु का मण्डान न भावे न विष्णु धारे युग वरनन का साक, न विष्णु धारे माई न बाप कर्ष दिल में रहा समाई ध्यान स्वरुपी बैठा रीझे पश्चिम की छोड़ अगम की कीजे न माता

मेरे अंग से लावे देवी छोड़ा चक्र दिया चलाई विष्णु गया परले माही उठ देवी अमर सुन का करो विचार इक कमल बारा पंखड़ी श्याम वर्ण नेत्र तीन परम तत का शंकर धरते ध्यान जब देवी शंकर घर जावे शंकर का माण्डन न भावे न शंकर धारे युग वरनन का साक न शंकर धारे माई न बाप कर्ष दिल में रहा समाई ध्यान स्वरुपी बैठा रीझे अगम पश्चिम की दोनों कीजे भली आईरी मेरी माई दिया धर्म का पंथ बता असंग युग परलै गया जब का मेष ऋष जात सपूता उन्हे बूझ सपूता उठ मेघा घर जाओ सत का शब्द सही कर ल्याओ उठ देवी कढ़ाई कार तैत्रीस की फेरी आण उठ देवी परम सुंन का करो विचार सत का शब्द सही कर बखशो शिव शक्त के घरे बास करो शत्रु पियाले सहस्र रचे उठ देवी हरी सुंन का करो विचार शब्द कमल पर स्या नजार शब्द कमल की सहस्र पंखड़ी रंग बहु रंग सिद्धासन घाट घडंते नारायण ओ बीआद कुवारी बर प्राप्त करो मेरा सारंग पाणी सत का शब्द सही कर बखशो शिव शक्त के घर बास करो शक्त पियाले संसार रचे सहस्र कला ले उटा सारंग धर नैन नजर भर जोया पाटी सुंन भया प्रकाश शंकर घर आया स्या नजार नहीं थी धर्ती जब काहे का पाट न था अलील जब काहे की होती पायल न था अन्न तब काहे की कौली न थी, सर्व गत तब काहे का ठाठ न थी जोत तब काहे का प्रकाश न था, कलश तब काहे की थी धीर्ज न थी धर्ती तब धीर्ज का होता पाट न था अलील तब प्रेम की होती पायल न था अन्न तब भाव की कौली न थी सर्व गत तब पाँच तत का होता ठाठ न थी ज्योत तब शब्द का होता प्रकाश न था कलश तब वचन की होती धीर्ज सुरत निरत से लिंग उपाया दे नख चीर भग बनाया रुप बीज फूला धर्म दे दस अवतार लिया बारा शक्त अगम से ऊठी

पांच शब्द प्रगट किया कौन बून्द से धर्ती किया कौन बून्द से आकाश किया, कौन बून्द से सती किया, कौन बून्द से प्रकाश, अकाश शब्द से केवल रवि चन्दा काला गोरा गणपत गोरक्ष धर्म ए मेष ऋष सावित्री, गायत्री, लक्ष्मी, पार्वती, गंगा गोदा, नरमदा अरु सरस्वती ते तारा ऋद्धवन्ती सिद्धवन्ती आद कुवारी महाकाली कौन स्वरुपी ॐ किया कौन स्वरुपी सोहं किया, कौन स्वरुपी रुणंकार कौन स्वरुपी आनन्द हुवा कौन स्वरुपी गंगा गौरा वाचन्ते ते कलंक स्वामी जी सूनो अनघड़ देवा बीज स्वरुपी सोहं किया काल स्वरुपी ओम् किया जत स्वरुपी, रुणंकारा तत स्वरुपी आनन्द हुआ जोत स्वरुपी गंगा गौरा वाचन्ते ने कलंक स्वामी सुना अनघड़ देव ब्रह्मा विष्णु महेश ने कलंक नार सदा जी संबल देह धरा, ध्यान शिव बून्द की धर्ती किया शक्त बून्द का आकाश किया सांच बून्द की शक्ति किया जोत बून्द प्रकाश सुर तैतीसै का मेला किया मा धर्म रचाया उठ देवी सत का झेलो हाथ अजरा जरे पी पी पीये पियाला फेर भरे तोड़ा भग सदा सदा कर उडा सन्त एता मूल मंडान का जाप सम्पूर्ण भया सुन्य के गादी में बैठ स्या नजार ने कहा जपन्ते जाप कटन्ते पाप अलख निरन्जन आपे आप। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

[विशेष :- इस मन्त्र को खेत में कलश स्थापना कर पाठ करने से जल की वृद्धि होती है।] मंत्र सिद्ध करने पर प्राकृतिक बारीश (वर्षा) होती है।

अत: निम्न मन्त्र से पंचामृत अर्थात् दूध, दही, घी, शहद, चीनी या जल यह सब मिलाकर एक पात्र बनावें।

पंचामृत बनाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐगुरुजी। अलख

निरन्जन धुन्धुक्कारा स्वाल शब्द नहीं ओंकारा। मेरु मण्डाल कैलास पर देवी देवत्याने किया भण्डारा। ॐ गंगा का नीर पात्र ल्याया निश्चल विर, कामधेनु ब्रह्मा जी ल्याया, मधुमती का गीर, दुग्ध माखन ल्याया गोपाल किसन पीर, भर खप्पर ले आई मीठी माई सदा सहाई पांच तत भई महामाई अन्नपूर्णा महामाई ऋद्धि सिद्धि शिवजी ल्याये सार भैरव वीर। ॐ शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु जी के पाव पांच महेश्वर आज्ञा दिनी तो पंचामृत चढावू गुरु गोरक्षनाथ जी के पाव। इतना पंचामृत मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: यह पंचामृत कुण्डा (कलश) में डालें अत: एक कटोरी में थोड़ा गौ का दूध लेकर उसमें केशर डालकर उसे मिलावें और वह केशर निम्न मन्त्र उच्चारण करते हुये कुण्ड (कलश) में डालें।

केशर मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। माटी का कुण्डा दूध गंगा नीर। केशर मन्थे हनुमन्त विर। ॐ केशर पवित्री कहांसे आई कैलाश पर्वत से आई। गंगा गौरजा केशर भई कुण्डे कुतके निर्मल भई, अमृत जान नाथ सिद्धों ने लाई। ॐकेशर माई के तीन पूत दो घरबारी एक अवधूत। ॐ आई केशर मात की लीजे दो कर जोड़ पांच महेश्वर आज्ञा करे तो सिर कुंटक का फोड ॐ शिव घर आवो शक्त घर बैठो गुरु प्रसादे केशर चेतो चढ़ावे केशर करो उपाय रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। इतना केशर मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेष:**- नवरात्र या ग्रहण में यह मन्त्र सिद्ध करें। मंगलवार, शनिवार को माता की गोद भरें, हनुमान को चोला चढ़ावें। मीठा भोग लगावें; जप समय दूध, केशर, चन्दन मिश्रित, तिलक बनाकर रखें और जब भी कोई कार्य करने

जाना हो तो तिलक सन्मुख २१ या ११ बार जप करें तिलक मस्तक पर लगाकर जावें कार्य सफल होगा।]

इस प्रकार से कैलाश सन्मुख ठीकरा तथा कुण्डा का निर्माण करके यथा स्थिति रखें।

विशेष:- इस योगमाया विधि में कुछ योगेश्वर विशेषत: गृहस्थ योगेश्वरों में कैलाश बनाने की बजाय पालना अर्थात् झूला बनाने की प्रथा है तथा स्वर्ग सीढ़ी भी नव पौड़ियों की बनाते हुये दसवें पौड़ी पर झूला बनाते हैं।

(घ) पात्र स्थापना

अत: दो प्रकार के पूजन पात्र बनाने चाहिये - (१) कैलाश पूजन पात्र (२) बाला सुन्दरी चौक पूजन पात्र।

कैलाश पूजन पात्र

एक पात्र (थाल) लेकर उसमें एक दक्षिण मुख वाला एक शंख निम्न मन्त्र से स्थापित करें।

शंख गायत्री मन्त्र-१

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। शंख शंख संजोग भया। ज्ञान गोदडी चंचल विलया। निर्भे जोगी बेपरवाई आदका शब्द सिंगरो भाई। तुम हम अलिल पुरुष तीनो मिलवा भाई, मैं तो पूछो पिण्ड की अवधू जोगी राई। अर्वद नर्वद धुन्धुकारा शब्द न स्वाल न एकोंकारा। मर गई गौरा रह गया रुण्ड, शिवले पहरा गल में मुण्ड। हाड चाम पिन्चर का नला। षट दर्शन ले घाली गला। अमृत कूपी ले आगे धरी, जल थल में माता गौरया खड़ी। जल में करी मीन की थाप, पांच शंख छटी गायत्री गौरा, ले निकसी अपने हाथ। पढ़ो शंख गायत्री सार, गंगा नदी भवसागर

तार। अम्बे देवी का जपो जाप पड़े पिण्ड का पर हर पाप। उठो नारायण करो पसाऊ चार चौकड़ी जीव को दीजै ठाऊ। षट्मास जोगी हठ निग्रह करे एकोत्र सै पुरुषालै अमरापुर तरैं पढो वेद गायत्री सार पिण्ड प्राण उधरगति तार। गायत्री सावित्री चौपगी चौवेदि सुने सिंगी रुपेखुरी चँवर पुछी।।

ताम्बे वरणी जम घंटी नदी वैतरणी तार, राख राख माता शम्भुशिव गायत्री राख अघोर पिण्ड पडन्ता राख। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर राख। सत बोले सतवादी नर गुरु वाचा तत सार। शंख गायत्री सम्भालो बहुडी न लै औतार। ॐ गुरुजी गंगा जमना सरस्वति तीनों अखण्ड कवार। शंख ढरै शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्ष द्वार। इतना शंख गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- होली-दिवाली-नवरात्रि में इसे सिद्ध करें। शंख में जल रखें और जप करके रोगी को देवें तो बीमारी नष्ट होगी, भूत प्रेत बाधा हो तो हट जायेंगी।]

अतः इस पात्र में निम्न मन्त्र से पूर्व वर्णित तैयार की हुई कुशा की दो चार पवित्रियाँ तथा पुतला (स्थापित करें) रख दें।

पवित्री स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं धुन्धुकारा पांच तत का किया पसारा कहो सिद्धो पवन पवित्री काहांसी आनी पांच महेश्वर मिल ईश्वर आनी कुशासन बैठो पवित्री माई-नाथ नाम तेरा लिना रक्षा करें सुन्दरी बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अतः इस कैलाश पूजन पात्र के साथ और एक पात्र (थाल) रखें

जिसको बाला सुन्दरी चौक पूजन पात्र कहते हैं।

अत: इन दोनों पात्रों में लाल पुष्प, बिल्व पत्र, आटे की या कुशा की नादी पवित्रियाँ रखें, आटे के पिण्ड रखें और खाने के पान सुपारी इत्यादि सामग्री निम्न मन्त्र उच्चारण करते हुये रखें।

सामग्री बरसाने (स्थापने) का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अलील सोहं आलिल अलिल पुरुष पवन का थम्ब। गावत्री सावत्री धरती माता, पाताल पात्र उर्ध्व-रेता। गंगा जमना सरस्वती नीर। हस्त पात्र हनुमन्त वीर। हस्तक ले मस्तक चढ़े पूजे सकल संसार, चार जुगी का पात्र थापे माई बाला का सार। नाद मुद्रा सेली सींगी पुष्प लाल साल समुन्दर नीर। पंच मोहरा पंच रुपया पंच तत्व का मेवा पंच पत्र पंच पाण पाच महेश्वर की चरण सेवा। श्री नाथ निरन्जन की चरण पूजन्ते, पूजा पात्र थापना पढन्ते। मंत्र पढ़ पूजा बरसन्ते सो योगी मोक्ष मुक्ति को लभन्ते। श्री नाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: बाला सुन्दरी चौक पूजन पात्र में एक करद (चाकू) निम्न मन्त्र से रखें।

करद का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ धार सोहं धार लागू न लोहा पाचे न धार, करद मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्ध में बैठ गोरक्षनाथ जी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अत: इसी पात्र में धूप, अगरबत्ती, पंचारती इत्यादि आरती की सामग्री रखें। इस प्रकार दोनों पात्र तैयार होने के पश्चात् कैलाश पूजन पात्र कैलाश के सन्मुख तथा बालासुन्दरी चौक पूजन पात्र बाला सुन्दरी

चौक के सन्मुख कलश के पास भूमि पर थोड़े अक्षद रखे या स्वस्तिकासन बनाके उसपर निम्न मन्त्र से स्थापना करें।

पात्र स्थापन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। धर्ती हमारी पात्र बोलिये। आकाश हमारा थाल। सत का शब्द अगम की भिक्षा। ॐ कार नाथजी का बाल। पहला पात्र चौक पूराई, करु पूजा भयी कमाई। पात्र झेल्या आनन्दी माई। दूसरा पात्र कैलाश चढ़ाऊ चार जुग परिक्रमा। पिण्ड पड़े जल चढाऊ मोक्ष मुक्त का धामा। इतना पात्र स्थापना मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।।

उपरोक्त मन्त्र विधि से भूमि पर थोड़े आखा (चावल) रखें या जल का स्वास्तिक बनायें और उसपर पूजा पात्र स्थापित करें।

कैलाश-भावार्थ :- साधु सन्त हो या नर नारी हो, सभी प्राणियों को मृत्यु आती है। आत्मा अविनाशी है, नित्य है, सत्य है जैसे वस्त्र बदले जाते हैं वैसे ही आत्मा शरीर बदलती है। मृत्यु पश्चात् जीव स्थूल देह छोड़कर अपने इच्छानुसार, सूक्ष्म शरीर (आत्मा) के साथ परलोक गमन करते हैं। यह सूक्ष्म शरीर (आत्मायें) केवल सूक्ष्म योग साधना करनेवाले आत्मसाक्षात्कारी साधक ही सूक्ष्म (योग) ध्यान योग द्वारा देख सकता है, बोल सकता है एवं कार्य भी कर सकता है। सूक्ष्म (आत्मा) तत्व भौतिक विज्ञान के परे है। विज्ञान चाहे कितना भी प्रगति पथ पर हो वह आत्म तत्व, विधाता, परमतत्व एवं परमात्मा इन तत्वों को, इन धारणाओं को नहीं खोज सकते, इसकी खोज, इसकी प्राप्ति मात्र सतगुरु कृपा सान्निध्य में सूक्ष्म योग साधना की परिपक्व अवस्था में ही कर सकते हैं। तन्त्र क्रिया मानसशास्त्र, आकर्षण विकर्षण (हिप्नोटिज्म) आदि सब भौतिक विज्ञान है जिसे साधू माया कहता है।

सब व्यापार हैं, माया का खेल है।

यहां इस योगमाया कर्मकाण्ड में कैलाश की रचना (तन्त्र से) की जाती है। साथ में स्वर्गारोहण की सप्त पौड़ी वाली सीढ़ी बनाते हैं। पुतला मृतात्मा यह सीढ़ी चढ़कर बाद में कैलाश की परिक्रमा करके मुक्ति तथा शिवलोक में कैलाश धाम में चला जाता है।

(ङ) कर्म तैसी गती

भावार्थ = हमारे हिन्दु धर्म तथा समस्त मानव धर्म यही कहता है कि जैसे कर्म करेगा फल अथवा अन्तिम मृत्यु उपरान्त गती भी वैसे ही मिलेगी। क्योंकि मृत्यु के समय मनुष्य के अतीन्द्रिय जाग्रत होकर मस्तिष्क में सम्पूर्ण जीवन गाथा, जीवन के भले बुरे प्रसंग, चित्र रुप में सन्मुख खड़े होते हैं। अच्छे कर्म किये तो मांगलिक प्रसंग सामने होते हैं। बुरे का बुरा नतीजा आता है। भक्ति सत्वगुण, साधना इष्ट के कर्म यह भी अन्तिम समय सन्मुख आते हैं और जीवन को वैसी ही गती प्राप्त होती है।

मृत्यु पश्चात् निम्न प्रकार से गती प्राप्त होती है ऐसा नाथों का सिद्धान्त है।

(१) कैलाश लोक या शिवलोक या शिवधाम, मुक्ति धाम यह मुक्ति उसी को प्राप्त होती है जो परिपक्व योग साधना द्वारा आत्म तत्व, आत्मज्ञान, आत्मसाक्षात्कार आदि को प्राप्त करते है। जो कि अन्दर-बारह जहां भी देखेगा वहां उसे आनन्द स्वरुप आत्मा का ही अनुभव होगा। हर पल-हर चीज में वह आत्म तत्व को ही देखेगा, प्राप्त करेगा। यह सिद्ध योगियों का अधिकार है। वह सात सीढ़ी चढ़कर परम तत्व में विलीन हो जाते है जैसे समुद्र में नदी जाकर जब मिलती है तो वह समुद्र हो जाती है। वैसे ही समाधि अवस्था में आत्मसाक्षात्कारी योगी की आत्मा परम तत्व में मिलकर परम तत्व हो जाती है और वह ना ही जन्म

लेता है और ना ही माया के चक्कर में आता है।

(२) वैकुण्ठ धाम – विष्णुलोक, मोक्ष धाम यह उसी को प्राप्त होता है इसमें ४ प्रकार की गति है। १. सालोक्यता = वैकुण्ठ लोक में निवास, २. सारूप्यता = इष्ट रूपमय होना, ३. सायुज्यता = इष्ट गुण में एकरूपता, ४. मोक्ष = एकीकार में विलीन होना। जो अपने इष्ट की परिपक्व साम्प्रत भक्ति करता है। जो कि वह हर क्षण हर व्यक्ति हर वस्तु में अपने इष्ट को ही देखता है। जो अन्दर बाहर भक्ति से ओत प्रोत है यह उसी भक्त को मोक्ष प्राप्त होता है। वह वैकुण्ठ धाम–विष्णु लोक में चला जाता है और अपने इष्ट में ही एक रुप हो जाता है। यह मोक्ष प्राप्त भक्त लोग इच्छानुसार धार्मिक कार्य, जन कल्याण एवं पुनः भक्ति आनन्द लेने के लिए पुनर्जन्म ले सकते हैं। जैसे मीराबाई, कृष्णमय हुई, तुलसी राममय हुये यह अधिकार सन्तों का है। उन्हें मोक्ष प्राप्ति होती है।

(३) स्वर्ग प्राप्ति ब्रह्मलोक, स्वर्ग धाम– यह सप्त स्वर्ग है। (भूः, भुव, स्वः, मह, जनः, तपः सत्य) इन ७ स्वर्ग में मनुष्य मृत्यु उपरान्त अपने पुण्य कर्म अुनसार स्वर्ग सुख लेते हैं। दान धर्म करना, तीर्थाटन करना, मातृपितृ गुरु रिश्ते नाते, जनता देश आदि की सेवा से प्राप्त हुआ पुण्य तथा यज्ञ, कर्मकाण्ड, इष्ट का जाप, अनुष्ठान, स्वार्थ के लिये तपस्या इत्यादि पुण्य कर्म करके पुण्य संचय से उन्हें स्वर्ग में ब्रह्मलोक में अनन्त सुख मिलता है। जब तक पुण्य संचय है तब तक वह स्वर्ग सुख भोगता है। पुण्य खत्म होते ही पुनः मृत्युलोक में आकर जन्म लेता है। यह जन्म मृत्यु के चक्कर में चक्कर लगाता रहता है।

(४) नरक प्राप्ति (यमलोक) – यह अधम कर्म करने वाले दुष्ट, राक्षसी, पापी लोगों का अधिकार है। अतृप्त, अतिषय निकृष्ट इच्छा तृप्ती के लिये व अतृप्त आत्मा रुप में सूक्ष्म रुप में भटकते हैं वह पुनः जन्म बड़ी मुश्किल से लेते हैं। यम यातना भोगते रहते हैं। इनका उद्धार

सत्पुरुष, सन्त, देवता कर सकते हैं।

सृष्टि को अर्थात् पृथ्वी को विज्ञान द्वारा दर्शाये गये सात वायु के आवरण है जिन्हें हिन्दू धर्म, आध्यात्म सप्त स्वर्ग एवं सप्त (नरक) पाताल कहते हैं। मृत्यु उपरान्त अपने-अपने कर्म अनुसार मृतात्मा इन सप्त आवरण में सूक्ष्म रुप में विचरता रहता है।

यहां मृतात्मा का पुतला सप्त पौड़ी चढ़कर मुक्ति को प्राप्त होता है अर्थात् यह उपरोक्त सात स्वर्ग एवं सात पाताल नरकों, सात पौड़ियाँ स्वरुप में चढ़कर अर्थात् पार करके अर्थात् सात वायु के पट्टों को पार करके सृष्टि के बाहर ब्रह्माण्ड परमतत्व में प्रवेश करता है। अर्थात् पुतला जब परिक्रमा करता है तो वह मुक्ति धाम को खोजता हुआ पूरे सृष्टि की परिक्रमा (भ्रमण) करता रहता है और मुक्ति धाम मिलते ही उनमें विलीन हो जाता है।

इस प्रकार यह कैलाश (सप्त पौड़ी) तथा ठीकरा, कुण्डा, गत गंगा जोत आदि की रचना करने का उपरोक्त उद्देश्य है।

(च) कुछ नियम

(१) युग अनुसार लोहे का लोटा और बांस की सीढ़ी (पौड़ी) उपयोग में लानी चाहिये।

(२) नाथ सिद्धों में सोने या चान्दी की पौड़ी (७ पौड़ी वाली) ही प्रचलित है।

(३) चार युग (चतुर्मुख) ज्योत अत्यंत सावधानी से स्थापित करें। यहां आटे का पिण्ड थोड़ा बड़ा लेना चाहिए।

(४) ठीकरा एवं कुण्डा चित्र क्र० ९ में ब, क में दिखाये गये अनुसार ही लेना चाहिए।

(५) पूजन के दोनों पात्र अपने सुविधानुसार नजदीक ही स्थापित करें।

अतः सभी प्रकार के आसन व्यवस्था करें।

(९) आसन व्यवस्था (स्थापना)

साहित्य - ९-१० कुशा आसन, ९-१० सवा-सवा मीटर लाल एवं सफेद वस्त्र, मौली (लालसूत), ९-१० पानी वाले गीले नारियल इत्यादि।

विधि:- निम्न प्रकार से पीरजी ने या उत्तराधिकारी ने बालासुन्दरी चौक (पाट) के सन्मुख आसनों की व्यवस्था करनी चाहिए।

सभी आसनों के लिये प्रथम एक कुशा आसन फैलाकर रखें फिर इसके ऊपर लाल या सफेद वस्त्र को फैलाकर रखें तथा हर एक आसनों के पास एक-एक नारियल जो की लाल सूत से लपेटा हुआ रखें।

(१) पीरजी का आसन - यह आसन बाला सुन्दरी चौक के दायीं दिशा में स्थापित करें।

(२) जोगनी आसन - यह आसन चौक के बायीं दिशा में स्थापित करें।

(३) साखियाँ आसन - यह आसन चौक के दायीं दिशा में पीरजी के आसन के सन्मुख स्थापित करें।

(४) वीर आसन - यह आसन चौक के बायीं दिशा में जोगनी आसन के सन्मुख स्थापित करें।

(५) अनन्त गादी आसन - यह आसन चौक के दायीं दिशा में साखियाँ आसन के सन्मुख स्थापित करें।

(६) भण्डारी आसन - यह आसन चौक के बायीं दिशा में वीर आसन के सन्मुख स्थापित करें।

(७) टैलवा आसन - यह आसन सभी आसनों के मध्य में बालासुन्दरी चौक के सन्मुख स्थापित करें जहाँ चौक को पूजन, नमन

(आदेश) कर सकें, वैसे टैलवा आसन घूमता फिरता रहना चाहिए।

इस प्रकार निम्न दो आसन (कुशा आसन) ऊपर लाल या सफेद वस्त्र बिछाकर कैलाश के सन्मुख स्थापित करें।

(८) कोतवाल आसन - यह आसन कुण्डा के सन्मुख स्थापित करें।

(९) पुनः टैलवा आसन - यह आसन ठीकरा के सन्मुख लगायें। जो घूमता फिरता है। [आसन व्यवस्था चित्र क्र० ७ और ९ पर देखें।]

भावार्थ :- यहां नाथ सिद्धों के योगमाया कर्मकाण्ड में आसन विधान अनुसार कुशा आसन लगाने से ज्ञान की प्राप्ति, उसके ऊपर सूत वस्त्रासन लगाने से शक्ति की प्राप्ति तथा कम्बलासन लगाने से मनोकामना सिद्धि प्राप्ति होती है। अतः कुशा आसन वस्त्र या कम्बलासन अत्यन्त शुद्ध पवित्र एवं सात्विक गुण सम्पन्न होते हैं। इन आसनों पर जो भी साधना अर्थात् तन्त्र मन्त्र तथा सिद्धियाँ, पूजा कर्मकाण्ड उपासना एवं यौगिक साधना करने पर साधक को ज्ञान सिद्धियाँ तथा सात्विक गुणों की प्राप्ति होती है। इन आसनों पर देवी देवता, ऋषि मुनि एवं नाथ सिद्धों के साक्षात्कार दर्शन होते हैं। विशिष्ट समय, विशिष्ट मन्त्र (सात्विक एवं भक्ति प्रद) रोज लगातार ४१ दिन करने पर आसन सिद्ध होता है तथा सवा वर्ष (१५ मास) साधना करने पर ज्ञान-कैवल्यानन्द की प्राप्ति होती है। इसमें ब्रह्मचर्य का नियम आवश्यक है।

इसी प्रकार नाथ सिद्धों ने और भी आसनों पर की हुई साधनाओं का अनुभव प्रचिती निम्न प्रकार से होती है।

(१) कम्बलासन पर साधना - सर्वकामना सिद्ध होती है।

(२) मृगासन पर साधना - सम्मोहन, आकर्षण प्राप्ति होती है।

(३) काले हिरन खाल पर साधना - मुक्ति मोक्ष की प्राप्ति होती है।

(४) बाघाम्बर व्याघ्रासन पर साधना - मोक्ष प्राप्ति होती है।

(तामसी साधना - तामस गुण, कापालिक गुण प्राप्ति होती है।)

(५) कुशा आसन पर साधना - ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(६) पत्तों के आसन पर साधना - पत्तों (वनस्पति, वृक्षादि) के आसन पर साधना करने पर दीर्घायु प्राप्त होती है।

(७) खाकाम्बरासन (भभूती का आसन) - श्मशान वैराग्य-त्याग की प्राप्ति होती है।

(८) श्वेताम्बरासन (सफेद वस्त्र) - ज्ञान, विद्या, कला, वैभव, समृद्धि की प्राप्ति होती है।

(९) पीताम्बर - पीत वस्त्र या पीले वस्त्र परिधान कर या रेशमी वस्त्र पहनकर या रेशमी वस्त्रासन पर साधना - पुष्टी कार्य, समृद्धि कार्य प्राप्ति होती है तथा निस्वार्थ भाव से इष्ट भक्ति की प्राप्ति होती है।

(१०) भगवासन - सच्चे सत्गुरु की प्राप्ति होती है।

(११) गौ मूत्र या गोबर लेपन भूमि पर कम्बल या वस्त्रासन पर साधना करने पर मुख्यता गौ लोक गमन होता है, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तथा देवी देवता प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं। मृत्युंजय मन्त्र साधना करने पर आधि-व्याधि, जरा मरण से मुक्त होकर स्वर्ग सुख प्राप्ति होती है।

(१२) हस्तिचर्मासन - साम दाम दण्ड की प्राप्ति होती है।

(१३) सिंहासन - (भौतिक) राज योग की प्राप्ति होती है।

(१४) चीताम्बरासन अथवा शवासन या प्रेतासन या मुर्दे के ऊपर बैठकर साधना करने पर श्मशान सिद्धियाँ, तामसी, कापालिक, भैरवी,

बेतालादि सिद्धियाँ प्राप्त होती है। मारन, उच्चाटन तथा भूत प्रेत वशीकरणादि मृतात्मा द्वारा कार्य सिद्धियाँ आदि अभिष्ठ सिद्धियाँ प्राप्त होती है। यह गुरु मार्ग दर्शन पर करना उचित है।

(क) कुछ निषिद्ध आसन साधनायें

(१) पत्थरासन पर साधना - दु:ख कलेश की प्राप्ति।

(२) काष्ठ पर (लकड़ी पर) आसन साधना - आधि व्याधी रोग की प्राप्ति होती है।

(३) शुद्ध वस्त्रासन - स्त्री की प्राप्ति होती है।

(४) बिनासन - केवल भूमि पर बैठकर मन्त्र साधना करने पर मन्त्र सिद्ध नहीं होते।

(५) तृणासन पर साधना - इससे कीर्ति की हानि होती है।

(६) वंशासन पर साधना - दरिद्रता होती है।

विशेष:- इसप्रकार जल में, नदी के किनारे, त्रिवेणी में, गुफा कन्दराओं में, शिव मन्दिर, तथा अन्य देवी देवता मन्दिर में, हृदयस्थ घर में, सद्गुरु सानिध्य में ऐसे विभिन्न स्थानों में उपरोक्त आसनों से युक्त साधना करने पर शीघ्र फल की प्राप्ति होती है।

अत: घर में साधना करने पर एक गुना, नदी में या नदी के किनारे, संगम पर - दो गुना, विशेषत: गंगा किनारे सौ गुना, अग्नि सदृश्य - हजारों गुना, पहाड़ गुफा जंगलों में एकान्त में लाख गुना, शिव विष्णु या सिद्ध क्षेत्र देवालयों में कोटि गुणा तथा सतगुरु के सानिध्य में अनन्त गुना फल मिलता है। उपरोक्त आसन विधान साधनायें अपने सतगुरु सानिध्य में एवं मार्गदर्शन के अनुसार करना उचित है।

इस प्रकार इस सृष्टि में उपरोक्त आसनों तथा विधि मन्त्र तन्त्र पूजा कर्मकाण्ड द्वारा कोई भूत, प्रेत, श्मशान को वश करना चाहते ह

तो कोई नर-नारी, राजा प्रजा आदि को वश में करना चाहते हैं, तो कोई देवी देवताओं, यक्ष किन्नर को वश में करना चाहते हैं, तो कोई तांत्रिक -मांत्रिक, साधु सन्तों, सिद्ध पुरुषों को वश में करना चाहते हैं, तो कोई सभी प्रकार की सिद्धियों को वश में करना चाहते हैं। बस इसी में जीवन व्यर्थ व्यतीत होता है। अन्त में कुछ नहीं।

इसलिये व्यक्ति इन सभी आशा, आकांक्षा एवं इच्छाओं को त्यागकर परमात्मा, परमतत्व उस विधाता में विलीन होकर मुक्ति को प्राप्त होना चाहिये। तंत्र-मंत्र-घोर-अघोर-योग-ज्ञान जो भी साधनायें करनी हो तो मोक्ष मुक्ति की ही इच्छा से करना चाहिये।

यह योगमाया कर्मकाण्ड का मूल अर्थ, मूल सिद्धान्त केवल मुक्ति है, मोक्ष है, एक स्वतन्त्र अस्तित्व है। एकरुप होना है। जहां से आये हैं वहीं जाना है बस यही साधना करनी चाहिये।

(ख) खीरे (अंगार) प्रकाश बनाने की विधि

साहित्य :- लकड़ी, अग्नि पात्र (तसला, कटोरा या ताम्र पात्र), कण्डे (गोसा या गोबरी या उपला)।

विधि :- योगमाया पूजन कक्ष के नजदीक जहाँ धुआँ बाहर चला जाये ऐसे स्थान पर एक अग्नि पात्र, (तसला हो, कटोरा हो या ताम्रपात्र हो) इसमें सूखी लकड़ी, एकाध गौ गोबर का कण्डा (गोसा या गोबर या उपला) अग्नि से प्रज्वलित करके रखें। यह क्रिया शाम को सूर्यास्त के पश्चात् करें। पूजन कर्म समय तक बढ़िया अंगार (खीरे) बनकर तैयार होना आवश्यक है।

उपरोक्त विधि करते समय निम्न मन्त्र का प्रयोग करें। अर्थात् खीरे (अंगार) चेतन करते समय।

खीरे का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ बनखण्ड़ी लकड़ी तनू तन की चाह। तन का सार काढया भाह रवि मुख सूखा अग्नि मुख जरीया। सो खीरे देव दरबार में चढया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इसप्रकार से योगमाया पूजन (शंखढाल) की सम्पूर्ण तैयारी अर्थात् प्रातःविधि, जप, सामग्री जुटाना, सुरक्षा विधि, ज्योतियाँ, पुतले, बालासुन्दरी चौक, कैलाश, भण्डार (भोग), आसन, खीरे इत्यादि तैयारी होने के पश्चात् शाम को सूर्यास्त के बाद सभी उपदेशी योगेश्वर तथा पीर जी या उत्तराधिकारी संध्या स्नान पूर्व वर्णित विधि से करके या निम्न मन्त्र से पायल (हाथ, पैर मुखादि पंच स्नान) करें और सुर्चिभूत होकर आयें।

पंचस्नान जल गायत्री मन्त्र बोलकर करें। या पायल मन्त्र कहकर करें।

पायल मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। तोय तलायी तोय तार। पलट काया कंचन सार। तोय पायल धोय पसार। सत्गुरु हुकम करे फरमान। योग मायी चरण शीश नमाय। गत गंगा गुरु ज्ञान। अन्दर बाहर जल समान। मन्त्र पढ़ पायल करे सो अवधू अमरापुर जावे। बिना मन्त्र पायल करे पडे पिण्ड नरक में जाये। इतना पायल मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

[**विशेषः**- इस मन्त्र से स्नान या हाथ पैर धोने से शुद्धता, निर्मलता आती है। अतः कोई भी धार्मिक विधि करने के पूर्व यह विधि करें।]

पायल करने के पश्चात् सभी उपदेशी योगेश्वर अन्दर कक्ष में एकत्रित होते है। यहां सभी के एक संग मत से ७-८ पदों का चुनाव होता है। अत: निम्न प्रकार शंखढाल क्रिया के मानधारियों का चुनाव होता है।

(ग) मानधारियों का चुनाव

मानधारी - पीरजी, जोगनी, साखियाँ, वीर मानधारी, अनन्तगादी, भण्डारी, टैलुवा, कोतवाल, परवाना आदि चुनाव के पद होते हैं।

(१) पीरजी तथा साखियाँ - वही उपदेशी योगेश्वर को चुना जाता है जो कि जिस पंथ की शंखढाल होती है उसी पंथ का पीर तथा साखियाँ चुना जाता है।

(२) जोगनी - जोगनी का चुनाव केवल आई पंथ के योगेश्वर को होता है।

(३) वीरमानधारी - कपलानी पंथ के योगेश्वर को चुना जाता है।

(४) अनन्तगादी - यह मानधारी नटेश्वरी पंथ के योगेश्वर को चुना जाता है।

(५) भण्डारी - यह मानधारी भर्तृहरि बैराग पंथ के योगेश्वर को चुना जाता है।

(६) टैलुवा - यह मानधारी सतनाथ ब्रह्मा पंथ के होते हैं। अगर सतनाथी योगेश्वर नहीं मिले तो बाकी किसी भी पंथ के टैलुवा बना सकते हैं।

(७) कोतवाल या परवाना- यह मानधारी किसी भी पंथ के चुने जाते हैं। वैसे टैलुवा और कोतवाल दोनों एक ही पद है।

विशेष :- यहां आसन या मानधारियों की गादी गिनती में सात हैं, किन्तु टैलुवा तथा कोतवाल या परवाना यह एक ही मानधारी के तीन

नाम है तथा कार्य या कर्म भी एक है। एक यह चलता फिरता मानधारी तथा आसन होता है किन्तु आवश्यकतानुसार टैलुवा, कोतवाल अलग-अलग चुनाव करते हैं और उनकी गद्दी (आसन) लगाई जाती है। वैसे कर्मकाण्ड विधान में एक टैलुवा रखें या टैलुवा और कोतवाल अलग अलग भी रख सकते हैं कर्म करने में सहायता हो जाती है तथा यह उपदेशी योगेश्वर उपलब्धि पर निर्भर है।

इस प्रकार से हमारे नाथ सिद्ध सम्प्रदाय में नाथ परम्परा की मर्यादा अनुसार नाथों के बारह पंथों में कार्य तथा कर्म अधिकार सभी को पहिले से ही सुपुर्द किये हुये हैं। यहाँ पूर्व कालीन अर्थात् मत्स्येन्द्रनाथजी के समय से मर्यादा लागू की है। नाथ सिद्धों के कोई भी साम्प्रदायिक, धार्मिक कार्यक्रम हों उनमें चुनाव होना आवश्यक होता है। जिसमें सभी पंथानुसार कर्म बाँटे जाते हैं। जिससे कार्यक्रम में सुनिश्चितता एवं सुचारुबद्धता होते हुये सभी कार्य सहज, सरल और व्यवस्थित होते हैं तथा बारह पंथ के सभी योगेश्वरों को प्रत्येक कार्य में सेवा का मौका मिलता है, अवसर मिलता है और इन कारणों से उन्हें मान-सम्मान भी प्राप्त होते हैं।

जैसे योगी महासभा के चुनाव, जमात रम्मत करने वालों के चुनाव, प्रत्येक कुम्भ पर्व में पात्र देवता के चुनाव, झुण्डियों के चुनाव आदि धार्मिक कार्यानुसार चुनाव होते हैं और कर्म भी बढ़िया होते हैं।

(घ) कुछ नियम

(१) दर्शित नियम के अनुसार ही योग्य दिशा को योग्य आसन लगाना अनिवार्य है।

(२) आसन रात भर बैठना होता है इस लिये नरम आरामदायक आसन लगाना चाहिए।

(३) (खीरे) अंगार योग्य समय अनुसार बनाना चाहिये।

(४) स्नान करना या पायल करना सभी के लिये यह सुर्चिभूत होना आवश्यक है।

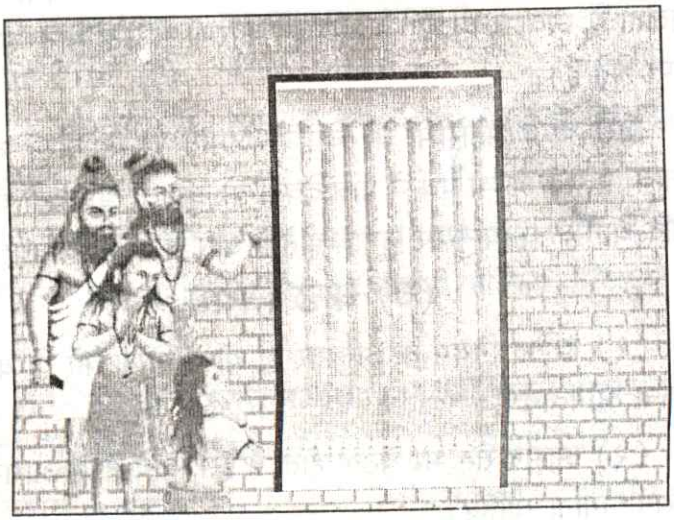
(५) मानधारी चुनाव उत्तराधिकारी या पीरजी के निर्देशन अनुसार होना चाहिये।

(६) सभी ने चुनाव को तथा दिये हुये कार्य को स्वीकार एवं मान्यता करना चाहिये।

(७) कर्मकाण्ड में सुनिश्चितता, नियम एवं सभी का मान सम्मान सहयोगार्थ सर्व सम्मानित होना चाहिए।

(८) यह पूर्व तैयारी शाम तक करके पायल तथा चुनाव एवं प्रवेश सूर्यास्त के पश्चात् होना आवश्यक है।

(९) शंखढाल कर्म के सभी मंत्र उच्चारण पीर जी ही कर सकते है तथा चुने हुए सभी मानधारी भी अपने-अपने मंत्र उच्चारण कर सकते है क्योंकि मानधारी को भी अपने पदानुसार मंत्र क्रियायें है।



मुख्य प्रवेश द्वार तथा लाल वस्त्र का परदा

तृतीय रहस्य
(रात्रि का कर्म)
(१०) मुख्य प्रवेश

इस प्रकार हमारे नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के १२ पंथ के अनुसार शंखढाल क्रिया के पदाधिकारी या मानधारियों का चुनाव होने के पश्चात् शंखढाल कर्म को प्रारंभ करते है।

अथ रात्रौ कर्म प्रारम्भ

अर्थात् यहां से सूर्यास्त के बाद रात्री का कर्म प्रारम्भ होता है।

अत: उत्तराधिकारी सभी चुने हुये मानधारियों को उनके हाथ में आखा (चावल या अक्षत) रखते हुये उनके पद की जानकारी उन्हें दी जाती है। इस प्रकार सभी आखा को लेकर निम्न मन्त्र कहते हुये आखा (अक्षत) को अपने वस्त्र अर्थात् साफा हो या पर्णा हो उसके कोने में आखा रखते हुये गांठ मारते हैं। अर्थात् अपना पद-मान को वह स्वीकार करते हैं।

आखा की गांठ मारते समय आखा का निम्न मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

आखा मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आखा लेलु आखा छोङू शीश नमाऊ मात। पांच महेश्वर आज्ञा करें तो जुग जुग लागु पाव। मैं बलिहारी आपका आखा लेलों आनन्दी माय। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

(क) मानधारियों का प्रवेश

अत: सभी मानधारी तथा अन्य उपदेशी योगेश्वर (उपलब्ध हो तो)

सभी बाहर आते है। मुख्य द्वार में लाल वस्त्र का परदा लगाया जाता है। परदे के पास खड़े होकर सभी परदा खोलने का मन्त्र बोलते हैं।

आसन मन्दर में जाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। (प्रार्थना) - ॐ रुपे का देवडा सोने सू जडीया किवाड़ साधू आया आस कर खोलो धर्म द्वार।। ओं अवधू किसका बीज किसका तुखम् कौन प्रसादे मांग्या हुक्म। ॐ गुरुजी अवधू शिव का बीर्ज शक्ति का तुखम गुरु प्रसादे मांग्या हुक्म।। कौन तुम्हारी देवी बोलिये, कौन तुम्हारी माई, कौन तुम्हारे पिता बोलिये कौन ते युक्ति कमाई।। त्रिकुटि हमारी देवी बोलिये जोत हमारी माई-अलष हमारा पिता बोलिये जिसने युक्ति कमाई।। सूरत के बान्धे हम चले, साथ लिया न कोय पीठे पग न मोडिये-करता करे सो होय, पग पग गणपति वसे हृदये देव महेश-मस्तक मै कालका वसै रक्षा करे गणेश, कौन दिशा से अवधु आया, कौन तुम्हारा नाम, कौन तुम्हारी बहिन भानजी कहा रखोगे पाव, उत्तर दिशा से आया अवधू संत हमारा नाम धर्ती हमारी बहिन भानजी, कंटक के सिर पांव बाला को नमस्कार। कौन तुम्हारी माता कहिये कौन तुम्हारा पिता, अलख पुरुष का भेजा आया। किससे करोगें दो बात, सत् हमारी माता बोलिये धर्म हमारा पिता, अलष पुरुष का भेजा आया। सिद्धों से करेंगे बात। कौन तुम्हारी उत्पति कहिये, कौन तिहारी डाली, कौन पुरुष की सेवा कीनी, किस ने दी सत की बानी। अलिल हमारी उत्पत्ति कहिये, पवन हमारी डाली, अलष पुरुष की सेवा किनी, सतगुरु ने दी सत की बानी, कौन तिहारी बाड़ी रोवै, कौन लाय नीर, कौन तिहारी जोत जगावे, कौन तिहारा पीर। शिव हमारी बाड़ी रोपे, शक्ति लाय नीर, गोरक्षबाला हमारी जोत जगावे,

गुरुगोरक्ष हमारे पीर, कौन तिहारे आगे चले कौन तिहारे पीछे, कौन तिहारे ऊपर चले, कौन तिहारे नीचे, धर्म हमारे आगे चले, सन्तोष हमारे पीछे, सत्य हमारे ऊपर चले कर्म हमारे नीचे, कौन तुम्हारा योगी बोलिये कौन तुम्हारी माया, कौन तुम्हारी धूप बोलिये कौन तुम्हारी छाया, सन्तोष हमारा योगी बोलिये खोज हमारी माया, पुरुषार्थ हमारी धूप बोलिये क्षमा हमारी छाया।

ऊँचा मन्दर लाल द्वारी। जिस पर बैठे आद कुवारी परदे आऊ परदे जाऊ परदे करु कमाई, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो परदा खोलो आनन्दी माई। इति मन्त्र अनन्त कोट सिद्ध में बैठकर गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा था। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[विशेषः- साधना पूर्व उपरोक्त मन्त्र गौ घृत का दीपक लगाकर पाठ करें। तद्उपरान्त गुरु मन्त्र या इष्ट मन्त्र का जाप करें। दर्शन एवं साक्षात्कार होगा।]

कोतवाल या परवाना की द्वार पर ही नियुक्ति होती है। अतः परवाना परदा खोलता है। इस समय टैलुवा एक एक मानधारियों को अन्दर ले जाता है और उनके आसन के ऊपर विराजमान करता है।

प्रथम पीरजी के कन्धों पर टैलुवा गिरेवान (एक पर्णा) रखता है और हाथ पकड़कर अन्दर ले जाते है। यहाँ टैलुवा पीरजी के साथ सभी मानधारियों के कन्धों पर गिरेवान (पर्णा) रखने का भावार्थ यह है कि इस कर्म विधान में हर किसी को मान सम्मान दिया जाता है। इस वक्त टैलुवा सूचनार्थ निम्न जाप बोलते हैं।

अथ जागृत विधान

ॐ गुरुजी ॐ देव द्वारै जावण संग ना लिजै कोय। पाछे पाव ना मोड़िये सतगुरु करे सो होये। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस मन्त्रोच्चार के बाद एक एक करके सभी मानधारियों को तथा उत्तराधिकारी को कन्धों पर गिरेवान देकर अन्दर ले जाता है। अन्दर सभी मानधारी आने के बाद अपने अपने आसन पर खड़े होते हैं। अत: पीर जी आसन विधान का मन्त्र बोलते हैं और सभी मानधारी आसन ग्रहण करते है। अर्थात बैठ जाते हैं।

अथ आसन विधान (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं नमो आदेश आसन मार सिंहासन बैठो, बैठो गुरु की छाया, पांच महेश्वर आज्ञा करते तो शब्द गुरासे पाया थिर कर आसन स्थित कर ध्यान सत् सत् श्री शम्भुजति गुरु गोरक्षनाथजी बैठे गादी परवान गादी ब्रह्मा गादी इन्द्र गादी बैठे गुरु गोविन्द आवो बाल गोपाल तुम लागो पाव तब तुम पूजो, ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा की कूंची महादेव का ताला नरसिंह वीर भैरव रखवाला। इति गादी मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**विशेष:**- यह आसन विधान मन्त्र आसन सिद्ध करने में, अनुष्ठान सिद्ध (पूर्णता) करने में तथा कार्य सफलता में अनुभव सिद्ध है। आसन पर नारियल रखकर यह मन्त्र बोले और उपरोक्त मन्त्र का ४१ दिन रोज २१ बार जाप करने पर मन्त्र सिद्ध होकर आसन सिद्ध होता है।]

सभी आसन ग्रहण कर बैठते हैं। अत: टैलुवा सभी को मन्त्र बोलते हुये एक एक नारियल उनके आसन ऊपर रखता है।

प्रथम पीरजी के आसन पर नारियल [नारियल को मौली बांधे] रखते हुये निम्न मन्त्र बोलता है।

पीर आसन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। मन मारु मैदा करु करु चकनाचूर पांच महेश्वर आज्ञा करे तो बैठू आसनपूर।

श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: निम्न योगनी आसन मन्त्र बोलते हुये नारियल आसन पर रखते हैं, पीरजी मन्त्र बोलते हैं, टैलुवा आसन पर नारियल रखते हैं।

अथ: योगणी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं उत्तर दिशा से जोगण आई आद कुवारी का उपदेश, चौक पूरे जोगणी रक्षा करे गणेश, ऐ जोगण जुगत की जागो, चार जुग की पूजा एक जुग में आने आसन बैठे होमे काया सो जोगण प्रत्यक्ष महामाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: निम्न मन्त्र पीरजी पढ़ते हैं और टैलुवा साखियाँ के आसन पर नारियल रखते हैं।

अथ: साखियाँ मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ ब्रह्मा आय ब्रह्म से धर्म ले आये साथ। पाच महेश्वर आज्ञा करें तो बैठा गुरु विचार के पास। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: निम्न मन्त्र पीर जी पढ़ते हैं टैलुवा वीर गादी पर नारियल रखते हैं।

अथ: वीर आसन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ चौथी पूजा असंख्य जुग करे सत्य धर्म ले हृदय धरे तले धर्ती ऊपर आकाश। पांच महेश्वर आज्ञा करते तो वीर बैठे माई जोगण के पास। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी निम्न भण्डारी गादी मन्त्र बोलते हैं और टैलुवा

भण्डारी गादी के ऊपर नारियल रखते हैं।

अथः भण्डारी गादी (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं आद का योगी जुगत की माया सत का जोगी बजर की काया काल नाग से फूल हे धर्ती अनन्दी तेरा नाऊ ऋद्ध सिद्ध पुगाऊ आसन दे बैसन दे ऋद्ध दे सिद्ध दे थांउ दे सिद्ध हमको ऋद्ध दे भरे भण्डार तन्नो धरर्ती प्रचोदयात। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार पीरजी निम्न प्रकार अनन्त गादी का मन्त्र उच्चार करते हैं और टैलुवा आसन पर नारियल रखता है।

अथ अनन्त गादी (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गुरुजी छठी गद्दी कौन दिशा की बोलिये। छठी गद्दी पाताल लोक की बोलिये पाताल लोक का कौन राजा कौन घोड़ा कौन असवार, पाताल लोक का नीला घोड़ा, श्री बासुकी राजा अस्वार में तुझे बुझू बासक राजाजी यह लो कुंजी ताला खोलो देवपूरी दर्बार कलश थापता कीजिये। पाठ माण्डता कीजिये नौ कोटी ग्रह भान तप्ता कीजिये। जुमला जागता कीजिये, चट पट चढ़ दीदार साई को सलाम गुरु को प्रणाम जोत को जुहारी गत गंगा को हर नाम। श्रीनाथ जी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अतः पीरजी निम्न आसन मन्त्र बोलते हैं और टैलुवा बाकी सभी टैलुवा के, कोतवाल के (चौक के सन्मुख में और कैलाश के सन्मुख में) ऐसे सभी आसनों पर नारियल रख देते हैं।

आसन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आसन पूर सिंहासन पूर, पूर कंचन काया। त्याग वैराग्य सत्गुरा वचन भगवति के शरण में आया। ॐ मन मारु मैदा करु करु चकनाचुर पांच महेश्वर आज्ञा तो बैठू आसन पूर। इता आसन मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- शक्ति साधना सिद्धि-चमत्कार, साक्षात्कार प्राप्ति के लिये जप-ध्यान-साधना करने से पूर्व आसन ग्रहण करते समय नारियल (गीला) लेकर इस मन्त्र का ७ बार जाप कर आसन ग्रहण करें।]

वैसे यह आसन चलते फिरते रहने के कारण आसनों पर नारियल स्थापित करना आवश्यक है। जिससे अगर योगेश्वर नारियल रखकर उठ जाये या आसन छोड़ा तो भी आसन नारियल होने के कारण खाली (रिक्त) नहीं होता।

इसी प्रकार अगर किसी कारण वश शंखढाल क्रिया में योगेश्वर सभी गद्दी (आसन) के लिये अपूर्ण हो तो खाली आसनों पर उन्हीं पद के (नाम से) नारियल को रखते हुये माई के करम को चलाया जाता है।

सूचना :- नाथ सिद्धों के किसी धार्मिक कार्य अनुष्ठान यज्ञ मन्त्रजाप ध्यान आदि के लिये आसन ग्रहण करने के पश्चात् अगर किसी कार्यवश आसन पर से उठना पड़ता हो तो खाली आसन कभी न रखें, विपरीत चीजें आसन को तुरन्त कब्जा कर ले सकती हैं। इसलिये उस आसन पर नारियल रखना आवश्यक है। ज्यादा समय आसन न छोड़ें (एकाधबार)

(ख) खिरे (अंगार) प्रकाश विधि

अतः आसन विधि के पश्चात् पीरजी हुक्म करते है। "ज्योत चेताने

के लिए खीरे ले आव अर्थात् अंगार ले आवो" अत: टैलुवा पूर्व वर्णित तसले में तैयार किया हुआ खीरे पात्र अर्थात् (अंगार पात्र) लेकर आता है और इस खीरे (अग्नि) पात्र को स्पर्श करते हुये निम्न मन्त्र बोलता है।

खीरिया पवित्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ खिरे पवित्री कहासे आयी, किसने लायी। खिरे पवित्री क्षीर, से आयी शक्ति भवानी ने लायी। खीरिया का चक्र पूर ले आयी, तीस पर सिद्धों ने ज्योत जगाई, तब प्रसन्न भयी आदि शक्ति आनन्दीमाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: टैलुवा खीरिया के अर्थात् अंगार के ऊपर घृत पूरता है। जैसे हवन या आहुति सा करता है और अग्नि को प्रज्वलित करता रहता है और इसी समय पीरजी निम्न खिरे अंगार प्रकाश मन्त्र जाप ऊँची आवाज में पाठ करते हैं।

खिरे (अंगार) प्रकाश मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सप्त पाताल से शक्ति आयी। नाभ कमल पर फूल ले आयी। अलख पुरुष तेरी दुहाई। अगम पंथ में अलख लखायी। निगम पंथ में अग्नि प्रजाली, घृत पूरे अन्न पूरे पूरे पूरण महादेव जिव्या ज्वालाई भये परसन्न विरला जाने खीरन्त भेव। कौन बाला जपे जाप कौन भरे धर्म की साख। सुन्दरी बाला जपे जाप। गोरख भरे धर्म की साख। अलख लखायी अलख जाप, पाप पून से न्यारा आप। देवी हिंगुला नानी बिबी, अलख पुरुष ने कौली दिनी जलो ज्वाला खण्ड खण्ड, तृप्तन्ते खीरे माई अखण्ड। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार मन्त्रोच्चार से खीरे (अंगार) को प्रज्वलित करते हैं या तो निम्न हिंगोल मन्त्र जाप का पाठ करते हुये अग्नि प्रज्वलित करते हैं।

हिंगोल मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सिद्धो पहला नाम ध्रपदा दूजा नाम मादका तीजा नाम जन्माष्टमी। चौथा नाम वसुन्धरा। पांचवा नाम पंचकर्ता। छटा नाम ब्रह्मचण्डी। सातवा नाम शिव कुमारी। आठवा नाम अष्टभुजा। नौवा नाम नौ करोड दुर्गा दसवा नाम सिंहरुप भवानी। इतिक द्वादश पढन्ते सो बाला गोरक्ष जती अगल पत्त हिंगलाज देवीं सुर नर मुनि जोगेश्वर ध्यावे। छप्पन करोड़ घोल मंगल चामुण्डा गावे। ब्रह्मा पुरे वेद, इन्द्र आरती उतारे मेघमाला पानी भर लावे औघड़ जोगी नौ ग्रह करे। एकोत्तर सौ क्रिया ले धरे। भवन भवन ते मौरी माय, तीन भवन सेवा करे। भल आये भल आयसी। भाग प्राप्त पायसी कुण्डी हर कुण्ड कपाट। सुराहन्दा पुरसिया सुराहन्दा काम। चलो समुन्द्र तीर्थों जाप जपे मात हिंगलाज। हः हः करनी जैह जरनी, धूपक ध्यानक मंजक पूजा। मनकी मनसा देवी, जालफा पूरे। लालो जसो दोनों अगबानी। भूखा भोजन, प्यासा पानी। जंगल जंगल आवा दानी। सिंह रुप में कैलाश पर्वत धिरानी। तू भय जागे तू भय सोवे, तू भये जल रुपा न धोवे। काश्मीर में कैलास नगर कोट ज्वाला। डाकनी, शाकनी, मारनी, तारणी, देव-दानव, तत्व माता एक दुर्गा दूसरी विधाता वेगर वेगर को ध्याऊ आद भवानी दुर्गा को ध्याऊ। दुर्गा माता हो प्रचण्ड। मावस ऊपर पडवा ढले। असंख्य भुजा देव को चढ़े। मुनि मन मेखला किया। नाद सिगी मिल भीम को दिया। गर्जी देवी असुर संहारा बंकासुर का किया संहारा। पांच पांडवा चण्डी ध्याई, नव बल वीरा सवा

पर्वत में नाथ कबीरा। जहां बैठा राम लखन दो भाई। जालत जालत जले पियाला जलो बमें राजा रावण ने मारा। उठो सहोदरो मिल गावो गीता। जलो बमें राजा राम जीता। मारा खप्पा जीता म है। देव गणेश की भेट मनावा। सो भल विद्या पहली पावा, जा घर चण्डी पाती सारा। जा घर मण्डिया तुरी तपारा। जै चण्डी की सुमिरन करे। बला जोगी नागा भूगा कदेन रहै। चण्डी है तू चरपट नारी। ताते लोह धडे लुहारी। मै जानू देवी मर्म तुम्हारा। उत्तर खण्डे से चण्डी आई। हाथा कंगन पगा नैवर। हाथ त्रिशुल है, है करनी। जैहः जरनी मरे मुशाना रक्षा करनी घाटे वाटे रक्षा करनी। बाल बच्चे प्रतिपाल करनी। घाटे बाटे अविचल जागे। नगर कोट माहामाई। गोरक्षवटी गोरक्ष जागै। टीले बालक नाई। ओरनी साधा के आई। मातलोक को सक्खो पर्वत माय छिपाई। हेरी शंकर नाथ द्वादश बाहर पाई। बन खण्ड की ज्योत में शून्य के तीर में। हिंगलाज से उतारे। तीस भान तीस भाई। कहो सिद्धों हिंगलाज कहां रहती है। कहां हिंगलाज का वास है। कैसे हिंगलाज का वरण है? गगन मण्डल हिंगलाज रहती है शून्य मण्डल में वास है। हिरया हिंगलाज का वरण है। अनभया सिर बाजे वीणा। जौ परमाण देवरा। तिल परमान किवाड। हृदय में जाप जपो। इनविधि हिंगोल जप सम्पूर्ण भया। अनन्त करोड सिद्धों में गादी बैठ गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भावार्थ :- खीरे प्रकाश अर्थात् अग्नि प्रगट करना। यह नाथ सिद्धों का अभिन्न अंग है, जो कि अग्नि अर्थात् धूना को प्रधान, चेतन दैवत मानते हैं। यह नाथ सिद्धों की शक्ति है। साधना है, तपस्या (तपाना) है, एवं कर्मकाण्ड भी है। नाथ सिद्धों के जितने भी कर्मकाण्ड हो, तन्त्र-मन्त्र साधनायें हों, सिद्धियाँ हों, तपोबल हो, जो भी हो वह

बिना अग्नि (धूना) कर्म अर्थात् चेतनता के बिना अधूरा माना जाता है।

वेद एवं सनातन हिन्दू धर्म, नाथ सिद्ध, साधु सन्त जन इस अग्नि तत्व को अग्निका माता, ज्वालाई ज्वालाम्बा को या अग्नि देव को अत्यन्त शुद्ध, पवित्र, चैतन्य रुप में मानते हैं। जैसे सूर्य और प्रकाश अभिन्न है वैसे ही अग्नि में भस्म करके शुद्ध या पवित्र होना भी अभिन्न है। शिव पुराण के अनुसार पूर्व काल सृष्टि उत्पत्ति के पहले श्री ॐकार आदिनाथजी ने एक ऐसा अग्नि स्तम्भ निर्माण किया था कि उसका आदि अन्त का कोई ठौर नहीं पाते थे। तद्पश्चात वहां सृष्टि का उत्पादन हुआ अत: यह अग्नि सृष्टि के प्रति साक्ष्यभाव है। जो उत्पत्ति स्थिति और संहार को यथा योग्य एवं पवित्र कार्य करता है। अत: इस योगमाया कर्मकाण्ड में इस अग्नि अंगार या खीरे की आराधना को ॐ स्वरुप को आदिनाथजी का स्वरुप मानते हैं जो कि इस योगमाया कर्मकाण्ड में शुद्ध चैतन्य एवं अखण्ड पवित्र तथा शिव माने कल्याण रुप में कार्य सम्पन्न हो जाता है।

अग्नि-रक्षक-कवच-ध्यर्य रुप का स्वरुप मानते हैं। नाथ सिद्ध उत्पत्ति स्थिती संहार तथा सात्विक राजस तामस शक्ति रुप में पूजते हैं, आराधना करते हैं, उपासना करते हैं।

नाथ सिद्धों की परम्परा है कि मठ मन्दिरों में अपने इष्ट की आरती पूजा हो, यज्ञ हवन हो, जो भी पूजन तथा साधनाओं में ज्योतियाँ चेतन करना हो या धूप उद गुग्गल चेतन करना हो या शक्ति साधनाओं में अग्नि प्रज्वलित कर अंगार बनाना हो, इन सबके लिये वह अपने इष्ट मन्त्र या गुरु मन्त्र द्वारा नाम मात्र हवन कर अग्नि उत्पन्न करते हैं और उसी अग्नि के अंगार से उपरोक्त जोतियाँ, धूप (अलग) धूना आदि चेतन करते हैं। पूर्व काल में हमारे नाथ सिद्ध महात्मा केवल मन्त्रों द्वारा तथा दो काष्ट घीसकर अग्नि प्रकट करते थे। यह विशेषत:

आज भी गुप्त रुप में प्रयोग में लाते हैं ऐसी तन्त्र विधियाँ गुरुमुख या गुरु सानिध्य में ही सिद्ध हो जाती हैं।

[**विशेषः**- इस हिंगोल मन्त्र का पाठ अग्नि सन्मुख करके घृत-पायस -बिल्व पत्र से हवन करने पर घर में सुख शान्ति और पुष्टि होगी, अनिष्ट, अरिष्ट, दुष्ट, मुष्ट संकट टल जायेंगे।]

अतः इस चर्तुयुग योगमाया पूजन कर्मकाण्ड में अर्थात् ज्योतियाँ पूजन में मुख्यतः आदिमाया-महामाया-बालासुन्दरी की अखण्ड ज्योत, कैलाश की चारजुग ज्योत, गत गंगा ज्योत, गणेश भण्डार आदि ज्योतियों को चेतन करने हेतु यह अग्नि अर्थात् खीरे प्रकाश मन्त्रोच्चार से चेतन करके लाया जाता है। जोकि इस पुण्य कर्म में पवित्रता कल्याण तथा साक्षी भाव से कार्य सम्पन्न हों।

(ग) कुछ नियम

(१) योगमाया पूजन कक्ष में उपदेशी योगेश्वर हो, पीर, जोगणी, वीर साखियाँ आदि मानधारी जो भी हो वह प्रवेश करने से पहले अपने किसी भी धातु की चीज लेकर अन्दर नहीं आ सकते। जैसे घड़ी, अंगूठियाँ, चाबियाँ, लॉकेट, कड़ा इत्यादि यह चीजे निकाल कर ही अन्दर आना अनिवार्य है।

(२) आखा लेते देते समय अनादर नहीं करो वह सम्मान का प्रतीक है।

(३) नारियल आसन पर बैठते समय अलग रखें तथा उठते समय आसन पर (मध्य में) अवश्य रखें।

(४) कर्मकाण्ड में चेतनता बनाये रखें।

(११) अथ् कर्म

इस प्रकार पाठ पढ़ने के बाद अत: योगमाया कर्म शुरु होता है। यहां सभी मन्त्र बोलना अथवा सभी कर्म करवाना उत्तराधिकारी का ही विशेष कार्य होता है। किन्तु यह कार्य सब विधि जानकार और उन्हें चुने हुये पीरजी भी कर सकते हैं। सभी मन्त्र ऊँची आवाज में बोलना चाहिए।

अत: कर्म शुरु होता है पीरजी सभी चुने हुये मानधारियों को जाग्रत एवं चेतन करने के लिये अर्थात् सावधान होने के लिये निम्न अथ: कर्म मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

अथ: कर्म मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गादी पीर, माई जोगिन, साखियाँ वीर भण्डारी अनन्त गत गंगा को जोत का हुकम्। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते है **"टैलुवा खीरे प्रज्वलित करो"**, अर्थात् अंगार (तेज) चेतन करो। इस वक्त टैलुवा निम्न मन्त्र से खीरे (अंगार को) अग्नि द्वारा प्रज्वलित (तेज, चेतन) करता है।

गत गंगा जोत प्रकाश (खीरे)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अन्नपूरे अन्नपूरी तत पूरी गणेश। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो जोत जगाय महेश। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भावार्थ :- गत गंगा का अर्थ यह है कि जिस प्रकार गत अर्थात् (जाने वाली) गती प्राप्त हुयी गंगा, सागर में मिलकर सागरमय होती है उसी प्रकार यह जीव यह आत्मा की गती शिव कैलाश धाम में जाते हुये मिलकर शिवमय या मुक्त हो जाये अर्थात् यहां गत गंगा जोत, गत

गंगा प्रकाश, गत गंगा में हरनाम, गत गंगा में जायके, आदि का अर्थ यही है कि जीव का या आत्मा का मुक्ति मार्ग, मुक्ति पथ और उसकी तन्त्र मन्त्र द्वारा जीव में शिव या आत्म का परमात्मा में मिलन या कैलाश शिवलोक में विलीन हो जाना ही चेतनता होती है।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं। **जोगनी साखियाँ ले आवो और उसे चेतन करो।** तब जोगनी पूर्व वर्णित तैयार की हुयी दोनों साखियाँ (छोटी मशाल) दोनो हाथों में एक साथ बराबर उठाते हैं और घृत में डुबोकर उपरोक्त खीरे में (अग्नि में) लगाकर चेतन (प्रज्वलित) करते हैं। [चित्र क्र० ५ (अ) देखें।]

भावार्थ :- साखियाँ का अर्थ एक प्रकार की मशाल से अग्नि तत्व को जाग्रत करने का है यहां योगमाया कर्म में सभी जोतियाँ चेतन करने के लिये इस साखियाँ को चेतन करते हैं फिर साखियाँ से सभी जोतियाँ चेतन होती हैं अर्थात् एक चेतन दूसरे को चेतन करता है।

इस प्रकार साखियाँ खीरे से चेतन करते हुये जोगनी निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

साखियाँ पवित्री प्रकाश

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कहो सिद्धो यह साखियाँ कहासे आई। गिरी कैलाश लोक से आई, कौन लाई। सती गौरा पार्वती ने लाई। खिरयाँ का चक्र-पूर कर ले आई, प्रसन्न भयी, आदि शक्ति महामाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: सभी ज्योत चेतन प्रकाश करने का शुभ-प्रारम्भ श्री गणेश अर्थात् गणेश जोत चेतन करके होता है। ज्योत चेतन (जागृती करना)।

भावार्थ - ज्योतियाँ चेतन करने का अर्थ जिस देवता के नाम

ज्योत बनायी है उस देवी देवताओं को जाग्रत करना, चेतन करना, ज्योति स्वरुप में उन देवी देवताओं का अनुष्ठान करना, ज्योति स्वरुप आत्मा का स्थूल रुप में स्थापना करना आदि। जोत चेतन करना, अखण्ड जोत जगाना, जोत जागरण, जोता वाली, जोती स्वरुपी यह सब आत्मा का ही विस्तार है। हिन्दु धर्म अपितु नाथ सिद्धों के सभी धार्मिक विधि विधान जोत चेतन किये बिना सिद्ध नहीं होते।

(क) ज्योत जागरण (ज्योत चेतना)

अत: जोत चेतनता को प्रमुख प्राधान्य देते हुये इस योगमाया पूजन को जोती-पूजन भी कहा जाता है।

(ख) गणेश ज्योत जाग्रती (ज्योत चेतना)

अत: कर्म का प्रारम्भ, शुरुआत करते हुये पीरजी हुक्म करते हैं **"गणेश जोत चेताओ"**। तब जोगनी दोनों हाथों में दोनों साखियाँ लेकर और दोनों को मिलाकर खीरे प्रकाश (तसले में के अंगार में से) चेतन कराकर भण्डार स्थान की गणेश जोत को सर्वप्रथम चेतन करते हैं और पीरजी निम्न अथ गणेश गायत्री का पाठ करते हैं।

अथ: गणेश गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सांचा मन्त्र भजन महेश मूल महल में बसे गणेश गुदा चक्र पद्म चक्र कर्लो पाक हृदय परम ज्योत प्रकाश गणपत स्वामी जी सन्मुख रहो हृदय ज्ञान अगम से कहो ॐ सोहं सत्य का शबद, कोई नर योगीश्वर विरला लहे। ऊर्ध्वमुख वेद कहन्ते सर्वकमल में फेर कराओ ईडा पिंगला सुखमना तीनो इक घर ल्याओ। बंक नाड़ बैठ कर आवो झिलमिल झिलमिल जोत जागी झिलमिल जोत झिण्कार बाजा बाजे नाद बिन्द का हुवा मेला तत पिता का हुवा मेला कहे श्री

नाथजी सुनो औघड़पीर त्रिकुटी समाध शिव सुन्न में लगाऊ नाद बिन्द की गांठ कर ब्रह्माण्डि चढ़ जाऊ आत्मा परमात्मा का दर्शन घट भीतर पाऊ हंस परम हंस का दर्शन घट भीतर पाऊ गणेश का मन्त्र सचकर ध्याउ मूल स्थान चतुर्दल पंकड़ी तहा चतुर्दल मंत्र का बासा तहा गणेश देवते का वासा गणेश देवता शक्ति स्वरुप मूसा वाहन गंगा गोदावरी करे स्नान कोई चढ़ावे जान कोई चढावे अनजान जान चढावे मोक्ष मुक्त फल पावे, अनजान चढ़ावे अकार्थ जावे छे हजार जप सुमेर यज्ञ किये का फल तीन हजार जप की पूजा, इतनी गणेश गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धों में श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा। धूप दीप नैवद्य कुसुम सूत्र संधूर तिलक अक्षिद पुष्प फल दक्षिण सहित पूजयामि। अथ मन्त्र ओं गं गणपतये नमः मंत्र दस जपेत् पुनः सर्व स्थाने सूमन दद्यात। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- एक पान सुपारी रखते हुये गौ घृत दीपक जलाये और गणेश गायत्री का २१ बार पाठ ४१ दिन करे यथा पूजन लाल पुष्प, लाल बुन्दी के लड्डू का भोग लगायें। बुद्धि स्मरण शक्ति तेज होगी। गणेश जी का दर्शन होगा।]

(ग) महामाया बाला सुन्दरी जोत जाग्रती

अतः पीरजी हुक्म करते हैं कि **"महामाया की (बालासुन्दरी की) जोत जगावो"**। जोगनी पुनः दोनों साखियों से बालासुन्दरी चौक पाट के मध्य में स्थापित की हुयी बाला सुन्दरी की (गिलास में कमल) मुख्य ज्योत निम्न मन्त्र से चेतन करते हैं। सा . साथ चार कोने के चार गणों के चार कटोरी वाली ज्योत भी चेतन करते हैं। इस वक्त पीर जी निम्न मन्त्र बोलते हैं।



माई के पाट पर
ज्योत चेतना



गणेश ज्योत



कैलाश ज्योत



भण्डार ज्योत

अखण्ड संस्थाप्य महामाया मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ असंख्य युग युगांत योग आद जोग युगाद जोत आवे अविनाशी न हले न चले न डिंगे न डोले न भखे न चखे आप निरन्जन ने कही कहाई कहो सिद्धों जोत कहा से आई गुरु के बचन धर्णा के शब्द से आई आओ सिद्धों भरलो साखी सत सत श्री शंभूजती गुरुगोरक्ष नाथजी ने भाखी। उत्तर दिशा से धुन्धु कारा जोत जगाय किया जै कारा सोहं शब्द ले उतरो पारा अन्नपूर्णा अन्न पूरे तत पूरे गणेश पांच महेश्वर आज्ञा करें तो जोत जगाय महेश जोगी को आदेश, सन्यासी को नमो नारायण जंगम को शिव शरण, ब्रह्मा को नमस्कार सखेड़े को अलख जागे साध को सलाम गत गंगां को हरनाम। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- इस मन्त्र से जोत लगाकर २१ दिन एक घण्टा त्राटक करने पर मन्त्र सिद्ध होगा, जब मन्त्र स्मरण करके सन्मुख व्यक्ति के आँखों में आँखें डालकर बात करे कार्य सिद्ध होगा।]

(घ) चार जुगों जोत जाग्रती

पीरजी हुक्म करते हैं- **"चारों जुगों की ज्योत चेताव"**। जोगनी पूर्ववत दोनों हाथों में दोनों साखियाँ मिलाकर बाला सुन्दरी चौक के चारों कोन की चारों (कटोरी की) ज्योत चेतन करते हैं। जोगनी निम्न मन्त्र से प्रथम सतयुग की ज्योत साखियाँ से चेतन करते हैं। (यहां पीरजी भी मन्त्र बोल सकते हैं।)

सतयुग (गण) ज्योत मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जल बान्धु धर्तरी सत बान्धु आकाश, जहा भया बाला सुन्दरी का प्रकाश हाथ

डण्डा-मारु कण्डा श्वेत घोड़ा श्वेत जिस पर चढ़े अलष निर्वाण। जागी जोत भागी धूत नौ नाथ चौरासो सिद्ध की ओट, जागी जोत भया उजियारा तिसकी रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: जोगनी निम्न मन्त्र से त्रेतायुग (गण) की जोत साखियाँ से चेतन करते हैं।

त्रेतायुग (गण) ज्योत मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जोत जोत महाजोत परम जोत सुन्दरी जोत जागी भ्रान्त भागी। नुर बरसे नाथ का धनुष्य मांडू तिर मांडू जोड पंजा हाथ का। हजरा हुजूर जा फला दूर गुरु को प्रणाम राजा राम को सलाम। साध सन्त को आदेश। जोत पूरे प्रेम से सूरती मिलाय अलख जोत जहाँ खड़ी जाको ध्यान लगाय। अखण्ड जोत को आदेश। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीर जी निम्न मन्त्र बोलते हैं तथा जोगनी द्वापरयुग (गण) की जोत चेतन करते हैं।

द्वापरयुग (गण) ज्योत मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं पश्चिम दिशा से जोगण आयी हात खप्पर जोत जगाई पीर किसन तेरी दुहाई। आवो सिद्धो करो कमाई ध्यान देश में मुक्ति पाई जोत चेते जोत बरसे, बरसो ॐ कार चेते गत गंगा हरनाम श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इसी प्रकार पीरजी मन्त्र बोलते हैं और जोगन कलियुग (गण) की जोत चेतन करते हैं।

कलियुग (गण) की ज्योत मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अकल जोत, सकल जोत, जोत निरन्जन अलख पुरुष का ध्यान, कलयुग में हनुमंत बुलाया। चेतन जोत भयी भरपूर गंतगंगा में हरनाम। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

(ङ) कलश ज्योत जाग्रती

पीरजी हुक्म करते हैं कि **"कलश जोत चेतावो"** अत: जोगण कलश जोत को चेतन करते हैं तथा पीरजी निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

कलश ज्योत मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आटी घाटी बल कपाटी अलष पुरुष बैठे निज पाटी लागी कुंञी खुलिया ताला पिण्ड ब्रह्माण्ड भया उजियाला आवो चंदा बैठो पास हमको कहो धर्म की बात। सूरज बाला करे विचार। धर्ती तपे अपरम्पार उत्तर दिशा में धुंधकार जोत जगाये किया जय जय कार बल बल जाऊ लागु पाऊ जोत भवन में शीश नमाऊ। जोत जागे सिर थान में सूरज कोटी समान। जो सुख गहरा चाहिये तो धर्ये जोती का ध्यान जागी जोत भागी छोत जहां जोत तहा उजियाला तहा बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भावार्थ :- उपरोक्त माई के पाट के चारों जुग के गण वे होते हैं। जो ज्योत चेतन होने पर चेतन हो जाते हैं। यह योग महामाया के गण होने के कारण माई की मायाशक्ति से सम्पन्न रहते हैं [जैसे शक्ति युगानुसार सतयुग में सत् संकल्प शक्ति त्रेतायुग = तंत्रमंत्र-यंत्र-हवन शक्ति द्वापर

= कर्मकाण्ड जैसे कर्ता वैसे भर्ता कलियुग = स्वार्थ, अस्त्र शस्त्र नीति इ० शक्ति] और योगमाया कर्मकाण्ड की सुरक्षा तथा माई की सेवा करते हैं। अर्थात् इन गणों की पूजा अर्चना भोग आदि कर्म किये जाते हैं तथा कलश ज्योत चेतन करने का भावार्थ कलश अनुष्ठान साक्षी भाव से चेतन होने लगता है। कलश विधि भी एक प्रकार प्रधान विधि मानते हैं।

(च) हिंगलाज ज्योत जाग्रती

इस प्रकार बालासुन्दरी पाट के सभी जोत चेतन होने के पश्चात् पीरजी हुक्म करते हैं कि **हिंगलाज माता की जोत चेतावो**। अत: जोगणी दोनों साखियाँ लेकर हिंगलाज माता की ज्योत चेतन करते हैं तथा पीरजी मन्त्र बोलते हैं। (अर्थात् दीवार के स्वास्तिक के नीचे ईंट पर रखी हुई घी की ज्योत को चेतन करते हैं।)

हिंगलाज माता की ज्योत जगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पश्चिम दिशा से जोगण आयी दो कर जोड़ आगे ब्रह्मा विष्णु महेश पीछे देवी देवता तैतीस करोड़, करे सेवा पूजा आरती धूप ध्यान जपो तपो श्री हिंगलाज माया, ओं जुगजुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ। ॐ गुरुजी जुग जुग मध्ये सत्त का दीवड़, सत की तेरी बात सत्त के सिंहासन बैठे गुरु गोरखनाथ। पैल ओंकार जोग ओंकार मोक्ष मुक्ता का तृप्त हो जोगन महामाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धि :-** घी की जोत लगाकर, कलश स्थापना करें। गेन्दा पुष्प चढ़ावें पंचोपचारे पूजन करें। उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार या ठुमरे की माला में जप करें। दीवाली मध्य रात्रि या होली, दशहरा मध्यरात्रि तथा सूर्य, चन्द्र ग्रहणों में, नवरात्रों में जप करें। मनोवांच्छित कामना पूर्ण होगी। नित्य मन्त्र जाप करने

से कार्य सिद्धि, सुख शान्ति को प्राप्त होंगे।]

विशेष :- माता हिंगलाज शक्ति पीठ जो पाकिस्तान में हिंगोस नदी के किनारे लांस बेला स्थान में है। यहाँ ज्योति रुप में चेतन है। हिंगलाज शक्ति का शीश (ब्रह्मरन्ध्र) होने के कारण प्रधान शक्ति मानते हैं। दादा मत्स्येन्द्रनाथ तथा गुरु गोरक्षनाथ जी ने हिंगलाज माता की शक्ति के ऊपर योग शक्ति से विजय पाकर हिंगलाज को वचनबद्ध किया था कि हमारे नाथ सम्प्रदाय के किसी भी शाबर तन्त्र मन्त्र विधि विधान में तुम्हें सहायता करनी होगी अत: हिंगलाज शक्ति सहयोग के लिये उसके नाम से यहाँ ज्योत (मन्त्र द्वारा) चेतन की जाती है।

इसी में वैदिक काल की राजधानी नाथ सिद्ध ऋषि मुनियों की तपोभूमि एवं वास-स्थली रोहड़ी थी इसे रौरुकी भी कहते है। यहां ठट्टा अरोड़ प्रसिद्ध है। इसे जालंधरनाथ जी का सिद्ध पीठ भी कहा गया है। यह नगर ठट्टा नाथ सिद्धों का गढ़ रहा है और यह हिंगुलाम्बा नाम का शक्ति पीठ है। हिंगलाज माता नाथों के प्रति प्रेम भाव रखती है तथा उनका आदर करती थी। गुरु गोरक्षनाथ के दर्शन मेला होने के पश्चात् हम फिर आयेंगे ऐसा कहकर गुरु गोरक्षनाथजी वहाँ से चल दिये। उन्हें खिचड़ी अति प्रिय थी। अत: माता हिंगलाज उनके इन्तजार में रोज खिचड़ी बनाने लगी किन्तु गुरु गोरक्षनाथ जी के न आने पर वह खिचड़ी एक स्थान पर डाल देती थी इसप्रकार बारह साल तक गुरु गोरक्षनाथ जी नहीं आये अत: वहां खिचड़ी का ढेर लग गया। अन्त में जब गोरक्षनाथ जी वहां पहुचे उन्होंने माता हिंगलाज की श्रद्धा प्रेम देखते हुये प्रसन्न होकर खिचड़ी के ढेर को ठुमरों का पहाड़ कर दिया और वरदान दिया कि माता हिंगलाज का दर्शन करके जो ठुमरो की माला पहनेगा वह जीव मुक्त अवधूत योगी के फल को प्राप्त होगा। बच्चों को नर नारी ठुमरे पहनाने से नजर, टोना का प्रभाव नहीं होगा। मोती जैसे

ठुमरे के नाथ सिद्ध योगेश्वर माला बनाकर धारण करते हैं और यह ठुमरे केवल इसी क्षेत्र में पाये जाते हैं।

अत: गुरु गोरक्षनाथजी ने प्रसन्न होकर हिंगलाज माता को भोमलोचन नाम का भैरव शक्ति रुप में भेंट स्वरुप दिया था। तथा यहां पर साधना करने वाले ब्रह्म दर्शन या ब्रह्मशक्ति को तथा कायाकल्प स्वरुप को प्राप्त करेंगें तथा शिवशक्ति का दर्शन होगा ऐसे वरदान भी दिये।

(छ) भैरव ज्योत जाग्रती

तद्पश्चात पीरजी हुक्म करते हैं **"भैरव ज्योत चेताओ"** तब जोगन दीवार के त्रिशूल के नीचे वाले ईंट पर सरसों के तेल की भैरव ज्योत साखियाँ द्वारा चेतन करता है और पीरजी निम्न मन्त्रोच्चार करते हैं।

भैरव ज्योत मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नाथ निरन्जन भैरु देवा। त्रिदेवजी करते सेवा। सप्त समुन्दर सप्त नीर। तहा बैठा भैरु वीर। मढी मसान में लाग्या ध्यान। मन पवन में हंसा ल्याय। पिण्ड ब्रह्माण्ड अन्त वासा अमरापूर में खेले संगा। जुग जुग जागे जोत जागी लख चौरासी भैरु राखी। कानों कुण्डल भगवा भेष अंग बभूती काले केश। खप्पर में खाय मसान में जाय, कौन भैरव की पूजा मेटे, राज मेटे राज पाट से जाय, प्रजा मेटे दूध पूत से जाय, जोगी मेटे ज्ञान ध्यान से जाय बल भख बला भख पापी पाखण्डी को भख जती सती रख ॐ फट् स्वाहा।

[**मन्त्र सिद्धिः-** भैरव मूर्ति को तिल का तेल लेपन करें। सरसों तेल का मिट्टी का दीपक जलावें। पान, नारियल, लौंग, इलायची, लाल पुष्प की माला चढ़ावें और मन्त्र नित्य २१ बार ४१ दिन जपे, मन्त्र सिद्ध होगा सब कार्य सिद्ध होगें। उड़द की दाल के पकोड़े या रोट, काले वस्त्र का भोग लगावें।]

भावार्थ :- यहाँ भैरव की सरसों के तेल की ज्योत भी चेतन करने का आशय है कि भैरो नाथ सिद्धों की विशेष शक्ति है। जिन्हें भैरवनाथ कहते हैं। जो प्रत्यक्ष शिव के जटाओं से उत्पन्न हुये हैं। इन्हें शिव का अवतार भी कहा जाता है तथा गण रुप में भी माना जाता है ये नाथ सिद्धों के सात्विक, राजसी तथा तामसी रुपी शक्ति स्वरुप कार्य करते रहते हैं। कार्यानुसार तथा समय अनुसार उन्हें सरसों के तेल की ज्योत चेतन कर के एवं अन्य विधि से आमंत्रित किया जाता है तथा योगमाया पूजन अनुसार अमृत कुण्डा अर्थात जुगती (भांग) का कुण्डा, केशर चेताकर, भोग लगाया जाता है जो भैरवनाथजी नाथ सिद्धों के घोर अघोर कर्म काण्डों में विशेष कार्य करता है।

(ज) कैलाश ज्योत जाग्रती

अत: पीरजी हुक्म करते हैं- **"कैलास ज्योत चेतावो"** और जोगनी दोनों साखियाँ दोनों हाथ में लेते हुये कैलाश जोत अर्थात चारजुग की ज्योत जो कैलाश के ऊपर स्थापित की है उसे चेतन करते हैं तथा पीरजी निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

कैलास पर जोत जगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ ज्योत सोहं ज्योत-शिव जोत शक्ति ज्योत चारो जोत मिल भई इकट्ठी हस्तक ले मस्तक धरी आदि ज्योत कहा से आई हुकम से आयी। पीर पैगम्बर (अवतारी गुरुदेव) ने जताई नवनाथ चौरासी सिद्धों ने जगाई, धवल कवल ने जगाई दर्शन जोत अमर भई काया एता अखण्ड बीज बाला सम्पूर्ण भया अखण्ड कैलाश ज्योत का हुक्म ॐपश्चिम दिशा धुन्धुकारा, जहां रमे कोई गरुड़ कोतवाल मैं तो स्र पूंछ गरुड बाला, श्वेत घोड़ा, श्वेत पलाण, जिस पर बैठ

अलख निर्वान हस्तक पुस्तक पढ़े कुराण (शुद्ध ग्रंथ) देवी का देहरा मात का स्थान तत्व सिन्दूर दीना पूर, ज्योत रहे भरपूर, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख, जागी ज्योत हुवा प्रकाश, तले धर्ती उपर आकाश पांच महेश्वर आज्ञा दिनी तो निर्वाण कैलाश जोत करु प्रकाश। इतना कैलास जोत जगाने का मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

(झ) गत गंगा ज्योत जाग्रती

अत: पीरजी हुक्म करते हैं **"गत गंगा में जोत चेताव"**। अत: जोगन साखियाँ के द्वारा गत गंगा में जोत अर्थात् कैलाश के अन्दर चौकी पर स्थापित की जोत चेतन करते हैं तथा पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

गत (गंगा) जोत प्रकाश (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ ज्योत सोंह ज्योत गत गंगा की ज्योत भई प्रकाश रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[मन्त्र सिद्धिः- होली, दीपावली, दशहरा को उपरोक्त मन्त्र से १००८ घृत दीपक, पीले पुष्प बहते जल में (गंगाजी) में छोड़ें। मनोवांछित कार्य सफल होगा।]

इस प्रकार कैलाश तथा गत गंगा जोत चेतन होने के बाद निम्न मन्त्र का पीरजी पाठ करते हैं।

अथ बीज बाला (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अंगुष्ट प्रमाणे तीसरा नेत्र त्रिकुटी मे ठहराया सिद्धो काया न माया धूप न छाया बजर कुंवारी तीन लोक की माया, जहां ठहराई मारग मार्ग

आवे मार्ग की छाया, अमार्ग का पुत्र बाला कहलाया जब सिद्धो गोरक्षनाथजी ने गोरक्षबाला कहलाया। ॐ सोहं हमारी माया, एता बीज बाला जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री शंभुजती गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा। ॐ नमो आदेश। सत गुरुजी को, ॐ निरन्जन निराकार अवगत पुरुष ततसार ततसार मध्ये ज्योत, ज्योत मध्ये परम ज्योत, परम ज्योत मध्ये उत्पन्न भई माता शम्भू शिव गायत्री विश्वनी विश्वमूर्ती पाताले ग्रहणी चतुर्वेदी मुखो दृष्टवा गंगा जमना देखे चन्द्रमा इति देवता ललाटे नक्षत्र मेष की माला दृष्ट श्रृङ्ग मेरु मेखला हिर्दे तैतीस करोड़ देवता कुक्षौ सप्त समुद्र सागरा रोमावली ते अट्ठारा भार वनस्पति के चार खाणी, चार बाणी चन्द सूर्ज पवन पाणी धर्ती आकाश पंच तत पिण्ड प्राण ले किया निवास सुन निरालम्ब दिया निवास, यति निरालम्ब जी के चरण कमल पादका को नमस्कार नमाम्यहम् ओं निरन्जन निराकार अवगत पुरुष तत सार तत सार मध्ये जोत जोत मध्ये परम जोत परम जोत मध्ये उत्पन्न भई माता शंभु अजपा नाम गायत्री अभेद मण्डल भिदन्ती अछेद पाप छिदन्ती अक्षय पोष करन्ती अपीर नीर पिवन्ति गंगा जमना मध्ये जलन्ति बचने बचने रुद्र ऋषिवर की वाचा प्रति पालयन्ति ॐ सप्त में पाताल खरी, क्षेचरी, मंचरी, भूचरी, सिद्धा आपसे थापी सोहं हंति महंति जति निरालम्ब जी के चरण कमल पादका को नमस्ते नामम्यहम ॐ प्रभाते उत्पन्न भई माता शम्भू शिव गायत्री, रक्त वर्णी वृष वाहिनी रुद्र देवता की पोषनी ऋद्ध सिद्ध वर दायिनी, ॐ मध्याने उत्पन्न भई माता शम्भू शिव गायत्री स्वेत वर्णी हंस वाहिनी ब्रह्मदेवता को पोषनी ऋद्ध सिद्ध वर दायिनी, ॐ संध्या उत्पन्न भई माता शम्भू शिव गायत्री श्याम वर्णी गरुड़ वाहिनी शंख चक्र गदा पद्म ले

विष्णु देवता को पोषनी ऋद्ध सिद्ध वरदायिनी फुरों तां ऋद्ध फुरो तां सिद्ध ईश्वरो वाच जो जोगनी अजरन्त जो जोगनी बजरन्त षट सरस बरस की रक्षा उद्धरन्त, होमी शिव होमी शक्त होमी घटे शिव होमी चतुर्मुखी ब्रह्मा बोलिये, हिर्दे ते स्थान मुँह भुज शंखीनी देवी विष्णु देवता को पोषनी ऋद्ध सिद्ध वरदायिनी, ॐ जल, जल पर थल, थल पर भौर नदी, भौर नदी पर भौर गुफा, भौर गुफा पर शिवपुरी, शिवपुरी पर शिवताजपुरी, शिवताजपुरी पर ब्रह्मकवल, ब्रह्मकवल पर निरन्जन कवल, निरंजन कवल मध्ये उत्पन्न भई माता शम्भु शिव गायत्री अभेद मण्डल भिदन्ती।

ॐकार करन्ती आवे इकोतर सौ पुरुषा ले अमरापुर जावे सोहंकार करन्ति आवे लख चौरासी जीया जून को ले अहार चोगा पानी पिलावे क्षीर नीरनू पंच बस करनी आवे जपंत ब्रह्मा विष्णु जल पवन पाणी षट दर्शन मध्ये गुरु खड़ा हाथ खडःग त्रिधारा क्या करेगा रुठा जगत हमारा चार चरण पंजवा मुख अन्न महीश्वर जोगी अनन्त कोट सिद्धा को पार ले उतरेगी माता शम्भू शिव गायत्री श्री नाथजी को चरण कमल पादका को नमस्ते नमस्कारमः

ॐ चार वेद ब्रह्मा पढ़े दस हजार योजन सुमैरु धरती में गड़े साठ कोस लौ पौडी लोह की जाः बैठीराः क्रेत की चौकी क्या चीज बिना भेद वस्त्री, साठ कोस लग रङ्ग जस्त की क्या जमना जी में रुख वृक्ष ड़ाल कड़ी बांस की क्या दाता ने ऐसी बनाई बासठ कोस धारा तांबे की ताके ऊपर ले काने खड़े गौरी पुत्र गणेश, हाथ में लई छड़ी साठ कोस रुपे सों जड़ी ताके ऊपर ले काने खड़े सप्तपुरी सोने सों जड़ी सोलह लाख बहत्तर हजार हीरे लाल जड़ी जवाहर जाः पंच तत्व तीनों गुण न्यारो न्यारो छैः दर्शन छानवै पखंड़ नौग्रह त्रय सन्धया चौबीस गायत्री, एते प्रमाणे किस

विधि जागो ससमाले चक्र ताणे दरवाजे ध्रुव की चौकी बठाने तिसके निचे ले काने लाय तारे चन्द सूर्ज दो बने खिलारे जहां आठ कुण्ड बीसो न्यारे न्यारे जा में कीड़े फिर रहे काग करे फटकारे केती आवे केती जावे केती भरीयम के द्वारे, यम द्वारे यम राणी बैठी, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ली एती इस पर्वत गब्बे सिद्धों अमृत कुण्ड भरिया भर भर आवे बदल मपडे इन्द्र के आघाय मृत लोक से पौचे मुहड़ा दिन सू रात पुतला दस महिने दौड़े इति सूमेर पाद का मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।।।

[मन्त्र सिद्धिः- पितृ मास में नित्य पाठ करें। सन्मुख तीन दीपक लगावें। एक घृत का, एक सरसों के तेल और एक तिल के तेल का, घृत दीपक को सफेद फूल, सरसों दीपक को लाल पुष्प तथा तिल के दीपक को पीला फूल चढ़ावें। दही, चावल का भोग लगावें। सभी अतृप्त पितृ मुक्त हो जायेंगे।]

भावार्थ = *कैलाश एवं गत गंगा ज्योत चेतना करना :-* पूर्व काल में मत्स्येन्द्रनाथजी ने घोर तपस्या कर शिव को प्रसन्न कर लिया और अपने उनतालिस करोड़ शाबर मन्त्र तन्त्र को सिद्ध एवं प्रमाणित करने की विनती की और वह दोनों कैलाश धाम गये वहां शिव शक्ति ने समस्त देवी, देवता, सुर, नर, मुनि, राक्षस, किन्नर आदि सभी को बुलाकर उन्हें करारबद्ध कर लिया कि इन शाबर मन्त्रों में सभी सहयोग करके शाबर सिद्धि प्रमाणित करेंगें अतः वहां विशाल भण्डारा-मेला हुआ। इस मेला प्रित्यर्थ यहाँ योगमाया कर्मकाण्ड में चार जुग की ज्योत को चेतन करके सभी देवी, देवता, सुर, नर, मुनि, साधु, सन्त, यक्ष, किन्नर, सुर, असुर सभी को चेतन करके इस क्रिया कर्मकाण्ड को सिद्ध करने का आह्वान (मन्त्र द्वारा) होता है। जैसे हम जन्मदिन वर्षगाँठ

आदि कार्यक्रम करके पुरानी याद देकर कार्य सम्पन्न करते हैं। वैसे ही यह कैलाश धाम, ४ जुग की जोत - गत गंगा जोत बनाकर पूर्व सम्पन्न शाबर मेला की याद में सभी चेतनता चार जुग की जोत जलाकर दी जाती है। यह कार्य नाथ सिद्ध जोगन बीज बाला को गुरु गोरक्षनाथजी बीज बाला गायत्री बोलते हुये कार्य करने को कहते हैं विशेषत: शिव-शक्ति ब्रह्मा, विष्णु महेश (रुद्र) भैरव मुख्य त्रिशक्तियाँ आदि को कैलाश पर आमंत्रित किया जाता है जो कि गत गंगा जोत में एक नारियल भी आसनों के अनुष्ठान प्रित्यर्थ रखा जाता है।

कैलाश को शिवलोक, मुक्तिधाम, कैलाश धाम आदि नामों से जाना जाता है। वहाँ प्राणी ज्योती स्वरुप आत्मा होकर मुक्ति पाता है इसलिये चार जुग की जोत जगाई जाती है। गत गंगा जोत से यही सिद्ध होता है कि जब शंख से मृतात्मा पुतले के ऊपर गंगा जल (पंचामृत) डालते हैं तो उस मृतात्मा को गंगा माता गती देते हुये कैलाश लोक में ले जाती है और मुक्त करती है। अत: इसी कारण गत गंगा जोत प्रकाश को चेतन किया जाता है।

इस प्रकार सुमेरु अर्थात कैलाश जोत चेतन के बाद पीरजी भण्डार जोत का हुक्म करते हैं। जब तक भण्डार ज्योत चेतन होती नहीं तब तक भण्डार खुलता नहीं अत: पीरजी हुक्म करते हैं-**"भण्डार ज्योत चेतावो"**। जोगनी पूर्ववत साखियाँ द्वारा भण्डार जोत चेतन करते हैं और पीरजी निम्न मन्त्र पढ़ते हैं।

भण्डार ज्योत (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अलील आदि अलील, अलील पुरुष की स्थापना, गणपती किया निवास, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो भण्डार जोत का भया प्रकाश - ऋद्ध फुरो सिद्ध फुरो फुरो आनन्दी माई भण्डारी बैठा भण्डार में गणपति

जोत जगायी। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- गणेश चतुर्थी को २१ बार मन्त्र जपकर भण्डार घर में गौघृत का दीपक जलावें। लाल पुष्प, दूब, दूर्वा, मोतीचूर के लड्डू भोग पूजन करें। घर में अन्न धान्य भरपूर रहेगा।]

ज्योतियाँ चेतन करने का भावार्थ = इस योगमाया कर्म के ज्योत जगाना, जोत जागरण, जोत जाग्रती, ज्योती पूजन आदि से सम्बोधित करना अर्थात् सभी जोतियाँ प्रज्वलित या चेतन करके पूजन विधि करना यहाँ जोतियाँ मन्त्र एवं तन्त्र द्वारा चेतन करते हैं। अर्थात् यन्त्र (आकृति) बनाकर अर्थात् स्थूल रुप में तथा साथ में अनेक आवश्यक मन्त्र अंतःकरण से उच्चारण करना यह सूक्ष्म रुप में विधान जब होता है। तब सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों स्वरुप का योग (जोड़ना) संग होते ही शक्ति (योगमाया) शक्ति का प्रादुर्भाव निर्माण होता है।

इस योगमाया पूजन में बाला सुन्दरी की अखण्ड जोत (कमल जोत) तथा बाकी और ज्योतियों का पूजन सूक्ष्म तथा स्थूल रुप में प्रमाणित करती है कि प्राणी मात्र के आत्मा का स्वरुप ज्योति रुप है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मा के विषय में अनेकों साधू सन्तों ने अपने-अपने अनुभवों से आत्मा को अनेकों स्वरुप में बताया है। कोई आत्मा को शुद्ध प्रकाश कहते हैं। तो कोई ज्योति स्वरुप, तो कोई बिन्दु स्वरुप, तो कोई तीसरी आँख के ज्ञान स्वरुप, तो कोई इसे चेतना, चैतन्य, तो कोई मन को आत्मा कहते, तो कोई चित्त को, तो कोई अपने इष्ट (दैवत) को आत्मा स्वरुप कहते, तो कोई अपने सतगुरु को आत्म स्वरुप कहते हैं।

हमारे नाथ सिद्ध परम्परा में, नाथ सिद्धों ने सिद्ध एवं प्रमाणित किया है कि आत्मा ज्योति स्वरुप है। क्योंकि यह अनुभव केवल योग साधना करने से ही आ सकता है। जो भी योगी-अवधू या साधक योग

प्रक्रियायें करके सिद्ध एवं परिपक्व साधना करते हैं उन्हें आत्मा का ज्योति स्वरुप में तीन प्रकार से अनुभव होता है।

(१) आत्मदर्शन, (२) आत्मा अनुभव, (३) आत्म प्रचिती।

(१) आत्मदर्शन - जब योगी योग में अर्थात् ध्यान में बैठते हैं और दोनों आँखों के बीच मस्तक पर अर्थात् त्रिपुण्ड में या त्रिकुटी में ध्यान केन्द्रित करते हैं तब उसे दृष्टा होकर देखना है कि आत्मा क्या है ऐसे सोचते ही यह एक संकल्प बन जाता है और यह संकल्प मूलाधार चक्र में जाता है। मूलाधार चक्र से जाग्रत होकर उध्वरिता प्रवास कराता है। यह संकल्प नाभि चक्र अर्थात् मणिपूर में आते ही उसके विचार में परिवर्तन होता है क्योंकि योग द्वारा नाभि चक्र अग्नि तत्व में गरम होता है। अत: यह विचार जब हृदय चक्र में (अनहद चक्र) में आता है तो वह विचार का भाव में परिवर्तित होता है अत: भाव से और प्रगट साधना करने से जब वह कंठ चक्र अर्थात् विशुद्धि चक्र में आता है तब भाव का दृढ़ भाव में रुपान्तर होता है पुन: साधना परिपक्वता होती है और यह दृढ़ भाव आज्ञा चक्र अर्थात् त्रिकुटी में आता है तब दृढ़ भाव का चेतना में परिवर्तन होता है और यही चेतना आज्ञा चक्र (त्रिकुटी) या तीसरे नेत्र को चेतन करता है। जैसे दीपक चेतन होकर ज्योत निर्माण होती है। वैसे (ज्ञान) आज्ञा चक्र जाग्रत होकर ज्योति का स्वरुप दिखायी देता है उस वक्त साधक को अपने आप काया इन्द्रियादि भौतिक अवस्था का अर्थात् स्थूल रुप का ज्ञान नहीं रहता और वह सूक्ष्म जगत में प्रवेश कर निर्गुण निराकार-निर्विकार आत्मा का ज्योति रुप में दर्शन पाता है और यही आत्म दर्शन कहलाता है। यहां योगी व साधक समस्त विकारों से मुक्त होता है।

(२) आत्मानुभव - जब योगी या साधक चेतना को हृदय चक्र में अर्थात् (भाव समाधि) में ध्यान लगाते हैं और हृदयस्थ ध्यान केन्द्रित

करते हैं तब उसे वहां ज्योति स्वरुप में आत्म अनुभव होता है। त्रिकुटी आज्ञा चक्र में वह आत्मा को दृष्टा होकर देखता है। किन्तु यहां हृदय अनहद चक्र में आत्मा अनुभव, आनन्द स्वरुप होता है उसे आत्मानंद कहा है वहां का आनन्द एक शाश्वत समाधान होता है। यह अनुभूति न कही जा सकती है न लिखी जा सकती है यह तो साधक योगी को खुद साधना कर लेनी चाहिये, वहां उसका आत्मानन्द वही जाने। यहां आत्मा का निवास स्थान भी कहा गया है अर्थात् अन्तर आत्मा का निवास, जिस अन्तर आत्मा का बाह्य आवरण बाह्य कवच, बाह्य छाया जैसे गिरी बादाम के छिलके होते हैं, मूंगफली के छिलके होते हैं आदि। ऐसे छिलके, कवच, छाया को मन कहा गया है। तो यहां आत्म अनुभव आनन्द-शाश्वत आनन्द में होता है। वहां योगी साधक सुख दु:ख अर्थात् माया के परे हो जाता है।

(३) आत्म प्रचिती - आत्म प्रचिती का अर्थ है अन्दर बाहर एक समान-अन्दर आनन्द तो बाहर भी वही आनन्द, जैसे जल में जल भरा पात्र डुबाकर रखो तो पात्र में जल और पात्र के बाहर भी जल। अन्दर देखो तो भी जल, बाहर देखो तो भी जल, वैसे ही अन्दर से भी आत्मानन्द बाहर से भी आत्मानन्द ऐसा साधक बाहरी जगत माया व्यवहार में जब सभी संकल्प, विकल्प, इच्छाओं, काम क्रोधादि विकारों पर संयम करके आत्म विवेक या आत्म विचार से या अन्तर मुख होकर माया जगत से व्यवहार करता है तो सभी प्राणियों में अपितु सभी वस्तु जन्य माया मय में उसे आत्मा का अनुभव होता है और वह सभी को समभाव से विचारता है, देखता है। यह उसकी आत्म प्रचिती होती है। ऐसा कोई विरला होता है। इसके लिये बहुत साधना करनी पड़ती है। साधारणत: लोग मन से और चित्त से या बुद्धि से ही आत्मा को देखना चाहते हैं और देखते भी हैं। जैसे साधना में सो गये निद्रा लग गयी और

नींद में सपना देखा तो बस उन्हें लगता है या उन्हें भ्रम होता है कि हमने पा लिया। लेकिन मन चित्त जबतक शून्य होगा नहीं तब तक आत्मदर्शन, आत्मानुभव, आत्मप्रचिती कभी हो ही नहीं सकती।

अत: ऐसे आत्मदर्शन, आत्मअनुभूति एवं आत्म प्रचिती जिसको होती है उसे, उस साधक को, उस योगी को आत्मसाक्षात्कारी कहा जाता है।

अगर ऐसे आत्मसाक्षात्कारी दो साधक या योगी योग संजोग से एक दूसरे के सम्पर्क में आने पर, अथवा एक दूसरे के सन्मुख आने पर दोनों ही मौन रहेंगे। वहां न ज्ञान न अज्ञान, ना छोटा ना बड़ा वह दोनों ही आत्मसाक्षात्कारी साधक अपने आप में अन्दर में और बाहर भी आनन्द में आत्मानन्द में रहते हैं वे क्या कहेंगे, ना चर्चा ना वाद विवाद ना ज्ञान का लेन देन सब कुछ उनके लिये कुछ भी नहीं। अत: ऐसे आत्मसाक्षात्कारी योगी ही केवल योगमाया पूजन का शंखढाल कर्म करने का-समझने का और अनुभव करने का विशेष अधिकारी होता है। यही सत्य है। क्योंकि इस कर्मकाण्ड में मृतात्मा के आत्मा का सूक्ष्म रुप में आह्वान करके स्थूल रुपी पुतले में प्रविष्ट करने के पश्चात् उस मृतात्मा को तन्त्र मन्त्र द्वारा माया से परे आत्म ज्ञान, दिलाकर उसे कैलाश मुक्ति धाम भेजना है और यह कार्य आत्मसाक्षात्कारी योगेश्वर अपने आत्मबल, तपस्या बल, भक्ति बल द्वारा करते हैं।

(ञ) आह्वान-पूजन

इस प्रकार सभी ज्योतियाँ प्रज्वलित होती है अर्थात् उपरोक्त भावार्थ भाव से सभी जोत चेतने के पश्चात् पीरजी हुक्म करते हैं- **"माई के पूजन तथा आरती की तैयारी करो"**। अत: टैलुवा पूजन पात्र ले आता है और बाला सुन्दरी (चौक) पाट के सन्मुख रखता है। और निम्न मन्त्रों द्वारा धूपियाँ में धूप (उद गुग्गल आदि सुगन्धित द्रव्य

द्वारा) चेतन करता है।

धूप वासना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ वासना वासल्यो थापना थापल्यो धूप जहां रुपदेव तहा पूजा अलख निरन्जन और नहीं दूजा।। तिल जौ गुगल घृत खोबड़ा मिष्ठान पंचाग धूप सिद्धो ने बनाया कूट काट डब्बी में कीना ऊपर कीनी चीनी चकमक पथरी जाल बाल लीनी उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम आसन कीना, पहला धूप सतगुरु जी को दीजे हाथ जोड़ प्रणाम कर लीजे, दूसरा धूप शिव शिक्त को दीजे ऋद्ध सिद्ध भण्डार भरीजे, तीसरा धूप धर्ती आकाश को दीजे चन्द्रमा सूर्ज ले विमान चढ़ाले, चौथा धूप अट्ठारह भार वनस्पति को दीजे रुख वृक्ष की छाया लुडीजे, पांचमा धूप पांचो तत्व को दीजे मोक्ष मुक्त फल लभीजे पाया भेद बौत बडिया एकाची काया बाल कुवारी शम्भू नाथ नाथन के नाथ शब्द के सांचे गुरु गोरखनाथ सुंन माता अवगत पिता अलख गोत्र गौ का घृत गुगल की बास तृप्त हो श्री शम्भुजति गुरु गोरक्षनाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- नित्य प्रातः शाम को इस मन्त्र से घर, स्थान, मकान में धूप चेतन करके पूरे मकान को अंचवाने से अरिष्ट बाधायें दूर हो जायेंगी।]

अतः पीरजी का हुक्म - **"धूप दीप अंचवाव"**।

टैलुवा सभी स्थान (माई का पाट, कैलाश तथा भण्डार) पर धूप से अंचवाता है।

पीरजी हुक्म करते हैं-**"पुष्प अक्षत चढावो"**। अतः जोगनी निम्न आखा मन्त्र से लाल पुष्प एवं अक्षत बाला सुन्दरी (पाठ) चौक पर

चढाते हैं। साथ में पीरजी अथः आवाहणम् मन्त्र का पाठ करते हैं।

(आखा) अक्षत बरसाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आखा लेलु आखा छोडू शीश नमाऊ मात। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो युग युग लागु पाव मै बलिहारी आपका आखा लेलो आनन्दि माय। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अतः जोगनी लाल पुष्प तथा आखा (अक्षत) उपरोक्त मन्त्र से चढ़ाते समय पीरजी निम्न श्री सुन्दरी बाला जाप बीज मन्त्र पढ़ते हुये आह्वान करते हैं। यह बीजमन्त्र इस सम्पूर्ण योगमाया पूजन में अति महत्व का है। अतः चौक या माई के पाट में बाला सुन्दरी के आह्वान के लिये यह मन्त्र अति आवश्यक है।

अथ् श्री सुन्दरी बाला जाप बीज मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं ऐं क्लीं श्रीं सुन्दरी बाला

काहे हाथ पुस्तक काहे हाथ माला। बायें हाथ पुस्तक दायें हाथ माला जपो तपो श्री सुन्दरी बाला।। जीव पिण्ड का तूं रखवाला हंस मन्त्र कुल कुण्डाली बाला। बाला जपे सो बाला होय। बूढ़ा जपे सो बाला होय।। घट पिण्ड का रखवाला श्री शम्भूजती गुरु गोरखबाला। उलटन्त बाला पलटंत काया सिद्धों का मार्ग साधको ने पाया। ॐ गुरुजी ॐ कौंन जपन्ते, सोंह कौंन जपन्ते, ऐं कौन जपन्ते। क्लीं, कौंन जपन्ते, श्रीं सुन्दरी, कौन जपन्ते, बाला, कौंन जपन्ते।। ॐ गुरुजी ॐ जपन्ते भूचरनाथ अलख अगौचर अचिंत्यनाथ। सोहं जपन्ते गुरु आदिनाथ ध्यान रुप पठन्ते पाठ।। ऐं जपन्ते ब्रह्माचार वेद रुप जग सरजन हार। क्लीं जपन्ते विष्णु

देवता तेज रुप राजासन तपता।। श्रीं सुन्दरी पारवती जपन्ती धरती रुप भण्डार भरन्ती। बाला जपन्ती गोरखबाला ज्योति रुप घट घट रखवाला।। जो बाले का जाने भेव आप हि कर्ता आप हि देव। एक मानो कर जपो जाप अन्तवेते नहि माई बाप।। गुरु सँभालो आपो आप विगसे ज्ञान नसे सन्ताप। जहा ज्योत तहां गुरु का ज्ञान, गत गंगा मिल धरिये ध्यान। घट पिण्ड का रखवाला श्री शंभूजति गुरु गोरखबाला। जहां बाला तहां धर्मशाला सोने की कुंची रुपेका ताला।। जिन सिर ऊपर सहंसर तपई घटका भया प्रकाश। निगुरा जन सुगुरा भया कटे कोटी अध राश।। सुचेत सैन सत गुरु लखाया पडे न पिण्ड विनसे न काया। सैन शब्द गुरु कन्हे सुनाया अचेत चेतन सचेत आया।। ध्यान स्वरुप खोलिया ताला पिण्ड ब्रह्माण्ड भया उजियाला। गुरु मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया सून पारवती महादेव कहया।। नाथ निरन्जन नीराकार बीजमंत्र पाया ततसार। गगन मण्डल में जय जय जपे कोटी देवता निज सिर तपे।। त्रिकुटी महल में चमका होत एकोंकार नाथ जी की ज्योत। दशवेद्वारे भया प्रकाश बीज मन्त्र निरन्जन जोगी के पास।। ॐ सों सिद्धो की माया सतगुरु सैन अगम गती पाया। बीज मन्त्र की शीतल छाया भरे पिण्ड न विनसे काया।। जो जन धरे बाला का ध्यान, उसकी मुस्किल ह्योय आसान। ॐ सोहं एकोंकार जपो जाप भव जल उतरो पार।। ब्रह्मा विष्णु धरन्ते ध्यान, बाला बीज मंत्र तत जान। काशी क्षेत्र धर्म का धाम जहा फूक्या सत गुरु ने कान।। ॐ बाला सोहं बाला किस पर बैठे किया प्रतिपाला। ऋद्ध लै आवे सुण्ढ सुण्ढाला हित लै आवे हनुमंत बाला।। जोग लैआवे गोरख बाला जत लैं आवे लछमन बाला। अगन लै आव सूरज बाला, अमृत लै आवे चन्द्रमा बाला।। बाला वाले का धर

ध्यान असंख युग की करणी जान। मंगला माई जोत जगाई त्रिकुटि महल में सुरती पाई।। शिव शक्ति मिल बैठे पास, बाला सुन्दरी ज्योत प्रकाश। शिव कैलास पर थापना थापी ब्रह्मा विष्णु भरै जन साखी।। बाला आया आपहि आप तिस वाले का माइ न बाप। बाला जपो सुन्न महासुन्न बाला जपो पुन्न महा पुन्न।। बाला जपो जोग कर जुक्ति, बाला जपो मोक्ष महा मुक्ति। बाला बीज मन्त्र अपार बाला अजपा एकोंकार।। जो जन करे बाला की सेव ताकौं सूझे त्रिभुवन देव। जो जन करे बाला की भ्रान्त तको चढे दैत्य के दन्त।। भरम पड़ा सो भार उठावै, जहा जावै जहां ठौर न पावै। धूप दिप से जोत जगाई, तहां बैठी श्री त्रिपुरा माई।।ऋद्ध सिद्ध से चौक पुरया, सुगुरा जन मिल दर्शन पाया।। सेवक जपै मुक्ति कर पावै बीज मन्त्र गुरु ज्ञान सुहावै। ॐ सोहं सोधन काया गुरु मन्त्र गुरुदेव बताया। सब सिद्धन के मुख से आया सिद्ध वचन निरन्जन ध्याया।। ओंकार में सकल पसारा अक्षय योगी जगत से न्यारा। श्री सतगुरु गुरु मंतर दीजै अपना जन अपना कर लीजै।। जो गुरु लागा सन्मुख काना, सो गुरु हरि हर ब्रह्मा समाना। गुरु हमारे हरके जागे, अरज करु सत गुरु के आगे।। जोत पाट मैदान रचाया सत से ल्याया धर्म से बिठाया। कान फूक सर जीवन कीया सो जोगेश्वर जुग जुग जीया।। जो जन करे बाला की आस, सो पावै शिवपूरा का वास। जपिये भजिये श्री सुन्दरी बाला आवागमन मिटे जंजाला।। जो फल मांगू सो फल होय बाला बीज मन्त्र है सोय। गुरु मन्त्र सम्पूर्ण माला, रक्षा करै गुरु गोरख बाला।। सेवक आया शरण में धरया चरण में शीश। बालक जान कर कर कीजिये दया दृष्टि आशीष।। गुरु हमारे हरके जागे निवं निवं नमू माथ। बलिहारी गुरु आपने जिन दीपक दिना हाथ।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- कमल ज्योत लगावें, पूजन करें, भोग लगावें। नित्य प्रातः संध्या पाठ करें। तद्उपरान्त योग साधना करें। कुण्डलिनी जाग्रत होकर ज्ञान को प्राप्त होगें तथा सभी कार्य सफल होगें।]

पुनः आखा बरसाते समय पीर जी निम्न आह्वान मन्त्र कहते हैं।

इति आह्वान मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। धूप द्वीप नैवेद्य सुमनम वर सहितम पूजयामी। पुनः गुरु बिचारं उत्थाय जोताग्रे उप विश्ये कर साना प्रज्ञाल्य अक्षतं गृह्य।।

ॐ बीज मन्त्र होया प्रकाश देव देवत्यां किया प्रकाश आद रुपी कलश थाप्या निरन्जन जोत बैठे अनाद जी भण्डारी बैठे चन्द्रमा कोटवाल धर्ती का पद्म पाट रचाया नौ लाख तारा साधने तराया खंड खंड़ दीप दीप जोत जगाई साध कीजे मुक्त का काम बीज मंत्र मुक्ति का धाम बीज मन्त्र बिन लीजे नाम औघट घाट घड़ीजे फेर त्रिकाले मध्याने जपंते सो नर निरन्जन को लभन्ते। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अतः पीरजी हुक्म करते हैं-"**कलश पर आखा (अक्षत) बरसावो**"। जोगनी कलश पर अक्षत (आखा) बरसाते हैं तथा पीरजी निम्न मन्त्र चक्र घट मन्त्र का पाठ कहते हैं।

चक्र घट मन्त्र पाठ

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आदि घट बोलियें अनादि घट बोलिये। अनहद पात्र बोलिये। चौसठ योगीणी बावन वीर ब्रह्मा विष्णु महेश्वर दिठ - ब्रह्मा विष्णु महेश्वर राख -असंख्य युग थापते घट पात्र श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ- घटे धर्ती घटे आकाश, घटे चन्द्र घटे सूर घटे नदि रहे भरपूर चक्र

धरती चक्र आकाश, चक्र ने किया प्रकाश जागी जोत भागी छूत -चहु दिश भया उजियाला चक्र बैठे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला सतरा लाख अठ्ठाईस हजार सत्युग का प्रमान बोलिये, बत्तिस हाथ का नर बोलिये अट्ठारह हाथ का खड़ग बोलिये, अनुपान लोहे का बोलिये, अम्बर धार छुरी बोलिये जौ प्रमान चीरा बोलिये सुंन कौन बोलिये माता मंगला देवी बोलिये, सोने का प्याला बोलिये गजहस्ती का निश्चला बोलिये, अवतार कौन कौन बोलिये, मच्छ कच्छ वराह नृसिंह ॐ गुरुजी उत्तर दिशा से भया हुंकार नारदा शारदा देवी का ॐकारा नीला घोड़ा नीला पलाण, तीस पर गरुड़ जती असवार आवो आवो भाई ले आवो, करो कमाई ध्यान देश में मुक्ति पाई, सोने का पात्र सोने का चक्र, सोने का छत्र, सोने का आसन, सोने का सिंहासन, सोने की नादि, सोने की सेहली सि ा भस्मी का नाला कीजे, सकल स्वामी जी बरसो ॐकारा चेते गत गंगा पूजे स्वामीजी सकल संसार।।१।।

अथ त्रेता युग की बारह लाख छीयानवे हजार त्रेतायुग का प्रमाण बोलिये, अट्ठारह हाथ का नर बोलिये पंद्रह हाथ का खड़ग बोलिये कौन कौन अवतार बोलिये वामन-परशुराम, श्रीराम बोलिये, दक्षिण दिशा का भया हुंकार, तुलजा देवी का ॐकारा, श्वेत घोड़ा श्वेत पलाण जिस पर भैरो जती है अवसार, आओ आओ भाई करो कमाई ध्यान देश में मुक्ति पाई रुपे का पात्र, रुपे का चक्र, रुपे का छत्र, रुपे का आसन, रुपे का सिंहासन, रुपे की नादी, रुपे की सेहली सिंगी, गोमती गंगा का नीर पूरीजे, सकल स्वामी जी बरसो ओंकारा, चेते गत गंगा, स्वामी जी पूजे सकल संसार।।२।।

अथ द्वापर युग की। आठ लाख चौंसठ हजार द्वापर युग का

प्रमाण बोलिये, नऊ हाथ का नर बोलिये सात हाथ का खड़ग बोलिये, कौन कौन अवतार बोलिये श्री कृष्ण, भगवान बुद्ध अवतार बोलिये। पूर्व दिशा का भया हुंकारा, कामख्या देवी का ॐकारा, लाल घोड़ा लाल पलाण, तिस पर रहे हनुमन्त जती अवसार, आओ आओ भाई करो कमाई ध्यान देश में मुक्ति पाई ताम्बे का पात्र, ताम्बे का चक्र, ताम्बे का छत्र, ताम्बे का आसन, ताम्बे का सिंहसान, ताम्बे की नादि, ताम्बे की सेहली सिंगी, यमुना का जल पूरीजे। सकल स्वामी जी बरसो ॐकार चेते गत गंगा स्वामी जी पूजे सकल संसार।।३।।

अथ कलियुग की। ॐ चार लाख बत्तिस हजार का कलयुग का प्रमाण बोलिये, साड़े तीन हाथ का नर बोलिये, सवा हाथ का खड़ग बोलिये, कौन कौन अवतार बोलिये। निष्कलंक कल्कि बोलिये, पश्चिम दिशा भया हुंकारा हिंगलाज देवी का ॐकारा, काला घोड़ा काला पलाण, तिस पर चढ़े अलख पुरुष निर्वाण, आओ आओ भाई करो कमाई, ध्यान देश में मुक्ति पाई, माटी का पात्र, माटी का चक्र, माटी का छत्र, माटी का आसन, माटी का सिंहसान, माटी की नादि, माटी की सेहली सिंगी, गंगाजल का जल पूरीजे, सकल स्वामीजी बरसो ओंकार चेते गत गंगा स्वामीजी पुजे सकल संसार।।४।।

इता चार युग की घट स्थापना नाद मुद्रा सेहली सिंगी पात्र पाच लाल, पाच मोहरा पाच रुपया, श्री नाथजी के चरणपादुका, पुजन्ते घट स्थापना पठन्ते मोक्ष मुक्ति को लभन्ते।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

धूप दीप लाल पुष्पम् नैवैद्य पूजयामी।

[मन्त्र सिद्धिः- नवरात्र, चैत्रो, अश्विन मास में माई का कलश दीपक

पूजन करके नित्य पाठ करें। दशहरा को नौ कन्याओं को, ९ नाथों को भोजन दान करें। मन्त्र सिद्ध होकर मनोकामना पूर्ण होगी।]

अत: पीरजी हुक्म करते हैं-**"कैलाश पर आखा (अक्षत) बरसावो"**। तब जोगनी कैलाश पर आखा (अक्षत) लाल पुष्प को गत गंगा जोत पर बरसाते हैं। वहां पीरजी निम्न कैलाश दर्शन मंत्र का उच्चारण करते हैं।

अथ: कैलाश दर्शन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ जोत जोत, सोहं जोत महाजोत, सर्व जोत सुन्दरी, सुन्दरी से अलिल जोत, अलिल जोत का दर्शन पाया, साध सन्त ने मिल मेला किया, अरुण, वरुण तत सार, भाव प्राणी उतरो पार माई चले कैलाश को मन्दिर जै जे कार, धर्ती कुलफ, आकाश कुलफ, चान्द सुर्ज कुलफ नव लाख तारा मण्डली कुलफ कुलफ जग संसार माई का कुलफ हुक्म धनीका। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

धूप दिप लाल पुष्प नैवैद्य पूजयामी।

इस प्रकार ज्योत चेतन, आवाहन तथा धूपदीप, लालपुष्प, अक्षत (आखा) आदि पूजन होने के बाद पीरजी हुक्म करते हैं **"माई को केशर चढ़ावो"**; अत: जोगण पूर्व वर्णित (दूध में केशर घोला हुआ पात्र) स्थापित किया हुआ केशर पात्र से केशर लाल पुष्प द्वारा या अपने अनामिका अंगुली द्वारा बाला सुन्दरी चौक पर, कलश पर, दीवार के ऊपर के स्वास्तिक तथा त्रिशूल तथा भैरव भांग के ऊपर तथा कैलाश में गत गंगा के नारियल पर तथा कुण्डा में छींटा मारते हैं या छिड़कते हैं।

यहां पीरजी निम्न केशर चढाने का मन्त्र बोलते हैं।

केशर (चढ़ाने का) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ केशर आई अकल किलन्ती, चक्र मद पिवन्ती, दानव मार कर भन्डी, पहीला पात्र आद कुवारी गर्व किया तो पूजा हारी, ॐ शिव शक्ति ने कैलाश को पाया, केशर चेतो आनन्दी माया आदि केशर मात चढ़े सिद्धों के हाथ। पांच महेश्वर आज्ञा देवे तो केशर चढे माई के घट पाट, केशर बरतावे गत गंगा में प्रसाद। इता केशर (चढ़ाने का) मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं कि **"आरती की तैयारी करो"**। टैलुवा या कोतवाल आरती की तैयारी करते हैं एक पात्र थाली में पंचआरती जोत, धूप, कर्पूर, पुष्प, आखा आदि सामग्री रखकर पंचारती को अर्थात् पांच या नौ बत्तीयों पर कपूर रखकर जोतीयाँ निम्न मन्त्र से टैलुवा चेतन करता है।

जोत का बीज मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नाथजी निरन्जन निराकार बीज मन्त्र तत्सार पीवो पीवो चराचर चरे, सो प्राणी वैकुण्ठ तरे गंगन मण्डल में जय जयकार जपे, नौ करोड़ देवता अपने ग्रह में तपे, त्रिकुटी में शब्द ढुण्डो ढुण्डो एक ओंकार नाथ ज्योत दसवे द्वार निर्मल जोत भई प्रकाश, बीज मन्त्र किसे निरन्जन योगी के पास, अमर योगी, अमर काया, सोधे मन, भरे पिण्ड विनसे नहीं काया, पर मोहो काया ॐ सोहं सिद्धो काया, बीज मन्त्र अखण्ड छाया, बीज मन्त्र जो नर पढे, वो चौरासी में ना पड़े। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अथ: जाप आरति स्तुति करिष्यन्ति।

[**मन्त्र सिद्धिः**- इस मन्त्र से ज्योत तन्त्र (त्राटक विधि से) पूजन करें और ज्योत खत्म होने तक इष्ट का ध्यान करें ऐसा ४१ दिन में ज्योति रुप में आत्मा साक्षात्कार होगा। ६ मास में इष्ट दर्शन होगा।]

अत: जब टैलुवा माई के आरती की तैयारी करता है। तब आरती के पूर्व हुक्म जाप का पाठ किया जाता है। यह पाठ पीरजी या उत्तराधिकारी करते हैं।

हुकुम जाप

ओं नमो आदेश गुरु जी को आदेश ॐ पहली पुजा अलील की दूजी नाद पाती सर्व देवत्यां मिल थापना थापी जुगती मुक्ति ततसार अलख उतारे पहिले पार भैरों सुन्दरी जोत जागी कलश रिआ भरपूर चौंक पुराउ खंडधराउ बरसो ततसार फुलघरो ध्यान धरो शब्दों से जोत जगाउ जागी अखण्ड भई परचण्ड भण्डारी भंडार से जागे टैलुआ चूर्मा बांटे शब्दों की घनघोर गत में रही छा: बोले ज्ञान पुरी ऋद्ध सिद्ध भंडार भरपूर करे हिंगलाज महामाया पैले ओंकार जोग जुक्त का, दूजे ओंकार मोक्ष मुक्त का, तीजे ओंकार थापी धर्मसाल जहां बैठे महेश्वरा धूप दीप ले जोत जगाई जहां बैठी त्रिपुरा माई माता धरती पिता आकाश चन्द सूर्ज दोभरे साख धर्नपाट धीरधाया अकास पाट सिर पर छाया पवन पाट सिर पर बाजे इन्द्र पाट सिर पर गाजे चन्द्रमा पाट सर्व पर चानणा सूर्ज पाट सोंरिया करंत कहे अलख सात पाट कहां होती पदम पाठ कहां होते अलख आप कौण होते कोटवाल कौण होते भंडारी कौण होते जती कौण होते सती इकी सौ ब्रह्मांड होते पदम पाट हुअे होते अलख आप ब्रह्मा होते कोतवाल विष्णु होते भंडारी शिवजी होते जति उमादेवी पार्वती होती सति: शिव नर पूजिते पंच तत संख जुग यतीक जोत।

ओं नमो आदेश गुरु जी को आदेश ओं हुकम से रची धरतरी हुकम से रचे प्रकाश हुकम से रची मेरू मेदनीगिर पर्वत कैलाश हुकम चलाया श्री ईश्वर आदि नाथ हुकम से पांच तत्व का भया प्रकाश हुकम से गादी गोरक्षपीर हुकम से शक्ति आद ततबीर हुकम से ब्रह्मा भरदीनी साख हुकम से हनवंत बीर चलाई हांक हुकम से भंडारी ऋद्ध सिद्ध पाई हुकम से टैलवा टैल कमाई हुकम से अंत चक्रपूर हुकम से गत में बरसे नूर हुकम से भैरों परकाश भैरों बाला सुन्दरी के पास केसर हुकम पीर मुख चले हुकम बिन मथन न हले टैलुवे केसर मथकरी त्यार जुगती चढ़ी देव दरबार केसर सुरती है जग मेसा आपे गुरु ते आपे चेला जुगती संग कौण कौण आय ब्रह्मा विष्णु महादेव पाय जुगती संग चन्द्र सूर्ज दो तपे निरधार जुगती संग धर्म राजा धरम गुसाई जी ले उत्पन्न भयो सकल सृष्ट संहार टैलुआ ठाडा दो कर जोड़ देव दरबार हुकम होय अलख पुरुष का टैल करूं दरबार कर पवित्री गल गिरेवान टहल करूं गत की सर्व जोत का करो ध्यान पहला पात्र धर्ती माई किन्नर गण गंधर्व देवता चार जुगों की थापना थपाई दूसरा पात्र श्री माई सुन्दरी जी को चढ़े हीरे माणक मोती रत्न ज्वाहिर से पत्र पूरे तीसरा पात्र श्री भैरव जी को चढ़े लख चौरासी जीआ जून चरबान बोलिये तेल सिन्दूर की पूजा भैरव जी को चढ़े चौथा पात्र कूण्डे में आवे पांच महेश्वर नौनाथ चौरासी सिद्ध बवंजा बीर चौंसठ जोगण तैतीस करोड़ देवता सब कूंडे में समावे पंजवा पात्र गुरु बिचार सत सत शब्द ले उतरो पार गादी बैठे श्री शंभू जती गुरु गोरक्षनाथ मन में करत बिचार सार की छुरी अमृत की धार जो प्रमाण चीरा दिया सकल सृष्टि संसार ब्रह्माण क्षत्री वैश्य शूद्र चार वर्ण को कौलीदीनी सबको किया संत कौली आवे कौली जावे कौली गत मैं जाय

समावे जेकर कौली बरसे आप सत सत अमरापुर पावे न माई न बाप छेवा पात्र माई न जोगनी को दीजे नौगरही दहिने कर लीजे नौनाथ का पत्र पूरीजे तीन अग्न तृप्त कर लीजे दो कर जोड़ जोत जगाऊ सप्त ऋषि हृदय में ध्याऊ ग्यारा रुद्र की पूजा करी जे दस दिगपाल का ध्यान धरी जे चार वेद का पाठ करी जे षट् रस का त्याग करी जे भैरों सुन्दरी गत भंडार चार साखिये मिल जोत जगाऊ अखंड़ी भई प्रकाश सतवा पात्र सतनाथ ब्रह्मा को दीजे आवो श्री सत नाथ ब्रह्मा जी बैठो गुरु बिचार के पाप असंख जुगा की भर दीजे साख आठवा पात्र बीरवंकनाथ को दीजे अट्ठारह वर्ण की हांक सुणी जे अट्ठारह वर्ण का इको प्याला अलख जगावे बीरबंकनाथ चेते हनुवंत बाला नौवा पात्र कुबेर भंडारी सर्वगत की ऋद्ध सिद्ध सारी सर्वगत का इको रुप ऐकोएक पुरुष अनूप आद अन्त बीज संचरे बाला सुन्दरी की पूजा सत सत श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ जी करे दसबा पात्र गत में फिरे अजर बजर अम्बर अघोर बिरला साधू कोई नर जरे इकादश पात्र टैलवे को दीजे दो कर जोड़ टैलवा लीजे कर लगावे गुरु बिचार टैलवा चेते गत मझार मूल द्वार से बंक उठावे दसमें द्वार की खबर बतावे दसमें द्वार का उलटा ख्याल सर भरिया नीर बिन पार सोई नीर जोगी जन पीवे सूई धागे बिन खिंथा सीवे सीवत सीवत लगे जुग चार पहन खिंथा होय भवसागर से पार अमर लोक की क्या निशानी हुकम होय अलख पुरुष का ज्ञान कथे सत सत श्री शम्भू जति गुरु गोरक्ष नाथ जी निरवाणी द्वादश पात्र अंत को दीजे दो कर जो अन्त कर लीजे जो आद सोई अन्त ईश्वर गौरा थाप्या भगवन्त ईश्वर गौरा करे बिचार सत सत भाखन्ते श्री शम्भू जति गुरु गोरक्षनाथजी ओं मूल द्वारे सिद्ध गणपत जी का बासा चतुरदल कमल कर

निवासा मेरु डंड जे सूदा करे नाभ कमल में सुरती धरे षट् दल कमल ब्रह्मा जी का बासा श्री सनकादिक आवे जरे अष्ट दल कमल विष्णु जी का बासा कण्ठ द्वारे शिव जी का निवास षोड़श दल कमल शक्ति का बास ओंकार ज्योति प्रकाश सहस्र दल कमल निरंजन बसे शिवशक्ति मिलमेला बसे खेचरी मुद्रा मुख बसे वैखरी करे निवास जोगी अनभैबोलिया बैखरी करे निवास जोगी अनभैबोलिया बैखरी के अभ्यास जोगी वाय संकोच न करे द्वादश ले कुम्भक में धरे षोडस अंगुल पूरक कहावे रेचक शने शने फिर आवे बारा सूर्ज सोला चन्दा जो न जाने सो नर अंधा-एड़ा पिंगला सुखमण मेले सोहं हंस निरन्तर खेले त्रिकुटी महल झरोखे बास मन पवन का सुरत मिलाप सोहं अजपा जाप सकार के मध्य में जोगी करे निवास उन्मन सूं लागा रहे द्रड़ कर जोग अभ्यास भूचरी मुद्र नासा बसे स्वास घोड़े असवार जोगी आठों पहर में स्वासों करे निवास चाचरी मुद्रा चक बसे जहां आठों पहर निवासधर्ण गगन के मध्य में रवि शशि सोहं परकाश गोचरी मुद्रा श्रोणी बसे जहां सुरती करे मिलाप स्वाल शब्द की धुन में होत शब्द प्रकाश उन्मुन मुद्रा उर्ध बसे जहां आठों पहर निवास उन्मुन सू लागा रहे द्रड़ कर योग अभ्यास पांचों मुद्रा यह कही छटवी गोरक्षनाथ महा मुद्रा छटी कहों सदमें द्वार की बात महा मुद्रा छटवी बसे जहां निरंजन नाथ जहां योगीजन जाय के होत अश्चरज हैरान नाद बिन्द हुआ मिले शिव शक्ति मिल जाय रज बीरज ऊपर चढ़े तत मो तत समाय चक्र धरती चक्र अकाश जागी जोत भागी छोत चौदश भया उजाला वाला चक्र पूजते सत सत श्री शंभू जति गुरु गोरक्षनाथ जी बाला महादेव पार्वती श्री आदनाथ घटे चंदा घटे सूर घटे गंगा भरी भरपूर अकास तारा पाताल घट ज्योति लिंग नमो स्तुते ब्रह्म

हत्याटले अमृत हो पड़े पड़े अमृत अमृत कुरु कुरु स्वाहा आदका जोगी जुगाद की माया सत का जोगी वजर की काया करे करे न करे तो भी बाहर भीतर कभी न मरे एकांगन गंधर्व जाया छीजे ना उपजे विन से न काया शब्द होय कोल तां काल ना खाया एता हुकम जाप सम्पूर्ण भया श्री शम्भू जति गुरु गोरक्षनाथ जी ने गत गंगा को पढ़ कथ के सुणाया श्री नाथ जी की चर्ण कमल पादुका को नमस्ते, नमस्ते नमस्कारं।।

[**मन्त्र सिद्धिः-** नवनाथों के नाम ९ पिपल के पत्तों पर ९ सुपारी या ९ रुद्राक्ष रखें, चावल रखें उसपर ९ ज्योत लगाकर उपरोक्त हुक्म जाप का ९ बार पाठ करें। मनोवांच्छित सभी कार्य सफल होंगे नाथ सिद्धों के दर्शन होंगे, साधना में सफलता आयेगी।]

इस प्रकार हुक्म जाप का पाठ होने पर आरती की तैयारी होती है और पीर, जोगन, साखियाँ, वीर, भण्डारी, टैलुवा, कोतवाल और उपदेशी योगेश्वर सब मिलकर तथा खड़े होकर माता हिंगलाज की पारम्परिक आरती करते हैं।

(ट) आरती (माता हिंगलाज की)

हिंगलाज भवानी तेरी आरती। अच्छी निर्मल ज्योति जगे दिन राती।। टैक।।

सतयुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा काहे की तेरी बात, काहे के सिंहासन बैठे प्रह्लाद राज।

सतयुग मध्ये सोने का तेरा दीवड़ा सोने की तेरी बात, सोने के सिंहासन बैठे प्रह्लाद राज।।१।।

त्रेतायुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे का सिंहासन बैठे हरिश्चन्द्र राज।

त्रेतायुग मध्ये चान्दी का तेरा दीवड़ा, चान्दी की तेरी बात, चान्दी के सिंहासन बैठे हरिश्चन्द्र राज।।२।।

द्वापर युग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे का सिंहासन बैठे पांचों पाण्डव राज।

द्वापर युग मध्ये ताम्बा का तेरा दीवड़ा, ताम्बा की तेरी बात, ताम्बा के सिंहासन बैठे पांचों पाण्डव राज।।३।।

कलीयुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे का सिंहासन बैठे बलिचन्द राज।

कलीयुग मध्ये मिट्टी का तेरा दीवड़ा, मिट्टी की तेरी बात, मिट्टी के सिंहासन बैठे बलिचन्द राज।।४।।

युगा युगा मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ।

युगा युगा मध्ये सत्त का तेरा दीवड़ा, सत्त की तेरी बात, सत्त के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ।।५।।

हिंगलाज भवानी तेरी आरती। अच्छी निर्मल ज्योति जगे दिन राती।। भवानी तेरी आरती .....

आरती होने के पश्चात् सभी उपदेशी योगेश्वर (मानधारी) आरती लेते हैं। अर्थात् सभी ज्योतिओं को अचवाया जाता है।

(ठ) "कंगन विधि"

अत: पीरजी कंगन बाँधने को कहते हैं। कंगन बाँधना अर्थात् कलावा बाँधना जिसे मौली (लाल कच्चा सूत) द्वारा जब दाहिने कलाई पर मन्त्र द्वारा बाँधते हैं। इसका मतितार्थ होता है कि सभी का एकीकरण, एक विचार, कर्म के प्रति एक ही धारणा, एवं कर्म सम्पुष्टी तक वह व्यक्ति बन्ध जाता है। बड़ों से छोटे को कंगन बाँधना आर्शीवाद एवं

कृपा कहलाई जाती है तथा छोटे बड़ों को कलावा बाँधते हैं तो सम्मान-सेवा प्रेम भक्ति आदि प्रमाण होते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"सभी ज्योतिओं को एक तार कंगन अर्थात् कलावा बांधो"**,

अत: टैलुवा सभी ज्योतिओं को मौली कलावा बान्धता है या तो कलावा चढ़ा भी देता है।

पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"सभी मानधारी योगेश्वरों को एक तार में बान्धों"** अर्थात् सभी को मौली क्रमवार बान्धो।

अत: टैलुवा सभी मानधारियों को कलावा बान्धता है। इसमें कोई कोई कलावा बान्धने वाले को कलावा बान्धते बान्धते कुछ दक्षिणा भी देते हैं। दक्षिणा जिस (दाहिने) हाथ में बान्धते हैं उसी हाथ से उसी वक्त दक्षिणा देनी होती है।

अत: टैलुवा ज्योतियों तथा मानधारियों को कलावा बान्धते समय पीरजी निम्न मन्त्र का पठन करते हैं।

कंगन (कलावा) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। पहला कंगण=गुरु गणेश, गंगा गौरजा भस्म लपेट कंगण बान्धू कर पसार, रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ।।१।।

दूसरा कंगण पीरजी को दिना, अमर लोक में आसन किना।।२।।

तिसरा कंगण जोगनी ने लिना, उत्तराखण्ड में बासा किना।।३।।

चौथा कंगण साखियाँ का दिजे, चारो जुग कि साख भरीजे।।४।।

पांचवा कंगण वीर को दिजे, हाक मार कंटक की क्षय कीजे।।५।।

छठा कंगण कुबेर भण्डारी लिजे, ऋद्धि सिद्धि के आज्ञा लिजे।।६।।

सातवा कंगण टैलुवाकु बान्धे, टैल टैलुवा करे काज।।७।।

अन्त कंगन अनंत गादी को दिजे, अन्त काज अलिल पुरुष को साजे।।८।। इस कंगण के क्रिया कर्म को तारते, गुरु रेती कुण्ड केदार कंगन बान्धू। इता कंगन मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार मंत्र उच्चारण में टैलुवा सभी पीर, जोगनी, वीर, भण्डारी, अनन्त गादी, कोतवाल आदि सभी को कलावा बांधते हैं। यहां दर्शनार्थी उपदेशी योगेश्वर अलग से हों तो उनको भी कलावा बान्ध सकते हैं। अत: सभी नाथ सिद्ध (उपदेशी) योगेश्वर अपने अपने आसन ग्रहण करते हैं। यह कलावा बान्धने की विधि आरती के पूर्व भी कर सकते है।

(ड) माई का भोग विधि

पीरजी हुक्म करते हैं कि-"**भण्डार खोलो और भोग की तैयारी करो**", टैलुवा भण्डार का परदा, अर्थात् भोग के पात्र के ऊपर ढका हुआ वस्त्र हटाता है तथा इस वक्त पीरजी या टैलुवा भण्डार खोलने का मन्त्र बोलते हैं।

भण्डार खोलना (परदा हटाना) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कौन गुरु कौन चेला, कौन गुरु परमोद्धार, कौन गुरु ऋद्धि सिद्धि ले आये, कौन गुरु चेते भरे भण्डार खोल्या। ॐ गुरुजी, अलख गुरु निरन्जन

चेला शिव गोरख परमोद्धार गणेश गुरुजी ने चेते भरे भण्डार खोल्या। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

टैलुवा परदा हटाकर भण्डार खोलता है। अत: पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"भोग को ले आवो"** तथा मन्त्र बोलते हैं।

भोग लाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। फुरो ऋद्ध फुरो सिद्ध, फुरो आनन्दी माये। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो भंडार भोग ले आये।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

टैलुवा भोग पात्र जिसमें एक थाली में अलग-अलग कटोरियों में पंचमेवा (काजू, बादाम, अखरोट, छुवारा, गिरी आदि) रखें हो तथा ऊपर से लाल वस्त्र से ढका हुआ है। ऐसा भोग पात्र टैलुवा ले आता है और भण्डारी को देता है। अत: पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"भण्डारी भोग पात्र की स्थापना करो"**। भण्डारी बाला सुन्दरी पाट के सन्मुख भोग पात्र निम्न मन्त्र से स्थापित करते हैं। पीरजी या भण्डारी मन्त्र बोलते हैं।

पात्र थापने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कहो यह पात्र कहां से आया। यह पात्र पंच तत से आयां यह ऋद्धि सिद्धि कहां से आयी। यह ऋद्धि सिद्धि पाताल लोक से आयी। थापे पात्र अलील पुरुष की दुहाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं-**"भण्डारी माई को भोग लगावो"**।

अत: भण्डारी प्रथम निम्न मन्त्र से भोग पात्र (पंचमेवा) के ऊपर के सफेद वस्त्र को हटाते हैं।

परदा भोग (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो चक्राय, पीरजी बोल्या क्या देखा, भण्डारी बोल्या ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर पडदा सरकावो माई जोगन हजूर। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुये भण्डारी योगमाया पूजन के सभी ज्योतियों को भोग लगाते हैं।

भोग लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आया अलील आया अनाद-आद पात्र लिया जती गोरखनाथ, आद पात्र ले भोग लगावो भरी गत में ऋद्ध सिद्धि बरतावो गत गंगा प्रकाश कर राखे बरती ऋद्ध सिद्ध भयी भरपूर, आद पात्र चढाया गुरु गोरक्ष पीर। इता भोग मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार मन्त्र उच्चारण करते हुये भोग (पंचमेवादि) पात्र के ऊपर से तीन बार आचमनी से जल घुमाया जाता है तथा तीन बार भूमि पर जल छोड़कर स्वाहा: कहते हुये पंचमेवा थोड़ा थोड़ा भोग रुप में सभी (१०-१२) जोतियों के सन्मुख रख दिया जाता है। तथा सभी मानधारिओं को पंचमेवा प्रसाद थोड़ा-थोड़ा बांटते है। अत: वह प्रसाद ग्रहण नहीं करते खाये बिना ही वह प्रसाद पुन: भोग पात्र में डाल देते है। और सभी का मिस्र प्रसाद पुन: सभी को बांट देते है। यह प्रसाद सब ग्रहण कर सकते है।

[**मन्त्र सिद्धि:-** अमावस्या-पूर्णिमा के दिन इन सभी भोग विधि मन्त्र से देवता को मिष्ठान का भोग लगावे, भोजन सामग्री में कभी कमी नहीं आयेंगी।]

(ढ) भैरव भोग विधि

पुन: पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"भैरव जुगती का कुण्डा लाव"**। टैलवा भण्डार में से जुगती का कुण्डा अर्थात् भैरव अमृत प्याला ले आता है और भण्डारी को देता है।

पीरजी हुक्म करते हैं-**"भण्डारी कुण्डा थापन करो"**। तब भण्डारी निम्न मन्त्र से भैरव के पास (या कलश के पास) जुगती का कुण्डा स्थापन करते हैं।

भैरवजी के (पात्र) कुण्डा (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कहो सिद्धो यह कुण्डा कहां से आया, आकाश लोक से आया। कहां से थाप्या, भैरो ज्योत के पास थाप्या कुण्डा का हुक्म। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीर जी हुक्म करते हैं-**"भैरव जी को भोग लगावो"**।

अत: भण्डारी उपरोक्त विधि मन्त्र उच्चारण करते हुये जुगती का कुण्डा (जिसको पूर्व वर्णित जल पंचामृत भोग मिलाकर मिट्टी के पात्र बनाया हुआ था) वह केवल भैरव ज्योत के सन्मुख रखते हैं तथा शंखढाल के बाद में कलश के पास रख दिया जाता है। प्रथम भूमि पर अक्षत (आखा) का स्वास्तिक बनायें या जल का स्वास्तिक बनाकर भोग के लिये निम्न मन्त्र से भैरव जोत के पास जुगती का कुण्डा स्थापित करते हैं।

जुगती का कुण्डा स्थापना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। धर्ती हमारी पात्र बोलिये। आकाश हमारा थाल, सत शब्द अगम भिक्षा, ॐकार नाथ का बाल। कहो सिद्धों जुगत पात्र कहा से आया, आकाश

लोक से आया, भैरो ज्योत के पास थाप्या, थाप्या पात्र का हुक्म। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"केशर पात्र ले आवो"**।

टैलुवा भण्डार से केशर पात्र लेकर आता है।

भावार्थ = केशर यह सर्व गुण सम्पन्न वनस्पति है। अत: इसमें त्रिगुण (सत्व, राजस और तामस) प्रधान है तन्त्र क्रिया में केशर मिश्रित तिलक तथा हवन को विशेष प्राधान्य दिया है। कापालिक अघोरी तथा तामसी तंत्र विधान में केशर तथा कस्तूरी को विशेष प्राधान्य है। पूर्व काल में युद्ध करने जाने वाले वीर या योद्धा को केशर तिलक लगाते थे यह बलवर्धक, स्फूर्ति, चेतन एवं आक्रामक गुणों से पूर्ण है। राजसी गुणों से पूर्व समय में राज्याभिषेक में राज तिलक लगाते समय यह केशर कस्तूरी का विशेष उपयोग होता था। केशर पुष्टिवर्धक औषधी है। उष्णता निर्माण करने वाली वनस्पति है। केशर कस्तूरी अत्यन्त सुगन्धित होने के कारण सभी देवी देवता, सुर, असुर, नर, नारी का प्रिय है। विशेषत: कस्तुरी मृग की नाभी से मिलती है। यह अत्यंत प्रभावी, सुगन्धी प्रिय है।

यह योगमाया पूजन में भैरव के जुगती कुण्डा के भोग में तथा सभी शक्तियों के ज्योतियों में केशर कस्तूरी का भोग विशेष मन्त्र विधान से लगता है। जिससे सभी देवी देवता और शक्तियाँ सुगंध से प्रसन्न होकर बलवर्धक शक्तियाँ प्रदान करती है। पूर्वकाल में विद्या-ज्ञान इत्यादि भोजपत्र के ऊपर इसी केशर स्याही से साधू सन्त लिखा करते थे। मन्त्र, टोटके, तंत्र के सभी यन्त्र केशर स्याही तथा अनार के डंठल से लिखें तो वह यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र सिद्ध होकर कार्य सिद्ध करते हैं।

अत: टैलुवा पूर्व वर्णित दूध में तैयार किया हुआ केशर पात्र लाकर भण्डारी के हाथ में देते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"जुगती के कुण्डा में (कौली) केशर चेताओ"**।

भण्डारी निम्न मन्त्र से केशर का छींटा जुगत के कुण्डा में लगाते हैं।

जुगती कुण्डा में केशर चेताने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। परम सन्तोषी, तत से आयी, ब्रह्मा बोई विषन सिचाई शिव रमी, लीनी हित कर लाग, केशर चेतो जुगत की पावो प्राणी मोक्षद्वार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"भैरव ज्योत को जुगत कुण्डा का भोग लगावो"**। अत: भण्डारी उपरोक्त विधि से भैरव बीजीयाँ शोधन मन्त्र से भोग लगाते हैं। भैरव बीजीयाँ शोधन अर्थात् भैरव भांग अमृत पात्र को भैरव बीजीयाँ कहा जाता है। मुख्यत: भैरव को यही भोग लगता है तथा इसमें पंचामृत (दूध-दही-शहद-घी-जल) तथा केशर-कस्तूरी, भांग (बीजीयाँ) गुड़ यह सब मिला कर इसे भैरव अमृत प्याला कहते हैं। योगमाया के भाषा में इसे जुगत का कुण्डा (कौली) आदि नाम से जाना जाता है। अत: भण्डारी निम्न मन्त्र से भोग लगाते हैं।

भैरव बीजीयाँ शोधन मन्त्र (भोग मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। भैरव बाबा भैरौ बीजी, भैरव ज्योत जियाँ राती। ध्याया पात्र करो सुपात्र, चेते नर सुधरा चातुर-सुरति शब्द से चेते पात, रक्षा करें श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं-**"ज्योतियों को केशर चेताओ"**।

भण्डारी पूर्व वर्णित केशर पात्र से केशर लाल पुष्प द्वारा या हस्त अंगुली (अनामिका) द्वारा प्रत्येक ज्योति के ऊपर छिड़कते हैं और निम्न मन्त्र बोलते हैं।

ज्योत केशर चेताने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। शिव कर आऊ, शक्ति कर बैठू, गुरु प्रसादे कर केशर चेतावु ज्योत भवन में ज्योत उपाऊ आई केशर करु उपान्त, रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

(त) हरड़ विधि

इस प्रकार केशर विधि के बाद पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"माई को हरड़ पूजन करो" (चढावो)** यहाँ हरड़ का अर्थ होता है कि सब सन्त एकत्र होना, या नाथ सिद्धों का एक मता, सिद्धों का मेला आदि।

यहां बालासुन्दरी को हरड़ पूजन करके यह दर्शाया जाता है कि हम सब नाथ मिलकर, एकमत से नमस्कार आदेश करते हैं।

अत: टैलुवा भण्डार से एक पात्र में या पान ऊपर रखकर हरड लाकर भण्डारी को देता है भण्डारी हरड पर लाल सूत लपेटता है और बाला सुन्दरी को अखण्ड ज्योत के तले पूर्व-पश्चिम दिशायुक्त चावल के राशि पर खड़ा करके रखते ह। उस पर सिन्दर् तथा केशर धूपादि चढ़ाते हैं और पीरजी निम्न मन्त्र बोलते है।

हरड़ा चढ़ाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। हरड़ा आय मात का लीजे दो कर जोड़ पांच महेश्वर आज्ञा करे तो कंटक का सिर फोड़ पूर्व पश्चिम की गत मेला, सन्त आये बहुजात, वहां हरड़ा हुआ असबात, हरड़ा हरड़ा हर बरताओ, आवागमन मिटावो

कर चढे मुख पडे तिसकी रक्षा गुरु गोरक्षनाथजी करे। इता हरड मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः-** सोमवार या शनिवार ५ हरड़ को मौली बान्धकर एक घृत ज्योत लगावें हरड़ मन्त्र का २१ बार जाप करें और गांव के चारों दिशा को चार हरड़ गांव के बाहर रखें एक हरड़ घर में रखें। भूला भटका या गुम हुआ व्यक्ति घर आ जायेगा।]

(थ) पंच पात्र दान

इस प्रकार पूजन, आरती, भोग विधियाँ होने के पश्चात् पीरजी हुक्म करते हैं- **"पंच पात्र दान ले आवो"**

अतः टैलुवा भण्डार कक्ष में से पंच पात्र दान उठाकर ले आते हैं जिसमें पंच वस्त्र (भगवे) जैसे (१) धोती, (२) कुर्ता, (३) बण्डी, (४) साफा, (५) लंगोट कपड़ा इत्यादि जो मृतयोगेश्वर के नाम का होता है। अगर मृतात्मा तपस्वी हो तो अल्फी, कन्था, पर्ना, साफा, लंगोट इत्यादि तथा पांच प्रकार के बर्तन, थाली, लोटा, कटोरी, गिलास, चम्मच आदि पंच बर्तन स्टील के या पीतल या अन्य कोई भी धातु के चलते हैं। इसी प्रकार और भी झोली, कमण्डल, खड़ाऊ, चिमटा, त्रिशूल, खप्पर, नादी पावित्री जनेऊ, कुण्डल इत्यादि नाथ बाना को दान कर सकते हैं। इस प्रकार उपरोक्त पंच दान को पांच पात्र कहते हैं यह पंचदान मृतयोगेश्वर के नाम से नाथ सम्प्रदाय के सतनाथ ब्रह्मा के (उपदेशी) योगेश्वर को दिया जाता है या पीरजी को दिया जाता है।

अतः पीरजी को या सतनाथ पंथ के योगेश्वर को पंचपात्र दान करते समय निम्न पंच पात्र मन्त्र का उच्चारण पीर जी या कोतवाल करते है।

पंच पात्र मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। पहला पात्र आदिव्कारी गर्व किया सेवा हारी, दे परिक्रमा लागु पाव, पात्र झेल्या आनन्दीमाय।।१।।

दूसरा पात्र कवल की कलीया, गावत्री मार चक्र में धरया, ब्रह्मा की खेती विष्णु की धा, उठरे कपिला चरवे को जा दे परिक्रमा लागु पाव, पात्र झेल्या आनन्दीमाय।।२।।

तीसरा पात्र कुबेर भण्डारी, ऋद्धि, सिद्धि के आज्ञाकारी, उल्टी बाजी निर्मल खेल-चार युग सिद्धों का मेल दे परिक्रमा लागु पाव, पात्र झेल्या आनन्दीमाय।।३।।

चौथा पात्र वीर को दिजै हांक मार काल कन्टक की क्षय किजै दे परिक्रमा लागू पाव पात्र झेल्या आनन्दीमाय।।४।।

पांचवा पात्र टहिलुवा को दीजै परवाना को दिजै कर्ता करम देता हु हैला अक्षय काज कीजै चल, दे परिक्रमा लागु पाव, पात्र झेल्या आनन्दीमाय।।५।।

पात्र आवे पात्र जावै सौ सौ पात्र की करै आस, गयी पात्र की भ्रान्त तो करे वैकुण्ठ बास। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- इस मन्त्र द्वारा साधु, सन्त, नाथ सिद्धों को पंच वस्त्र, पंच धातु, पंच पकवान भोजन मार्जण तथा तर्पण करके दिया तो पितृओं का दोष खत्म होकर पितृओं को मुक्ति मिलेगी। यह विधि पितृ मास की अमावस्या को करें।]

उपरोक्त पांच पात्र गंगाजल छिड़ककर तथा जल गायत्री बोलकर शुद्ध किये जाते हैं। इस प्रकार कोतवाल मन्त्र बोलते रहते हैं और उपरोक्त पांच पात्र को फेरते रहते हैं। अर्थात् दान करते है।

(द) कुछ नियम

(१) वास्तव में यहां 'अथ्कर्म' शुरु होता है और सभी मानधारी आसन पर सावधान रहने चाहिये।

(२) दोनों साखियाँ एक साथ जोड़ते हुये चेतन करें तथा सभी ज्योतियाँ दोनों साखियाँ जोड़कर ही चेतन करनी चाहिये।

(३) भण्डार ज्योत चेतन के बाद ही भण्डार (भोग लेने के प्रित्यर्थ) खोला जाता है। तभी भण्डार खोलना चाहिए।

(४) अथ् श्री सुन्दरी बाला जाप बीज मन्त्र का पाठ करना अत्यावश्यक है क्योंकि यह मन्त्र इस कर्मकाण्ड में अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है।

(५) सभी ज्योति तथा पूजापाठ, कैलाश, भैरव, हिंगलाज आदि सभी के ऊपर केशर चेताना आवश्यक है।

(६) आरती में सभी सन्तों का खड़े होना अनिवार्य है।

(७) कंगन विधि के बाद सभी सन्त पुन: आसन ग्रहण कर सकते हैं।

(८) माई का भोग (पंचमेवा) माई के पाट के सन्मुख एवं भैरव का भोग (जुगती कुण्डा) भैरव ज्योत के सन्मुख ही लगाना चाहिए।

(९) जुगती का कुण्डा पूजन आरती के बाद कलश के पास रखना चाहिए।

(१०) पंच पात्र दान सतनाथ ब्रह्मा के योगेश्वर (उपदेशी) को देना चाहिये या सतनाथी पंथ के योगेश्वर न मिले तो पीरजी को दान दे सकते हैं।

(११) पंच पात्र शुद्ध (जल छिड़ककर) करके दान करना चाहिये।



(१२) पुतला संस्कार विधि

पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"पुतला ले आवो"**। अत: टैलुवा डाव अर्थात् कुशा की जड़ का बना हुआ पुतला जो कि (दो, चार, छ:, आठ ..... इस प्रकार सम संख्यात्मक होना चाहिये) ले आता है। जो कि मृतयोगेश्वरों के नाम का (जिनकी शंखढाल करनी है) होता है। अत:

भावार्थ :- यह पुतला कुशा की जड़ से बनाने का कारण यह है कि धर्मशास्त्रानुसार तथा वेदानुसार भावार्थ यह है कि कुशा अथवा उसकी जड़ आयुष्य वृद्धि एवं अमरता का प्रतीक है, यह कुशा वनस्पति दूषित वातावरण शुद्ध करने का सामर्थ्य रखती है। अत: इसे अत्यंत पवित्र माना जाता है।

जिस प्रकार काया वाचा, मन, चित्त, बुद्धि आदि शुद्ध एवं पवित्र किये बिना प्रभु भक्ति या ईश्वर साक्षात्कार या आत्म साक्षात्कार नहीं होता या तन्त्र मन्त्र साधना सिद्धि नहीं होती। उसी प्रकार यह कुशा कुदरती शुद्ध एवं पवित्र होने के कारण उससे बने हुये पुतले में मृतात्मा की आत्मा अवश्य प्रवेश कर अपना कार्य सिद्ध कर लेती है तथा विशेष रुप से कुशा पर मन्त्र-तन्त्र क्रिया भी त्वरित परिणामकारक सिद्ध होती है। अत: कुशा (डाव) से पुतला बनाने की प्रथा नाथ सिद्धों में प्रचलित हुई। पूर्व काल में सप्त धान्य अर्थात् सप्त अनाज के आटे का पुतला बनाया जाता था। जो तन्त्र मन्त्र सिद्ध था। किन्तु शंख ढालते हुये जल से वह पुतला पिघल जाता था वैसे सप्त धान्य में काले उड़द के आटा का उपयोग करने से पुतला पिघलता नहीं। अत: सप्त धान्य का पुतला इस कर्म में विशेष प्रभाव डालता है। क्योंकि सप्त धान्य का सीधा सम्बन्ध सप्त स्वर्ग स्वरुप सप्त सीढ़ी, सातों देवी एवं ऋद्धि सिद्धि भरपूर से है।

सृष्टि के अर्थात् पृथ्वी के परिक्रमा के बाहरी कवच में सात प्रकार

की वायु बहती है। जिनका विशेष प्रभाव हम जीव जन्तु पर होता है अपितु वह वायु के सात पट्टे पृथ्वी की रक्षा करते हैं। सप्त धान्यों में उन्हीं के गुण विशेष मिलने के कारण सप्त धान्य विशेष परिणाम-कारक है। वायु के सात पट्टे (कवच) सात स्वर्ग ही हैं। जिनमें सूक्ष्म रुप में आत्मायें निवास करती हैं। जो आत्मा इन सात पट्टों के अर्थात् सात स्वर्ग के परे अर्थात् सृष्टि के बाहर ब्रह्माण्ड में प्रवेश करती है वह शक्यतो मुक्ति को प्राप्त होती है। अत: यह सप्त धान्य इस कार्य में विशेष सहयोग करते हैं। विशेषत: सप्त धान्य का पुतला में आत्मायें (उन सात स्वर्ग या सात वायु लहरीयों में जो सूक्ष्म रुप में विचरते हैं) सप्त धान्य के विशेष आकर्षण गुण के कारण जल्दी प्रवेश करती है। यहां तन्त्र मन्त्र क्रिया होने के पश्चात् पुतले की छाती के ऊपर हल्का सा हस्त स्पर्श करके देखने पर पुतले की दिल की धड़कन महसूस होती है और पूर्वकाल में यह सप्तधान्य से बनाये हुये पुतले मन्त्र तन्त्र प्रभाव से अपने आप कैलाश की बनाई हुई सोने की सीढ़ी पर पौड़ियाँ चढ़ जाते थे। अर्थात् सप्त धान्य (अनाज) का आटा शास्त्र शुद्ध, विज्ञान सिद्ध एवं तान्त्रिक सिद्ध माना जाता है। विशेष घोर-अघोर कापालिक तन्त्र क्रियाओं में इसका उपयोग अवश्य करते हैं।

कुछ प्रयोग

(१) सप्त धान्य (अनाज) आटे का दीपक सरसों के तेल में चेतन कर उसे कालिख लगाके शनिवार, मंगलवार, अमावस्या, पूर्णिमा के दिन संध्या को व्यक्ति के ऊपर सात बार उतारकर चौराहे पर रख देने से बाहरी बाधा या ऊपरी बाधा टल जाती है।

(२) सप्त धान्य कि रोटी बनाकर रोटी की एक परत कच्ची और एक परत पक्की होनी चाहिये कच्ची के तरफ सरसों का तेल लगावें और पक्की की तरफ तवे का कालिख लगावे शनिवार, अमावस्या,

पूर्णिमा या ग्रहण काल में व्यक्ति के ऊपर से सात बार उतार कर उसके चार भाग करें और अपने घर या गांव की चारों दिशाओं में फेंक देने से व्यक्ति की समस्त बाधायें दूर हो जाती हैं।

(३) तांत्रिक सिद्धी के लिये सप्त धान्य दीपक ज्योतियों का उपयोग किया जाता है।

(४) हवन में बलि चढ़ाने के लिये सप्त धान्य का प्राणी बनाकर भी बलि दी जाती है। लेकिन यह अघोरी, तामसी, कापालिक कर्म है यह न करने में ही भलाई है।

(५) दीपावली के दिन सप्त अनाज की सात राशियाँ घर या मन्दिर में बनाकर महालक्ष्मी की पूजा आराधना मन्त्र जप साधना करने से लक्ष्मी साक्षात्कार होता है तथा कृपा होकर घर धन-धान्य ऋद्धि-सिद्धि से भर जाता है। यह विधि मध्य रात्रि में करते है।

(६) सप्त धान्य (अनाज) - इस प्रकार के सप्त धान्य अनिष्ट ग्रहों को प्रसन्न करने के लिये और उनसे अपने कार्य सिद्ध करने के लिये ग्रहों के रंग, गुण विशेष अनुसार धान्यों का दान तथा उसी रंग का सवा मीटर कपड़ा, ताम्बे का पैसा, तेल व घी इत्यादि का दान किया जाता है। जैसे-

ग्रह	रंग/वस्त्र	अनाज का दान	तेल
सूर्य (रवि)	लाल	मसूर दाल	मसूर/बादाम
मंगल	पीला	ज्वार	तिलका
बुध	हरा	हरामटर	चमेली, निरगुडी
गुरु,सोम	पीला	चना/तुअर दाल	तिली का
शुक्र	सफेद	चावल	गोले का
शनि, राहू, केतु	काला	साबुत उड़द/तुअर दाल	सरसो

इत्यादि सप्तधान्य अत्यन्त उपयोगी है।

अत: पीरजी के हुक्म अनुसार टैलुवा (समसंख्या) कुशा के जड़ का पुतला लेकर आता है और पीरजी के सन्मुख रखता है।

यहां माई के पाट सन्मुख परदा लगाते है और पुतले को संस्कार करने के लिये टैलुवा एक एक पुतला ..... जिससे पीरजी को देना है और पीरजी उसका संस्कार करना प्रारम्भ करते हैं।

अत: पीरजी हुक्म से पूछते हैं-**"कौन नाम से पुतला आया"**

टैलुवा जवाब देता है-यहां मृतयोगेश्वर जिसके नाम से शंखढाल कर्म कर रहे हैं। उस योगेश्वर का नाम (पुतले रुप में) बताते हैं।

टैलुवा = **"श्री .....नाम से पुतला आया"**

पुन: पीरजी हुक्म से पूछते हैं:-**"कौन गुरु की छाया, कौन पंथ से अदल में आया"**। (अर्थात् मृतात्मा के सतगुरु का नाम तथा पंथ का नाम पूछते हैं।)

अत: टैलुवा मृतात्मा के सतगुरुजी का नाम तथा पंथ बतलाता है।

टैलुवा = **"श्री ..... (अमुक) सतगुरु की छाया ..... (अमुक) पंथ से अदल में आया"**।

अत: पीरजी निम्न **"अथ सुर जीवन बाला"** मन्त्र का उच्चारण करते हैं और टैलुवा पुतले के ऊपर अक्षत (आखा) चढ़ाता है।

सूचना एवं भावार्थ :- जब मृतात्मा के नाम से केवल एक की ही शंखढाल क्रिया करते हैं तब उसके साथ भूला भटका नाम से तैयार किया हुआ पुतला भी विधि में लिया जाता है और मृतात्मा के पुतले के साथ-साथ उसीका भी विधि कर दिया जाता है।

भूलाभटका पुतला बनाने का आशय यह है कि एक तो शंखढाल केवल एक मृतात्मा की होती नहीं इसलिये भूलाभटका पुतला बनाया

जाता है। दूसरा इसका मुख्य आशय यह है कि अगर कोई अज्ञात महात्मा जो नाथ सम्प्रदाय का हो तथा उपदेशी हो उसने अगर गुप्त विधि से, अज्ञात विधि से मृत होकर समाधि ले ली हो, या कोई महात्मा अचानक लुप्त हो गया हो या कोई अपघात में या जल में मृत हो गये और उनकी काया (शरीर) नहीं मिली हो और इस कारण उनकी समाधि भी उपलब्ध न हुई हो तो ऐसे अज्ञात उपदेशी योगेश्वर अपने शंखढाल क्रिया के अनुराग में आत्मरुप होकर विचरते रहते हैं और जब ही जहां भी नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वर शंख ढाल क्रिया करने में भूलाभटका पुतला बनाते हैं उसमें ऐसे उपरोक्त योगेश्वर आप ही आप उस भूले भटके पुतले में (सूक्ष्म) आत्म रुप में प्रवेश करके अपना अन्तिम शंखढाल कर्म गुप्त रुप में कर लेते हैं और मुक्ति को प्राप्त हो जाते हैं।

अत: इन योगेश्वरों का ना नाम का पता होता है ना उनके पंथ का और ना उनके गुरु का अत: इन्हें भूला भटका स्वरुप में ही शंखढाल क्रिया करवायी जाती है।

अत: यहां योगमाया कर्म पुतले संस्कार में कोई-कोई भूलाभटके पुतले को केवल साथ में रखते हैं। तो कोई-कोई उसका भी पूर्ण विधि करते हुये समाधि दे देते हैं। अर्थात् यह क्रिया आत्मसाक्षात्कारी महात्माओं पर निर्भर है। अत: वह समय पर ही सूक्ष्म रुप में जान सकते हैं कि इस अलग से बनाये हुये भूले भटके पुतले में कोई आत्मा आयी हुयी है और वह उसकी पूर्ण विधि कर देते हैं।

अत: पीरजी पुतले का नाम, गुरु का नाम, पंथ आदि पूछने पर टैलुवा केवल भूलाभटका नाम से ही जवाब देते हैं।

अत: यहां पीरजी निम्न सुरजीवन बाला के मन्त्रोच्चार करते हैं। टैलुवा दोनों पुतले पर आखा छोड़ता है।

अथः सुर जीवन बाला (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो अकारे ब्रह्मा बकारे विष्णु सत शब्द नेचे गुरु आय आप वाया मूल मूल पाया पान पान पर आया कूर कूर पर आया फूल फूल पर आया फल फल की छाया कौन बैठे आपका नाम क्या अदल अदल कहा से आया सुन्न महासुन्न से आया सूके ते हरिया किया एक एकी निराभेखी अदल पाया जीव कहे महादेव सून पार्वती सूर जीवण बाला ले उतरो पार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

उपरोक्त मन्त्र उच्चारण के समय टैलुवा पुतले को अक्षद चढ़ाता है।

पीरजी पूछते हैं-**"दर्शनी है या औघड़"**

टैलुवा कहता है **"दर्शनी है।"**

यहां मृतक योगेश्वर औघड़ होगा तो कर्ण छेदन संस्कार करते हैं।

पीरजी कहते हैं-**"कर्ण संस्कार करो"**।

अतः पीरजी चिरा मन्त्र बोलते हैं और टैलुवा कर्ण संस्कार पान (खाने के पान को) को चिरा देकर करते हैं।

चिरा मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सार की छुरी सत्य की धार चीरो योगी अलष पुरुष अपरम्पार पाचवे मुख मुद्रा करी राखो धरती धारण रुप बनाय अलष पुरुष को दर्श बताय, सच्चा सद्गुरु शब्द सूनाय, बीज मन्त्र का ध्यान लगाय, आंच बारु धीरज धर्म बसाय सतगुरु मेरे भ्रम भगाय। दिय दरदो दीदार बताय सच्चा सुमरु साचो साच अन्तर हृदय में आग लगाय संग कला सगुण पाऊ गायत्री सावित्री पार्वती उपदेश ॐ नमः


पुतला संस्कार
सप्त धान्य का पुतला
कुशा/बांस का पुतला



मानधारियों की बाला सुन्दरी पूजन विधि

शिवाय रक्षा करे श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी बाला। इतना चिरा मन्त्र सम्पूर्ण भया अनन्त कोटि सिद्धो में बैठकर गुरु गोरक्षनाथजी ने सुनाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- इनका विधान श्री नाथ रहस्य खण्ड ३ में पृ.सं. ४७० पर दिया है।]

अतः पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"पुतले को कुण्डल पहनाओ"**। टैलुवा कुशा के या आटे के बनाये हुये कुण्डल पुतले के कानों में पहनाता है और पीरजी मन्त्र बोलते हैं।

दर्शन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नाद सों मुद्रा कौन मुद्रा खेचरी बोलिये कौन मुद्रा भोचरी बोलिये। कौन मुद्रा धरे ध्यान। कौन मुद्रा कथे ज्ञान। ॐ ताम्बे की मुद्रा खेचरी बोलिये स्पटिक की मुद्रा भोचरी बोलिये। गण्डे की मुद्रा धरे ध्यान। मृतक की मुद्रा कथे ज्ञान। श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी के कान। नीचे धरत्री उपर आकाश। रक्षा करे श्री दादा मत्स्येन्द्र नाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- श्री नाथ रहस्य तृतीय खण्ड पृ० सं० ५१९ पर विधि विधान दिया है।]

पीरजी का हुक्म करते हैं- **"पुतले को भगवा पहनाओ"**। टैलुवा भगवा या लाल वस्त्र पुतले को पहनाता है तथा पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ भगवे का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सों

धुन्धुकारा शिवशक्ति ने मील किया पसारा नख चीर भग बनायां रक्त रुप में भगवा आया। अलष पुरुष ने धारण किया। तब पिछे सिद्धो को दिया। आवो सिद्धों धरो ध्यान भगवा मन्त्र भया प्रमाण इतना भगवा मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

पीरजी हुक्म करते हैं-"पुतले को नाद जनेऊ पहनावो"। टैलुवा कुशा की बनी हुयी नादी पवित्री या आटे की नादी पवित्री पुतले को पहनाता है और पीरजी नाद जनेऊ का मन्त्र बोलते हैं।

★ नाद जनेऊ का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि में शून्य, शून्य में ओंकार, आओ सिद्धो नाद बिन्द का करो विचार नादे चन्द्रमा नादे सूर्य नाद रहा घट पिण्ड भरपूर नाद काया का पेखना बिन्द काया की राह नाद बिन्दे योगिया तीनों एक स्वभाव बाजे नाद भयी प्रतित आये श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी अतित। नाद बाजे काल भागे ज्ञान की टोपी गोरक्ष साजे। डंकनी शंखनी टिल्ले बाल गुन्दाई बाडे घाटे टल्ल जागे सून सकेसर पीर पटेश्वर नगर कोट महामाई। टिल्ला शिवपुरी का स्थान चार युग में मान, मूल चक्र मूल स्थान पढ मन्त्र योगी नाद बजावे छत्तीस भोजन अमृत कर पावे। बिना मन्त्र पढे योगी नाद बाजवे तीन लोक में कही ठौर न पावे। जो जाने नाद बीन्द का भेव, आप ही कर्ता आप ही देव सन्ध्या शिवपुरी का बेला, अनन्त कोटी सिद्धो का युग युग मेला। इतना नाद जनेऊ मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[मन्त्र विधानः- श्री नाथ रहस्य प्रथम खण्ड पृ. सं. ४६७ पर सिद्धि विधि दिया है]

अतः पीरजी हुक्म करते हैं कि-**"पुतले को तिलक करो"**। टैलुवा, पुतले के मस्तक पर केशर का तिलक लगाते हैं और पीरजी मन्त्रोच्चारण करते हैं।

तिलक दान

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरु को। तिलक तिलक, तिलक माई, केशर तिलक कहासे आई। केशर तिलक कैलाश से आई। कौन बोई कौन सिन्चाई। ब्रह्मा बोई विषण सिंचाई। शिवशक्ति ने हित कराय। केशर चेते आनन्दी माय। ज्ञान कुन्जी खुली ब्रह्माण्ड की ताली, तारा त्रिकुटा तोतला तिनों भ्रूमध्य कपार तिलक चढै शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्षद्वार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भावार्थ :- नाथ सिद्धों का मुख्य ध्यान केन्द्र मस्तक में बसे आज्ञा चक्र पर एकाग्र होता है। नाक के नोक से लेकर मस्तक भाल तक ब्रह्मग्रंथी, विष्णु ग्रंथी तथा रुद्र ग्रंथियों का सम्बंध होता है। ध्यान की एकाग्रता इस आज्ञा चक्र पर होने पर यह ग्रंथियाँ समावित होकर ब्रह्मानन्द, आत्मानन्द एवं कैवल्यानन्द का अनुभव होता है। इसे शाम्भवि मुद्रा भी कहते हैं। भ्रूमध्य यह एक ऐसा चेतना केन्द्र है जो समस्त ज्ञान, चैतन्य-आनन्द एवं आत्मसाक्षात्कार करवाता है। इसे दिव्य नेत्र, ज्ञान चक्षु, तीसरा नेत्र आदि नामों से सम्बोधित करते हैं।

जब यहां विशेषतः केशर तिलक लगाने से आज्ञा चक्र में चेतनता आने लगती है वहां योगी की शक्ति ऊर्ध्वगामी होती है और ओज तेज बढ़ जाता है। तिलक लगाने के भावनात्मक श्रद्धा से योगी का ध्यान बाकी अंगों से हटकर मस्तक आज्ञा चक्र में एकाग्र होने को सहायक होता है। यहां चन्दन, केशर, कस्तूरी, अष्टगंध, भस्मी आदि तिलक लगाते हैं। इनके गुण विशेष प्रभाव का निर्माण होकर मस्तक चक्र में

तरावट, ठंडक, शान्ति, शीतलता, प्राप्त होती है। उनके सुगंध के कारण प्रसन्नता चैतन्यता को योगी प्राप्त होता है।

तिलक, टीका लगाने के कुछ गुण विशेष

(१) गुरुमन्त्र या चन्दन मन्त्र से चंदन तिलक लगाने से शान्ति को प्राप्त होंगे।

(२) केशर मन्त्र से केशर तिलक लगाने से स्वयंबोध होकर माया एवं ब्रह्म का ज्ञान होगा।

(३) भस्मी गायत्री मंत्र से भस्मी रमायें या त्रिपुण्ड लगायें तो वैराग्य-त्याग की भावना निर्माण होगी।

(४) कस्तूरी तिलक लगाने से राजसी भाव निर्माण होकर राजयोग की प्राप्ति होती है।

(५) सिन्दूर तिलक = श्रृंगार एवं माया का प्रतीक है।

(६) अष्ठगंध तिलक - सिद्धि प्रधान है।

(७) काला टीका - घोर-अघोर-कापालिक क्रिया का प्रयोजन करता है।

इस योग माया कर्म में सिन्दूर तथा केशर तिलक को प्रधानता दी है। यहां पुतले को केशर तिलक दान करने से उस मृतात्मा को स्वयं बोध होकर माया क्या है? ब्रह्म क्या है? ब्रह्ममय माया को ज्ञान द्वारा अलग करते हुये स्थूल से सूक्ष्म में मुक्ति को प्राप्त होने को यह तिलक दान सहयोग करता है।

इस प्रकार पुतले को कुण्डल, भगवा, नाद जनेऊ तिलक दान आदि श्रृंगार करते हुये पीरजी निम्न गोरक्ष पंचमात्रा एक लाल पुष्प पुतले पर रखकर सुनवाते हैं।

गोरक्ष पंच मात्रा

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कहो रे बालक किस मूण्डा किस मुण्डाया किसका भेजा नगरी आया। सतगुरु मुण्डा लेख मुण्डाया। गुरु का भेजा नगरी आया। चेताऊ नगरी तारु गांव अलष पुरुष का सिमरु नाम। गुरु अविनाशी खेल रचाया अगम निगम का पंथ बताया ज्ञान की गोधड़ी क्षमा की टोपी जत का अडबंद, शील लंगोटी। आकार खिन्था, निराश झोली युक्ति का टोप, गुरुमुख की बोली धर्म का चोला सत्य की सेली मरी जात मेखले गले न सेली। ध्यान का बटुवा, निरत का सुईदान ब्रह्म अचला पहिने सुजान। बहुरंगी मोरद्वल, निर्लेप दृष्टि निर्भीजन डोरा न कोई सृष्टि। जाप जपोटा शिव सा दानी। सिंगी शब्द गुरुमुख को बानी। सन्तोष सूत-विवेक धागा-अनेक टिल्ली तहां जा लागा। शर्म की मुद्रा शिव विभूता, हर वक्त मृगयानी ले पहिने गुरु पूता। सूरत की सूई, सतगुरु सेवे जो ले राखे निर्भय रहे सेली कहे शील को राख हर्ष शोक मन मे नहीं भाख। चोरी यारी निद्रा परिहरे। कामक्रोध मल सूत्र न धरे। इतना गोरक्षनाथजी की पंचमात्रा जाप सम्पूर्ण भयां श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[मन्त्र सिद्धिः- यह मन्त्र नित्य ४१ दिन ११ बार जपने से सतगुरु की प्राप्ति होगी।]

उपरोक्त गोरक्ष पंचमात्रा मन्त्र पुतला फूंकने के पूर्व पुतले को सुनाना आवश्यक है जिससे मृतात्मा को गुरुतत्व एवं माया वैराग्य का बोध होता है।

(क) पुतले को (फूंका) मन्त्र संस्कार

इस प्रकार उक्त पुतला तैयार होने के बाद पीरजी पुतले के कानों

में फूंका मारते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अथः पुतले को फूंका देने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो आदेश अजूनी शंकर महासून्न महादेव ओं बीज सो शक्ति, ओं गुरु सो ब्रह्म नृगेश्वर लिंग्ये आकार, ओं इलीं बीजं अमरं असंख युग तत परकाश परमहंस परमहंस आत्मा परमात्मा स्थूल अलख पुरुष उचरन्ते बोलता पुरुष सब लहन्ते अलख लखाई विद्महे अलख लखाई धी मही तन्नो अलख लखाई प्रचोदयात।। इति फूका।।

सूचना :- निम्न नियम से पुतले को फूंका मारते हैं।

यहां पुतला को फूंका मारते समय अगर एक पुतला हो तो उपरोक्त मन्त्र से पीरजी फूंका मारते हैं।

दो पुतले हो तो उपरोक्त मन्त्र से एक पुतले को पीरजी और दूसरे पुतले को जोगन फूंका मारते हैं।

चार पुतले हों तो, उपरोक्त मन्त्र द्वारा पहला पीरजी, दूसरा जोगन, तीसरा साखियाँ तथा चौथा पुतले को वीर फूंका मारते हैं।

अगर छः पुतले हो तो उपरोक्त मन्त्र से क्रम से पीरजी, जोगन, साखियाँ, वीर फिर अनन्त गादी, भण्डारी इस प्रकार से बांटकर फूंका मारते हैं और अग्रिम विधि से ठीकरे में रखते हैं।

इस प्रकार ८-१०-१२-१४-१६ ..... आदि पुतले को केवल एक बार एक फूंका मारते हुये ठीकरे में स्थापित करते हैं।

भावार्थः- पूतले को फूंका तथा उपदेश देने का भावार्थ यह है कि मृतात्मा के पूर्व काल के गुरु मन्त्र संस्कार को जाग्रत कराके अपने तपस्या (सतआचरण इत्यादि) बल से फूंका मारते समय मन्त्र संस्कार या शक्ति संक्रमन करते हैं और इसी समय पुतले में आत्मा चेतना

जाग्रती संभव होती है क्योंकि जैसे पूर्व संस्कार या मन इच्छाओं से जैसे पुनर्जन्म होते हैं वैसे इस मृतात्मा के गुरु मन्त्र दीक्षा का पूर्व संस्कार (फूंका मारने से) जाग्रत होकर मृतात्मा की आत्मा चेतन हो जाती है।

जिससे आगे का सभी कर्मकाण्ड भी सुलभ हो जाता है। अर्थात् पुतले को फूंका मारने का कर्म अतिषय सावधानी से करना चाहिये अर्थात् फूंका मारने वाले महात्मा सक्षम परम योगी आत्मसाक्षात्कारी होना आवश्यक है। क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जब मन्त्र दीक्षा दी जाती है (यहां कान में फूंका मारा जाता है) तो अपने द्युतिमान मन्त्र विर्य को सम्प्रेषित करके तपस्या योगसाधना या महायोगज्ञान ऐसी शक्तियों से परिपूर्ण होना बहुत जरुरी है। जो कि सतगुरु का मन्त्र शब्द परमज्ञान शिष्य को विस्मयकारी नव जीवन प्रदान करता है जो कि वह मुक्ति मोक्ष तक प्रदान कर सकता है।

अत: पुतले को मन्त्र दीक्षा (फूंका मारकर) देने के पश्चात् उसे उपदेश देने का अधिकार अनायास ही हो जाता है। तब पीरजी या उत्तराधिकारी पुतले को उपदेश मन्त्र द्वारा दे देते हैं।

(ख) उपदेश एवं स्थापना

अत: पीरजी निम्न मन्त्र से पुतले को उपदेश देकर ठीकरा में स्थापित करते हैं।

अथ उपदेश (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गौरी शंकर आप अलख ब्रह्मा विष्णु को दिया उपदेश, सत का आसन दिया बिछाय सतगुरु बैठे आय, ओं सिंगी सों नाद बजावे तब ईश्वर गुरु मन्त्र पावे अलख लखाई विद्महे महा अलख लखाई धी मही तन्नो अलख लखाई प्रचोदयात्।।

(पुतला कुण्डे में संस्थाप्य-गुरु बिचार उत्थाय जोत अग्रे उपविश्य कर साना प्रक्षल्य अक्षत गृह।। अखण्ड जोत के पगे लागने का।।

अर्थात्-पीरजी पुतले को दोनों हाथों से उठाकर ठीकरे में (कैलाश के सन्मुख) खड़ी अवस्था में स्थापना करते हैं और गुरु हुक्म से अक्षत ग्रहण करते हैं जो कि अखण्ड ज्योति को नमन करने के लिये।)(चि. क्र. ९ में 'ब' देखे।)

अत: पुन: मन्त्र बोलते हैं।

ॐ बीज मन्त्र होया परकाश देव देवत्या किया प्रकाश आदरुपी कलश थाप्या निरन्जन की जोत बैठे अमिया जोगन बैठी, ब्रह्माजी साखियाँ बैठे, विष्णु जी वीर बैठे, अनाद जी भण्डारी बैठे, चन्द्रमा कोतवाल धर्ती का पद्म पाट रचाया नौ लख तारा साध तराया खण्ड खण्ड दीप दीप जोत जगाई साध कीजे सुक्त काम बीज मन्त्र मुक्त का धाम बीज मन्त्र बिन लीजे नाम औघड़ घाट घड़ीजे फेर त्रिकाले मध्याने जपते सो नर निरन्जन को लभन्ते। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

भावार्थ :- इस प्रकार मन्त्र दीक्षा एवं उपदेश देने का अधिकार पीरजी को तथा उत्तराधिकारी को दिया जाता है जो इन कर्मकाण्ड में सक्षम होते हैं। अत: उपरोक्त उपदेश का भावार्थ यह है कि हे मृतात्मा सतगुरु सत्य के आसन पर विराजमान अलख निरन्जन आदिनाथजी ने (अलख लखाई) ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शंकर) तथा गौरी (शक्ति) को (अलख लखाई) मन्त्र उपदेश दिया और सत्य का ज्ञान देकर उपदेश दिया जो ओहं सोहं अर्थात स्वास-प्रस्वास या प्राण अपाण रुप से सिंगी का नाद बजाये (अर्थात् शिष्य सतगुरु के चरणों में नादि बजाकर आदेश करते हैं) इसी प्रकार आदिनाथजी को सतगुरु सत्य के आसन पर, शिष्य रुप में शिव-शक्ति, ब्रह्मा विष्णु जी ॐ-सों रुप में

नादी बजाकर आदेश करते हैं, नमस्कार करते हैं।

तब वह परम ईश्वर ॐकार रुपी आदिनाथजी मन्त्र कहते हैं कि **ॐ अलख लखाई विद्महे महा अलख लखाई धी मही तन्नो अलख लखाई प्रचोदयात्।।**

पीरजी मन्त्र द्वारा ऐसा पूर्व ऐतिहासिक प्रसंग सुनाकर पुतले को ठीकरे में स्थापित करके आगे पुन: उपदेश देते हैं कि जिस प्रकार यहाँ नाथ सिद्धों ने योगमाया पूजन शंखढाल कर्मकाण्ड में बीज मन्त्रोच्चार करके तन्त्र क्रिया से सभी देवी देवताओं को आमन्त्रित कर ज्योतियों का आकाश मण्डल (स्वर्ग के समान) तारे, ग्रह नक्षत्रों का प्रकाश किया है जहां निरन्जन रुपी गोरक्षनाथजी के नाम कलश स्थापना किया है। जती सती ज्योती रुप में बैठे हैं। जहां जोगनी रुप में अमिया (पार्वती) बैठी, साखियाँ रुप में ब्रह्माजी, वीर रुप में विष्णु जी, भण्डारी रुप में अनादजी, कोतवाल रुप में चन्द्रमा बैठे हैं तो (बाला सुन्दरी का) माई पाट धरती स्वरुप में रचाया है और नवलख तारामण्डल रुप में देवी देवता जो ज्योतियाँ (दीप) जगाकर स्वर्ग रुपी कैलाश मुक्ति धाम रुप रचाया है। जो उपरोक्त बीजमन्त्र का जाप करनेवाला नर, साधू सन्त अतएव वह मृतात्मा मुक्त होकर निरन्जन पद को प्राप्त करता है। अर्थात् मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार अतिषय सत्यम् शिवम् अर्थात् कल्याणमय एवं सुन्दरम् तथा मृतात्मा के प्रति यथार्थ मन्त्रोपदेश देकर योगमाया का मुख्य अंश मुक्ति मार्ग का सिद्धान्त दर्शाया गया है।

(ग) कुछ नियम

(१) पुतला कुशा की जड़ का बनाना योग्य है।

(२) सप्त धान्य का पुतला योग्य गुरु मार्गदर्शन में बनाना चाहिए।

(३) पुतले समसंख्या (२, ४, ६, ८ ... इत्यादि) में लेना चाहिये।

(४) मृतात्मा औघड़ होंगे तो कर्ण संस्कार आवश्यक है नाथ परम्परा में दर्शनी योगेश्वर जल्द मुक्त होते हैं।

(५) पुतला फूंका मारने के पूर्व गोरक्षनाथ पंचमात्रा अवश्य सुनाना चाहिये।

(६) पुतलों की संख्या अनुसार दर्शाये हुये नियम क्रम से मानधारियों द्वारा फूंका मारना चाहिये।

(७) फूंका मारने वाले महात्मा का सक्षम एवं आत्मसाक्षात्कारी होना आवश्यक है।

(८) पुतले को उपदेश मन्त्र सुनाना चाहिये।



पूतले को (कान में) फूंका मारने का संस्कार

(१३) आदेश नमन एवं शंखढाल विधि

अत: इस सुचारुबद्ध योगमाया पूजन में माई का चौक, अखण्ड ज्योत, कलश, कैलाश, भण्डार आदि चेतन देवी देवता रुपी ज्योतियों को अब सभी मानधारी पीर, जोगनी, साखियाँ, वीर, भण्डारी, अनन्तगादी, टैलुवा, कोटवाल आदि सभी एक वार क्रम से नमस्कार-नमन करते हैं। मान सम्मान देते हैं। तद्पश्चात मानधारियों को आदेश करते हैं। तदनन्तर (कैलास स्थान जाकर) पुतले को शंख ढालने का कर्म करते हैं।

(क) पीर जी का आदेश-नमन विधि

ज्योत-पाट को आदेश करने की विधि

अत: पीरजी बाला सुन्दरी पाट के सन्मुख के आसन पर स्वास्तिक या पद्मासन लगाकर बैठते हैं और निम्न मन्त्र बोलकर विनती करते हैं।

प्रार्थना मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ दर्शन कीये सुख उपजे सुफल हमारी जात, पांच महेश्वर आज्ञा करते तो सीस नमाऊ मात, श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अत: निम्न मन्त्र से टैलुवा पीरजी को आखा (अक्षत) देता है और पीरजी वह आखा (अक्षत) और दक्षिणा बाला सुन्दरी के अखण्ड जोत को चढ़ाते हैं।

अक्षत मन्त्र

ॐ उत्तर दिशा से जोगन आयी आद कुवारी का उपदेश अक्षेत बर्से जोगन माई रक्षा करे गणेश।

श्री देवी अग्रे समर्पनाद ओकार कृत्वा वाम कर दक्षना बाहु

मध्ये स्पर्श दक्षिना कर देवता अग्रे स्पर्श सर्व जोत प्रति आदेश कृत्य।

अर्थात् पीरजी देवी अर्थात् माई बाला सुन्दरी को नाद बजाकर [केवल सम्पर्क ओंकार नाद बजाकर] आदेश करते हैं और हस्त स्पर्श से नमन करते हैं।

भावार्थ :- नादी आदेश- यह नाथ सम्प्रदाय की इष्ट देवता और अपने से बड़ो को मान-सम्मान देने की मर्यादा है। यह नादी आदेश उकडू बैठकर तीन बार नादि को बजाकर (ॐकार) नाद निकालते हैं साथ-साथ तीन बार झुककर आदेश करते हैं। यह नादि आदेश केवल अपने सतगुरु एवं इष्ट देवता के सन्मुख ही बजाते हैं।

अत: यहां पर योगमाया कर्मकाण्डों के मर्यादा नियम अनुसार उपरोक्त योगेश्वर को उकडू न बैठते हुये बैठे-बैठे आसन पर ही अर्थात् बाला सुन्दरी सन्मुख वाले मध्य (टैलुवा का) आसन जो घूमता फिरता हैं वहां साधक पद्मासन या सिद्धासन पर बैठे-बैठे ही यह नमन क्रिया सभी ज्योती-देवताओं को नादि आदेश करना पड़ता है और सब नियम मर्यादा सभी दर्शनार्थी, उपदेशी योगेश्वर, मानधारी उत्तराधिकारी एवं नये चेलों आदि पर लागू होता है।

अत: सर्व प्रथम पीरजी बाला सुन्दरी (अखण्ड) ज्योत को निम्न मन्त्रोच्चार करते हुये तीन बार बैठे-बैठे नादि आदेश (नमन) करते हैं।

बाला सुन्दरी ज्योत को पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ ज्योत ज्योत महाज्योत सर्व ज्योत सुन्दरी तुम को ध्यावे सीता कुन्ती द्रौपदी पांचो पाण्डव तारा हरिश्चन्द्र राजा शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू बाला सुन्दरी ज्योत के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: पीरजी बालासुन्दरी मुख्य जोत या चारों ज्योत को नादि आदेश करते हैं।

बालासुन्दरी चारो ज्योत को पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अकल ज्योत सकल ज्योत, ब्रह्म ज्योत सुन्दरी जो तेरी उपासना करे मोक्ष मुक्त का फल दे महेश्वरी कौन कौन महेश्वर पांच पाण्डव छटा नारायण सीता कुन्ती रुक्मणी, द्रौपदी, पाचवा राजा भूप चन्द निंव निंव लागू पाव मैं बलिहारी सद्गुरु आपने जीस मार्ग दिया बताय। शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव। पांच महेश्वर आज्ञा करे ते लागू बाला सुन्दरी ज्योत के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: पीरजी माई पाट के दार्यी दिशा के हिंगलाज ज्योत को जहां स्वास्तिक है वहां निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

हिंगलाज ज्योत पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ज्योत ज्योत महाज्योत, अखण्ड जोत हिंगलाज जोत जो ध्यावे सो पावे मोक्ष मुक्ति फल दे बल दे बाला सुन्दरी शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू हिंगलाज ज्योत के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: पीरजी माई पाट की बार्यी दिशा के त्रिशूल के नीचे भैरव ज्योत को नादि बजाकर आदेश करते हैं तथा निम्न मन्त्र बोलते हैं।

भैरव ज्योत पगे लागने का मन्त्र-१

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ उत्तर दिशा भैरों खड़ा कान में कुण्डल सिर जटा मस्तक बिन्दी संधूर की

राजा निवे प्रजा निवे निवे शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करते तो लागू भैरव ज्योत के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

या

निम्न मन्त्र से भी नादि आदेश कर सकते हैं।

भैरव जोत पगे लगाने का मन्त्र-२

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। काली टोपी सिर पर पहनू, ब्रह्म कपाली हाथ मढ़ी मसान हम फिर आये गुरु हमारे साथ रात राखिये चन्द्रमा, दिन राखिये क्षेत्रपाल उडे लोहा करे संहार, तिसकी रक्षा करे गुरु गोरखनाथ शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू भैरव जोत के पाव। श्री नाथजी गुरुजी का आदेश। आदेश। आदेश।

अत: पीरजी गणेश ज्योत एवं भण्डार जोत नादि आदेश करते हैं। यहां पीरजी अपना बैठा आसन नहीं हिलाते (छोड़ते) केवल गणेश या भण्डार जोत की दिशा में अपनी नजर या चेहरा (मुख) घुमाकर नाद बजाकर आदेश करते हैं।

भावार्थ :- यहां पीरजी या साधक को आसन न हिलाते हुये केवल अपनी नजर या मुख घुमाकर ही आदेश तथा नमन करना होता हैं इसका कारण यह है कि नाथ सिद्ध सम्प्रदाय में अपने ईष्ट, नाथ कुल देवता, पंथ के पीरजी तथा सद्गुरुजी तथा नाथ कुम्भ पर्व पर तथा नवरात्र शक्ति पूजन के लिये जो पात्र देवता स्थापित होता है, उस पात्र देवता एवं मानधारियों, इन सभी को जब भी कोई नाथ सिद्ध योगेश्वर नादि बजाके आदेश करते हैं आदेश के पश्चात् उपरोक्त इष्टों को अपनी पीठ न दिखाते उल्टे पैर ही वापस होते हैं, या तो वहीं सन्मुख बैठकर वार्तालाप होने के पश्चात् कुछ समय के बाद जैसे मर्जी जा सकते हैं। यह सन्मुख

वालों को एक आदर सत्कार, मान-सम्मान होता है। यहां योगमाया पूजन में सन्मुख प्रत्यक्ष बालासुन्दरी माता हिंगलाज, भैरुनाथजी, गुरु गोरक्षनाथ जी रुपी कलश और अगल बगल के मानधारी इन सबको मान सम्मान प्रित्यर्थ बैठे आसन में ही आदेश करते हैं। माई के प्रति बैठे आसन आदेश अनुष्ठान का मतितार्थ यह है कि माई के सन्मुख बैठे आसन अनुष्ठान से माता जी कृपा शक्ति अनुपात करती हैं जो कि उस साधक योगेश्वर को आदेश नमन के पश्चात् मृतात्मा योगेश्वर पर शंख ढालने जाना होता है, जो मन्त्र द्वारा शंख ढालते समय यह बाला सुन्दरी शक्ति साधक द्वारा शंख ढालती है। क्योंकि जिस प्रकार पुतले में सूक्ष्म रुप में मृतात्मा की आत्मा होती है वैसे ही शंखढालने वाले के अन्दर भी अपने तपोबल के साथ विशेषत: बाला सुन्दरी, हिंगलाज माता तथा भैरवनाथ और कलश रुपी गोरक्षनाथजी इनके (सूक्ष्म) कृपा दृष्टि पात शक्ति संक्रमन होने के कारण शंखढाल क्रिया यशस्वी एवं सुलभ होती है। अर्थात् यह मुक्ति कर्म सूक्ष्म शक्ति (शंखढालने वाली) द्वारा सूक्ष्म मुक्ति (मृतात्मा पुतला) प्राप्त कर लेता है।

अत: इस मुख्य कारण से योगमाया पूजन कर्मकाण्ड में बैठे आसन आदेश नमन का नियम अनिवार्य है।

अत: पीर जी प्रथम गणेश ज्योत को निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

गणेश ज्योत पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। काने कुण्डल, शीश जटा आदि क्वारी का उपदेश अखे चढ़ावु महामाई, रक्षा करे गणेश पड़दे आऊँ, पड़द जाऊँ, पड़दे करु कमाई पांच महेश्वर आज्ञा करे तो आखा चढाये महामाई शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पांव। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागु गणेश ज्योत के

पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी उसी दिशा में भण्डार ज्योत को भी निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

भण्डार ज्योत पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ अलिल पुरुष कि स्थापना, गणपत किया निवास, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो भण्डार जोत का हुवा प्रकाश शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करते तो लागू भण्डार जोत के पांव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: पीरजी कैलाश के चार जुग की जोत एवं गत गंगा की ज्योत की ओर नादि बजाकर आदेश करते हैं और निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

गत गंगा ज्योत पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजीं ॐ ज्योत सोहं ज्योत, गत गंगा की ज्योत भयी प्रकाश रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू गत गंगा ज्योत के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: पीरजी इसी दिशा में कैलाश के ऊपर स्थापित चार जुग की जोत को निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

चार जुग की ज्योत पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आदि ज्योत अनादि ज्योत अकल ज्योत सकल ज्योत, चार जुग ज्योत भयी प्रकाश। रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। शिव पूजू

शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागु चार जुग जोत के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

इस प्रकार सभी ज्योतियों को नादि आदेश बैठे-बैठे करने के बाद पीरजी सभी मानधारी उपदेशी योगेश्वरों को गादी नमन करते हैं।

(ख) गादी नमन विधि

अत: पीरजी उसी स्थान तथा उसी आसन में (पद्मासन या स्वास्तिकासन) बैठे-बैठे प्रथम निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अखण्ड जोत (बालासुन्दरी) जोत नमन

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। जग मग जोत जहाँ विराजे, जीव में आन तहाँ विराजे, तर्वर खंडी एक है, जिनका जहिरा मता अकाश, अखंडी के सिर छत्तर है विष्णु जी के पास, आवो सिद्धो अखण्डी एक है ध्यावै सिद्ध करोडी संत दर्शन किये सुख उपजे सुफल हमारी जात शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरुजी के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो अखण्ड जोत के लागू पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: अपने बायें हाथ का पंजा अपने वक्षस्थल (छाती) पर रखते हुये दायें हाथ की अंगुली से माई चौक को भूमि पर स्पर्श करके फिर यही हाथ वक्षस्थल (छाती) पर स्पर्श करके फिर यही हाथ मस्तक (त्रिपुण्ड) में स्पर्श करते हुये नमन करते हैं और कहते हैं।

"श्री बाला सुन्दरी *या* अखण्ड ज्योत को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

भावार्थ :- यह हस्तस्पर्श (नमन) आदेश करने की विधि बड़ी ही भावस्पर्श है। जिसमें हस्तस्पर्श आदेश करने वाले योगेश्वर का भाव इस प्रकार होता है कि जब वह माई के चौक पर या मानधारी आसन

को प्रथम स्पर्श करता है तो स्पर्श द्वारा माता जी या मानधारी अपने अपने यथा शक्ति भाव से स्पर्श सन्क्रमण शक्ति प्रेषित करते हैं जब वह शक्ति हस्तस्पर्श से हृदय में शक्ति सन्क्रमित होती है श्रद्धा विश्वास का निर्माण होता है। वही हस्तस्पर्श जब मस्तक पर होता है तो उस शक्ति स्पर्श से ज्ञान की वृद्धि होती है। यह कार्य दाहिने हस्त स्पर्श से होता है अत: बाँया हाथ हृदय पर (वक्षस्थल पर) संयम एवं आत्मविश्वास पर टिका रहता है।

इस प्रकार के भाव से श्रद्धा नमन या सम्माननीय आदेश करने से योगमाया कर्म में सफलता प्राप्त होती है।

अत: इस भाव स्पर्श नमन का नियम इस कर्मकाण्ड में इसी उद्देश्य से पूर्वजों ने बनाया है।

नाथ सम्प्रदाय में दीक्षा अर्थात् शक्ति पात या दीक्षा शक्ति संक्रमण आदि विधान विख्यात है जो गुरु-शिष्य परम्परा में सनातन चलती आयी है। जिसमें स्मरण (स्मृति) दीक्षा शक्तिपात या दृष्टि दीक्षा शक्तिपात या स्पर्श दीक्षा शक्ति पात या नादब्रह्म (शबद) दीक्षा शक्तिपात यह चार प्रकार की दीक्षा संस्कार होते हैं, उसी प्रकार से यह स्पर्श दीक्षा शक्ति पात या सन्क्रमण भी प्रमाणित होता है जैसे छोटा बच्चा रोता है तो माँ के स्पर्श से वह शान्त हो जाता है। जब किसी का सर दुखता है तो तुरन्त वह हाथ से सर दबाता है और उसे प्राथमिक आराम मिलता है। या कोई विद्यार्थी यशस्वी कार्य करता है और तो शिक्षक या उसके पिता उसके पीठ पर हाथ घुमाके शाबासी देते हैं वह भी सुखद स्पर्श से आनन्द प्राप्त होता है।

इस प्रकार के सात्विक, राजसी तथा तामसी भाव गुण विशेष के व्यवहार में अनेक स्पर्श गुण संक्रमण के अनुभव हमें आते हैं। अत: उन-उन व्यक्तियों का शक्ति स्पर्श, ज्ञान स्पर्श या भाव स्पर्श को

संक्रमण उन-उन व्यक्ति के भाव पर निर्भर करता है।

इसी प्रकार से पीरजी पीर गद्दी को उपरोक्त विधि से नमन करते हैं, प्रथम मन्त्र कहते हैं।

पीर गादी पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो आदेश सार सार महासार गादी बैठे श्री गोरक्षनाथ, श्री गोरक्षनाथजी करें अलख की पूजा, एक अलख और नहीं दूजा शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू पीरजी गादी के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

फिर पूर्वोक्त हस्त स्पर्श (भूमि, छाती, मस्तक) विधि से नमन करते हुये कहते हैं।

"पीरजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: पीरजी जोगन गादी के तरफ देखते हुये उपरोक्त विधि से नमन करते हैं। प्रथम निम्न मन्त्र कहते हैं।

जोगन गादी पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो आदेश। उत्तर दिशा योगन खड़ी हीरे माणिक मोतिया जड़ी तू मेरी धर्म कि माता मैं तेरा धर्म का पूत ले परिक्रमा लागू पांव शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू माता जोगन के पांव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: पूर्वोक्त हस्त स्पर्श (भूमि आसन, छाती, मस्तक पर) विधि से नमन करते हुये कहते हैं।

"माता जोगन को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

इसी प्रकार पीरजी साखियाँ आसन की ओर देखते हुये नमन

करते हुये निम्न मन्त्र कहते हैं।

साखियाँ गादी पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो आदेश। साखियाँ बैठा साख पर भरे धर्म की साख जैसा देखे वैसा कहे पाप पूण्य से न्यारा रहे, शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु कें पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू साखियाँ गादी के पांव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पूर्वोक्त हस्तस्पर्श (आसन, वक्षस्थल, मस्तक पर) विधि से नमन करते हुये कहते हैं।

"साखियाँ को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

इसी प्रकार से पीरजी अपने आसन पर स्थित रहते हुये वीर के आसन की ओर देखते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

वीर गादी पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो आदेश। वीर वीर महावीर सूकी नदी चलावे नीर काल कंटक को मारे तीर, साधु सन्त को खिलावे खाण्ड और खीर तां मैं जाणा सांचा वीर तले धर्ती उपर आकाश वीर बैठे माई जोगन के पास। शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू वीर गादी के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पूर्वोक्त हस्तस्पर्श (आसन, वक्षस्थल, मस्तक पर) विधि से नमन करते हुये कहते हैं कि-

"महाविर को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: पीरजी भण्डार गादी की ओर देखते हुये निम्न मन्त्र से नमन करते हैं।

भण्डार गादी पगे लगाने का मन्त्र

सन नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ उत्तर दिशा कुबेर भण्डारी सर्वगत की ऋद्ध सिद्ध सारी शिव पूजू शक्ति पूजू, पूजू गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू भण्डार गादी के पांव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

और पूर्वोक्त हस्त स्पर्श (आसन, वक्षस्थल, मस्तक पर) विधि से नमन करते हुये कहते हैं-

"कुबेर भण्डारी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

इसी प्रकार पीरजी अनन्त गादि की दिशा को देखते हुये निम्न मन्त्र से नमन करते हैं।

अनन्त गादी पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो आदेश। ब्रह्मा विष्णु महेश जहा के यम ने खैचे केस सब देवता लागे पाव तब तुम पूजो ब्रह्मा ज्ञान, शिव पूजू, शक्ति पूजू, पूजू गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू अनन्त गादी के पांव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

और पूर्वोक्त हस्तस्पर्श (आसन, भूमि, वक्षस्थल, मस्तक पर) विधि से नमन करते हुये कहते हैं कि-

"अनन्त गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: पीरजी जिस आसन (मध्य के) पर विराजमान है से टैलुवा (जो चलता फिरता आसन होता है) आसन को देखते हुये निम्न मन्त्र कहते हैं।

टैलुवा गादी पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। टैल गादी,

टैलुवा माया, शिव शक्ति मिल खेल रचाया, बाले गोरक्ष जी ने मार्ग चलाया, शिव पूजू, शक्ति पूजू, पूजू गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू टैलुवा गादी के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: उसी बैठे आसन को पूर्वोक्त हस्तस्पर्श (आसन, वक्षस्थल, मस्तक पर) विधि से नमन करते हुये कहते हैं कि-

"टैलुवा गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: (आवश्यकता अनुसार) पीरजी कोतवाल आसन की ओर देखकर निम्न मन्त्र बोलते हैं।

कोतवाल गादी पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। दस कोतवाल दसोद्वार, सन्तन बुलाई भाई दर्बार। अनन्त कोट मिला बाला सुन्दरी का मेला। ऋद्धि सिद्धि ले आगे धरया। आसन पूजू, सिंहासन पूजू, पूजू गुरु के पांव, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू कोतवाल गादी के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पूर्वोक्त हस्तस्पर्श (आसन भूमि, वक्षस्थल, मस्तक) विधि से दूर से नमन करते हुये कहते हैं कि-

"कोतवाल को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

[विशेष :- इस प्रकार के उपरोक्त मन्त्रों द्वारा नादी आदेश तथा नमन सभी मानधारी को क्रम से (पीर-जोगन, साखियाँ, वीर, भण्डारी ....) करना पड़ता है और फिर पुतले के ऊपर शंख ढालना पड़ता है।]

(ग) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: पीरजी आसन छोड़ते हैं टैलुवा पीरजी के कंधों पर गिरेवान

(पर्ना) रखता है और कैलाश की ओर ले जाकर ठीकरे के सन्मुख आसन पर बिठाता है।

टैलुवा गिरेवान कन्धों पर इसलिये रखता है क्योंकि यह मान सम्मान का प्रतीक है। उन्हें सम्मानित करके कैलाश ठीकरे के सन्मुख आसन पर आदर से बिठाया जाता है।

यहां पीरजी ठिकरे पर या गत गंगा ज्योत पर स्वइच्छानुरुप पूजन करके पूजा चढ़ाते हैं। अर्थात् दान करते हैं इसकी नोंद कोतवाल एक कॉपी में पीरजी का नाम, पंथ तथा गुरुजी का नाम, पता एवं दान हुयी पूजा लिखता है। (और ऐसे ही क्रमशः सभी के नाम दान लिखना पड़ता है।)

अतः टैलुवा पूजन पात्र में से (कुशा की बनी हुयी) दो पवित्रियाँ पीरजी के दोनों हाथों की अनामिका अंगुलियों में पहनाता है और निम्न मन्त्र का उच्चारण करता है।

टहल की पवित्री का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कहो सिद्धो यह पवित्री कहासी आई, अमर लोक से आई ब्रह्मा विष्णु महेश ने बुलाई दो कर जोड हनुमन्त वीर उठाई हात में हनुमन्त बसे भैरो बसे कपाल टहल करु दरबार कि ले पवित्री हाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भावार्थ = अतः यह कुशा की बनी (अंगूठी जैसी) पवित्री हाथ अंगुली में धारण करने का उद्देश्य यह है कि यह कुशा पवित्री का मुख्य प्रभाव वेदों के अनुसार - आयुष्य वृद्धि अर्थात् अमरता एवं दूषित वातावरण शुद्ध करने का, अर्थात् पवित्र करने का कहा गया है। अतः कुशा द्वारा पवित्रता होने के कारण उन्हें पवित्री [पवित्र (शुद्ध) करन वाली] कहा जाता है। अतः नाथ सिद्ध योगेश्वर इस योगमाया कर्म

काण्ड में पुतले के ऊपर शंख ढालने के शुद्धि या पवित्र-कार्य तथा जल पंचामृतादि अन्य पदार्थ शुद्धिकरण या पवित्र करने के कारण यह कुशा की पवित्री दोनों हाथों में अंगुली धारण करते हैं।

इस प्रकार दोनों पवित्रियाँ धारण करने के पश्चात् पीरजी पुतले के ऊपर शंख ढालने हेतु दक्षिण मुख (दक्षिणावर्ती) या सीधे हाथ वालों शंख को हाथ में लेते हुये निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

"अथ शंख बाला"

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं बजर धर्ती बजर काया, देख लो ज्योत प्रमोद लो काया, सवा हाथ का पुतला बैठा अटल ज्योत की छाया, हाथ में कौली मुख में बाला हिर्दे जपो तपो श्री सुन्दरी बाला। इतना शंख बाला जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

ऐसे मन्त्र उच्चारण करते हुये गत गंगा के कुण्डा में से शंख डुबोते हुये जल भर लेते हैं और पुतले के ऊपर शंख ढालते हैं।

भावार्थ :- हिन्दू संस्कृति में धार्मिक दृष्टि से शंख को पवित्र एवं पूज्य माना जाता है। एक समुद्री प्राणी का यह पक्का खोल होता है। शंख ध्वनि के नादस्पर्श से तथा अनुसंधान से वातावरण पवित्र होता है। इनके ध्वनी लहरों से कीटाणु नष्ट होते हैं। यह शक्ति वर्धक एवं रोग नाशक माना जाता है। वामवर्ती और दक्षिणवर्ती नामक दो प्रकार के शंख होते हैं वामवर्ती उल्टे हाथ का खुले मुख वाला ध्वनि निर्माता है। यह शंख लक्ष्मी एवं विष्णु को विशेष प्रिय है। यह शंख, ओज, तेज, पवित्र तथा शुभारंभ का प्रतीक है। यह शंख ध्वनि मांगलिक कार्य, पूजन विधि, धार्मिक उत्सव, समाधि विधि, युद्ध प्रसंग आदि प्रसंगों में

अलग-अलग ध्वनि से उपयोग होता है। विशेषत: शंख ध्वनि से भूत प्रेत दूर भाग जाते हैं। इन शंख ध्वनियों में एक विशिष्ट प्रकार की विद्युत गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती है। इस ऊर्जा से विभिन्न कार्य सफल होते हैं।

हमारे नाथ सिद्धों ने इस अन्तरमुख तथा बहिर्मुख नादों का अनेक प्रकार से अविष्कार किया हैं इस नाद प्रणाली में मुख्यता शंख, नागफनी, पुंगी, सिंगी, नादि पवित्री, डमरु इत्यादि नाद वाद्य साहित्य हैं। नाद साहित्य का अपने-अपने समय, स्थान, परिस्थिति, अर्थ एवं अपने-अपने मन्त्र प्रभाव से कार्य करते हैं। इनमें शंख यह मुख्य और प्रचिती दायक अनुभव सिद्ध साधन माना जाता है। शंख बजाने की विशिष्ट मन्त्रोच्चार एवं स्वरों से विधियाँ हैं। जिसे शंखनाद कहते हैं।

कुछ विधियाँ

।। वामवर्ती शंख।।

यह शंख का पेट बांयी ओर खुलता है। इनका मुँह ऊपर से कटा हुआ, छोटे-बड़े विभिन्न ध्वनि के तथा नर नारी स्वरूप होते है। यह बजाते है तब जिसमें मर्दाना ध्वनि आता है, वह नर और कोमल ध्वनि वाला शंख नारी स्वरूप होता है। यह मठ-मन्दिर पूजा-पाठ में बजाने के काम आता है। इसकी ध्वनि पवित्र-शुद्ध-प्रदूषण मुक्त करने वाली, रोग कीटानुनाशक होती है। अपवित्र, अतृप्त आत्मायें इसका ध्वनि को सहन नहीं कर सकते, इनका अनेक प्रकार उपयोग होता है।

(१) दाहिने हाथ में या दोनों हाथ में शंख लेकर प्रथम जलगायत्री बोलकर जल में खड़े हो जायें फिर शंख गायत्री बोलकर शंख बजायें। यह विधि रोज नित्य उसी जगह उसी समय उन्हीं मन्त्रोच्चार से बजाने से सभी देवी देवता, सवा महीने में सतर्क होते हैं, नौ महीने में प्रसन्न

होते हैं, बारह महीने में शंखनाद करने वाले साधक को देवी देवता आह्वान करने पर दर्शन देते हैं।

(२) उपरोक्त विधि से सद्गुरु मन्त्र पढ़कर शंखनाद करने से सद्गुरु दर्शन होते हैं।

(३) उपरोक्त विधि से भैरवी राग में शंखनाद बजाने से पाताल लोक, भूत, प्रेत, राक्षस आदि भाग जाते हैं या छुप जाते हैं। उनकी मायावी विद्या नहीं चलती। क्योंकि भैरवी शंखनाद से वातावरण के अनुरेणु पूर्णत: दैवी शक्ति में संक्रमित हो जाते हैं। ऐसे नाद पूर्वकाल में युद्ध भूमि में बजाया करते थे। महाभारत युद्ध में भगवान श्री कृष्ण ने पंचजन्य शंख बजाया था। अर्जुन ने देवदत्त शंख, भीम ने पौण्ड्र शंख, युधिष्ठिर ने अनन्त विजय शंख, नकुल ने सुघोष शंख, सहदेव ने मणिपुष्पक शंख ऐसे अनेकों युद्ध भूमि पर शंख बजाते हैं। जो विजयीभव सिद्ध हुये।

(४) उपरोक्त विधि से शंखनाद चन्द्र उदय (पूर्णिमा) में करने से मृत्युलोक के समस्त प्राणी मोहित हो जाते हैं। यहां मोहण-मन्त्र प्रयोग कर सकते है।

(५) उपरोक्त विधि से सप्त स्वरों में शंखनाद करने से सप्त स्वर्गादि देवी देवता प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं।

(६) उपरोक्त विधि को द्वीप में करने से शक्ति साधना सफल होती है।

(७) शंखनाद विरासन बैठकर बजाने से शक्ति सौख्य एवं निर्भयता प्रदान करता है।

(८) सक्षम योग साधना करने वाले साधक ने दाहिने पैर की एड़ी मूलाधार चक्र (गुदा और लिंग के बीच में) में लगाकर बाया पैर लिंग

के ऊपर रखते हुये अर्थात् सिद्धासन में बैठकर बंद आँखे मूलधार में लक्ष्य केन्द्रित कर ॐकार नाद का गहन या गहरा शंखनाद स्वर निकालने से मुलाधार जाग्रत होकर कुण्डलीनी चालन प्रारम्भ होता है।

(९) शंखनाद ऊँची स्वर में बजाने से फेफेड़ों के विकार, हृदय विकार, दमा, मिरगी, मुर्च्छा, कंठमाला, कोढ़, आदि बीमारियाँ ठीक होकर व्यक्ति की काया निरोगी हो जाती है।

(१०) मृतात्मा शवयात्रा तथा अन्य संस्कार में शंखनाद, करुणामयी, प्रयाण दर्शक ध्वनि का होता है। ऐसे विशिष्ट शंखनाद से मृतात्मा उत्तम गति को प्राप्त होती है।

(११) देवी, देवता, मठ, मन्दिर, आरती, पूजा, यज्ञ, हवनादि और धार्मिक उत्सव प्रसंगी शंखनाद उस्पुर्थ प्रेरणा, औदर्य, मधुर एवं चैतन्य पूर्ण होता है। नाथ सिद्ध यह शंखनाद अपने नाभी कमल से ॐकार नाद उठाकर बजाते हैं।

(१२) घोर-अघोर, तन्त्र-मन्त्र साधनाओं में नाथ सिद्ध शंखों की माला बनाकर उपयोग में लाते हैं।

(१३) स्वप्न में शंख घोष करने देखना अत्यंत शुभदायक तथा भाग्योदय कारक होता है।

अत: यह शंख अतिषय उत्तम, गुण सम्पन्न पवित्र, अत्यंत शुभ संकेत माना जाता है।

।। दक्षिणावर्ती शंख।।

इन शंखों का पेट दाहिने ओर खुलता है। इन्हे दक्षिणावर्ती शंख, दाहिनावर्ती शंख, विष्णुशंख, जमना शंख, लक्ष्मी शंख तथा नाथ सिद्धों में उपदेशी शंख नामों से जानते हैं। इनकी उत्पत्ति जब समुद्र मन्थन में हुआ था तो भगवान विष्णु ने अपने दाहिने हाथ में धारण

किया था और माता महालक्ष्मी को यह अत्यन्त प्रिय होने के कारण इन शंखों में लक्ष्मी का वास होता है। अत: इनका पूजन करने पर धनधान्य, ऐश्वर्य कीर्ति सम्पदा समृद्धि की प्राप्ति होती है। छोटे-बड़े इत्यादि सभी का एक ही प्रभाव होता है। इस शंख में भरा हुआ जल सभी पवित्र नादियों के उगम-संगम तथा समुद्र मिलन के जल स्नान के पुण्य समान होता है।

श्री नाथ योग साधना में शंख का प्रभाव

नाथ सिद्ध योगेश्वर योग साधना में परिपक्व अवस्था में शंख ध्वनि का साक्षात्कार होने पर आत्मानन्द को प्राप्त करते हैं। उड्डियान बन्ध के साथ जालन्धर बन्ध लगायें एवं साथ में शाम्भवी मुद्रा लगाकर एकाग्र भाव से शून्य में प्रवेश होने से पूर्व शंख ध्वनि सुनाई देती है। यह ध्यान साधना में अत्यन्त शुभ समस्त माया से विरक्त एवं जीव शिव एकत्व के साक्षात्कार का ही प्रतीक है।

२४ मुद्राओं में शंख मुद्रा भी साधना में प्रमुख मानी गयी है। शंख मुद्रा में बाँये अंगूठे को दाहिनी मुट्ठी में बाँध दाहिने अंगूठे से बाँयी अंगुलियों को मिलायें। इस शंख मुद्रा में ध्यान करने से पंचतत्व गुण संयमता, एकाग्रता, शान्ति को प्राप्त होता है साधक को पुन: पुन: अभ्यास करने पर शंख नाद सुनाई देता है। काया वाचा मन पवित्रता और शुद्धता के ऊपर निर्भर है।

यह शंख अन्य उपयोग में-

(१) पूजन = मठ-मन्दिर-घर, मकान में इसे सोमवार के दिन पंचामृत से तथा गंगा, जमना इ० पवित्र जल से स्नान कराके लाल वस्त्र में, सोना या चांदी के सिंहासन पर इसे स्थापन करे जो कि इनका खुला हुआ पेट आसमान की तरफ (पीठ आसन पर हो) मुख अपने तरफ

और पूछ भाग भगवान की तरफ हो तब चन्दन, धूप, दीप, केसर, पुष्प कर्पूर , भोग इत्यादि पूजन विधि करें तब उत्तम फल प्राप्ति होती है।

(२) इसमें गौ (काली कपिला) का दूध भरकर लक्ष्मी के ऊपर अभिषेक करने पर धनसम्पदा समृद्धि होती है।

(३) इसमें जल भरकर प्रात: सूर्य को अर्ध्य देने पर शरीर सौख्य, तेज और भरपूर यश प्राप्ति होती है।

(४) शंख स्थान मकान में रहने से बाहरी बाधा प्रवेश नहीं करती। शंख को आसन बनाकर खुला हुआ भाग आकाश की ओर करते हुये सप्त कुऐं का जल, या पंच नदियों का जल या ग्रहण काल का जल भरकर रखें और पूजन करते महामृत्युंजय जप करने पर घर की पीड़ा, अशान्ति आदि दूर हो जाते हैं।

(५) खण्डित, छिद्रों वाला शंख निषिद्ध माना जाता है।

(६) मृत्यु के समय शंख द्वारा गंगाजल पिलाते हुये मन की इच्छानुसार गति प्राप्त होती है।

यहां शंखढाल क्रिया में मृतात्मा पर (पुतले के ऊपर) शंख द्वारा जल ढालने पर मृतात्मा को शिवलोक, विष्णु लोक इत्यादि उत्तम गति प्राप्त होती है।

(७) शंख गायत्री कहते हुये शंख द्वारा पिण्ड को तर्पण करने से मृत पिण्ड मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

शंखढाल क्रिया में यहां योगमाया कर्मकाण्ड में मृतयोगेश्वर पुतले के ऊपर यह दक्षिणावर्ती शुभ शंख द्वारा जल ढालना अत्यन्त शुभ, शुद्ध, पवित्र एवं मुक्ति वर्धक माना जाता है। इस शंख की प्रचिती यह है कि इसमें जल भरकर जिसके ऊपर छिड़काते हैं वह समस्त पापमुक्त होकर शुद्ध स्वरुप हो जाता है। अत: पुतले के ऊपर जल ढालने से पुतला पवित्र

हो जाता है। यहां महात्मा के मन्त्र उच्चारण शब्द ध्वनि, शंख जल ढालना एवं महात्मा की (मन) आत्म एकाग्रता से पुतले के ऊपर जल ढालना चाहिये। जो अत्यन्त प्रभावशाली हो जाता है। शंखढाल के इस कर्मकाण्डों में शंख को नाथ सिद्ध अनेक नामों से सम्बोधित करते है।

१. उपदेशी शंख = यह पुतले के ऊपर जल ढालने वाला होता है।

२. अमर शंख = मठ-मन्दिरों में उपयोग करते हैं।

३. सिद्ध शंख = योग साधना तथा तंत्र, मंत्र, योग द्वारा प्रचिती देने वाला शंख को कहते है।

४. क्षीर शंख = यह शंख सुख, दु:ख अर्थात् माया के परे परब्रह्म में साधक को ले जाता है जो परिपक्व साधना में शंख की एक विशिष्ट आवाज अर्थात् जब इस सृष्टि में कुछ भी नहीं था तब सर्वप्रथम ॐ नाद का ध्वनि निर्माण हुआ था। इस शंख में ॐकार का ऐसा नाद सुनाई देता है कि सत-चितानन्द-ब्रह्म स्वरूप आनंद की प्राप्ति होती है। नाद ब्रह्म अनुभूति होती है।

५. आदि शंख = यह संसार सृष्टि की स्थापना करने वाले भगवान नारायण के दाहिने हाथ में धारण किया हुआ है जो ॐकार आदिनाथजी ने उन्हें दिया था। जिसके नाद से सृष्टि स्थापना हुई थी।

अत: ऐसे मन्त्र द्वारा दक्षिणावर्ती या उपदेशी शंख को लेते हुये गत गंगा कुण्डा में शंख डुबाते हुये जल भर लेते हैं और पुतले के ऊपर अर्थात् शीश के ऊपर से दोनों हाथों से शंख द्वारा जल छोड़ते हुये शंख ढालना प्रारम्भ करते हैं साथ में निम्न मन्त्र द्वारा पंच शंख ढालते हैं। मन्त्र उच्चारण टैलुवा या पीर जी का करते है।

अथ पांच शंख

सत नमो आदेश। ॐ नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। सखो

सखी ईश्वरो वाचः हम तुम अलील पुरुष जी दोनो गुरु भाई नख चख देख दोनो लुड़ जाई अखण्ड जोत जागे बिन बाती, अनन्त कोटि सिद्धां मिल थापना थापी कवन से ब्रह्मा कौन से देव कौन धोती कौन जनेऊ, कौन नाम ले पूजू देव, मने ब्रह्मा पवने देव, अलील की धोती शब्द जनेऊ असंख्य नाम ले पूजो देव ब्रह्मा की पुतली विष्णु की डाली ईश्वर गौर्जा मिट्टी डाली संखो समुद्रो न मुद्रो काया, ईश्वर पूछे श्री देवी पार्वती जी संख संधूर नारियल करो खाया, काया सो आद स्वामी जी।

प्रथमे सत द्वितीये धर्म तृतीये सत धर्म को बांधो धर्म की प्रतिज्ञा सो स्वामी जी उत्पन्न भई जल बिंब की काया अरबद नरबद धूँदूकारा स्वाल शब्द नहीं ओं कारा, नहीं कोई अरन बरन की छाया नहीं कोई पांच भूत की माया, नहीं कोई शब्द कुल पाताल, कछुआ देव महेश्वरा जहा होती धर्म की नेकता धर्म की रक्षा पानी का विस्तार, प्राण पुरुष बैठे सत गुरुजी के पास शिव रुपी गौर्जा उत्पन्नी ईश्वर ले अरधंगे धरी मर गई गौरा रह गया रुण्ड हाथ पाव पिंजर का नला षष्ट दर्शन मिल पहरे गला अमृत कूपी आगे धरो जल थल माता गौर्जा फिरी जल में होती मीन की तांत पंच-शंख छटवा बीज मन्त्र गायत्री जाप ले उत्पन्न माता गौर्जा पहला शंख ईश्वर ने लिया ईश्वर ले ब्रह्मा को दिया पढ़ गुढ़ ब्रह्मा पुस्तक किया चार चौकड़ी इस जीवड़े को दिया निरभै जोगी इकोत्तर सौ पुरुषा ले उतरे पार, गायत्री सावित्री सरस्वति भगवती चार वेदी चार पंगी चन्द्र कूची सोने सिंगी रुपे खुरी, त्रांमे पृष्टी यम घण्टी वैह वैह नदी वितरणी राख राख माता शम्भू शिव गायत्री राख पिण्ड पंडत्या राख अघोर पड़ंत्या राख ब्रह्मा विष्णु महेश्वर साख पड़े गुड़े सत वादी जोगी पड़े गुड़े सत वादी साधु सरस्वति

सत्य वाचा प्राणी गंगा जमना सरस्वती काशी और केदार संख ढले शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्ष द्वार।।१।।

[**विशेष** :- यहां पहला जल से भरा हुआ शंख पुतले पर जलधारा लगाकर ढाला (छोड़ा) जाता है और पुनः दूसरा शंख जल से भरते हुये आगे मन्त्र पुनः बोलते हैं।]

औं दूसरा संख नारायण ने लिया धर्ती फोड़ पाताले गया, आगे बैठे कौन कौन सुर नर मुनी गन गंधर्व, दूसरे तपसी निर्बधणो बहू सेवा करी नारायण की तो कहा कहा चले ओं नारायण जी हम पूजे देव शिवजी के पांव।।२।।

[यहां दूसरा शंख जल से भरा हुआ पुतले के ऊपर जल धारा लगाकर ढाला (छोड़ा) जाता है और तिसरा शंख जल से भरते है और पुनः आगे मन्त्र कहते हैं।]

ओं तिसरा संख सिद्धो ने लिया सिद्ध साधक मिल कैलास को गये आगे कौन कौन बैठे मीन मछन्द्र गुरु गोरक्षनाथ लो सिद्धो संख संखादि करा ढाल इस पड़े पिड़ का करो उद्धार।।३।।

[यहां तीसरा शंख पुतले के ऊपर जलधारा करके ढाला (छोड़) दिया जाता है। पुनः चौथा शंख जल से भरकर पुनः मन्त्र बोलना शुरु किया।]

ॐ गुरुजी चौथा संख श्री देवी आद भवानी जी लिया कानो कुण्डल गले वर्णन किया कौनसी देवी अगम जाने, कौन सी देवी निगम जाने, कौन सी देवी जपे जाप, कौन सी देवी पड़े पिण्ड का करे उद्धार, अम्बा देवी अगम जाने, गौरा देवी निगम जाने, तृकटा देवी जापे जाप, सर्वाण देवी पड़े पिण्ड का करे उद्धार।।४।।

[ऐसे चौथा शंख पुतले के ऊपर ढालने के पश्चात् पांचवा शंख

जल से भरकर पुनः मन्त्र बोलते हैं।]

ॐ गुरुजी पंचमा संख संखा ढाल, मा महेली पुत्र भरतार, कौन संख मठ देवल जागे कौन संख समुद्र में गाजे, कौन संख कानों में छाजे कौन संख आकासे सार, कौन संख अनन्त कोट सिद्धों को ले उतरे पार, अग्न संख मठ देवल जागे अलील संख समुद्र में गाजे शब्द संख कानों में छाजे, पवन संख आकासे सार सिद्ध संख अनन्त कोट सिद्धों को ले उतरे पार।।५।। ओं पांचो मध्ये छटा समाई तिसकी रुप रेखा वरनी नहीं जाई आवो सिद्धो भरली साखी सत सत श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथजी ने भाखी पंच शंख जाप सम्पूर्ण भया। अनंत कोट सिद्धो में श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा।

[अतः पांचवा शंख पुतले के ऊपर जल से ढाल देते हैं और आगे पुनः मन्त्र को पूर्ण करते हैं अर्थात् पुतले रुपी योगेश्वर को सुनाते हैं।]

ॐ कौन संख से आयो जीव कौन संख से स्थिर रहे शरीर कौन संख से पावे शिव पूरी में बास, कंथत गुरु गोरक्षनाथ अनन्त कोटी सिद्धो ले उतरे पार।

ॐ सत संख से आयो जीव धर्म संख से स्थिर रहे शरीर गुरु वचनी पावे शिवपुरी में बास कंथत गुरु गोरक्षनाथजी। जब सारी गत पगे लग जावे तो पीछे युक्त करनी कलश जोत समीपे संस्थाप्या।।

[अतः गत गंगा ज्योत के ऊपर लाल पुष्प तथा आखा चढ़ाते हैं और पुनः मन्त्र उच्चारण करते हैं।]

ॐ सप्त पाताले जला बिंब अधर धरा में शिला शिला पर गुरु निरंजनजी की चरण पादुका, पादुका पर जल, जल पर कमल,

कमल पर शेष, शेष पर धवल, धवल पर भूम, भूम पर महाभूम पर सर्वगत बैठी आई आसन बैठी आनन्दी माई, तीन देव की थापना थपाई ब्रह्मा विष्णु महेश ओं सोहं हंस निरन्जन परमहंस मेरी काया एता बीज मन्त्र महादेव ने पार्वती को सुनाया।

ॐ आद अलील अनहद पती अनन्त कोट सिद्धा मिल थापना थापी जहा निरन्जन की जोत प्रकाशी जहां उत्पन्न कवल का फूल अनन्त कोट सिद्धां का मूल थापे ब्रह्मा थापे इन्द्र सहस्त्र कला थापे गोविन्द अखे लेउ सर्व सर्वत्र गत गंगा की कला कलश में तले धर्ती ऊपर आकास कलश थाप्या श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ इति तांबुल कंगण संधूरे तिलक समर्पयामी। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[मन्त्र सिद्धिः- यह पंच शंख मन्त्र बोलकर मृतात्मा को मृत्यु समय शंख द्वारा ५ बार जल पिलावें मृतात्मा मोक्ष-मुक्ति पथ पर जाता है। [यह मन्त्र बहते जल में पितृ अमावस्या को सिद्ध करते हैं।]

इस प्रकार पीरजी शंख ढालने के पश्चात् पुतले की यथा स्थिति पूजन करते हैं। प्रथम चन्दन या केशर तिलक लगाते हैं। कंगन के प्रती मौली (लाल सूत) चढ़ाते हैं फिर बिल्ब पत्र, लाल पुष्प चढ़ाते हैं, सुपारी (ताम्बुल) चढ़ाते हैं, अक्षत (आखा) चढ़ाते हैं। आटे के पिण्ड चढ़ाते हैं। ऐसे पूजन करते समय निम्न मन्त्र का भी उच्चारण करते हुये पुतले को सुनाते हैं।

"अथ् बाला बीज मन्त्र"

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं बीज ओं आद विष्णु पहला विष्णु अमर जोत बीज अमर की काया रत्ती से तोल नेत्रों में पाया गुरु ईश्वर नारायण राह बताया न है पाप न है छाया न है ब्रह्म न है काया न था अजपा जाप अतोल ले सिद्धों ने

बाला बनाया एतेक राग परमहंस सोहं सोहं एता बीज बाला महादेव पार्वती को सुनाया।

ॐ नमो आदेश गुरुजी को आदेश ओं पवन पवन की बत्ती माता गुरु पिता यती झरे बाला पलटे काया वज्र लेप कहा से ल्याया गौ मुख धारा मेघ धारा जहा ते ल्याया डिगंबरी बाला तपत अलील जप जत काया बुढ़ा जपे काल न खाया, बाला जपे काल न खाया लो मुख पानी वज्र मुख काया, श्री नाथजी अघोर चलाया ले बाती सन्मुख भये सुरत पलीता पाया बंक नाल के आसरे सूतादेव जगाया ले पोथी सनमुख भये अघोर जाप जपाया अघोर अघोर महाअघोर जल अघोर थल अघोर पवन अघोर पाणी अघोर धर्ती अघोर आकाश अघोर चन्द अघोर सूर्ज अघोर नौ लाख तारा अघोर माता अघोर पिता अघोर संख समाध अघोर देहरा मसीत अघोर अघोरा जरे वाचा फुरे, जरे काल क्रोध पांच नाद की मुद्रा जरे बान्धे बज्र लंगोट देही का पारा जरे जरे पवन की ओट औघड़ की छड़ी जरे जरे काल की चोट अघोर जरे अभषभषे उलटी करे कमंद कन्ठे तो सरस्वति बसे हृदय बसे देव महेश नाभी तो तृकुटा बसे मुल बसे गणेश। अमरी अमरी अमर कन्द अमीरी बान्धे चौसठ बन्ध सोने की इन्द्री रुपे का प्याला भर भर पीवे योगेश्वर बाला कची अमटी काटे रोग पकी अमरी सीझे जोग पके न फूटे करे न बास, घट पिण्ड का राखा मछेन्द्रजी का गोरखनाथ अघोराय विद्महे महा अघोराय धी मही तन्नो अघोराय प्रचोदयात। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[मन्त्र सिद्धिः- दिन मुहूर्त-दीपावली, अमावस्या-पूर्णिमा, होली, रात्री, ग्रहण काल में गुरु गोरक्षनाथजी के नाम का कलश स्थापना करें। सात धान्य की राशि पर सात घृत दीपक चेतन करें। सात लौंग, इलायची, सात पान, सुपारी

तथा सात मिठाई मिश्रण तथा कच्चा रोट का भोग लगावें, समय सूर्यास्त के बाद सात घन्टे में करें मन्त्र सिद्ध होगा। विनियोग में सात बार पढ़कर जो भी कार्य करोंगे कार्य सफल होगा। किसी के प्रति अनिष्ट कार्य करने से करने वाले का ही अनिष्ट होगा।]

इस प्रकार शंखढाल एवं पुतला पूजन के पश्चात् पीरजी दोनों पवित्री निकालकर पूजन पात्र में रखते हैं और पुनः अपना आसन ग्रहण करते हैं।

(घ) जोगन का आदेश तथा नमन विधि

जिस समय पीरजी को टैलुवा गिरेवान देकर कैलाश की तरफ शंख ढालने ले जाते हैं तब बिल्कुल उसी समय जोगन, बाला सुन्दरी पाट (चौक) के सन्मुख के (मध्य का) आसन ग्रहण करती है वहां वह पद्मासन या स्वास्तिकासन में विराजती है और चौक को नादि आदेश तथा नमन करती है।

प्रथम साखियाँ या पीरजी या टैलुवा जोगन को आखा (अक्षत) दिया जाता है और वह बैठे-बैठे उसी आसन स्थित आखा (अक्षत) एवं कुछ दक्षिणा माई के पाट को चढ़ा देते हैं और निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **अक्षत (आखा) मन्त्र** - पृष्ठ संख्या २१९ पर देखें। अतः बाला सुन्दरी पाट (अखण्ड) ज्योत को निम्न मन्त्र से बैठै आसन में ही नादि आदेश करती है।

★ **बाला सुन्दरी ज्योत को पगे लगाने का मन्त्र** - (पृष्ठ संख्या २२० पर देखें)

तदपश्चात बाला सुन्दरी चौक के चारो जोत को निम्न मन्त्र से नादि आदेश करती है।

★ **बाला सुन्दरी चौक के चारों ज्योत पगे लगाने का मन्त्र** - (पृष्ठ संख्या २२१ पर देखें)

अत: माता हिंगलाज जोत को निम्न मन्त्र से नादि आदेश करती है।

★ **हिंगलाज जोत पगे लागने का मन्त्र**- (पृष्ठ संख्या २२१ पर देखें)

इसी प्रकार से भैरव ज्योत को बैठे आसन में निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

★ **भैरव जोत पगे लगाने का मन्त्र**- (पृष्ठ संख्या २२१ या २२२ पर देखें)

तद्नन्तर गणेश जोत की ओर बैठे-बैठे केवल देखते हुये निम्न मन्त्र से नादि आदेश करती है।

★ **गणेश जोत पगे लागने का मन्त्र**- (पृष्ठ संख्या २२३ पर देखें) इसी प्रकार से भण्डार जोत को भी नादि आदेश निम्न मन्त्र से करती है।

★ **भण्डार जोत पगे लगाने का मन्त्र**- (पृष्ठ संख्या २२४ पर देखें) अत: कैलाश में गत गंगा जोत की ओर बैठे आसन में देखते हुऐ निम्न मन्त्र से नादि आदेश करती है।

★ **गत गंगा जोत पगे लगाने का मन्त्र**- (पृष्ठ संख्या २२४ पर देखें) इसी प्रकार से कैलाश के ऊपर चार जुग जोत की ओर देखते हुये निम्न मन्त्र से नादि आदेश करती है।

★ **चार जुग जोत पगे लगाने का मन्त्र**- (पृष्ठ संख्या २२४ पर देखें) तद्पश्चात् जोगन अपने बैठे आसन में ही निम्न मन्त्र से गादी नमन विधि करती है।

(ङ) (गादी) नमन विधि

तद्पश्चात् जोगन उसी आसन में बैठे-बैठे ही निम्न मन्त्र से बाला सुन्दरी जोत को नमन करती है।

★ **अखण्ड जोत (बाला सुन्दरी) जोत नमन** पृष्ठ संख्या २२५पर देखें। अत: बाँया हाथ (पंजा) वक्षस्थल पर रखते हुये दाँया हाथ (अंगुलियों से) माई के चौक भूमि पर स्पर्श करके फिर यही हाथ वक्षस्थल (छाती पर) स्पर्श करके फिर यही हाथ मस्तक (त्रिपुण्ड) में स्पर्श करते हुये नमन करती है और कहती है कि

"श्री बाला सुन्दरी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: पीर गद्दी की तरफ देखते हुये निम्न मन्त्र बोलती है।

★ **पीर गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २२७ पर देखें) फिर हस्तस्पर्श-नमन करती है और कहती है कि

"पीरजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: जोगन गद्दी की ओर देखते हुये निम्न मन्त्र कहते हैं।

★ **जोगन गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २२७ पर देखें) फिर पूर्वोक्त हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुये कहती है कि

"माता जोगन को आदेश। आदेश।। आदेश।।"

अत: जोगन साखिया गद्दी को देखते हुये निम्न मन्त्र कहती है।

★ **साखियाँ गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २२८ पर देखें) फिर हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुये कहते हैं।

"साखियाँ को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: वीर गद्दी को देखते हुये निम्न मन्त्र उच्चारण करती है।

★ **विर गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २२८ पर देखें) पुन: हस्तस्पर्श नमन करती है और कहती है-

"विर गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: भण्डार गादी को देखते हुये निम्न मन्त्र उच्चारण करती है।

★ **भण्डार गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २२९ पर

देखें) पुनः हस्तस्पर्श नमन करती है और कहती है-

"कुबेर भण्डारी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अतः अनन्त गद्दी देखते हुये निम्न मन्त्र कहती है।

★ **अनन्त गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २२९ पर देखें) पुनः हस्तस्पर्श नमन करते हुये कहती है।

"अनन्त गादि को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अतः अपने बैठे आसन को ही देखते हुय निम्न मन्त्र कहते हैं।

★ **टैलुवा गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २२९ पर देखें) फिर पूर्ववत हस्तस्पर्श नमन करते हुये कहते हैं कि

"टैलुवा गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अतः कैलाश के कोतवाली गद्दी की ओर देखते हुए निम्न मन्त्र कहते हैं।

★ **कोतवाल गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २३० पर देखें) पुनः पूर्वोक्त हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुये कहते हैं कि

"कोतवाल गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

(च) पुतले को शंख ढालना विधि

अतः टैलुवा गिरेवान देकर जोगन को कैलाश ठिकरा सन्मुख ले जाता है। जोगन वहां गत गंगा का पूजन करके दान दक्षिणा चढ़ाती है। कोतवाल कॉपी में जोगन के नाम, गुरु का नाम, पंथादि नोट करता है। अतः पूजन पात्र से दोनों पवित्री (कुशा की) अपने हाथ की अंगुलियों में पहनते हुये निम्न मन्त्र टैलुवा बोलते हैं।

★ **टहल पवित्री का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २३१ पर देखें) अतः पूर्ववर्णित (पृ० सं० २३२) विधि से पुतले के ऊपर शंख ढालने के लिये शंख मन्त्र से शंख ग्रहण किया।

★ **अथ शंख बाला** (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें) अत: पहला शंख कुण्डाजल से भर लिया और निम्न धर्मराज गुरु भावली मन्त्रोच्चार करना शुरु किया।

अथ् धर्मराज गुरु भावली

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं सेंचो सेंचो धर्ती सेंचो आकाश सती सत मेरु मंडल गिर पर्वत कैलास सती सत चन्द्रमा सूर्ज दोनो तपे सती सत किया प्रकाश कथे शंकर गौराजान गर्भ तत करो परवान।।१।।

(यहां पहला शंख पुतले के ऊपर डालकर दूसरा शंख पुन: जल से भर लिया।)

श्री गौरजा उवाच: ओं स्वामीजी पहले पुण्य के पहले पाप, पहले गर्भ के पहले सांस, पहले फोग के पहले फाग, पहले माई के पहले बाप, पहले के गुरु के पहले चेला, पहले रात के पहले दिन, पहले चन्द्र के पहले सूर्ज, पहले मूल के पहले डाल, पहले धर्ती के पहले आकास, पहले पवन के पहले पाणी, पहले नाद के पहले बिंद, पहले सून्न के पहले ओंकार, कथे शंकर गौरा जान गर्भ तत करो परवान श्री ईश्वरो वाच: हे गौरा देवी पार्वती जी पहले पुण्य पीछे पाप, पहले गर्भ पीछे सांस, पहले फोग पीछे फाग, पहले माई पीछे बाप, पहले गुरु पीछे चेला, पहले रात पीछे दिन, पहले चन्द पीछे सूर्ज, पहले मूल पीछे डाल, पहले धरती पीछे आकाश, पहले पवन पीछे पाणी, पहले नाद पीछे बिन्द, पहले सून्न पीछे ओंकार कथे शंकर गौरा जान गर्भ तत करो परवान ।।२।।

(यहां दूसरा शंख पुतले पर ढालकर तीसरा शंख पुन: जल से भर लिया जाता है।)

श्री गौरजा उवाचः हो स्वामी जी कौन मासे नेचल नीर कौन मासे पलटे खीर, कौन मासे रक्त का गोला, कौन मासे बान्धे विध्रे, कौन मासे थान थाणिंतर, कौन मासे जोग सम्पूर्ण, कौन मासे घात की काया, कौन मासे नौनाड़ी बहत्तर कोठा चौरासी संन्यास सवा हाथ का हाड, कौन मासे नरपति नर ने लिया अवतार, कथे शंकर गौरा जान गर्भ तत करो परवान, श्री ईश्वरोवाचः हें गौरा देवी पार्वती जी पहले मास में नेचल नीर, दूसरे मास में पलटे खीर, तीसरे मास रक्त का गोला चौथे मास बान्धे विध्रे पंचमें मास थान थणिन्तर, छेवे मास पलटी ज्योत सप्तमें मास जोग सम्पूर्ण अष्ठ में मास सर्वघात की काया, नौवे मास नौ नाड़ी बहत्तर कोठा, चौरासी संन्यास सवा हाथ का हाड़ दसमें मास नरपति नर ने लिया अवतार कथे शंकर गौरा जान गर्भ तत करो परवान।

(तीसरा शंख पूतले पर ढालकर चौथा शंख पुन· कुण्डा जल से भर लिया जाता है और मन्त्र उच्चारण होता है।)

श्री गौर्जा वाचः हो स्वामी जी मुखे वाक बाणी बागेश्वरी मन वन दासिनी उडंत कौली झडंत कौली अदृष्ट कौली न माता गुरु भावली इत्ये उत्थे बजर की काया सुफला बीज बीजन्ते इक्कीस हाथ की आन्दरा आठरा अंगुल का कलेजा बारा अंगुल का बजरी भण्डार पंदरा अंगुल का फिफरा नौ अंगुल की तिली पांच अंगुल का पिता कथे शंकर गौर्जा जान गर्भ तत करो परवान।

(अतः चौथे शंख से जल पुतले के ऊपर ढालकर पांचवां शंख कुण्डा जल से भर लिया और पुनः मन्त्र कहना शुरु किया।)

श्री गौर्जा वाचः हो स्वामी जी वत्री दन्द चौदा पसलिया त्रै अंगुल मुख की फाडी ईश्वर जोगी भूले न चूके सूर्ज जाके संग रमै गुरुजी इस काया अन्दर चार पात्र बोलिये कौन कौन चार पात्र

बोलिये सिद्धं स सिद्धं अतीतं सुपात्रं, चार पात्र बोलिये गुरुजी इस काया अन्दर चार वेद बोलिये कौन कौन चार वेद बोलिये। ऋग्वेद यजुर्वेद श्यामवेद अथवर्णवेद् चार वेद बोलिये गुरुजी इस काया अन्दर चार कुराण बोलिये कौन कौन चार कुराण बोलिये, अमूर जमुर अकुरान फक्कुरान चार कुरान बोलिये, गुरुजी इस काया अन्दर सात समुंद्र बोलिये कौन कौन सात समुन्दर बोलिये, प्रथमे अलील समुद्र द्वितीये खीर समुद्र तृतीये रेग समुद्र चतुर्थे धूड़ समुद्र पंचमे मन समुद्र षष्टमे खारा समुद्र सप्तमे रन्तागर समुद्र एते सात समुद्र बोलिये घटे ब्रह्माण्ड मण्डे सूर्ज फिरे खण्डे खण्डे हृदय चार खाणी चार बानी चन्द सूर्ज पवण पाणी जहां जहां साध तेरा होये शिवपुरी में बास हमने किनी जुगत महाराज करे तेरी मुक्त ऐती राजे धर्म जी गुरु भावली सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**मन्त्र विनियोगः-** गर्भ धारण अर्थात् सन्तति प्राप्ति के लिये चौकी पर पान का जोड़ा, पान पर सुपारी, सुपारी के ऊपर सात धान्य के आटे का पिण्ड, पिण्ड के ऊपर नवमुखी घी का दीपक ९ दीपक रखें और उपरोक्त मन्त्र ९ बार जपें। ऐसा ४१ दिन तक करें, कार्य सफल होगा। सन्तान प्राप्ति होगी। यही विधान गर्भवती ९ मास करे तो सुरक्षित एंव सफल, सुसंस्कारी सन्तान प्राप्त होगी।]

इस प्रकार पांचवा शंख भी मन्त्र पूरा करते हुये पुतले के ऊपर ढालते हैं।

अतः जोगन पुतले की यथा स्थित पूजन करती है, चन्दन या केशर का तिलक, कंगण (मौली) चढ़ाती है। बिल्ब पत्र, लाल पुष्प, आटे का पिण्ड, अक्षत (आखा), सुपारी (ताम्बुल) आदि पूजन करते हुये निम्न मन्त्र का उच्चारण करती है।

मोक्ष गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सों का सकल पसारा, अक्षय योगी सबसे न्यारा। सद्रांला तोड़ चौदह चौकी यम की तोड़ हंसा ल्याऊ मोड़ हंसा तो ला कहां धरे अलष पुरुष की सीम, हंस तो निर्भय भया काल गया सिर फोड़ निराकार के जोत में रती न खण्डी हो, कौन कौन साधु भया ब्रह्मा विष्णु महेश, वे साधु ऐसे भये यम ने पकड़े केश, मोक्ष गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह मन्त्र पितृ पक्ष अमावस्या के दिन अपने पूर्वजों के नाम सप्त अनाज आटे के पिण्ड बनाकर उतने की घी ज्योत लगायें, पूजन करें, मिट्टी के मटके में गंगा जल पंचामृत सन्मुख रखें। इस मन्त्र का १५१ बार प्रातः जप करें और शंख द्वारा पिण्डों को ५-५ बार जल चढ़ायें। उन्हें खीर, हलवा, पूड़ी इत्यादि पंचपकवान का भोग लगायें। कौवों, यजमान या साधु को भोग देवें। वस्त्र दान करें। पितृ घर, मकान को छोड़कर मुक्ति को जायेंगे तथा पितृ दोष नहीं रहेगा।]

इसप्रकार शंख ढाल एवं पुतला पूजन के पश्चात् जोगन दोनों कुशा की पवित्रियाँ निकालकर पूजन पात्र में रखती हैं और वहां का आसन छोड़कर अपने आसन पर विराजमान होती है। जिस समय जोगन को गिरेवान देकर टैलुवा कैलाश की ओर पुतले को शंख ढालने को ले गये थे। बिल्कुल उसी वक्त साखियाँ बाला सुन्दरी चौक सन्मुख (मध्य) आसन ग्रहण करता है।

(छ) साखियाँ का आदेश-नमन विधि

अतः साखियाँ आसन ग्रहण करने के बाद पीरजी उसे आखा (अक्षत) देते हैं और साखियाँ पीरजी तथा जोगन के जैसे ही आदेश नमन विधि पृष्ठ संख्या २१९ से लेकर २३० तक सभी मन्त्रोच्चार के

साथ माई के पाट तथा जोतियों को नादि आदेश तथा सभी मानधारियों को हस्तस्पर्श नमन करते है तद्पश्चात् –

(ज) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: टैलुवा साखियाँ को गिरेवान (पर्ना) कन्धे पर देकर उन्हें कैलाश में ठीकरा सन्मुख ले जाकर आसन पर बैठाते हैं। साखियाँ ठीकरा या गत गंगा जोत का पूजन तथा दान दक्षिणा चढ़ाते हैं। कोतवाल अपने कॉपी में साखियाँ का नाम, पंथ, गुरु का नाम, पता इत्यादि नोट करता है। साखियाँ पूजन पात्र में से दोनों पवित्रियाँ अपने हाथ की अंगुली में डालते हुये निम्न मन्त्र बोलता है। या मन्त्र टैलुवा भी बोल सकता है।

★ **टहल पवित्री का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २३१ पर देखें) अत: पूर्ववर्णित (पृ० सं० २३२ पर देखें) विधि से पुतले के ऊपर शंख ढालने के लिये शंख मन्त्र से शंख ग्रहण किया।

★ **अथ शंख बाला** (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें) अत: पहला शंख कुण्डा जल से भर लिया और निम्न यम जंजीरा मन्त्रोच्चार करते हुये शंख ढालना शुरु किया।

अथ यम जंजीरा

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं दोऊ काल विस्तारा आखे योगी सब से न्यारा मारु काल उखाडू भूजा, चौदा चौकी यम की तोडु हंसा ल्याऊ मोड़ हंसा को कहा बैठाऊ जहां सत गुरु की ठोड़ सत गुरु मिला पूरा मारया काल न जाय सिर फोड़।

(उपरोक्त मन्त्र से पहला शंख पुतले के ऊपर ढालने के बाद अत: दूसरा शंख ढालना शुरु किया और आगे पुन: मन्त्रोच्चार शुरु किया।)

कौन कौन सन्त उत्पन्न, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, जिन यमा के पकड़े केश, धर्मराजा जी के यम बोलिये कौन कौन यम बोलिये हैदरिया, नादरिया, कादरिया, जथरिया, कसाइया, मैणिया, ततबीरिया, अबदुलु, गुलजाला, शिगाला, अबजाला, मुहंकाला एते द्वादश नाम फरेस्त्यों के बोलिये।

(अत: तीसरा शंख ढालना शुरु किया पुन: मन्त्रोच्चार करने लगे।)

धर्मराजा जी के कुण्ड बोलिये येड़ा कुण्ड, केड़ा कुण्ड, कुण्ड औलिया, धौलिया कुण्ड, लिंग कुण्ड, भग कुण्ड ऐते कुण्ड बोलिये, द्वादश अक्षर हिर्दे में धरे लख चौरासी का फेरा टरे।

(अत: चौथा शंख ढालना शुरु किया पुन: मन्त्रोच्चार करने लगे।)

यहि मेरा नाम यही मेरा थान जां ज्योत जहां परम ज्योत जहा हमारा बासा सत गुरु मिले पूरे, मिटी यम काल की आसा। यम जंजीरा किसने कहा गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा। गुरु गोरक्षनाथजी ने किसको सुनाया सिद्ध मच्छेन्द्रनाथजी को सुनाया जम जंजीरा पढंन्ते सुणन्ते गोरक्ष मच्छेन्द्र अमर हुये।

(अत: पांचवा शंख ढालना शुरु किया और निम्न मन्त्र पुन: उच्चारण किया।)

कौन कौन हत्या बोलिये राज हत्या गोत्र हत्या स्त्री हत्या बाल हत्या, गौ हत्या, सर्व हत्या टरन्ते गुरु गोरक्षनाथजी राया यम जंजीरा जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार पांच शंख ढालने के पश्चात् साखियाँ निम्न मन्त्र से पुतले की गति पर यथा स्थित पूजन करते हैं। चन्दन/केशर तिलक, कंगन (मौली), बिल्ब पत्र, लाल पुष्प, आटे का पिण्ड, ताम्बूल (सुपारी) आखा इत्यादि चढ़ाते हुये निम्न यमपुरी-से-पार-गली का स्तवन पूजन करते हैं।

यम-पार-गली-स्तवन-मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं बाला सोहं बाला, गोरक्ष बाला, बटुक बाला, यम दण्ड काहे पर चाहिये, कामी क्रोधी, गुरु द्रोही पर चाहिये, जवभर जोत जूनी, छोड़ अंजूनी आये जवलिया, जवोत्रिया, हाजरीया, नाजरीया, कोढीया, ततबीरीया, मानीपात, अजराइल फरिस्ता, छोड सन्त की राह, संत चले वैकुण्ठ के सिर भार चित्राय नमः चित्रगुप्ताय नमः, मृतवे नमः, महादेवाय नमः, चौदा सन्त राजाय नमः तिलक कंगण पिण्ड पुष्प आखा ताम्बुलम समर्प्यामीः। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**मन्त्र सिद्धिः**- उपरोक्त यम जंजीरा मन्त्र सिद्धि के लिये ४१ दिन का अनुष्ठान करें। सन्मुख श्री यम देवता के नाम कलश स्थापन करें, घृत ज्योत लगायें। दीपक अखण्ड हो तो उत्तम होगा। मन्त्र का नित्य २१ बार जाप करें। धूप, दीप, गन्ध, अक्षत, कर्पूर, केशर तिलक, लाल पुष्प से पूजन करें, नित्य बेसन के लड्डू, पान (लौंग, इलायची, सुपारी आदि) का भोग लगायें, अन्तिम दिन घृत, हवन सामग्री, काले तिल, जौ मिलाकर हवन करें। उड़द के पकौड़े का भोग बलि रुप में लगायें। दही तथा पुराना गुड़ का बून्द मात्रेण भोग लगायें। मन्त्र सिद्ध होगा तथा आपके सभी मनोवांच्छित कार्य सफल होंगे। विशेषतः यह मन्त्र मनन करना मोक्ष स्वरुप है।

उपरोक्त नित्य पूजन यम-पार-गली-स्तवन-मन्त्र से करें।]

इस प्रकार पुतला शंखढाल एवं पूजन के पश्चात् साखियाँ दोनों

कुशाकी पवित्रियाँ निकालकर पूजन पात्र में रख देते हैं और वहां का आसन छोड़कर अपने आसन को ग्रहण करते हैं। जिस समय साखियाँ को गिरेवान देकर टैलुवा कैलाश की ओर पुतले पर शंख ढालने ले जाते हैं बिल्कुल उसी वक्त वीर-महावीर बाला सुन्दरी चौक सन्मुख (मध्य में) आसन ग्रहण करता है।

(झ) महावीर का आदेश नमन विधि

अत: महावीर आसन ग्रहण करने के बाद पीरजी उसे आखा (अक्षत) देते हैं और महावीर भी पीरजी, जोगन और साखियाँ के आदेश नमन विधि जैसे ही पृ० सं० २१९ से लेकर २३० तक का सभी मन्त्रोच्चार के साथ माई के पाट तथा सभी ज्योतियों को नादि बजाकर आदेश तथा सभी मानधारियों को हस्तस्पर्श नमन करते हैं। तद्पश्चात् पुतले को शंख ढालते हैं।

(ञ) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: टैलुवा वीर को गिरेवान (पर्ना) कन्धों पर देकर उसे कैलाश में ठीकरा के सन्मुख ले जाकर आसन पर बिठाते हैं। वीर ठीकरा, गत गंगा जोत का पूजन करके कुछ दान दक्षिणा चढ़ाते हैं। कोतवाल उनका नाम, पता, गुरु का नाम, पंथ आदि अपनी कॉपी में नोट करता है। वीर पूजन पात्र से दोनों पवित्रियाँ अपने हाथ की अंगुलियों में डालते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **टहल पवित्री का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २३१ पर देखें) अत: पूर्ववर्णित (पृ० सं० २३२ पर देखें) विधि से पुतले के ऊपर शंख ढालने के लिये निम्न मन्त्र से शंख लेता है।

★ **अथ शंख बाला** (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें) अत: वीर ने पहला शंख कुण्डा जल से भर लिया और ओं वैराट मंत्र कहते हुय

पुतले के ऊपर शंख ढालना शुरु किया।

ओं वैराट मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ वैराट मन्त्र, वैकुण्ठ वासा, अमर लोक में होत निवासा, गगन मन्जा श्वेत फूल अटल भूमि विश्रामा, अटल ध्यान महाचेतन जहा गुरु गोरक्षनाथजी धरे ध्यान।।१।।

(यहां दूसरा शंख कुण्डा जल से भर लिया और पुनः मन्त्रोच्चार करते हुये शंख ढालना शुरु किया।)

शीश मथड़ा तेज रंग-निभाव नेजा नाम का कर गुरां से प्रतीत काल-पंछी पग बिना दूर रहे गांव-गांव कर रस्ता दोहेला रो रो पंछीरा येरा एका पंथ दुहेला निर्भय नीचे नाम के काल खड्ग के शीस मे काल जाल डेरा करिया।।२।।

(अतः तीसरा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले के ऊपर पुनः मन्त्रोच्चार करते हुये ढालना शुरु किया।)

सफेद आसन, सफेद वासन, सफेद निरन्जन की काया रुणंकार की सेज में सेज मिलवा होत।।३।।

(अतः चौथा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले पर पुनः मन्त्रोच्चार करते हुये ढालना शुरु किया।)

ओंकार की सेज ले मकड़ी जैसा, मकड़ी सरीका तार है अजर बजर की धारा साध संत सब एक है।।४।।

(अतः पांचवा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले के ऊपर पुनः मन्त्रोच्चार करते हुये ढालना शुरु किया।)

रुणुकाल के खेत में सहज मिलवा हेत है श्याम को प्रणाम, गुरा को नमाम साध संत को सलाम गत गंगा में हर नाम।

श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह वैराट मन्त्र ग्रहण काल में सिद्ध करें। भगवान विष्णु के मन्दिर में जाकर घृत, दीपक तथा धूप, सफेद कमल पुष्प, सफेद अन्न या मिठाई का भोग लगायें। सफेद वस्त्र, सफेद आसन तथा सफेद भस्म का लेपन करें और मन्त्र जाप करें। सवा किलो सफेद अनाज गाय, पंछी को खिलायें।

मन्त्र सिद्ध होगा, शत्रु की पराजय होगी तथा भूत प्रेत तथा जादू टोने का असर नहीं होगा।]

इस प्रकार उपरोक्त वैराट मन्त्र में पांच शंख पुतले पर ढालने के बाद वीरजी निम्न मन्त्र द्वारा पुतले शक्ति संक्रमन उद्देश्य से यथा स्थित पूजन करते हैं; जैसे तिलक, कंगन, बिल्व पत्र, पुष्प, आटे का पिण्ड, ताम्बूल, आखा आदि चढ़ाते हुये निम्न वीर अस्त्र मन्त्र से पूजन करते हैं।

वीर अस्त्र (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। उलटा तिरकस उलटा तीर। उलटा चले श्री हनुमन्त वीर सवा शेर का तोशा खाय, अस्सी कोश की धवल लगाय, मेरे दुश्मन को पकड़ लाय ना पकड़ लाय तो शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी की आन, सत फुरे सत् वाचा फूरे घट पिण्ड की रक्षा गुरु गोरक्षनाथजी करे। इतना वीर मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**मन्त्र सिद्धिः**- शनिवार या मंगलवार को दक्षिण दिशा की तरफ मुख वाले हनुमान मन्दिर में जायें, मूर्ति को सिन्दूर लगायें, सरसों के तेल की ज्योत लगायें, लाल बुन्दि, पान, लौंग, इलायची का भोग लगायें। रोट लंगोट चढ़ावें। यह विधि ४१ दिन नित्य ११ बार वीर मन्त्र का जाप करें। मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। इसका उपयोग सभी कार्य सफलता में होगा। जो भी कार्य करना हो मन्त्र ७ या ११ बार बोलकर करें।]

इस प्रकार शंख ढालना एवं पुतला पूजन के बाद वीरजी दोनों कुशा पवित्रियाँ निकालकर पूजन पात्र में रखता है और वहाँ का आसन छोड़कर अपने आसन पर आकर बैठता है। जिस समय वीर को गिरेवान देकर कैलाश की ओर पुतले को शंख ढालने ले जाते हैं बिल्कुल उसी समय कुबेर भण्डारी बाला सुन्दरी चौक सन्मुख (मध्य) आसन ग्रहण करता है।

(ट) कुबेर भण्डारी का आदेश नमन विधि

अत: कुबेर भण्डारी माई के पाट सन्मुख आसन ग्रहण करने के बाद पीरजी उसे आखा (अक्षत) देते हैं और यह कुबेर भण्डारी भी पीरजी, जोगन साखियाँ और महावीर जैसे ही आदेश नमन विधि पृ० सं० २१९ से लेकर २३० तक का सभी मन्त्रोच्चार के साथ माई के पाट तथा सभी ज्योतियों को नादि बजाकर आदेश तथा सभी मानधारियों को हस्तस्पर्श नमन करते हैं। तद्पश्चात् पुतले को शंख ढालने जाते हैं।

(ठ) पुतले को शंख ढालना विधि

विशेष :- यहाँ कोतवाल टैलुवा का कार्य करते हैं क्योंकि जब कोतवाल भण्डारी को गिरेवान देकर कैलाश में ठीकरा के सन्मुख बिठाता है उसी वक्त टैलुवा अपने आदेश नमन विधि करने के लिये माई के चौक सन्मुख आसन पर जाकर बैठते हैं।

अत: कोतवाल भण्डारी को गिरेवान देकर कैलाश में ठीकरा के सन्मुख आसन पर बिठवाता है। भण्डारी ठीकरा या गत गंगा जोत का पूजन करके और कुछ दान दक्षिणा चढ़ाते हैं। कोतवाल उनका नाम, पता, गुरु का नाम, पंथ आदि अपनी कॉपी में नोट करता है। अत: भण्डारी पूजन पात्र से दोनों पवित्रियाँ अपने हाथ की अंगुलियों में डालते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **टहल पवित्री का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २३१ पर देखें) अत: पूर्वोक्त विधि से (पृ० सं० २३२ पर देखें) पुतले के ऊपर शंख ढालने के लिये निम्न मन्त्र से शंख लेते हैं।

★ **अथ शंख बाला** (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें) अत: भण्डारी निम्न "पंच शंख" मन्त्र उच्चारण करत हुये भण्डारी कुण्डा जल से पहला शंख भरके पुतले के ऊपर शंख ढालना शुरु करता है।

अथ भण्डारी पंच शंख

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अजर धर्ती बजर काया। भण्डार ज्योत भयी प्रकाशा। कौन होते है ब्रह्मा, कौन होते है विष्णु, कौन होते है महादेव, भण्डारी होते है ब्रह्मा, विर होते है विष्णु, पीर होते है महादेव, कौन भयी ऋद्धि सिद्धि, कौन भये कोतवाल, कौन भयी अन्नपूर्णा। श्री गणेश भये ऋद्धि सिद्धि, हनुमन्त भये कोतवाल, गंगा गौर्जा बनी अन्नपूर्णा जोत जोत महाजोत, गत जोत, अटल जोत, अखण्ड जोत, बाला जोत को प्रणाम्यम्।।१।।

(अत: दूसरा शंख कुण्डा जल से भर के पुतले पर ढालना शुरु किया पुन: मन्त्रोच्चार करने लगे।)

अटल दलीचा कुबेर भण्डार जोत पाट पर कलश थाप्या, अनन्त कोट सिद्ध ने ल्याया। सर्व मिल थापना थाप्या। बनखण्डी में पलटी खायी। कोतवाल हनुमन्त ने लकड़ी लाई माई गौर्जा मिट्टी डाली, ब्रह्मा भण्डारी अग्नि प्रजाली अन्नपूर्णा महामाई, रक्षा करे बाला सुन्दरी।।२।।

(अत: तीसरा शंख कुण्डा जल से भर लिया पुन: मन्त्रोच्चार शुरु किया और शंख ढालना शुरु किया।)

गत गंगा जोत प्रकाशा। पुतला बैठा अटल की छाया हंस-परमहंस सून निरन्जन शम्भू अजुनी शक्ति भज्जन। ज्ञान गुरु ने खोली कुन्जी, हंस को लगाय पार गती।।३।।

(अत: चौथा शंख कुण्डा जल से भर लिया पुन: मन्त्रोच्चार करते हुये पुतले पर शंख ढालना शुरु किया।)

ॐ सत का धर्म, धर्म का चोला, शंख संधूर कहा से आया, सात समुन्दर मे पाताल ठिया। अलष पुरुष ने शंख संधूर लाया, देखो सिद्धो शंखढाल पड़े पिण्ड का हर जा पाप। शंख ढ़ले शिव पूजे प्राणी पावे मोक्ष द्वार।।४।।

(अत: पांचवां शंख कुण्डा जल से भर कर पुन: मन्त्रोच्चार करते हुये पुतले पर शंख ढालना शुरु किया।)

ॐ अलिल आदि अलिल, अलिल पुरुष ने धर्म को भेजा, शंख रुप में मुक्ति पाया। अलिल स्वाहा अन्नपूर्णा स्वाहा रक्षा करे गुरु गोरक्षबाला। जिवडे दिना जनम मरण पिण्ड प्राण सतगुरां तरण, सिद्धो पावो मोक्षवरण। बाला सुन्दरी को जपो जाप पालो मोक्ष आपो आप। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

इसप्रकार पांच शंख पुतले पर ढालने के बाद कुबेर भण्डारी निम्न भण्डार मन्त्र से पुतले का पूजन अर्थात् चन्दन/केशर का तिलक, कंगन, बिल्व पत्र, लाल पुष्प, आखा, ताम्बूल आदि से यथा स्थिति पूजन करते हैं। ताकि पिण्ड प्राण को अन्नपूर्णा कृपा से दैहिक खानपानादि शील संतोष एवं समाधान होकर अन्त में विरक्ति हो जाये।

"अथ भण्डार मन्त्र"

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गणपत गणपत ऋद्ध पर बैठे गणपत आप देवी पूजो केसर काफूर

दोहरा कोट तेहरी खाई कंटक मार खप्पर में लिजे ऋद्धि टूटे नहीं विघ्न व्यापे नहीं हाजर हाजर गणपत की दुहाई गणपत पूजे अमृते सदा फल दीजे, धर्म की डिब्बी पाताल का ठीया नौ नाथ चौरासी सिद्धा मिल भण्डार किया भूरी पाली काली डिब्बी शिवजी के पास मड़ी मसाणी मैं फिरा गुरु हमारे साथ धरत की डिब्बी ब्रह्मा कपाली ब्रह्मा विष्णु मिल अग्नि प्रजाली नीचे नीचे आग उपर पानी तपो रसोई आद भवानी घ्रततो गणपत पूरे तत पूरे गणेश ऋद्ध सिद्ध तो श्री ईश्वर पूरे तव प्रसाद महेश अन्नपूर्णाय विद्महे महा अन्नपूर्णाय धीमहि तन्नो अन्नपुर्नी प्रचोदयात। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह मन्त्र ग्रहण काल में जप करके सिद्ध करें। शक्यतो गणेशजी के मन्दिर में जाकर तदनन्तर घर में भोजन तैयार करें, २१ मोतीचूर के लड्डू बनावें, एक ताम्र लोटा लेकर बहते जल में जावें, पांच लड्डू, सिन्दूर, पुष्प जल पर छोड़कर लोटा जल से भर लेवें। अतः गणेश मन्दिर में जावें यहां भी पांच लड्डू, २१ दुब दुर्वा, लाल पुष्प, सिन्दूर तथा ५ सुपारी, ५ लौंग, इलायची गणेशजी को चढ़ाकर पूजन करें। जल भरे लोटे में एक सुपारी, लौंग, इलायची डालें। लोटा घर ले आयें। जहां भोजन सामग्री रखते हैं वहां इस लोटे का कलश स्थापन करें। मन्त्र पाठ ७ या ११ बार करके कलश का पूजन करके एक लड्डू चढ़ावें, एक लड्डू पंछियों को देवें बाकी लड्डू ७ महात्मा या ९ कन्या को खिलावें।

अतः भोजन आरम्भ करें। भोजन में कभी कमी नहीं आयेगी। अनेक लोक भोजन भण्डार भरपूर होकर करेंगे।]

इस प्रकार पुतला शंखढाल एवं पूजन के पश्चात् भण्डारी दोनों (कुशा) पवित्रियाँ निकालकर पात्र में रखते हैं और यह आसन छोड़कर अपना आसन ग्रहण करते हैं।

अत: भण्डारी के आदेश-नमन-शंखढाल के पश्चात् अनन्तगादी के आदेश-नमन-शंखढाल करने का क्रम आता है। किन्तु योगमाया पूजन कर्मकाण्ड के नियम एवं परम्परानुसार अनन्त गादि का आदेश-नमन-शंखढालना का कर्म सभी मानधारी तथा उपदेशी सदस्यों का आदेश-नमन और शंख ढालने का कर्म होने के पश्चात् अर्थात् सबके अन्त में कर्म होता है।

(ड) टैलुवा का आदेश-नमन-विधि

इनके बाद टैलुवा को कोतवाल (बालासुन्दरी) माई के पाट सन्मुख मध्य आसन पर बिठाता है। पीरजी टैलुवा को आखा (अक्षत) देते है। टैलुवा दक्षिणा माई के पाट को चढ़ाकर, पीरजी, जोगणी, साखियाँ, वीर तथा भण्डारी इनके जैसे ही आदेश-नमन विधि पृष्ठ संख्या २१९ से लेकर २३० तक का सभी ज्योतियों को नादि बजाकर तथा सभी मानधारियों को हस्तस्पर्श नमन विधि करते हैं तद्नन्तर पुतले के ऊपर शंख ढालते हैं।

(ढ) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: कोतवाल टैलुवा के कन्धों पर गिरेवान देकर कैलाश में ठीकरा के सन्मुख आसन पर बिठाता है। टैलुवा गत गंगा जोत का पूजन तथा कुछ दान दक्षिणा चढ़ाते हैं। कोतवाल उनका नाम, पता, गुरु का नाम, पंथ आदि अपनी कॉपी में नोट करता है।

विशेष :- यहां कोतवाल कॉपी में नाम, पता, नोट करने के बाद माई के सन्मुख जाकर आसन ग्रहण करते हैं क्योंकि अब उनका आदेश, नमन, शंखढाल का नम्बर आता है। इधर टैलुवा शंख ढालने को प्रारम्भ करते हैं।

अत: टैलुवा पूजन पात्र से दोनों (कुशा की) पवित्रियाँ अंगुलियों

में पहनकर निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **टहल पवित्री का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २३१ पर देखें) अत: (पृ० सं० २३२ पर देखें) पूर्वोक्त विधि से पुतले के ऊपर शंख ढालने के लिये पूजन पात्र से शंख लेते हुये निम्न मन्त्रोच्चार करते हैं।

★ **अथ शंख बाला** (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें) अत: टैलुवा निम्न "टहलवा गायत्री मन्त्र" उच्चारण करत हुये पुतले के ऊपर शंख ढालना शुरु करते हैं।

अथ टहलवा गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। महादेव पार्वती बन में आये, आके मढ़ी छवाये मढ़ी छवा के पांच वृक्ष लगाये, उन सबका तीर्थ उपाया।।१।।

(पहला शंख पुतले पर ढाला तद्पश्चात दूसरा शंख कुण्डा जल से भर लिया)

ब्रह्मा विष्णु ईश्वर माया जो ले नारद को फरमाया भर पात्र नारद को ल्याये ऋद्ध सिद्ध कुबेर जी ल्याये।।२।।

(दूसरा शंख ढालकर, तीसरा शंख कुण्डा जल से भर कर आगे मन्त्र बोलते है।)

सब सन्तों को बोल पठाया, अपनी अपनी ठौर बिठाये जग मोतियन के चौक पुराये।।३।।

(तीसरा शंख ढालकर चौथा शंख कुण्डा जल से भर लिया पुन: मन्त्र बोलते है।)

पांच पीर गद्दी बिठाये जपे अलख का जाप दर्शण पाये माई का पात्र दिया चलाय तीर्थ को पीलाय के नौनाथ के बीच मै भैरो का रुप सवाया सारे में आधी आधी में चौथाई चौथाई में आधी

गादी गुरु गोरक्षनाथ नौ नाथ चौरासी सिद्धों ने कोतवाल धर पाया।।४।।

(चौथा शंख पुतले पर ढालकर पांचवां शंख कुण्डा जल से भर कर आगे मंत्र बोलते है।)

जुगां जुगां से टहलवा करे गुरां की टहल सत का कुण्डा सन्तोष की ठाली गुरु फरमाया करो कोतवाली इतना टहलाव गायत्री जाप मन्त्र सम्पूर्ण हुआ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह मन्त्र ग्रहण होली या दीपावली में १५१ बार जप करके सिद्ध करें। पांच वृक्ष की समिधा से हवन करें। वह भभूती रक्षा का कार्य करेगी।]

अतः पांचवा शंख पुतले पर ढाल दिया जाता है।

[**विशेषः**- यहां मन्त्र के अनुसार टैलुवा और कोतवाल एक ही अर्थ के व्यक्ति है।]

इस प्रकार पांच शंख पुतले पर ढालने के बाद टैलुवा निम्न मन्त्र कहते हुये पुतले का पूजन करता है चंदन या केशर का तिलक, कंगण, बिल्व पत्र, लाल पुष्प, आखा (अक्षत), ताम्बूल आदि यथास्थिति पूजन करके ताकि पुतले पिण्ड प्राण अमृत रुप होने के लिये जो पाप पुण्य से न्यारा होने के लिए निम्न अमृतबाला मन्त्र सुनाते हैं।

अमृतबाला (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ जपो तपो श्रीं अमृतबाला। उपज्या अमृत सुन्दरी बाला। आओ चन्दा बरसो नूर, ध्यान देश में योगी अवधु। गत गंगा जमना बाई, बाला सरस्वति शक्ति उपाई। शिव शक्ति मिल पंथ चलाया, नाद बिन्द

का अमिरस प्याला। अमर बीज अमर काया, रती तोल नेत्र अन्जनी बाला। उठो नारायणी सिन्चो अमिरस, अवधू जोगी भोगे अंही रस। चन्दा सूरज भरलो साख, राख राख शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी राख अघोर पिण्ड पड़न्ता राख। गत गंगा जायके अभय प्रकाश। ॐ अमृत हुक्म जपाय विद्मेह महाअमृताय् धी मही तन्नो बाला अमृताय प्रचोदयात।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह मन्त्र योगी या साधना के लिये अमृत है। कुण्डलिनी जाग्रति के लिये उपयुक्त है। चन्द्र ग्रहण में सिद्ध हो जायेगा। जल में शीघ्र सिद्ध होगा।]

इस प्रकार पुतले का शंख ढाल एवं पूजन होने के पश्चात् टैलुवा कुशा पवित्री पात्र में रख देता है और यह आसन छोड़कर कर्म कार्य में लग जाता है।

(त) कोतवाल का आदेश नमन विधि

इस योगमाया कर्मकाण्ड में टैलुवा मानधारी तथा कोतवाल मानधारी दोनों एक ही मानधारी है। किन्तु उपदेशी योगेश्वर की उपलब्धि तथा कर्मकाण्ड का विस्तृत कार्य में और एक मानधारी को भी चुन सकते हैं। जिसे कोतवाल की उपाधी दी जाती है। जो कर्म-कार्य में अलग से सहयोगी होता है और पुतले के ऊपर एक और मानधारी की शंखढाल की बढ़ौती होती है। वैसे पुतले के ऊपर ज्यादा से ज्यादा योगेश्वरों ने शंख ढालना चाहिये जिससे मुक्ति विधान उत्तम हो जाता है। अतः कोतवाल को आवश्यकतानुसार लिया जाता है।

"(जोत) आदेश नमन"

जिस समय कोतवाल टैलुवा का नाम, गुरु का नाम, पता आदि ठीकरा पूजा की अपनी कॉपी में नोट करने के बाद बाला सुन्दरी चौक

सन्मुख (मध्य) आसन पर विराजमान होता है और पीरजी उसे आखा देते है कोतवाल पद्मासन या सरल (स्वास्तिकासन) में बैठकर माई के ज्योत पाट को आखा एवं दक्षिणा चढ़ाकर पीरजी, जोगण, साखियाँ, वीर, भण्डारी, तथा टैलुवा के समान ही आदेश नमन विधि पृष्ठ संख्या २१९ से २३० तक का करते हैं अर्थात् सभी ज्योतियों को नादि बजाकर आदेश तथा सभी मानधारिओं को हस्तस्पर्श नमन विधि करते हैं और शंख ढालने के लिये जाते हैं।

(थ) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: टैलुवा कोतवाल को गिरेवान देकर कैलाश के ठीकरा के सन्मुख ले जाकर आसन पर बिठाते हैं। कोतवाल गत गंगा जोत का पूजन तथा कुछ दक्षिणा-चढ़ावा चढ़ाता है। टैलुवा उनका नाम, पता, गुरु का नाम, पंथ, दान आदि नोट करते हैं। अत: कोतवाल पूजन पात्र से कुशा की पवित्रियाँ पहनते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **टहल पवित्री का मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २३१ पर देखें) अत: (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें) पूर्वोक्त विधि से पुतले के ऊपर शंख ढालने के लिये पूजन पात्र से शंख लेते हुये निम्न मन्त्रोच्चार करते हैं।

★ **अथ शंख बाला** (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें) अत: निम्न "कोटवाली" मन्त्र पाठ करते हुये कोतवाल कुण्डाजल से पहला शंख भरकर पुतले के ऊपर ढालना शुरु करता है।

अथ कोटवाली

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। दक्षिण दिशा दलावत नगरी तहा बसे गुलतान आसन, आसन कौन कौन बिराजे, औघड़ पीर बिराजे औघड़ पीर तुम भी आओ आदमाई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार

दक्षिण दिशा का कौन कोतवाल बोलिये, दक्षिण दिशा का हनुमान कोतवाल बोलिये, हनुमान कोतवाल तुम भी आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार हनुमान कोतवाल कहो काहे का पाट काहे का ठाठ काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन काहे का बासन काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार। ॐ गुरुजी दक्षिण दिशा का हनुमान कोटवाल वज्र का पाठ वज्र का ठाठ वज्र का घोड़ा वज्र का तोड़ा वज्र का आसन वज्र का बासन वज्र का कमण्डल कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार।।१।।

(अत: यहां दूसरा शंख पुतले के ऊपर ढालना आगे मन्त्र बोलते हुये शुरु किया)

ॐ गुरुजी पूर्व दिशा का कौन कोतवाल बोलिये। पूर्व दिशा का भानू कोतवाल बोलिये, भानु कोतवाल तुभ भी आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम आये जै जै कार कहो भानू कोतवाल काहे का पाट काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा काहे का तोड़ा काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा झोली, झण्डी पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार। ॐ गुरुजी पूर्व दिशा का भानू कोतवाल सोने का पाट सोने का ठाठ सोने का घोड़ा सोने का तोड़ा सोने का आसन सोने का वासन सोने का कमण्डल कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार।।२।।

(अत: यह तीसरा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले के ऊपर ढालना आगे मन्त्र कहते हुये शुरु किया)

ॐ गुरुजी पश्चिम दिशा का कौन कोतवाल बोलिये। पश्चिम

दिशा का चन्द्रमा कोतवाल बोलिये चन्द्रमा कोतवाल तुम भी आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर, लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार चन्द्रमा कोतवाल कहो काहे का पाट काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल, कड़ा झोली झण्डी पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार। ॐ गुरुजी पश्चिम दिशा का चन्द्रमा कोतवाल रुपे का पाट रुपे का ठाठ रुपे का घोड़ा रुपे का तोड़ा रुपे का आसन रुपे का वासन रुपे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।।३।।

(अत: चौथा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले के ऊपर आगे मन्त्र कहते हुये ढालना शुरु किया।)

ॐ गुरुजी उत्तर दिशा का कौन कोतवाल बोलिये। उत्तर दिशा का गरुड़ कोतवाल बोलिये, गरुड़ कोतवाल तुम भी आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार गरुड़ कोतवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार। ॐ गुरुजी उत्तर दिशा का गरुड़ कोतवाल लोहे का पाट, लोहे का ठाठ, लोहे का घोड़ा, लोहे का तोड़ा, लोहे का आसन, लोहे का वासन, लोहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।।४।।

(अत: पाँचवां शंख कुण्डा जल से भर लिया और अग्रिम मन्त्र बोलते हुये पुतले पर ढालना शुरु किया।)

ॐ गुरुजी आकाश लोक का कौन कोतवाल बोलिये। आकाश लोक का इन्द्र कोतवाल बोलिये, इन्द्र कोतवाल तुम भी

आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार इन्द्र कोतवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार। ॐ गुरुजी आकाश लोक का इन्द्र कोतवाल पवन का पाट, पवन का ठाठ, पवन का घोड़ा, पवन का तोड़ा, पवन का आसन, पवन का वासन, पवन का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।।५।।

(अत: छठा शंख कुण्डा जल से भर लिया और आगे मन्त्र कहते हुये पुतले के ऊपर ढालना शुरु किया।)

ॐ गुरुजी पाताल लोक का कौन कोतवाल बोलिये। पाताल लोक का शेष कोतवाल बोलिये, शेष कोतवाल तुम भी आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै कार शेष कोतवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार। ॐ गुरुजी पाताल लोक का शेष कोतवाल बक का पाट, बक का ठाठ, बक का घोड़ा, बक का तोड़ा, बक का आसन, बक का वासन, बक का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।।६।।

(अत: सातवां शंख कुण्डा जल से भर लिया और आगे मन्त्र पढ़ते हुये पुतले पर ढालना शुरु किया।)

ॐ गुरुजी मृतलोक का कौन कोतवाल बोलिये। मृतलोक का भैरव कोतवाल बोलिये, भैरव कोतवाल तुम भी आओ आद माई के शक्खर में आओ अन्दर लेखे अपरम्पार तुम भी आये जै जै

कार भैरव कोतवाल कहो काहे का पाट, काहे का ठाठ, काहे का घोड़ा, काहे का तोड़ा, काहे का आसन, काहे का वासन, काहे का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देव गुरु को नमस्कार। ॐ गुरुजी मृतलोक का भैरव कोतवाल मृतका का पाट, मृतका का ठाठ, मृतका का घोड़ा, मृतका का तोड़ा, मृतका का आसन, मृतका का वासन, मृतका का कमण्डल कड़ा झोली झण्डा पत्तर फावड़ी देवगुरु को नमस्कार।।७।।

[**मन्त्र सिद्धिः-** स्थान मकान सुरक्षा हेतु इस मन्त्र का होली, दशहरा, सोमवति अमावस्या को १०८ बार जपकर सिद्ध कर लें। पीपल वृक्ष की पूजा करें। दस परिक्रमा करें साथ में जनेऊ (धागा) पीपल को आवरण से बान्धें, एक परिक्रमा खुद की करें और पीपल के नीचे बैठकर मन्त्र सिद्ध करें। इस मन्त्र से चावल या उड़द दशों दिशाओं को फेंके या भभूत की फूंक मारे तो रक्षा होगी। कुछ न हो तो सभी दिशा में मन्त्र बोलकर ताली बजायें।]

इस प्रकार सात शंख ढालकर सब दिशाओं से पुतले को (मृतयोगेश्वर को) मुक्ति पथ जाने के लिये कोतवाल द्वारा सुरक्षा प्रदान की गयी।

अतः कोतवाल शंख ढालने के बाद पुतले को निम्न **"संजिवन बाला"** मन्त्र से पूजन करते हैं तिलक, कंगन, बिल्व पत्र, आखा, ताम्बूल, आटे का पिण्ड आदि चढ़ाते हुये संजिवन बाला देवी को प्रसन्न करते हैं।

संजीवन बाला

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ शून्य आकाश, शून्य धरती, शून्य जोती प्रकाश। ओं सों संजिवन काया बिच जम यम का फास। गुरु अविनाशी खेल रचाया। तंतर संजोगी संजिवन बाला। फुरो मन्तर जती गोरख बाला। हिर्दे हिले गिद

चालन देखो सिद्धो चले पुतला। कहा से आया कहा को जाना कौन पुरुष ने दिनी छाया। अगम आया निगम को जाना, गुरु अविनाशि ने दिनी छाया, घटे आकाश घटे पाताल घटे गत गंगा भरपूर चन्द सूर दो साख भरे सिद्ध के मुख से बरसे नूर, आओ अवधू शंख ढरे शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्ष द्वार। ॐ मृत्युंजयाय विद्महे संजिवनबालाय धी मही तन्नो संजिवनी प्रचोदयात्।

[**मन्त्र सिद्धिः**- पितृ पक्ष में ७ अनाज का पिण्ड बनायें। इस मन्त्र द्वारा जल प्रवाहित करें। पितृ की मुक्ति हो जायेगी।]

इस प्रकार से पुतले पर शंख ढालना एवं पूजन के पश्चात् कोतवाल दोनो कुशा की पवित्रियाँ पूजन पात्र में रख देते हैं और अपना आसन ग्रहण करते हैं।

सूचना :- उपरोक्त मन्त्रों उच्चार से कोतवाल की शंखढाल एवं पूजन कोटवाल न होने से टैलुवा भी कर सकता है।

इस प्रकार पीरजी से लेकर कोटवाल तक सभी के शंखढाल क्रिया होने पर सभी अपने-अपने आसन पर विराजमान होते हैं। तब जुगत का प्याला विधान शुरु होता है।

(द) जुगती का कुण्डा (भैरव अमृत कुण्डा) विधि

पीरजी हुक्म देते हैं - **"कलश पर जुगत बरसावो"**।

भण्डारी निम्न मन्त्र से जुगत का कुण्डा-भैरव जोत से उठाकर कलश सन्मुख रखता है।

(जुगत या जुगती का कुण्डा दोनों सम अर्थ के नाम है।)

जुगत (कुण्डा) बरसाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ धर्ती हमारी पात्र बोलिये, आकाश हमारा थाल सत का शब्द अगम की

भिक्षा जुगत लेवे ॐकार बाल। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश। आदेश।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं -**"पुतले को जुगत चेतावो"**।

भण्डारी निम्न मन्त्र से जुगत कुण्डा या कौली का अमृत पुतले पर थोड़ा सा छींटा लगाता है।

जुगत मन्त्र कौली

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं कौली आई मात की लीजे दो कर जोड़ आगे पांच महेश्वर पीछे देवी देवता तैतीस करोड़ करे कौली मुखे बाला हिर्दे जपो तपो श्री सुन्दरी बाला औ कौली आवे कौली जावे कौली गत गंगा में समावे सुगुरा होके कौली चेते इको त्तर सौ पुरुषा ले उतरे पार, नुगुरा होके कौली चेते गत गंगा के भार आई लेजा बरसे धर्ती निपजे आकाश सांधा पार जुठी आद शक्ति महामाई।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**मन्त्र सिद्धि:-** ग्रहण काल में १०८ बार जप कर सिद्ध करें, इस मन्त्र से जल, दूध, दही, गुड़ मिलाकर पिलाने से व्यक्ति मोहित होगा। कार्य सफल होगा। अनुचित कार्य का परिणाम उल्टा होगा।]

इसके पश्चात् पीरजी हुक्म करते हैं - **"जुगत का अमृत छककर (सभी को) बरसाओ"**।

अत: टैलुवा या जोगन क्रम से पीरजी से लेकर कोतवाल तक सबको जुगत का अमृत या जुगत का कुण्डा या अमृत प्याला सभी को एक ही (पात्र) कौली से छककर बरसाते हैं। अर्थात् बांटते हैं और इस वक्त पीरजी निम्न ऋष मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

ऋषि (ऋष) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं निरंजनी निरा रुपी सोई जोत स्वरुपी बैठ सिद्धासन देवी जी ऋष मन्त्र सुनाया आचार विचार ब्रह्माजी कर आद रचाया आओ ऋद्ध बैठो सिद्ध इलंगौ रुप विलंगी बाड़ी सवा शेर विष खाया दिहाडी जेती खाय तेती जरे तिस की रक्षा शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथजी करे। सोई पीवे सोई जरे सोई अमर रहे कहो जी सन्त कहां से आया, अमरपुरी से आया अमरपुर से क्या लाया ऋष मन्त्र ल्याया ऋष मन्त्र का करो विचार कौन कौन ऋष बोलिये आद ऋष जुगाद ऋष नारद ऋष, ऋष की कै पुत्री बोलिये। सूरा ऋष, पारा ऋष, माना ऋष सनकादिक, सनकादिक ऋष कि कै पुत्री बोलिये मेदनी पुत्री अघोर-गायत्री कौन भाषा कौन शाखा शिव भाषा शक्ति शाखा ऋष गन्त्र अलख जी भाखा पढ़ ऋष मन्त्र कौली खावे गुरु के वचन अमरापुर जावे बिना ऋष मन्त्र कौली खावे पिण्ड पडे नरक में जावे, एता ऋष मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्ध मे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[**विशेषः**- इस मन्त्र का पाठ करके ध्यान साधना में एकाग्रता आकर ऋषि, मुनि, साधु, सन्त के दर्शन होंगे। ४१ दिन पाठ करने पर वार्तालाप होगा। ध्यान के पूर्व २१ प्राणायाम करना अनिवार्य है।]

भावार्थ :- इस प्रकार यह जुगत का कुण्डा अर्थात भैरो अमृत प्याला सभी मानधारी एक साथ पीते हैं। यह एक ही जुगत का कुण्डा (अमृतप्याला) सभी एक साथ पीने का भावार्थ यह दर्शाता है कि नाथ सिद्ध योगेश्वरों में किसी भी प्रकार का भेदभाव या पक्षपात नहीं होता है। अर्थात् सभी एकी नाथों की माया है ऐसी मान्यता है। अतः नाथ

सिद्ध सर्वत्र एक भाव (आत्म प्रचिती रुप में) या सर्व नाथ सम भाव माना जाता है। विशेषत: जुगती कुण्डा अर्थात् भैरु अमृत प्याला पीने वाले योगेश्वर को नाथ सम्प्रदाय अजर अमर काया मानते हैं। इसी प्रकार पुतले को यह जुगत अमृत कुण्डा इसलिये पिलाया जाता है कि पुतला मुक्ति पथ पर जाता हुआ अमरत्व को प्राप्त करे।

अत: योगमाया पूजन विधि में यह जुगत अमृत कुण्डा विधान को विशेष प्राधान्य देते हैं। इस कारण जुगत अमृत कुण्डा पीते समय किसी के मन में यह सन्देह नहीं आना चाहिये कि हम किसी का झूठन पी रहे हैं आदि।

(ध) कुछ नियम

(१) सभी मानधारियों को अपने क्रम अनुसार ही आदेश, नमन एवं शंखढाल करना चाहिये।

(२) माई के पाट सन्मुख आसन ग्रहण होने के बाद दर्शित नियम अुनसार ही बैठे आसन में आदेश नमन करें।

(३) माई के पाट पर तथा गत गंगा पर अपने इच्छानुसार दक्षिणा चढ़ानी चाहिए। [जो कि गत गंगा माता और कैलाश (शिव) के प्रति भक्ति, श्रद्धा एवं सम्मान का प्रतीक हो।]

(४) शक्यतो माई के पाट, कलश, कैलाश आदि दैवी अनुष्ठान को पीठ नहीं दिखानी चाहिये।

(५) पुतले के ऊपर शंख ढालते समय हर एक मानधारियों के दिये हुये मन्त्रोच्चार करना आवश्यक है क्योंकि उसका सीधा असर या संस्कार पुतले के ऊपर होता है।

(६) अनन्त गादी का आसन एकासन होता है यह शुरु से लेकर अन्तिम शंख ढालने तक अपना आसन नहीं छोड़ता जो कि उसका

शंखढाल अनुष्ठान होता है।

(७) सभी मानधारी-योगेश्वरों को एक दूसरे के सहयोग और सहकार से कर्म काण्ड करना चाहिये। जिससे कार्य सुलभता तथा समय की बचत होती है। विशेषत: टैलुवा एवं कोतवाल को एक दूसरे की सहायता से कर्म करना चाहिये।

(८) अनन्त गादी का आदेश, नमन, शंखढाल कर्म सबसे अन्तिम समय होता है।

(९) शंख ढालने के लिये कुशा की पवित्री अंगुली में अवश्य डालना चाहिये तथा बाद में पुन: निकालकर पात्र में रखना चाहिये।

(१०) सभी को कम से कम पांच शंख पुतले के ऊपर ढालना आवश्यक है।

(११) जुगती का कुण्डा (अमृत कुण्डा) का अनादर नहीं होना चाहिये।

(१२) जुगत कुण्डा के अमृत सभी को सामूहिक सम भाव से प्राशन करना चाहिये।

(१३) अमृत प्रसाद लेना सभी उपदेशी योगेश्वर का अधिकार है।



(१४) नया चेला बनाने की विधि

इस प्रकार जुगती कुण्डा का सामूहिक अमृत पान होने के पश्चात जुगत का कुण्डा कलश के पास रखा जाता है ताकि आगे और उपदेशी योगेश्वरों को शंख ढालने के बाद अमृतपान दिला सकें।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"नये चेले को ले आवो"**

तब कोतवाल या टैलुवा कक्ष के बाहर जाते हैं। जहां उपदेशी शिष्य बनने के लिये आये हुये योगेश्वरों में से एक एक करके साथ लेकर देवद्वार अर्थात् मुख्य-परदेद्वार में खड़े होते हैं और निम्न मन्त्रोच्चार से प्रार्थना बोलते हैं।

(क) नया चेले का प्रवेश

देवद्वारे समीपे प्रार्थना (मन्त्र)-२

ओं रुपे का देवड़ा सोने सू जड़ीया किवाड़ साधू आया आस कर खोलो धर्मद्वार।।

टैलुवा का प्रश्न = **"औं अवधू किसका बीज किसका तुखम कौन प्रसादे मांग्या हुकम्।।"**

चेले का जवाब (साथ वाले कोतवाल भी बोल सकते हैं) - **"ओं अवधू शिव बीज, शक्ति का तुखम् गुरु प्रसादे माग्या हुकम्।।"**

(टैलुवा कपाट (परदा) खोलता है तब प्रवेश करते समय बोला जाता है)

"ओं गत गंगा मे जायके जति गोरक्ष कूं आदेश कण्ठे बसे सरस्वति हृदय देव महेश पग, पग, की रक्षा करे गौरीनन्द गणेश।।"

अत: टैलुवा आवाज देता है **"हुकम धनिका"**

भावार्थ :- **"हुकम धनिका"** यह कहकर ही अन्दर प्रवेश कर

सकते हैं यह योगमाया पूजन के अन्दर के कर्म का नियम है तथा मर्यादा है कि बिना पूछे अन्दर प्रवेश नहीं करना चाहिये यह हिन्दू संस्कृति का आदर्श है।

अत: मुख्य द्वार पर परदा खोलकर अन्दर आने से पहले यह कहा जाता है कि **"हुकम धनिका"** जब तक अन्दर से पीरजी का या उत्तराधिकारी का जवाब नहीं आता तब तक प्रवेश नहीं करना चाहिये और यह (मर्यादा) नियम सभी को लागू होता है।

अत: अन्दर से पीरजी पूछते हैं - **"कौन है?"**

बाहर से जवाब देते हैं। (यहां टैलुवा भी कह सकता है) - **"गुरुजी प्यासी गौ आती है।"**

(अर्थात् नये चेले को गौ का स्वरुप कहा गया है जो कि शरण में आया है और प्यासी का अर्थ वह गौ (शिष्य) बनना (प्यासा) चाहता है।

अन्दर से गुरुजी कहते हैं - **"यहां का जल खारा है।"**

(अर्थात् पीर जी कहते हैं नाथ उपदेशी शिष्य बनना अतिषय खड़तर है (खारा) अर्थात् कठिन है)

बाहर से (नया शिष्य) गौ बोलती है - **"पी लूंगी"**

(अर्थात् नया शिष्य (गौ) बोलती है मुझे नाथ उपदेशी चेला बनना मान्य (पी लूंगी) है।)

गुरुजी कहते हैं - **"सन्तो की सेवा करनी पड़ेगी।।"**

(नया शिष्य) गौ कहे - **"करुंगी"**

गुरुजी कहते हैं - **"पाप पुण्य से न्यारा रहना पडेगा।।"**

(नया शिष्य) गौ बोलती है - **"रहूंगी।"**

अत: टैलुवा बोलता है - **"हुक्म"**

गुरुजी बोलते हैं - **"हुकम धनिका"**

टैलुवा बोलता है - **"गुरुजी आज्ञा"**

गुरुजी (पीरजी) बोलते हैं - **"ईश्वराज्ञा"**

अत: टैलुवा उस नये चेले की आँखों पर कपड़ा (पट्टी) बान्धता है और अन्दर ले जाकर माई जोत पाट के मुख्य आसन पर बिठाता है।

अत: पीरजी पूछते हैं - **"गौ किसकी सेवा करेगी?"**

(अर्थात् वह नये चेले से पूछते हैं किसका शिष्य बनेगा।)

वह चेला जवाब देता है - **"(.....)फलां का शिष्य बनूंगा।"**

वहां के सभी मानधारियों में से किसी का भी नाम या पद से संकेत करके बताता है कि मैं इनका शिष्य बनूंगा।

अत: नये चेले के पास वह उसके अपेक्षित जिनका नाम बताया है, वह गुरुजी आते हैं और वह बायें हाथ से उसके आँखों के ऊपर की वस्त्र पट्टी खोलते हैं और उसी समय चेले के आँखों पर (मुख पर) दायें हाथ से पानी का छींटा मारते हैं। चेला सतेज होता है। अत: वह चेले के कान में गुरुमन्त्र देते हैं वह निम्न प्रकार के होते हैं।

(ख) उपदेशी गुरु मन्त्र दीक्षा विधि

"अथोपदेश" मन्त्र-२

"ॐ सों इलीं क्लीं श्रीं सों श्रीं सुन्दरी बाला"

यह मन्त्र कान में देते हैं या फूंका मारकर देते हैं। अत: उपदेश देते हैं।

"इत्युपदेश"

ओं चेतन योगी ज्ञान का आधार, नाद मुद्रा का लिया ओंकार।
श्रृंगार सिंगी सेली मेखली भूरी बाबरी काया झमकार दस्तार गुफतार

मिल खाक मै रहणा दिल कर पाक समझ बिचार अंधेरा तोड़ चानण किया अगन अगन में सत गुरु मिले मन की भ्रमणा दई मिटा गोदावरी क्षेत्र पर बैठे कर श्री शंभूयत्ती गुरु गोरक्षनाथ जी ने अपने स्वरुप का धरिया ध्यान। नाथ जी को आदेश।

इस प्रकार और भी कुछ उपदेशी मन्त्र निम्न प्रकार से दिये जाते हैं।

योगमाया उपदेशी मन्त्र - २

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सों अलीय-कलीय तारा त्रिपुरा तोतला। बाये हाथ पुस्तक दाये हाथ माला। जपो तपो श्री सुन्दरी बाला, जीव पिण्ड का तुम रखवाला। इतना योगमाया स्वरुप उपदेशी मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

या

अथ गुरु मन्त्र - ३

ॐ गुरुजी ओं सोऽहं अलिय कलिय तारा त्रिपुरा तोतला, काहे हाथ पुस्तक, काहे हाथ माला, बाये हाथ पुस्तक दाये हाथ माला, जपो तपो श्री सुन्दरी बाला, रक्षा करै गुरु गोरक्षनाथ बाला जीव पिण्ड का तू रखवाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

अत: गुरु मन्त्र का महात्म्य समझाते हैं।

(ग) "श्री गुरु मन्त्र का माहात्म्य" (मन्त्र)

ॐ गुरुजी ओं सोऽहं अलिय कलिय श्री सुन्दरी बाला, कौन जपन्ते ओं? कौन जपन्ते सोऽहं? कोन जपन्ते अलिय? कौन जपन्ते कलिय? कौन जपन्ते सुन्दरी? कौन जपन्ते बाला?

ओं जपन्ते निरन्जन निराकार अवगत स्वरुपी? सोऽहं जपन्ते माई पार्वती महादेव ध्यान स्वरुपी। अलिय जपन्ते ब्रह्मा सरस्वती वेद स्वरुपी। कलिय जपन्ते धरती माता अन्नपूर्णेश्वरी। बाला जपन्ते श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ शिव स्वरुपी।

आओ सुन्दर आलं पूछे देह कौन कौन योगेश्वरा, कौन कौन नागेश्वरा? धाव धाव ईश्वरी। धाव धाव महेश्वरी। बाये हाथ पुस्तक दाहिने हाथ माला, जपो तपो श्री सुन्दरी गुरु गोरक्ष बाला। इतना बाला बीज मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोटी सिद्धो में बैठकर श्री शम्भू जति गुरु गोरक्षनाथजी ने नौ नाथ चौरासी सिद्धो को पढ़ कथकर सुनाया। सिद्धो। गुरु पीरो। आदेश। आदेश।।

तथा अन्य प्रकार से भी मन्त्र महात्म्य बताते हैं।

"महात्म्य"

ॐ गुरुजी। पवन पर्वत उर्ध्वमुख कुआ सतगुरु आये निरंकार ब्रह्मा आये देखा कौन हाथ पुस्तक कौन हाथ माला? बाये हाथ पुस्त ; दाहिने हाथ माला, जपो तपो शिवं सोऽहं सुन्दरी बाला। बाला जपे से बाला होवे। बूढ़ा जपे सो बाला होवें योगी जपे सो निरोगं होय। जपो जपन्त कटन्त पाप। अन्त बेले माई न बाप। गुरु संभालो आपो आप। इतना गुरुमन्त्र महात्म्य सम्पूर्ण। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

(घ) अथ् गुरु मन्त्र (बालासुन्दरी) रहस्य

भावार्थ :- 'ॐ'-ॐकार बीज महाबीज है इसमें अकार ब्रह्मावाचक राजसगुणी है, "उ" कार विष्णुवाचक सत्यगुणी प्रणव है। "म" कार रुद्रवाचक तामस गुणी प्रणव है। इनकी अर्धमात्रा शक्ति की योगमाया की है, और अर्धमात्रा का बिन्दु श्री नाथजी का, योगवाचक

ह। इस प्रकार ॐकार पंच देवात्मक है। जिसे पंच ईश्वर, पांच महेश्वर आदि कहा जाता है। इस ॐकार के प्रणव द्वारा पर ब्रह्म जानने का साधन है अत: ॐ प्रणव का उच्चार अर्थात् प्र = प्रपंञ्च (सृष्टि संसार), न = नहीं, व: तुम्हारे लिये अर्थात् तुम्हारे लिये यह प्रपंच नहीं है और जो है वह सतचित् ब्रह्म ही है तुम इस प्रपंच से मुक्त हो अगर यह ॐ शब्द उच्चार या जप करने से अर्थात् शब्दब्रह्म से परब्रह्म तक जाकर मुक्ति प्राप्त होती है। इस शब्दब्रह्म को नाद ब्रह्म, परानाद, परावाणी कहते हैं जो मूलाधार चक्र में स्थित है। सुषुप्ति या तुर्यातीत या समाधि अवस्था में इसका अनुभव होता है। यहां नाथ चिदानन्द स्वरुप और उसकी शक्ति चिदानन्दात्मिका अर्थात् कुण्डलिनी को कहा है जहां छ: चक्र जाग्रती होती है। इस चिदानन्दात्मिका को बाला सुन्दरी योगिनी कहा है। जिसका आसन पीर आदिनाथजी के वाम भाग में है। जिसे माया या योगमाया कहते हैं। बालासुन्दरी चौक पूरते समय समस्त देवी देवता और ब्रह्माण्ड को भी निर्देशन किया है। मन्त्रोच्चार द्वारा नाद ब्रह्म, ज्योति रुप में शक्ति का निर्देशन हुआ है। योगी सभी विकल्प हटाकर निर्विकल्प समाधि में जाता है यह समाधि परावाणी से भी परे है जब तक ॐ स्वरुप परावाणी में नहीं उतरता तब तक निर्विकल्प समाधि लगाना कठिन है। अत: इस परावाणी को नाथजी शक्ति मानते हैं जिसे माहेश्वरी कहा है जो माई के चौक में मुख्य जोत होती है।

ओं-सोहं - ॐकार ब्रह्मरुप है तंत्र में इसके बिन्दु का अर्थ शिव है और बीज का अर्थ शक्ति है। पृथ्वी बीज का अर्थ शक्ति है। जिस पृथ्वी (शक्ति) में पांचों तत्व अपने बीजों सहित विद्यमान हैं जिसमें लं बीज पृथ्वी का, वं जल का, रं अग्नि का, यं वायु का और हं आकाश का और यह पांचों बीज ॐकार से अभेद हैं और घट पिण्ड और ब्रह्माण्ड पांच तत्व से ही अभेद हैं। अत: ॐ से चिद्रुपा शक्ति अभेद

है इस चिद्रुपा शक्ति का योगमाया पूजन में जोगन वीर साखियाँ इनका शक्ति का सम्बन्ध परम्परा शक्ति से रहता है। यहाँ पीर आचार्य या उत्तराधिकारी का सम्बंध प्रणव के वाक्यार्थ से है नाथ तत्व का सम्बन्ध प्रणव के लक्ष्यार्थ से है, लक्ष्यार्थ का सम्बन्ध महाबिन्दु से है, महाबिन्दु का सम्बन्ध परानाद से, परानाद का सम्बन्ध ॐकार से, ॐकार का सम्बन्ध ओहं सोहं अजपा मन्त्र से है।

अत: पृथ्वी की लाकिनी शक्ति जिसका लँ बीज है।

जल की वाकिनी शक्ति जिसका वँ बीज है।

अग्नि की राकिनी शक्ति जिसका रँ बीज है।

वायु की याकिनी शक्ति जिसका यँ बीज है।

आकाश की हाकिनी शक्ति जिसका हँ बीज है।

हमारे नाथ सिद्धों में ॐकार का प्रादुर्भाव "सों ऽ हं" से होता है और "सों ऽ हं" श्वास से बनता है। श्वास नाभि चक्र से बनता है और स्थूल प्राण क्रियाशील रहता है। जिस प्रकार भूख लगती है सूक्ष्म इच्छा प्रत्यक्ष भोजन करना स्थूल रुप है। प्राणी २१६०० श्वास के ओं सोहं करता है। इसे हंस बोलते हैं। हं हं आवाज से श्वास बाहर औ स आवाज से प्राण अन्दर जाता है इस हं सं के प्राणों को शरीर अन्दर रोकने से (कुम्भक) करने से अन्दर ॐ का प्रागट्य होता है और ध्यान में एकाग्रता आती है। यह नाथ सिद्धान्त है इसे प्राण विद्या या महाविद्या कहते हैं। इसके द्वारा कुण्डलिनी मूलाधार से जाग्रत होकर स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनहद, विशुद्ध, आज्ञा, सहस्त्रागार तक प्राण विद्या क्रियाशील होकर वह महाविद्या हो जाती है।

इस प्रकार ॐ गुरुजी ॐ सोहं तक रहस्य हुआ। अत: अलिलं कलियं तारा त्रिपुरा तोतला का रहस्य देखेंगे।

अलिल-अल + इलं अ-ल-इ-ल अतः अर्थात् प्रत्याहार इसमें शरीर के सभी चक्र से मूलाक्षय बीज सम्मिलित है। अर्थात् समस्त चक्रों के वर्ण और व्यंजन अ से ल तक आते हैं। यह वैदिक तांत्रिक, मांत्रिक सभी वागमय का मूल कारण है और वह सब ज्ञान सिद्ध है इसमें 'अ' कार को शाम्भव सिद्ध कहते हैं 'ल' कार को ज्ञान सिद्ध उतना ही क्रिया सिद्ध नाथ सिद्धों ने माना है अर्थात् **अलीयं का भावार्थ ज्ञान योग के साथ कर्मयोग भी करना चाहिये ऐसे प्राणी को सद्गती मिलती है।**

कुछ नाथ सिद्ध अलिय को ऐं स्वर सरस्वती का बीज ज्ञान सिद्ध मानते हैं। तब इसका स्थान कण्ठस्थान ओष्ठ स्थान भी है। अलियं स्वरुप ऐं का स्वरुप अलियं का साक्षात्कार करने से दश महाविद्या में चौथी विद्या की सिद्धि प्राप्त होती है।

कलियं - कल + इय, कल = चल अचल प्राणियों की संख्या जानने वाले को कल कहते हैं। जिसे केवल गुरु गोरक्षनाथ ही जानते हैं।

कलियं के 'क' कार को मन्त्र सिद्ध मानते हैं क से म कार तक सभी वर्ण मन्त्र सिद्ध कहते हैं। किन्तु कलियं के 'क' कार में 'अ' कार भी है जो ज्ञान सिद्ध है। अर्थात् 'क' कार में ज्ञान और मन्त्र दोनों की सिद्धता है। इसमें जो 'ल' कार है वह शाम्भवी अर्थात् य से ह कार तन्त्र शास्त्र में शाक्त है। इस प्रकार **कलियं में ज्ञान सिद्ध, मन्त्र सिद्ध, शाम्भवी सिद्ध और शाक्त सिद्ध इनका संयोग है।**

कलियं को क्ली काम बीज मानते हैं, यह कलिय का स्वरुप है। इससे समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है सृष्टि पूर्व भगवान विष्णु ने 'क्लीं' का ही अनन्त जाप किया था। क्लीं महाकाली जो दस महाविद्या ज्येष्ठ मुख्य मानी जाती है और योगमाया में गत गंगा में शाक्त योगिनी मानते हैं। क्लीं का साम्प्रद भेद करने से ह्रीं का भी बोध होता है जो

महालक्ष्मी का बीज है। ह्रीं का भेद शाम्भवी शक्ति समानता से महा सरस्वति का बीज बनता है इस प्रकार **यह कलियं में कलं-यं-क्लीं -ह्रीं-शाम्भवी शक्ति बीजों से महाकाली, महालक्ष्मी महासरस्वती इन शक्तियों का बीज क्रमन्याय संजोग विद्यमान है।**

"तारा"

यह दश महाविद्याओं में आद्य शक्ति है। तारणे वाली को तारा कहते है महासाम्राज्य नायिका, महायोगिनी, गोरक्षनाथ योगमाया में इसे अपरा शक्ति अर्थात् बिन्दु या महामाया मानते हैं गत गंगा माई चौक में भी इसे नाथों ने उच्च स्थान दिया है। तारा = 'त' कार मंत्रसिद्ध, 'अ' कार ज्ञान सिद्ध, 'र' कार शाक्त सिद्ध है इस प्रकार मन्त्र ज्ञान शक्ति संयोग से तारा को चिदात्मिका रुप में नाथ मान्यता है।

"त्रिपुरा"

त्रिपुरा - त्रिपुर सुन्दरी को बाला सुन्दरी भी कहते हैं। गत गंगा योगमाया में महाज्योत, अखण्ड ज्योत तथा कमल ज्योत इसी त्रिपुरा अर्थात् बालासुन्दरी की नाथ सिद्ध मानते हैं। त्रिपुरा अर्थात् मन्त्र, शक्ति, ज्ञान, गति, मोक्ष मुक्ति, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, इच्छा क्रिया ज्ञान इत्यादि त्रिपुरियों की यह अधिष्ठात्री (प्रधान) है इस प्रगटण महाशक्ति को त्रिपुरा कहते हैं यह कभी भी वृद्ध (बूढ़ी) नहीं होती अत्यन्त सुन्दर रुप में सदा रहती है। इस कारण बाला सुन्दरी भी है। तीनों लोक की त्रिपुर सुन्दरी है। सृष्टि विधात्री, सृष्टि उत्पत्ति की अपरा है।

"तोतला"

तोतला का और नाम भगवती मुकाम्बा का भी है। तोतला में 'त' कार ओंकार ज्ञान सिद्ध, द्वितीय 'त' कार मन्त्र सिद्ध, 'अ' कार ज्ञान सिद्ध, 'ल' कार शाम्भवी (शक्ति) सिद्ध है इसप्रकार तोतला भगवती

शक्ति वरदानी, कल्याणकारी और ऐश्वर्य देने वाली है। इसे वरदा भी कहते हैं। गत गंगा में मृतात्मा को मुक्ति का वरदान देती है।

काहे हाथ पुस्तक, काहे हाथ माला = ? यह मन्त्र में प्रश्न है। उत्तर में = "बायें हाथ पुस्तक, दायें हाथ माला" इसका भावार्थ - पुस्तक यानि विद्या, विद्या शक्ति का रुप शक्ति हमेशा बायें अंग रहती है और बायें हाथ पुस्तक शोभनीय है तथा दायें अंग में शिव, बायें अंग शक्ति (अर्द्धनारीनटेश्वर) मानते हैं माला मन्त्र मनन का द्योतक है मन्त्र शिव का द्योतक है। शिव दाहिने अंग विद्यमान हैं। इस लिये दाहिने हाथ में माला कहाया है।

"जपो तपो श्री सुन्दरी बाला"

श्री सुन्दरी बाला शक्ति शिव का अंग है। समस्त संसार शक्ति है, शिव शक्तिमान हैं अत: शिव समस्त संसार के नियामक, प्रकाशक (उत्पत्तिकर्ता) होकर निर्लेप हैं। अत: उन्हें जप तप की आवश्यकता नहीं है। शक्ति को है। अत: बाला सुन्दरी ॐकार स्वरुप आदिनाथ स्वरुप गुरु गोरक्षनाथ बाला के ॐ शिव गोरक्ष योगी मन्त्र का जाप करती है, तपस्या करती है क्योंकि शक्ति हमेशा कार्यशील, कर्मशील उसके गुण हैं। अर्थात् कर्म करना ही शक्ति है। चाहे परमार्थिक जप तप हो चाहे संसारिक कर्म हो, है तो शक्ति का स्वरुप। अत: कर्म ..... शक्ति ..... सगुण रुप सक्रिय हैं।

जप विधि - माला १०८ दानों की इसमें वैष्णवी तुलसी माला, शैवभक्त रुद्राक्षमाला तथा शक्ति साधक स्फटिक मोती, पवला, कमल कट्टा तथा घोर अघोरी मुण्ड हड्डी मनका आदि माला जपते हैं।

अत: यह माला दाहिने हाथ के अंगुष्ठ और अनामिका से पकड़े और बीच (मध्या) अंगुली से फेरे। जो कि कनिष्का तर्जनी का स्पर्श ना करें। सुमेरु के आ जाने से माला को विपरीत (माला घुमाके) रुप

में फेरना चाहिये।

जप = श्रद्धा विश्वास का स्वरुप होता है।

तप = जिसकी तपस्या है उनके स्वरुप अनुसंधान एक तितीक्षा तथा इन्तजार ही है।

"रक्षा करे गुरु गोरक्षनाथ बाला"

जिनके नाम में रक्ष है वह रक्षा करते हैं। गोरक्षनाथ गो याने, इन्द्रिय संयम, पृथ्वी, जल, सूर्य, बैल, यज्ञ, सुरभि, स्वर्ग, दिशा, किरण, नेत्र, बाणी, पशु आदि सभी की रक्षा करने वाले बाल स्वरुपी अर्थात् जती अर्थात् अखण्ड ब्रह्मचारी ऐसे रक्षा करने वाले गुरु गोरक्षनाथ ही हैं। महान ऋषि, गर्ग ऋषि जी ने श्री कृष्ण को गोरक्ष महिमा करते हुये कहा था कि जिसकी गोरक्षनाथ रक्षा करते हैं। उसे कोई मार नहीं सकता।

"नाथ"

जिसका कभी अथ (अन्त) और आदि न हो न + अथ, सनातन जो वास है, उसे नाथ कहते हैं और याचक को आशीर्वाद, ऐश्वर्य सुख शान्ति तथा दण्ड दाता कहा है। ना = अनादि रुपक है, 'थ' कार = स्थिरता, 'क्ष' कार = अक्षय ब्रह्म के बोधक हैं। मोक्ष दाता, ज्ञान दाता, अज्ञान का नाश करने वाले इन सभी रुपकों को नाथ कहा जाता है।

"जीव पिण्ड का तू रखवाला"

जीव अर्थात् सुख दु:ख अनुभूति, पिण्ड अर्थात् देह, काया हे नाथजी हमारे देह के सुख दु:ख की रक्षा करने वाले हैं।

पिण्ड भेद - (१) अति वाहिका पिण्ड, (२) सूक्ष्म पिण्ड, (३) स्थूल पिण्ड।

(१) अति वाहिका पिण्ड = मृत्यु समय, यम यातना के समय जीव को जो शरीर मिलता है।

(२) सूक्ष्म पिण्ड = सूक्ष्म शरीर जिसमे पंच ज्ञानेन्द्रिय, पंच कर्मेन्द्रिय, पंच प्राण, मन, बुद्धि, अहंकार इनके इत्यादि पच्चीस गुणों के समुदाय को सूक्ष्म पिण्ड कहते हैं।

(३) स्थूल पिण्ड = यह प्राणिमात्र का प्रत्यक्ष काया शरीर ही है।

"नाथजी गुरुजी"

यहाँ नाथ विशेषण सतगुरु के लिये कहा है। सतगुरु पद अपने आप में विशेष पद है वहां और किसी का अधिकार नहीं है।

आदेश। आदेश।। आदेश।।।

आदेश का अर्थ –आत्मा, जीवात्मा और परमात्मा इन तीनों का एकत्व का (एकरूपता का) उस आदेश शब्द का बोध होता है। यहां चैतन्य का नाम आत्मा है, जीव स्थूल, जीवात्मा कहते हैं, सूक्ष्म अनुभूति परमात्मा कहते हैं दोनों योगेश्वर जब एक दूसरे को आदेश करते हैं तो दोनों के अन्तर आत्मा को नमस्कार कहा जाता है जैसे सद्गुरु या इष्ट को या भगवान को आदेश करते हैं तो नमस्कार कहलाते हैं बड़ों का छोटों के लिये आदेश का अर्थ आज्ञा होता है तथा आशीर्वाद भी होता है। वेदों में आदेश का अर्थ ब्रह्म को कहा जाता है।

इस प्रकार यह बालासुन्दरी का बीज मन्त्र अर्थ सहित इसका ज्ञान होने पर ही ज्ञान के पट खुल जाते हैं। यह मन्त्र अत्यन्त प्रगट फलदाई है। यह मन्त्र विधान साधक जिस भाव से करेगा फल उसी भाव में पायेगा।

(ङ) कुछ अन्य विधि

बाला सुन्दरी का पाट (चौक) पूरन के उपरोक्त मन्त्र

बाला सुन्दरी बीज मन्त्र

ॐ गुरुजी। ओं सोहं अलिय, कलिय तारा त्रिपुरा तोतला

काहे हाथ पुस्तक काहे हाथ माला, बाये हाथ पुस्तक दाये हाथ माला। जपो तपो श्री सुन्दरी बाला। रक्षा करंते गुरु गोरक्षनाथ जी बाला। जीव पिण्ड का तू रखवाला। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

[मन्त्र सिद्धिः- बाला सुन्दरी माता के सभी बीज तथा गायत्री मन्त्र माई का चौक बनाकर करें। चौक (पाट) माण्डण विधि (पृ० सं० ९७ पर देखें) चौक सन्मुख कलश स्थापना करें। यथा उचित पूजन करें।

साधना- (१) प्रथम २१ प्राणायाम करें, (२) गणेश जी का नाम लेवें, (३) सद्गुरु के नाम १०८ जप करें या गुरु मन्त्र का जप करें तद्उपरान्त गोरक्षनाथजी का जप "ॐ शिव गोरक्ष योगी" इस मन्त्र का १०८ बार जप करें अतः बाला सुन्दरी के किसी भी-बीज मन्त्र तथा उपदेशी मन्त्र का १०८ बार जाप करें। पंचमेवा चना, हलवा, रोट का भोग लगावें। ९ वर्ष की कन्या को तथा ९ नाथ रुप में ९ साधु सन्त नाथ सिद्धों को भोजन वस्त्र दान, धातु दान आदि करें। उद्देश्य, मुहूर्त निम्न प्रकार करें-

(१) निस्वार्थ (भक्ति) तथा दर्शन हेतु- नवरात्र, चैत्र-अश्विन महीने में घट स्थापना से दशमी तक करें। दशांश हवन घृत, हवन सामग्री से करें। दर्शन होगा।

(२) ज्ञान या विद्या प्राप्ति के लिये - माघ मास अमृत सिद्ध योग में प्रारम्भ करें। ४१ दिन उपरोक्त विधि करें।

(३) धर्म, यश, कीर्ति प्राप्ति के लिये - चातुर्मास में पूर्णिमा को प्रारम्भ करें रोज १०८ बार जाप करें। अन्तिम चातुर्मास समाप्ति (पूर्णिमा) को हवन घी, पायस, हवन सामग्री काले तिल जौ से करें ९ कन्या, ९ नाथों को भोजन दान देवें।

(४) धन प्राप्ति - होली, दीपावली, अमावस्या, ग्रहण तथा सर्वार्थ या अमृत सिद्ध योग में १००८ बार जाप और हवन गौघृत एवं हवन सामग्री से करें।

(५) सुख शान्ति आरोग्य प्राप्ति के लिये, श्रावण मास में तथा पूर्व

भाद्रपद, अश्विनी, मृगशिरा नक्षत्रों में प्रारम्भ करके ४१ दिन नित्य १०८ बार मन्त्र जाप करें। अन्तिम दिन दशांश हवन गौघृत, हवन सामग्री पांच वृक्ष की समिधा, तिल, जौ से हवन करें, ९ कन्या, ९ साधु सन्त को मिष्ठान, भोजन, वस्त्र, धातु दान करें।

(५) योग साधना सिद्धि - योगासन-प्राणायाम होने के पश्चात् आसन पर स्थिर सीधे बैठें, प्रथम गणेश वन्दना, गुरु वन्दना तद्उपरान्त माता का जप करें, नित्य साधारण १ घण्टा करें, ६ मास में अनुभुति आयेगी।

(७) शत्रु पर विजय या शत्रु को मित्र बनाने के लिये - इसका मन्त्र जाप विधि फाल्गुन मास, पुष्य नक्षत्र, पूर्णिमा या अमावस्या को करें।

(८) इस मन्त्र को अभिचार कर्म (मारण उच्चाटण इ०) के लिये उपयोग नहीं करें। अन्यथा अनिष्ट होगा।]

विधि :- यह मन्त्र का जाप करें, माई का पाट भोजपत्र के ऊपर गोरोचन तथा केशर को अष्टगंध में मिलाकर गूलर के डाली से बनायें। या पाट के ऊपर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर चावलों से अंकित कर सकते हैं और सन्मुख आसन पर बैठकर पंचोपचार पूजन करके जाप करना चाहिये। मनोवांछित सभी प्रकार के फल प्राप्त होते हैं तथा हर प्रकार की सुरक्षा भी प्रदान होती है। चौक पूरण या पाट माण्डन के लिये चित्र क्रम ८ से मार्ग दर्शन कर सकते हैं।

उपदेशी मन्त्र - ४

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गौरी शंकर आप अलेखा ब्रह्मा विष्णु को दिया उपदेश। सत आसन दिया बिछाय सतगुरु बैठे आय। ॐ सिंगी सों नाद बजावे तब ईश्वर गुरु मन्त्र पावे, अलख लखाई विद्महे महा अलख लखाई धीमही तन्नो अलख लखाई प्रचोदयात्। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

निम्न उपदेशी तारक मन्त्र भी चेले को दे सकते हैं।

उपदेशी तारक मन्त्र - ५

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सों काशी क्षेत्र बनारस स्थान। सतगुरु गोविन्द लागे कान। निरन्जन गोरख तारक नाम। पढया मंतर त्रिपुण्ड ध्यान। तहां अलख निरन्जन बैठे निर्वान। जाप जीये मन्त्र फुरे। चन्द सूर साख भरे। इतना तारक मन्त्र अवधू को तारे। सो अवधू मुक्ता फल पावे। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

इस प्रकार उपरोक्त ३-४ मन्त्रों में से कोई भी एक मन्त्र उपदेशी चेले को देना चाहिए और यही मन्त्र आगे गुरु शिष्य परम्परा में चलता रहता है। कोई कोई निम्न योगमाया बाला का महात्म पाठ भी प्रगट रुप में शिष्य को सुनाते हैं।

योगमाया महात्म्य पाठ

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सों अलिल, अलिल कलिय श्री सुन्दरी बाला। कौन जपन्ते ॐ, कौन जपन्ते सोहं, ॐ जपन्ते निरन्जन निराकार अवगत स्वरुपी, सोहं जपन्ते, माई पार्वती महादेव ध्यान स्वरुपी। कौन जपन्ते अलिल, कौन जपन्ते कलिय, अलिल जपन्ते ब्रह्माजी सरस्वति वेद स्वरुपी। कलिय जपन्ते धरती माता अन्नपूर्णा स्वरुपी। कौन जपन्ते सुन्दरी कौन जपन्ते बाला। बाला जपन्ते श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी शिव स्वरुपी।

ॐ सुन्दरी पूछे देह कौन कौन योगेश्वरा कौन कौन नागेश्वरा आयी ईश्वरी आयी महेश्वरी बाये हाथ पुस्तक दहीने हाथ माला। जपो तपो श्री सुन्दरी गुरु गोरक्षनाथजी बाला। येता बाला बीज मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्ध में बैठाकर श्री शम्भूजती

गुरु गोरक्षनाथ जी ने नवनाथ चौरासी सिद्ध को पढ़ कथकर सुनाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अगर चेला गृहस्थ (नर या नारी) या गृहस्थ जोगी हो तो निम्न मन्त्र देना चाहिये।

उपदेशी मन्त्र - ६

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ गुरु सोहं गुरु, शीश गुरु, शरीर गुरु निरन्जन देवा। साई थापी परपना, थरपन लागा वारा। गुरु तो गोरक्ष मिले, शंकर कान लगाय। सो जाने गुरु का भेष, आपही कर्ता आपही देव। अनन्त करोड़ सिद्धां में गादी बैठ गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार अपेक्षित गुरु अपने उपदेशी चेले को गुरु मन्त्र कान में देते हैं तथा महात्म्य सुनाने के पश्चात् सन्मुख के पूजन पात्र से एक खाने का पान तथा निम्न मन्त्र से करद (चाकू) उठाते हैं।

★ करद (कर्द) मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ धार सोहं धार लागू न लोह पाचे न धार कर्द मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्धा में बैठ गोरक्षनाथजी ने कहा। श्री नाथजी गुरु जी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: गुरुजी चेले के दाहिने कान के पास अपने बायें हाथ से खाने का पान खड़ी अवस्था में अर्थात् टंगता हुआ पान को पकड़ते हैं और दाहिने हाथ में उपरोक्त मंत्र से करद लेकर निम्न मन्त्र से चीरा देते हैं। अर्थात् वह टंगते हुये खाने के पान को कर्द से चीरा देते हैं एवं निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अथ सादक कर्म (मन्त्र)

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं सत की छुरी हीरों से जड़ी पांच महेश्वर लिये बुला मस्तक धरीया हाथ कौन मुख छुरी कौन मुख धार, अगन मुख छुरी पवन मुख धार चीरा दिया श्री ईश्वर आदिनाथजी के नाम धारियो श्री करधरनाथ इतना चीरे का मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी ने गत गंगा को पढ़ कथके सुनाया।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इसी प्रकार चेले के बायें कान में भी उपरोक्त विधि से चीरा देते हैं। तद्पश्चात नाद जनेऊ देना चाहें तो निम्न मन्त्र से उसके गले में निम्न मन्त्र से बना बनाया नाद जनेऊ पहनाते हैं।

★ **नाद जनेऊ (पहनने का) मन्त्र** ..... (पृष्ठ संख्या ७ पर देखें)

अत: पीरजी चेले के हाथ में आखा (चावल) देते हैं। चेला आखा और कुछ दक्षिणा बाला सुन्दरी जोत पाट को चढ़ाता है। पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **आखा मन्त्र** ..... (पृष्ठ संख्या २१९ पर देखें)

अत: उपदेशी चेला (पृ० सं० २१९ से २३० तक) दिखाई गयी विधि से बैठे आसन में ज्योत-पाट को नादि आदेश तथा मानधारी गद्दीयों को हस्तस्पर्श विधि से नमन सभी को करता है।

(च) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: नये चेले को टैलुवा गिरेवान देकर कैलाश ठीकरे सन्मुख ले जाता है। वहां उपदेशी चेला ठीकरे पर या गत गंगा ज्योत पूजन करके स्वइच्छानुरुप दान दक्षिणा चढ़ाता है। कोतवाल अपनी कापी में नाम,

पता, गुरु का नाम, पंथ, चढ़ावा आदि नोट (लिखता) करता है। अत: उपदेशी नया चेला पूजन पात्र से कुशा की पवित्रियाँ पहनता है और पीरजी या टैलुवा निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **टहल पवित्री का मन्त्र** ..... (पृ० सं० २३१ पर देखें)

अत: पूजन पात्र से शंख लेते हुये निम्न मन्त्रोच्चार करते हैं।

★ **अथ शंखबाला** (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें)

अत: निम्न शंख गायत्री मन्त्र पीरजी या टैलुवा बोलता है नया चेला पहला शंख कुण्डा जल से भरकर लेता है और पुतले के ऊपर शंख ढालना शुरु करता है।

शंख गायत्री मन्त्र-२

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी शंख शंख संजोग भया, ज्ञान गोदड़ी चंचल विलया। निर्भे जोगी बेपरावाई आद का शब्द सिंगारो भाई तुम हम अलिल पुरुष तीनो मिलवा भाई मैं तो पूछो पिण्ड की अवधू जोगी राई।।१।।

(अत: दूसरा शंख ढालना शुरु किया)

अर्वद नर्वद धुन्धुकारा, शब्द न स्वाल न एक ओंकारा, मरगई गौरा रह गया रुण्ड शिवले पहरा गले में मुण्ड, हाड़ चाम पिन्जर का नला षट दर्शन ले घाकी गला।।२।।

(अत: तीसरा शंख ढालना शुरु किया)

अमृत कुपी ले आगे धरी, जल थल में माता गौरया खड़ी जल में करी मीन की थाप पाच शंख छटी गावत्री गौरा ले निकसी अपने हाथ पढ़ो शंख गावत्री सार, गंगा नदी भव सागर तार। अम्बे देवी का जपो जाप पडे पिण्ड का पर हर पाप।।३।।

(अत: चौथा शंख ढालना शुरु किया)

उठो नारायन करो पसाऊ चार चौकड़ी जीव को दीजै ठाऊ। षटमास जोगी हट निग्रह करै एकोत्र सै पुरुषाले अमरापुर तरै, पढे वेद गायत्री सार पिण्ड प्राण उधरती तार। गावत्री सावित्री चौपगी चौवेदी सुने सिंगी रुपेखुरी चवर पुंछी।।४।।

(अत: पाँचवा शंख पुतले पर ढालना शुरु किया)

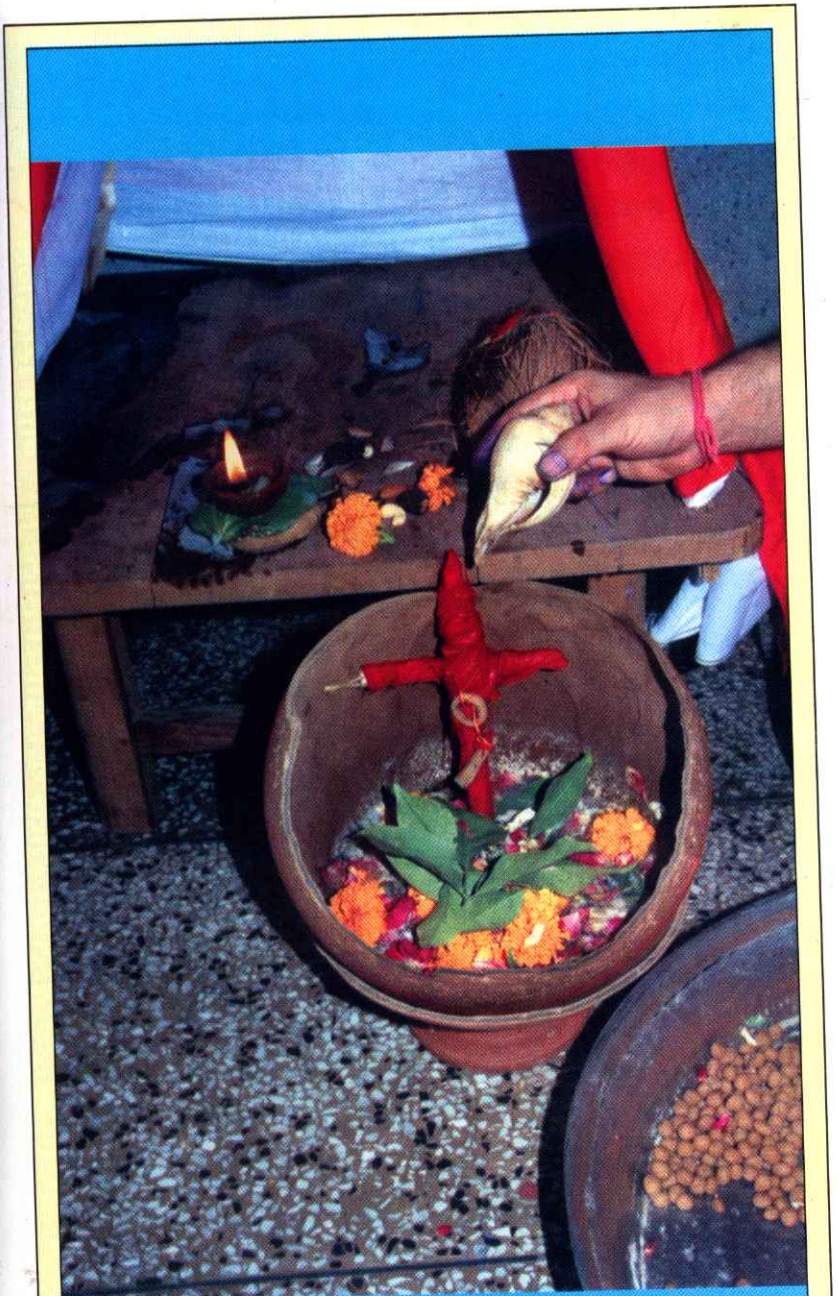
ताम्बे वरणी जमघंटी नदी वैरतणी तार राख राख माता शम्भु शिव गायत्री राख अघोर पिण्ड पडन्ता राख। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर राख सत बोले सतवादी नर गुरु वाचा तत सार। शंख गायत्री सम्भालो बहुड़ी न ले अवतार।। ॐ गुरुजी गंगा जमना सरस्वती तीनो अखण्ड कवार। शंख ढरै शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्ष द्वार। इतना शंख गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार नया चेला पाँच शंख ढालने के बाद पुतले की यथा स्थित तिलक, कंगण, बिल्व पत्र, पुष्प, पिण्ड, अक्षत, सुपारी तांबूलादि पूजन करते हैं तथा पीर जी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

पुतला पूजन का मन्त्र-१

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। किसका पूत, किसका नाती कौन शब्द से बैठा पाती कौन शब्द से पूजा रचाई कौन शब्द से अमरापुर पाई, ॐ शिव का पूत, शक्ति का नाती, गुरु शब्द से बैठा पाती, गुरु शब्द से पूजा रचाई गुरु शब्द से अमरापुर पाई, ॐ गीता गंगा गायत्री शिव पूजू शक्ति पूजू पूजू गुरु के पाव। पाच महेश्वर आज्ञा करे तो लागु सत गुरु के पाव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार पूजन पश्चात् नया चेला पवित्रियाँ निकालकर पात्र में



पुतले के ऊपर शंखढालने की विधि

श्री नाथ सिद्धों के नाद जनेऊ का ॐकार स्वरूप रहस्य



- ऊन का जनेऊ
- पवित्रि शक्ति (अर्धमात्रा चिदानन्दा पराशक्ति) पवित्रता
- मूंगा - ब्रह्माजी का (ब्रह्मग्रंथी ब्रह्मानंद) - उत्पत्ति - राजोगुण राजस - 'अ' कार →
- स्फटिक - विष्णुजी का (विष्णुग्रंथी महानंद) - स्थिति - सत्यगुण सत्य - 'उ' कार →
- रूद्राक्ष रूद्र (शिव) रूद्रग्रंथी कैवल्यानंद - संहार - तमोगुण तामस - 'म' कार →
- नादि - नाद - बिन्द - बिन्दी



श्री नाथ सिद्धों की (नाद) बिन्द ←

समाधि में ॐकार दर्शन से ज्ञान प्रकाश
समाधि में ॐकार नाद से नाद ब्रह्म } प्राप्ति
समाधि में शून्य अवस्था ही मुक्ति है

ॐ = ओहं सोहं – प्राण अपान – जपा – अजपा श्वास प्रश्वास – प्रकृति माया = जीवन

केवल योग साधना के द्वारा ही मुक्ति की प्राप्ति होती है = नाथ सिद्धान्त

चित्र क्र. १०

रखता है। कोतवाल उसे जुगत का अमृत कुण्डा पिलाते हैं। फिर वह अपने उपदेशी सतगुरुजी को मान देते हुये पूजा चढ़ाता है और नादि आदेश करते हुये बाहर चला जाता है। नये बनने वाले चेले वर्तमान अन्दर के कर्म में रुक नहीं सकते अत: भविष्य में भी शंखढाल हो तो वे उसमें भाग ले सकते हैं।

(छ) सूचना

नया शिष्य जब अपने सतगुरुजी को उकडूँ बैठकर तीन बार नादि बजाकर आदेश करता है तो यह नाथ सम्प्रदाय की मर्यादा एवं गुरु शिष्य परम्परा का द्योतक है। यह सतगुरुजी को अथवा नाथ सिद्धों के इष्ट को नमस्कार करके उन्हें सम्मानित करने की परम्परा है। नाथ सिद्ध इसे **नाद ॐकार** भी कहते हैं तथा **ॐकार उठाना** भी कहते हैं। क्योंकि इस नादि पवित्री की रचना में ॐकार स्वरुप का रहस्य छुपा हुआ है। इसमें नादि को रुद्राक्ष, स्फटिक तथा मूंगा को एक साथ जोड़कर पवित्री में सूत से पिरोकर बांधते हैं। इस रचना की धारणा इस प्रकार है कि मूंगा (मणी) ब्रह्माजी का रजोगुण 'अ' कार प्रणव, सृष्टि उत्पत्ति मानते हैं। स्फटिक (मणी) विष्णुजी का सतगुणी 'उ' कार प्रणव सृष्टि स्थिति मानते हैं। रुद्राक्ष (मणी) शिवजी का तम गुणी 'म' कार प्रणव सृष्टि का संहार मानते हैं। पवित्री पराशक्ति स्वरुप अर्धमात्रा चिदानन्दा को मानते हैं। बिन्दु (नादि) नाथ सिद्धों का, नाद बिन्द अर्धमात्रा की बिन्दी को मानते हैं। जिसको ॐ ऊन के (धागे में डालकर) जनेऊ में डालकर नाथ सिद्ध योगेश्वर अपने गले में पहनते हैं। इस प्रकार समस्त सृष्टि का बीज रुप ॐ कार का रहस्य नाथ सिद्धों के (नाद पवित्री जनेऊ में) विद्यमान है। इसलिये उसे ॐकार नाद कहते हैं। जो कि जब नाथ सिद्ध योगेश्वर 'ॐ' कार प्रणव का मन्त्र जाप करते हुये योग साधना करते हैं तो जैसे जैसे साधना में परिपक्वता,

साहस, आत्मविश्वास और मुख्यत: पवित्रता आती है वैसे वैसे मूलाधार से चक्र जाग्रति होकर क्रम से सहस्रगार चक्र में कुण्डलिनी प्रवेश करती है तो ॐ कार नाद प्राकृतिक साक्षात्कार रुप में अपने आप सुनाई देता है। तब उसे उपजत ज्ञान की सत्य एवं प्राकृतिक ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस योग प्रणाली के अनुभव में ब्रह्मग्रंथी, विष्णुग्रंथी तथा रुद्रग्रंथी ॐकार के अ, उ, म रज, सत, तम आदि ग्रंथी की जाग्रति होकर महाआनन्द, परमानन्द, कैवल्यानन्द प्राप्त होता है वह कुण्डलिनी शक्ति से परा, अपरा, निजा शक्ति तक पा लेता है और यही सब योग प्रणाली का मतीतार्थ जो अत्यन्त सूक्ष्म है वही स्थूल रुप में नाथ सिद्ध योगेश्वर अपने गले में नाद जनेऊ रुप में पहनते हैं। [चित्र क्र० १० देखें]

सतगुरुजी को आदेश, नादी बजाना, ॐकार उठाना, योग प्रणाली, ओं सोहं, जपा, अजपा इन सबका एक दूसरे में ॐ कार स्वरुप से सम्बन्ध है। जोकि शिष्य नादी बजाते हैं तो प्राण अपाण के योग से अपने नाभि कमल से नाद को (आवाज को) उठाते हैं। तब जिस शिष्य या योगी या साधक चेला योग पारंगत एवं परिपक्व है उसे नादि बजाते समय अपने नाभी (चक्र) स्थान में (स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रति के कारण) विशिष्ट स्पन्दन होते हुये अनुभव होता है। इसी प्रकार से अगर शिष्य योग साधना (सीखते हुये) करता हो तो नाद बजाना उसके कुण्डलिनी जाग्रति के लिये विशेषत: नाभि स्थान स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रति के लिये सहयोग भी करती है। अत: नादि मुख से बजाते समय हवा (प्राण) को अन्दर से बाहर की ओर हवा (प्राण) फूँक मारकर नाद (सीटी जैसा आवाज) उत्पन्न करना पड़ता है और यही नाद गुरुजनों को या इष्ट को स्वीकारार्थ है, अगर यही नादी उल्टी बजाई तो अर्थात बाहर की हवा नादी द्वारा (मुख से) अन्दर खिंचने से आये हुये

नाद को उल्टा नाद बजाना कहते हैं। अगर ऐसा उल्टा नाद बजाकर अपने सतगुरुजी को आदेश (नादी बजाकर) नमस्कार किया तो कहते हैं कि अपने सतगुरु का आयुष्य कम होता है तथा शिष्य के योग प्रणाली या भजन तपस्या में पतन होता है। अगर ऐसा उल्टा नाद (अपने) किसी योगसाधना सम्पन्न, योग सिद्ध, आत्मसाक्षात्कारी, सतगुरुजी के सन्मुख बजाया जाता है तो ऐसे महान सतगुरुजी को स्वभावता से, या प्राकृतिक स्वभाव से उस सूक्ष्म नाद स्पन्दन द्वारा अनुभव होता है। उस (ज्ञान सम्मान) सतगुरुजी के दोनों स्वर अर्थात् जपा अजपा या ओं सोहं (प्राण अपान) दोनों ही कुछ क्षण के लिये रुक (बन्द) हो जाते हैं। जिससे वह महात्मा, वह सतगुरु जी जान जाते हैं कि सन्मुख शिष्य ने उल्टा नाद बजाया है। इसी प्रकार अगर अपने इष्ट देवता के सन्मुख ऐसा उल्टा नाद बजाने से साधक के योग साधना पर उल्टा असर होकर प्राण शक्ति पर सूक्ष्म असर होकर भविष्य में पतन होने की शक्यतो सम्भावना होती है इसलिये गुरु मार्गदर्शन से ही नादि बजाकर (सही ढंग से) आदेश करना चाहिये।

अत: यहां योगमाया कर्म में शंख ढालने के पश्चात् जब नया चेला अपने उपदेशी गुरुजी को नादि आदेश करता है तो उपदेशी गुरुजी उसे आटे की बनायी हुयी नादी पवित्री प्रसाद रुप में देते हैं और उसे अंगार में भूनकर उसे खाने के लिये आज्ञा करते हैं। वह आटे की नादी पवित्री उसने अपने अकेले ही गुरु मन्त्र का मनन करते हुये खानी होती है। यह योगमाया कर्म की गुरु शिष्य परम्परा है।

(ज) कुछ नियम

(१) नया उपदेशी शिष्य शंखढाल कर्म होते ही गुरु जी को आदेश कर बाहर जाना चाहिये। इस वर्तमान शंखढाल के बाद भविष्य में होने वाले शंखढाल कर्म में वह (अन्दर के कर्म में) भाग ले सकता है।

(२) नये चेले को प्रसाद मिलता है किन्तु चिप्पी नहीं मिलती।

(३) उपदेशी कर्म का प्रसाद केवल उपदेशी योगेश्वरों को ही दिया जाता है अन्य योगेश्वरों या नाथ भक्तों को नहीं दिया जाता।

(४) जिस योगेश्वर के गुरु की चाहे चोटी गुरु हो, चीरागुरु हो, चाहे भभूती या मुख्यत: उपदेशी गुरु हो इनकी अगर शंखढाल क्रिया नहीं हुयी होगी तो वह योगेश्वर इस शंखढाल में उपदेशी शिष्य नहीं बन सकता।

(५) यहाँ इस कर्म में सभी मानधारी उपदेशी शिष्य बना सकते हैं तथा कोई भी एक मानधारी अनेक शिष्य बना सकता है।

(६) यहां गृहस्थ जोगियों को भी उपदेशी शिष्य बना सकते हैं। किन्तु वह नाथ योगमाया कर्म काण्ड में भाग नहीं ले सकते हैं।

(७) योगिनी (नारी) को उपदेशी शिष्या बना सकते हैं। किन्तु योगी महासभा भेष भगवान की अनुमति लेनी चाहिये।

(झ) नया चेला बनाने की विधि का भावार्थ

पूर्व काल से अपने हिन्दू सनातन धर्म में गुरु महिमा अपरम्पार है।

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुदेवो महेश्वरा।
गुरु: साक्षात्परमब्रह्म तस्मै श्री गुरवै नमः।।
ध्यान मूलं गुरोर्मूर्ति पूजा मूलं गुरु पदम्।
मन्त्र मूलं गुरुवाक्य मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।
मन्त्र सत्यं पूजा सत्यं सत्यदेव निरन्जनम्।
गुरु वाक्य सदा सत्यं सत्यं एकं परम्पदम्।।

[**विशेष:-** यह प्रार्थना मन्त्र युक्त है। सतगुरु प्रसन्नता के लिये नित्य करें। निस्वार्थ भक्ति से करेंगे तो सतगुरु की संचित प्राप्ति होगी।]

इस योगमाया कर्म में मन्त्र तन्त्र, कर्मकाण्ड एवं विधि विधान

तथा ज्ञान ध्यान, तप वैराग्य एवं साधना, दृष्टांत, साक्षात्कार, आत्मप्रचिती जहां तक हो तो मोक्ष मुक्ति, यह सभी की प्रधानता सतगुरु को ही दी जाती है। गुरु प्राप्त (सगुरा) शिष्य का (सद्गुरु मन्त्र) एक शब्द ब्रह्म ज्ञान का साक्षात्कार करवाता है। तो निगुरु अर्थात् बिना गुरु या मनमुखी व्यक्ति चाहे ब्रह्मज्ञान की बातें करे उस तोता गिरी में नैसर्गिक, अध्यात्मिक परमार्थिक इनका स्वाद, सत्यता नहीं होती। इनके शब्द अत:करण तक नहीं पहुँचते। ऐसे निगुरों को विद्वान कह सकते हैं। किन्तु साक्षात्कार या ज्ञान अनुभव नहीं हो सकता।

यहां योगमाया पूजन में शिष्य के प्रवेश से लेकर शंख ढालकर वापसी तक सभी क्रियायें बड़ी ही मार्मिक एवं अर्थ पूर्ण है। प्रवेश के समय प्यासी गौ अर्थात् वह अत्यन्त आर्त भाव, जिज्ञासु है, याचक है, गुरु प्राप्ति कर ज्ञानार्जन का प्यासा है। फिर यहां का जल खारा है। अर्थात् हमारे नाथ सम्प्रदाय में आना और उसे (साधुत्व) निभाना अत्यन्त खड़तर है। यहां संयम, धैर्य, सहनशीलता, पवित्रता, शीलवान, समर्पकता आदि गुणों की आवश्यकता है। यह सब मान्य कर उसे अन्दर बुलाया जाता है। तब उसके प्रवेश प्रार्थना में देवद्वार परदा खुलता है वह माया का परदा हटकर ज्ञान प्रकाश अर्थात् योगमाया (गुरु) के कक्ष में प्रवेश करता है। उसके आंखों पर पट्टी बाँधते हैं। वह नेत्र पट्ट अज्ञान पटल का प्रतीक है। जब उसके गले में गिरेवान डालते हैं तो वह ग्रीवापाश अष्टपाश का प्रतीक है। जो साधना पद्धति में तथा ज्ञानार्जन में खड़तर बांधते हैं। जब उसे अन्दर माई के पाट (चौक) सन्मुख ले जाकर बड़े आदर से प्यासी गौ अर्थात् सेवक के समान बिठाते हैं वह उसकी नम्रता, आदर तथा गुरु शरणागति का प्रतीक है। वहां पूछते हैं किसकी सेवा करेगी अर्थात् किसका शिष्य बनेगा। शिष्य नाम बताकर ..... फलां फलां की सेवा अर्थात्

शिष्य बनूँगा। यह उसकी समर्पकता का आशय है। अत: अपेक्षित सतगुरु उसकी आंख की पट्टी, नेत्र पटल (अर्थात् अज्ञान-माया की पट्टी) खोलते हैं और तत्क्षण आंखों पर, वह आंख खोलता ही नहीं, इतने में जल का छींटा झटके से आंखों पर मारते हैं। यह होता है अक्षि जल क्षेप, यह अक्षिजल क्षेप ज्ञानान्जन (ज्ञान का काजल-अन्जन) आंखों पर लगाते हैं। जो तीर्थाभिषेक, पूर्णाभिषेक या ज्ञानामृताभिषेक का सुन्दर प्रतीक है। जिसका अर्थ है, हे साधक, हे शिष्य इस जल (छींटा) रुप ज्ञान गंगा में जिसके संयम सहनशीलता के घाट हैं। सत्य का जल भरा है। शील सन्तोष के तट है। दया क्षमा की लहरें तरंगें हैं। तो हे योगमाया के आत्मसाक्षात्कार की कामना करने वाले शिष्य इस योगमाया के गत गंगा ज्ञानगंगा में स्नान करो, डुबकी मारो आदि।

इस प्रकार गुरु अष्टपाशों से मुक्त कर दिव्य दृष्टि का प्रतीक विभूति तिलक (लगाते) देता है। अज्ञान की मेघ पटली को हटाने के लिये कर्ण फूत्कार का झंझावात चलाता है। अर्थात् खाने के पान को कर्ण सदृष्य अपने ज्ञान तपस्या शील सन्तोषी जैसे दुधारी कर्द से शिष्य के पूर्व संचित दुष्कर्म को काट कर उसे नया जन्म, नये प्रारब्ध की शुरुआत करते हुये गुरु मन्त्र दीक्षा देकर आत्माजोती के प्रकाश में पिण्ड ब्रह्माण्ड के एकता की प्रचिति देता है और वास्तव में जब शिष्य जल छींटे पश्चात् आंखें खोलता है तो सन्मुख योगमाया के सभी ज्योतियों के प्रकाश की एकदम सी चमक धमक में सतगुरु के तेजस्वी दर्शन, बालासुन्दरी का सुन्दर सजाया हुआ पाट, वह ज्योतियों का प्रकाश, यह सब देखते देखते उसे स्वर्ग अनुभूति प्रतीत होती है और वह मानो ब्रह्माण्ड में विचरता है ऐसी उसे प्रचिती आती है।

यहां सतगुरु शब्द ग्रहण करते शिष्य विश्वात्मा दर्शन, ब्रह्माण्ड दर्शन, बन्धुत्व, मित्रत्व, शान्ति सन्तोष, आत्मानन्द, कृतकृतार्थता आदि

भावनाओं से उद्‌बुद्ध होता है तथा वह साधक शिष्य सहिष्णु, सुशीलता, क्षमा, दया, शील, ध्यानी, ज्ञानी, योग, युक्ति, भ्रान्ति रहित, सर्व लोक हित कारक तथा अनन्त, सर्व व्यापक होता है। इस वक्त सर्व जगत सृष्टि का मूल आत्मा ही है यह ज्ञात होता है। सन्मुख की माई की जोत तथा अन्य ज्योतियाँ उसे आत्म स्वरुप लगती हैं। चढ़ावा युक्त केशर की सुगंध उसे योग युक्ति, ज्ञान मुक्ति, सतगुरु की शक्ति की सुगंध चेतना देता है।

अथ मीठी माई, सदा सहाई
अवधू जोगी निम तलाई

[**विशेष:**- यह मन्त्र मुख में चीनी रखते हुये १०८ बार जप करें, ४१ दिन करें, अन्त में १०८ बार घृत, चीनी और हवन सामग्री से हवन करें। जीवन में जहर भी अमृत बन जायेगा।]

यह यम नियम, साधना, निद्रा, आहार आदि नियम बद्ध संयम बद्ध होने को करने को निम तलाई कहा है। शब्द या मन्त्र के ध्यान धारणा को बिन्द कहा गया है। उसके प्रत्याहार और आत्मानन्द ग्रहण करने को योगमाया का भोग (चना, हलवा, पंचमेवा, केशर जुगत आदि का जोतियों को भोग लगता है) इसप्रकार सद्‌गुरु प्राप्ति के पश्चात् शिष्य आत्मानन्द का आनन्द ग्रहण करता है। अत: ऐसे शिष्य के बड़े भाग्य हैं।

जब की गुरु पिता के रुप में शिष्य को साधना, पुरुषार्थ, कर्तव्य आदि के लायक बनाते हैं। जब गुरु माँ के रुप में शिष्य को ज्ञान रुपी दूध पिलाते (दुग्धपान) हैं। जब गुरु सत्‌गुरु के रुप में शिष्य को सब कुछ कर कराकर माया का वैराग्य देकर मोक्ष मुक्ति को ले जाते हैं। ऐसे सत्‌गुरु धन्य हैं। ऐसे शिष्य भी भाग्यवान हैं।

अत: नये चेले बनाने की विधि के पश्चात् कुछ उपदेशी योगेश्वर शंख ढालने आते हैं।

(१५) दर्शणार्थी उपदेशी योगेश्वरों की पुतले पर शंख-ढाल-विधि

इस रात्री के समय और बाकी उपदेशी योगेश्वर अर्थात् पूर्व समय योगमाया कर्म के दीक्षित एवं कर्म जानने वाले योगेश्वर माता बालासुन्दरी के दर्शन हेतु तथा शंख ढालने हेतु आये हुये होते हैं।

अत: अन्दर से पीरजी हुक्म करते हैं - **"उपदेशी योगेश्वर को बुलावो।"**

(क) प्रवेश

तब टैलुवा कक्ष के बाहर आते हैं और आये हुये दर्शनार्थी उपदेशियों को, एक एक को लेकर देवद्वार में (परदा में) खड़े करते हुये निम्न मन्त्र द्वारा (द्वार) परदा खुलने की अरज करते हैं।

"परदा (द्वार) खुलने का मन्त्र"

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश।ॐ गुरुजी। सोने का मन्दर चान्दी का कवाड़, खोल दे टैलुवा धरम द्वार हुकम फरमाऊ अन्दर आऊ गत गंगा की टल बजाऊ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

उपरोक्त मन्त्र उच्चारण के बाद बाहर से आवाज देते हैं **"हुकम धनिका"**

अन्दर से पीरजी बोलते हैं, **"हुक्म्"** या **"हुकम धनिका"**

(ख) दर्शनार्थी उपदेशी का आदेश-नमन-विधि

अत: उपदेशी प्रवेश करता है। टैलुवा उन्हें माई के चौक सन्मुख आसन पर बिठाता है। पीरजी उन्हें आखा (चावल) देते हैं, वह आखा एवं दक्षिणा माई के जोत पाट को चढाते हैं, वहां पीरजी मन्त्र बोलते हैं।

★ **आखा मन्त्र** ..... (पृ० सं० २१९ पर देखें)

इस प्रकार उपदेशी योगेश्वर (पृष्ठ संख्या २१९ से लेकर २३० तक) दर्शाये विधि से बैठे आसन में ज्योत पाट को ही नादि आदेश तथा मानधारियों के गद्दी हस्तस्पर्श विधि से नमन करता है।

(ग) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: टैलुवा उपदेशी योगेश्वर को कन्धों पर गिरेवान देकर कैलास के ठीकरे के सन्मुख आसन में आदर से बिठाता है। अत: उपदेशी योगेश्वर ठीकरे पर या गत गंगा जोत पर कुछ दान-दक्षिणा चढ़ाता है। कोतवाल उसके नाम, गुरु, पता, पंथ आदि को नोट करते हैं। उपदेशी पूजन पात्र से दोनों पवित्रियाँ अपने हाथ में डालते हैं और निम्न मन्त्र पीरजी या टैलुवा बोलता है।

★ **टहल पवित्री** ..... (पृष्ठ संख्या २३१ पर देखें) अत: पूर्वोक्त विधि से पुतले पर शंख ढालने के लिये (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें) मन्त्र से शंख लेते हैं। अत: कुण्डा जल से शंख में जल भरकर प्रथम शंख पुतले पर ढालना शुरु करता है और पीरजी या टैलुवा मन्त्र शुरु करते हैं।

अथ शंख गायत्री-३

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि शब्द प्रकाश्यो स्वामी हस्तम रुस्तम अलील तीनो गुरु भाई-कौन कर ब्रह्मा कौन कर जीव, मन कर ब्रह्मा, तन कर जीव, धर्ती धूनी निरन्जन दाऊ धर्ती माता ठौर दे मौर, मै नहीं जानू सहस्त्र बान, कौन कौन से करु प्रणाम, प्रथमे धर्ती द्वितीये अकाश, तृतीये मेद मेदिनी गिरि पर्वत कैलाश, मर गयी गौरा रह गया रुण्ड, हाथ पांव पिंगल कर नला, ले षट दर्शन की कला बान्धू ईश्वर की कला,

जल से होता मंत्री पांच शंख गौरां ले निकली हाथ पहिला शंख ब्रह्मा को दीना, ऋग यजु साम अथर्वण कीन्हा आवो ब्रह्माजी करो विचार पढ़ो गुढ़ो गायत्री सार, ब्रह्मा जी इस विध उत्तरो गे पार सोन श्रृंगी रुपे की खुरी ताम्बे वर्णी यमघटी यमघण्टी वैतरणी राख राख माता गायत्री राख अघोर पढंते राख, ब्रह्मा विष्णु महेश की साख, छः मास योगी हाट नवग्रह करे, इकोत्तर सौ कुल को ले शिवपुरी तरे जाके शंख ढले शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्ष द्वार, गंगा गीता गायत्री सार, शंख ढले शिव पूजिये प्राणी पावे मोक्षद्वार।।१।।

(अतः दूसरा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले के ऊपर ढालना शुरु किया आगे पीरजी मन्त्र बोलते हैं।)

दूसरा शंख नारायण को दिया धर्ती फोड़ पाताल को गया, बाया हाथ शंखेश्वर, दाहिने हाथ चक्रेश्वर काटो यमफासी सोला सहस्र गोपी, सुर नर मुनी पूजा सेवा ध्यान करालो आवो नारायण करो विचार पढ़ो गुढो गायत्री सार नारायणजी ..... पूर्ववत।।२।।

(पीरजी मन्त्र पूरा करते हुये उपदेशी तीसरा शंख ढालना शुरु करते हैं।)

तिसरा शंख सिद्धो को दिया सिद्ध ले गये कैलाश जहा बैठे मीन मच्छन्दर नाथ आवो सिद्धजी क्या कीजिये ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर आवो सिद्धजी करो विचार पढ़ो गुढो गायत्री सार सिद्धजी ..... पूर्ववत।।३।।

(अतः चौथा शंख ढालना शुरु किया आगे मन्त्र पीरजी बोलते हैं।)

चौथा शंख देवी को दिया कौनसी देवी अगम जाने, कौन सी देवी निगम को जाने, कौन सी देवी पांच तत्व कि युक्ति पछाने,

उमा देवी अगम जाने, गौरा देवी निगम जाने, पार्वती देवी पांच तत्व की युक्ति पछाने आवो देवीजी करो विचार, पढ़ो गुढो गायत्री सार देवीजी .....पूर्ववत।।४।।

(अतः पीरजी मन्त्र पूर्ण करते हैं और उपदेशी आगे पांचवां शंख कुण्डा के जल से भरकर पुतले पर डालते हैं।)

पांचवा शंख शंखढाल को दिजीए कौन शंख मठ देवल, गाजै, कौन शंख नामे को छाजै, कौन शंख समुद्री सार, कौन शंख उतरे पार, कौन शंख थापे संसार, ॐ गुरुजी अमर शंख मठ देवल गाजै, सिद्ध शंख नामे को छाजै, अलिल शंख समुद्री सार, क्षीर शंख ले उतरे पार, आदि शंख थापेव संसार माया मोहाली पुत्र भर्त्तार आवो शम्भूजी करो विचार पढ़ो गुढो गायत्री सार, शम्भुजी ..... पूर्ववत।।५।।

ओं पाच मध्य छटी समा तिसकी रुप रेखा वरनी नही जाई आवो सिद्धो भरलो साखी सत सत श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी ने भाखी पंचा संख जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्ध में श्री शम्भू जति गुरुगोरक्षनाथजी ने कहा।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- यह मन्त्र पित्र पक्ष अमावस्या के दिन पितृ के नाम पिण्ड बनाकर १०८ बार शंख ढालकर मन्त्र उच्चार करें। सभी सामग्री पिण्ड सह बहते जल में छोड़ें। साथ में घृत दीपक जल में छोड़ें। पितृ शान्ति तथा मुक्ति प्राप्त होगी।]

इस प्रकार उपदेशी योगेश्वर पंच शंख ढालने के पश्चात् पुतले की यथास्थिति तिलक, कंगन, पुष्प, बिल्व पत्र, सुपारी, अक्षत, पिण्ड, ताम्बुलादि पूजन करते हैं। तब पीरजी निम्न मंत्र बोलते हैं।

पूतला पूजन मन्त्र-२

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आद अलिल अनाद अलिल नाथ सिद्धा मिल किया एकमता अखण्ड जोत प्रकाशा तहा उपाया अनन्त कोट सिद्धा का मूल ऊपाया आदि पुरुष, थापे ब्रह्मा थापे विष्णु अनन्त कला कोट। चढ़ावा कला कलश गत गंगा जोत होय प्रकाशा सर्वत्र कलश थाप्या नीचे भूम छत्र आकाश कलश थाप्या श्री शम्भुजति गुरुगोरक्षनाथ इति पुष्प पिण्ड ताम्बुल बिल्व कंगण सन्धूर तिलकम्।

पूजन पश्चात उपदेशी योगेश्वर पवित्रियाँ पात्र में निकालकर रख देते हैं। कोतवाल उन्हें जुगत अमृत कुण्डा पिलाकर अमर करते हैं और वह उपदेशी योगेश्वर बिछाये हुये आसन (दरी) पर बैठ जाते हैं। अतः इस प्रकार और भी दर्शनार्थी उपदेशी योगेश्वर अन्दर आकर उपरोक्त विधि से आदेश नमन तथा शंख ढाल, पूजन, अमृत पान करते हैं।

(घ) कुछ नियम

(१) यह दर्शनार्थी उपदेशी योगेश्वर इस कर्मकाण्ड में दर्शन तथा शंखढाल कर सकते हैं तथा इच्छा अनुसार अनुभव या कर्मकाण्ड जानकारी के लिये भी वह इस कर्मकाण्ड में भाग ले सकते हैं।

(२) इस कर्म में भाग लेकर उपदेशी शिष्य भी बना सकते हैं।

(३) इन्हें प्रसाद तथा (कर्म करने में भाग लिया तो) चिप्पी भी प्राप्त हो सकती है।

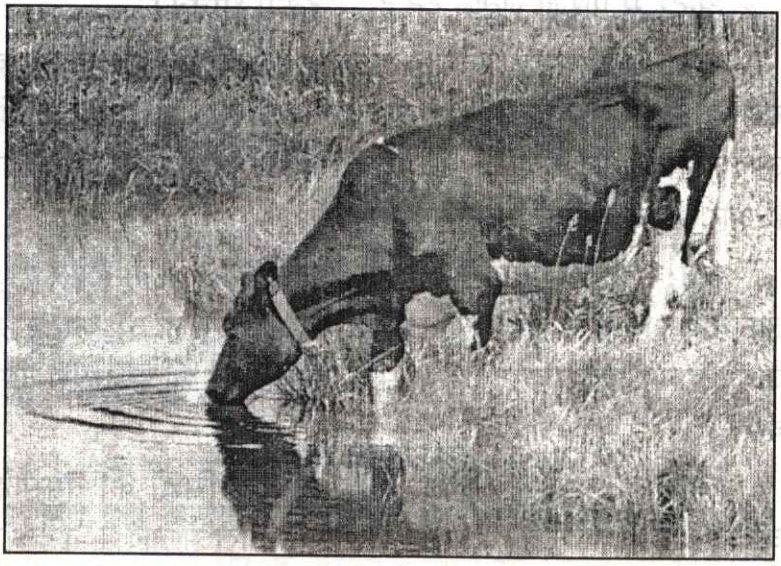
(४) इन्हें अपने मन्त्र कण्ठस्थ होने चाहियें अन्यथा उत्तराधिकारी या पीरजी मन्त्र बोल सकते हैं।

(५) मुख्यतः इन उपदेशी योगेश्वरों को अपने सतगुरु की शंख ढाल क्रिया करने का पूर्ण अधिकार होता है।

(६) इनके द्वारा कम से कम पांच शंख ढाले जाने चाहिये।

(७) समय उपलब्धि अनुसार ज्यादा से ज्यादा उपदेशी योगेश्वरों द्वारा शंख ढालना पुतले (मृतात्मा के) मुक्ति पथ कार्य के लिये उचित है।

(८) सम्प्रदाय परम्परा का उल्लंघन नहीं करना चाहिये।



जल पीते हुए प्यासी गौ
अर्थात् ज्ञान (गंगा) पीते हुए (नया शिष्य)

(१६) मृतात्मा के भक्तों को दर्शन विधि

अत: मृतात्मा के भक्त अर्थात् जो उस मृतात्मा के ही उपदेशी शिष्य हों, उन्हें अगर पुतले पर शंख ढलवाना हो तथा उनके द्वारा इस योगमाया कर्मकाण्ड में विशेष योगदान या आर्थिक सहयोग (दान-दक्षिणा) किया गया हो, तो ऐसे भक्तों को भी समय उपलब्धि के अनुसार दर्शन लाभ तथा शंख ढालने का लाभ होता है।

(क) उपदेशी भक्त का आदेश नमन विधि

अत: पीरजी हुक्म करते है कि **"(उपदेशी) भक्तों को ले आवो"**

पुन: कोतवाल बाहर से उपदेशी भक्त को द्वार पर लाते है और कहते है- **"हुकम धनिका"**

अन्दर से पीरजी जवाब देते हैं - **"हुकम धनिका"**

अत: भक्त अन्दर प्रवेश करता है। टैलुवा उन्हें माई चौक के सन्मुख आसन पर बिठाते हैं, पीरजी उन्हें मन्त्रोच्चार से आखा देते हैं। उपदेशी भक्त माई के ज्योत पाट पर यथा उचित दक्षिणा (पूजा) चढ़ाते हैं और पीरजी आखा मन्त्रोच्चार करते हैं।

अत: भक्त आवश्यकता अनुसार पृष्ठ संख्या २१५ से लेकर २२६ तक वर्णित विधि से सभी ज्योतियों को बैठे आसन में ही ॐ कार शम्भु अर्थात् शम्भु आदेश करते हैं तथा सभी मानधारिओं को हस्तस्पर्श नमन करते हैं।

भावार्थ :- शम्भु आदेश - यह भी नाथ सिद्धों की नमस्कार अर्थात् आदेश करने की प्रथा या परम्परा है, गले में नाद + जनेऊ न होने के कारण यह शम्भु आदेश करते हैं। विशेषत: औघड़, नाथ तथा भक्त भी शम्भु आदेश करते हैं। नाथ योगेश्वर अपने इष्ट तथा गुरु को छोड़कर बाकी सभी मानधारी तथा बड़े योगेश्वरों को शम्भु आदेश

करते हैं। इसकी विधि इस प्रकार है कि उकड़ूँ बैठकर दोनों हाथों को अन्जली समान जोड़कर सन्मुख भूमि पर रखते हैं। फिर आदेश मन्त्रोच्चार करते हुये दोनों हाथ के अंगूठे एक साथ बाकी चारों अंगुलियों पर से घुमाते हुये मुट्ठी बांधकर अंगुठे सीधे ऊपर उठाते हुये दोनों मुट्ठी जोड़ते हुये खडे करते हैं और शीश झुकाते हुये पुनः मुट्ठी खोलकर पुनः वही क्रिया करते हैं शीश ऊपर नीचे करते हुये ऐसे तीन बार करते हैं।

(ख) पुतले के ऊपर शंख ढालना विधि

इस प्रकार आदेश नमन होने के पश्चात् टैलुवा उनके कन्धों पर गिरेवान रखकर अर्थात् उन्हें भी सम्मानित करते हुये कैलाश के ठीकरों के सम्मुख आसन पर बिठाते हैं। अतः भक्त ठीकरे पर या गत गंगा ज्योत की पूजन करके दान दक्षिणा चढ़ाते हैं।

कोतवाल नाम, पता, गुरु का नाम (पंथ) आदि नोट करता है। अतः भक्त दोनों पवित्रियाँ हाथों में ग्रहण करता है। टैलुवा निम्न मन्त्र बोलता है।

★ **टहल पवित्री** ..... (पृ० सं० २३१ पर देखें)

अतः **(शंखबाला** ..... पृ० सं० २३२ पर देखें) मन्त्रोच्चार करके शंख लेते हैं और कुण्डाजल से शंख भरवाकर प्रथम शंख पुतले के ऊपर ढालना शुरु किया जाता है और पीरजी या टैलुवा निम्न पिचान शंख गायत्री मन्त्र बोलते हैं।

पिचान शंख गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सों नखी चखी क्रिया रिझाई, अखण्ड जोत जाग गुण भारी। ब्रह्मा पुत्री विष्णु कुदाली। ईश्वरी गौरा मिट्टी डाली। प्रथम धरती आदि बोली, चतुर्थनाथ प्रसन्न होये, सुनिये सहजा माई। हमतुम होता

नाई। शंख सिन्दूर जो तिल सिन्दुर चौखा नाई। जगत की माई। कहपाई, अरबी नरबी धुन्धुकारा शब्द शंख लेओ उपारा। नही जल नही थल नहीं मेरू मण्डल कैलास। सिंहरुप गौरा उत्पन्न हुई। ईश्वर ले रुडधंग्याधरी मरगई गौरा रह गया रुण्ड। हाथ पाव पिंजर का नला षड़दर्शन लो घालो गला। इमरत कूपी आगे धरी, जल थल में गौरा फिरी, जल थल में मिनष की थाप, पांच शंख ले वरणा आप। गावत्री सावित्री चौ विदी चौकड़ी जमघंटी तामड़ पीटी सोना खूरी रुपा पूची नन्दी अवा। राख राख माता गायत्री घोर घोर पिण्ड राख। मै के राखू स्याम राख। ब्रह्मा विष्णु महेश की साख छः मास जोग नवग्रह करे इकोत्तर सौ क्रिया देह धरे। भर शंख रहे भरपूर। धम ढूके पाप सिन्दूर। गंगा जमुना सरस्वति, काशी और केदार। शंख ढले सो पूजिये, सो जीवन मोक्ष द्वार। सर्वगत कू ओदश। आदेश।। नाथजी को नमस्कार।

पहला शंख धरती माता को दिया। धरती फोड़ पियाल में गया। आओ धरती करो विचार। सूतक पातक झेलो बार। इस करनी से उतरा पारा। पढो गुण गायत्री सार सावत्री चौ विदी चौकड़ी ..... सर्वगत के आदेश। आदेश।। नाथजी को नमस्कार।।१।।

(अतः भक्त दूसरा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले के ऊपर ढालना शुरु करता है। पीरजी आगे मन्त्र बोलते हैं।)

दुजा शंख दुर्गा भगवती को दिया। कान फोड़ कुण्डल कर लिया। आओ दुर्गा करो विचार सूतक पालक झेलो बार ..... सर्वगत कू आदेश। आदेश।। नाथजी को नमस्कार।।२।।

(अतः भक्त तीसरा शंख कुण्डाजल से भरकर पुतले के ऊपर ढालना शुरु करता है। आगे पीरजी या टैलुवा मन्त्र बोलते हैं।)

तीजा शंख सुन्दर देव को दिया। कान फोड़ कुण्डल कर लिया। ..... सर्वगत कू आदेश। आदेश। नाथजी को नमस्कार।।३।।

(अत: भक्त चौथा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले के ऊपर ढालना शुरु करता है। आगे पीरजी/टैलुवा मन्त्र पढ़ते हैं।)

चौथा शंख सदा शंकर को दिया। कान फोड़ कुण्डल कर लिया। ..... सर्वगत कू आदेश। आदेश।। नाथजी को नमस्कार।।४।।

(अत: भक्त पांचवा शंख कुण्डा जल से भरकर पुतले के ऊपर ढालना शुरु करता है, आगे पीरजी या टैलुवा मन्त्र पढते हैं।)

पाँचवा शंख यती गोरक्षनाथ को दिया। कान फोड़ कुण्डल कर लिया आओ गोरक्ष करो विचार सूतक पातक झेलो बार .... सर्वगत कू आदेश। आदेश।। नाथजी को नमस्कार।

कौन शंख शंख सिरसाये। कौन शंख मुरदेबल बाजे। कौन शंख ले सृष्टि उपाजाई। कौन शंख ले उतरे पार। ज्ञान शंख ले सिरसाजे, धर्म शंख ले उतरे पार, माँ भुवेली पूत भरतार पीचान शंख गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। अनन्त करोड़ सिद्धा में बैठ गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार भक्त पांच शंख ढालने के पश्चात् पुतले की पूजन-तिलक, बिल्व पत्र, लाल पुष्प, आटे का पिण्ड, सुपारी, सिन्दूर, ताम्बूलादि से पूजन करते हैं तथा टैलुवा निम्न मन्त्र बोलता है।

पुतला पूजन मन्त्र-३

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ धरती

सों आकाश महाधत्री महाआकाश कलश थाप्या जोत प्रकाश। थापे धरती माला गौरा थापे आकाश आद पुरुष थाप जल को ब्रह्मादेव। अग्नि थापे विषण भगवान अनन्त कोट सिद्धां का लाग्या मेला ज्ञान शंख ढाला शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ बाला।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।। इति तिलक सिन्धुर, बेलपत्रा, पुप्पांग, कंगण, पिण्ड, ताम्बुलम् स्वाहा।।

[**विशेषः**- पुतला पूजन मन्त्र से पूजन करें और पिचान शंख गायत्री बोलकर पितृ नाम के पिण्ड को १०८ बार शंख ढालकर जल प्रवाहित करें तथा पिण्ड संख्या जितने ही घृत दीपक जल में प्रवाहित करें पितृ दोष नहीं रहेगा।

यह विधि पितृ पक्ष के पितृ अमावस्या में करें।]

पूजन पश्चात् उपदेशी भक्त पवित्रियाँ पूजन पात्र में रख देता है। कोतवाल उन्हें जुगत कुण्डा अमृत पान कराके उन्हें कृतार्थ करते हैं और वह सभा में बैठ जाते हैं।

इस प्रकार पीरजी तथा टैलुवा मिलकर उपरोक्त मंत्रोच्चार ही करते रहते हैं तथा और भी इच्छुक दर्शनार्थी उपदेशी भक्तजन बाला सुन्दरी दर्शन तथा अमृतपानादि का लाभ ले सकते हैं।

(ग) कुछ नियम

(१) भक्त मृतात्मा का उपदेशी शिष्य होना आवश्यक है। बाकी भक्तों का प्रवेश निषिद्ध है।

(२) शक्यतो भक्त शम्भु आदेश ही करते हैं नादि बजाकर आदेश निषिद्ध है।

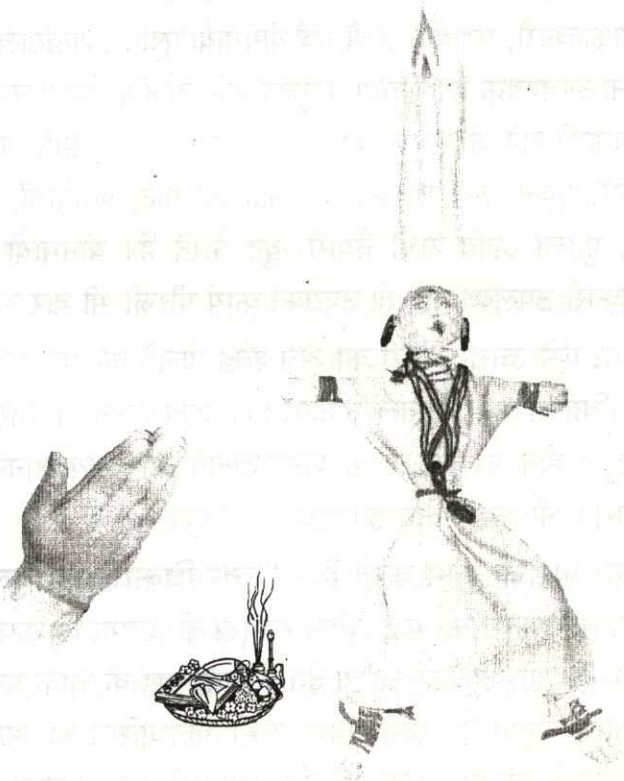
(३) पुतले के ऊपर कम से कम पांच शंख ढालना चाहिये। यहां मन्त्रोच्चार पीरजी या उत्तराधिकारी कर सकते हैं।

(४) मानधारियों को हस्तस्पर्श नमन करते समय (उपदेशी)

भक्त सभी मानधारियों को सम्मान देते हुये उचित दक्षिणा उनके आसन पर चढ़ाते हैं।

(५) समय उपलब्धि अनुसार मृतात्मा के उपदेशी शिष्य बने यह भक्त ज्यादा से ज्यादा भक्त आकर दर्शन एवं शंख ढाल कर सकते हैं।

(६) शंख ढालना उनके श्रद्धा-भक्ति का अंश है।



पुतला शंखढाल एवं पूजन

(१७) उत्तराधिकारी कर्म विधि

इस प्रकार सभी मानधारी, नया चेला, उपदेशी योगेश्वर एवं उपदेशी भक्तों के शंख ढालने के पश्चात् मुख्यत: इस कर्म काण्ड के उत्तराधिकारी को आदेश नमन सहित शंख ढालना पड़ता है।

(क) उत्तराधिकारी का आदेश नमन विधि

भावार्थ :- उत्तराधिकारी नाथ सम्प्रदाय के इस योगमाया कर्म अर्थात् शंखढाल कर्मकाण्ड करने का अधिकारी होता है। यह दर्शनी (कान फाड़े) नाथ योगेश्वर होना चाहिये, तथा इन दर्शनी को आत्मसाक्षात्कारी, महायोग ज्ञानी एवं योगमाया पूजन , शंखढाल का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। योगमाया पूजन, शंखढाल का सभी कर्म काण्ड की जानकारी होने के कारण वह सामग्री सूची अनुसार साहित्य इकट्ठा करवाकर, पूजन कक्ष नियुक्त कर माई का पाट, ज्योतियाँ, कैलाश, भण्डार, पुतला आदि सभी तैयारी खुद करते हैं। योगमाया कर्म में उत्तराधिकारी उपलब्ध नहीं तो उपरोक्त कार्य पीरजी भी कर सकते हैं।

अत: ऐसे उत्तराधिकारी का अब शंख ढालने का समय आता है। यह उत्तराधिकारी अन्त में पुतले के ऊपर १०८ शंख ढालते हैं। उत्तराधिकारी उपलब्ध न होने पर यह १०८ शंख ढालने का कार्य अनन्त गादी (मानधारी) भी कर सकते हैं।

अत: पीर जी हुक्म करते हैं - **"उत्तराधिकारी को बुलावो।"** टैलुवा उत्तराधिकारी को माई चौक सन्मुख के आसन के ऊपर आदर से बिठाते हैं। पीरजी उन्हें आखा देते हैं। वह माई के चौक पर आखा एवं दक्षिणा चढ़ाते हैं। इसी प्रकार सभी मानधारियों के आसन पर अर्थात् पीरजी, जोगन, साखियाँ, वीर, भण्डारी, अनन्त गादी, टैलुवा, कोतवाल ... सबको यथा उचित दान दक्षिणा चढ़ाते हैं और पीरजी या

खुद उत्तराधिकारी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

आखा मन्त्र ..... (पृ० सं० २१९ पर) इस प्रकार नाथ योगेश्वर उत्तराधिकारी पृ० सं० २१९ से लेकर २३० में दर्शायी गयी विधि से बैठे आसन में ज्योतियों को नादि आदेश, मानधारी गादी को हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हैं।

(ख) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: टैलुवा गिरेवान उनके कन्धों पर रखते हुये हाथ पकड़कर बड़े आदर से कैलाश के ठीकरा सन्मुख आसन के ऊपर बिठाते हैं। अत: उत्तराधिकारी ठीकरे पर या गत गंगा जोत पूजन करके उचित दक्षिणा (चढ़ावा) चढ़ाते हैं। कोतवाल उनके नाम, गुरु के नाम, पंथ, पता, चढ़ावा आदि अपने कॉपी में नोट करते हैं। अत: उत्तराधिकारी पृ० सं० २३१ के मन्त्र अनुसार पवित्री हाथ में पहनते हैं। अत: उत्तराधिकारी दक्षिण मुखी शंख लेते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अथ् शंख बाला ..... (पृ० सं० २३२ पर देखें) अत: शंख में कुण्डा जल भर लेते हैं और निम्न **"ब्रह्म ज्ञान-मन्त्र जाप"** से अथवा **"हुकम जाप"** (पृ० सं० १८६ पर देखें) मन्त्र से १०८ शंख पुतले के ऊपर ढालते हैं। यहां मन्त्र पीरजी या खुद उत्तराधिकारी भी बोलते हैं।

ब्रह्म ज्ञान मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। एक अलील पकड़ी बहुरंगा जिसकी कुएं (कुण्डा) से पड़ गयी गंगां एक बुन्द से सृष्टि उपाई, राई पर्वत बीच समाई। ब्रह्म सभा में बन्या शरीर उपजी श्रद्धा छुप गया नीर। उपजे (ब्रह्म) बन्धे विचार, आप पूछे अपना राह, आपे भूल्या भरमिया आप, जेवड़ी को कहते है सांप। सोता है तो उठकर जाग। रुई लपेटी रही न आग। भर्मत भर्मत जग

भरमाया, भया ब्रह्म जब वेद उपजाया। कही कृष्ण कही कंस कहाया कही राम कही रावण आया। माला तबसी टीका छाप-दूजा, और जनावे आप। सेवक होके किनी पूजा-अपना ब्रह्म बनावे दूजा, वेद उपाधि किया जग झेड़ा-ज्यो देखो सिद्धो भव सागर कागज का बेड़ा। भले बुरे दो कर्म बनाय, अपनी पैरी संगल पाय। काढया तार बनाया ख्याल-आप ही फस गया जाल। जब मुठ हुई ग्राह की-तब शिव लीला करणी साखी कर कर कर्म की गत हारी-भीजी कमली हो गयी भारीं कर्म ही उपजे कर्म ही मरे-कर्म ही लख चौरासी भरे। भले बुरे का नही विवेक सागर कुन्जी लोहा मेख। धन का कुआ है, अभिमान- पति वरकारी युग प्रमाण गौतम ऋषि कि पतिव्रता नारी-जिसकी जग में चली कहानी। अपनी गत में आपा भूल्या, कीना पाता हेत क्या गंगा गया गोदावरी हित, कर हेत काली कमली भईन स्वेत क्या मथुरा सिमरु मन द्वारीका-मन का खोटा कभी न खरा क्या काशी पुष्कर भोया। जिन अन्दर घट का मैल न धोया। क्या त्रिवेणी सागर संगम नहाय, माटी खोद के देव बनाय। पूजा किनी मन चित्त जोड़-बहुत पशु को ले गये, चोर। क्या गंगा जल पिया मन चितलाय, वह तो अन्त मूत्तर हो निकल जाय। कौड़ी तुम्बी नाहावन गई, नहान धोय मुड़ घर गयी। मीठी भई न पलटिया रंग क्या हुआ जब नहाय गंग। मन की मैल न जल से जाई। अन्दर घट में खोजन पाई। भूली भूली रे जग सारी अलख लखन की गत है न्यारी। गुरु प्रसाद शिव जी पढे भरम की पोथी श्री नाथजी पढ़े। सच कहे तो मारिये-ड़ोली जात समीत अपने-अपने स्वार्थ के सब कोई गावे गीत-क्या पण्डित कथे कहानी, क्या माखन मांगे पानी, पढ़ पढ़ कागज काले खोय, भोर भये जब चीसू रोयं क्या तुम देश दिशान्तर

जाई, तुम खोजो घट के मांही। तेरे घट का भेद न पाया-जल डुबे मरे तिसाया क्या कानी कज्जल पाया क्या पण्डित चौका दीने तन मन सच्चा नही कीने। तन मन कर लागी काही-क्या भोन्दू सेज बिछाई क्याँ। भेख लिया क्या बाणा जिन पर दुःख नहीं जाना। तेरे हृदय राम न आया घिस-घिस चन्दन तिलक लगाया, जती कहाय जुगता, मन में हुआ न मुकता। हम योगी हम घरबारी-हम सेवक हम मठधारी। क्या हुवा जब मुण्ड मुण्डाय-क्या हुआ सिर जटा रखाय। सुरत निरत का मेला-हाथ बैठा तेला जप तप सुमिरण नही किया-जाते का क्या पकड़ लिया। कहता है पुकार-पुकारा बिना सतगुरु तेरे घट में घोर अन्धेरा। क्या भगवा साफा पीला क्या वस्त्र पहिरे निला। क्या वैरागी क्या संन्यासी-जिन माया नही त्यागी, क्या तुम भये उदासी, कुटी न यम की फासी। क्या तुम भये दुधाधारी जिसका मन मनसा नही मारी-मन मनसा ठहरानी, जैसा पीया दूध पीया पीया पानी। एक गाढ़ा सा पत्थर जल में पड़िया जब काढ़या कुड़ा हो तरिया। एक बात अटक रहि भारी, कोई, कोई योगेश्वर को लगेरी प्यारी। हरी सेवक रंगा चंगा, उज्वल काया, निर्मल अंगा। रोहड़ी सक्खर भक्खर विच खवाजे का थान घोड़ा चोली परसो, सिद्धो उपजे ब्रह्मज्ञान। दाना भूजा भाड़ का फिर उगन का नही, मन की मिट गयी वासना, ब्रह्मज्ञान के माही और ज्ञान सब जान लो ब्रह्मज्ञान सो ज्ञान जैसे गोला तोप का करना चले मैदान। पूर्ण ब्रह्म बसे घट माही। न कही आवे न कही जाई। इतना ब्रह्मज्ञान पाठ सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी को आदेश। दादा मत्स्येन्द्रनाथजी के चरण कमल को नमो आदेश। आदेश।

[**विशेषः**- यह मन्त्र ज्ञान वर्धक है। एकाग्र पाठ करके एक घण्टा ध्यान करें (नित्य ६ मास तक) **"ॐशिवगोरक्षयोगी"** मन्त्र का जप करें। तब उन्हें ज्ञान-प्रकाश-साक्षात्कार होगा।]

यहाँ पीरजी मन्त्र बोलते हैं तथा उत्तराधिकारी एक एक शंख ढालता है और टैलुवा उन्हें गिनता है। टैलुवा अपने रुद्राक्ष माला से भी गिनते हैं या १०८ चावल को एक पात्र में पहले ही गिनकर रखते हैं और शंख ढालते समय एक एक दाना शंख के साथ चढ़ाते हैं और चावल खत्म होते जाते हैं इस प्रकार सरल विधि से १०८ शंख ढाले जाते हैं।

अतः उत्तराधिकारी निम्न मन्त्र से पुतले की पूजन, तिलक, बिल्ब पत्र, लाल पुष्प, पिण्ड, कंगण, सुपारी, ताम्बूल आदि साहित्य से पूजन करते हैं। और निम्न मन्त्र पीरजी या उत्तराधिकारी पुतले को सुनाते हैं।

सुमरण मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आखा आलना कंगण बान्धा चौसठ जोगन खेले संगा चौसट जोगनी खेले साथ, तले धर्ती उप्पर आकाश। इस पिण्ड प्राण सूरत निरत सत्गुरा के पास चन्दन तिलक केशर टिका, अलष पुरुष को माथा टिका लोटे का कोट ताम्बे कि खाई हुनमन्त विर ने चौकी लगाई। कमल पुष्प बेल पात्रा, कर रक्षा तारा त्रिपुटा। जुगती कुण्डा अमरसपाण साध सिद्ध का अमरण जान। रात राखे चन्द्रमा दिन राखे सूर धर्ती माता सदा राखे, काल कंटक दूर, राह चले महेश्वरा कुराह चले जग धूड, पांच महेश्वर आज्ञा देवे मोक्ष मुक्त भरपूर। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

इस प्रकार की शंखढाल एवं पूजन के पश्चात् उत्तराधिकारी वह पवित्रियाँ पात्र में रख देते हैं। कोतवाल जुगत अमृत कुण्डा प्रसाद रुप में पिलाता है।

और उत्तराधिकारी सभा में आसन (दरी) पर बैठ जाते हैं।

(ग) कुछ नियम

(१) उत्तराधिकारी का दर्शनी योगी होना आवश्यक है।

(२) उत्तराधिकारी का आत्मसाक्षात्कारी होना उत्तम होता है।

(३) उत्तराधिकारी को कार्य में निपुण एवं पूर्ण अनुभव-सिद्ध होना आवश्यक है।

(४) १०८ शंख ढालते समय मन्त्र उच्चारण करना चाहिये तथा १०८ संख्या रुद्राक्ष माला से या १०८ चावल के दानों को चढाते हुये गिनना चाहिये।

(५) अत: कर्म काण्ड की पूर्ण जवाबदारी लेनी चाहिये।



आत्मसाक्षात्कारी योगीराज

(१८) अनन्त गादि का विधि

इस प्रकार सभी, मानधारी, नया चेला, उपदेशी नाथ योगेश्वर, उपदेशी (दीक्षित) भक्त और उत्तराधिकारी द्वारा शंख ढालने के पश्चात् अन्त में अनन्त गादी को, ज्योतियों को, नादि आदेश, गादी को नमन, शंख ढाल करना पड़ता है।

सुझाव - जिस समय उत्तराधिकारी कैलाश में पुतले को शंख ढालने जाते हैं बिलकुल उसी समय अनन्त गादी, बाला सुन्दरी चौक के सन्मुख (मध्य) आसन पर विराजमान होते हैं।

(क) अनन्त गादी का आदेश-नमन विधि

अत: अनन्त गादी माई के चौक सन्मुख पद्मासन या स्वास्तिकासन अर्थात् सरलासन में बैठते हैं तो पीरजी उन्हें आखा (चावल) देते हैं और वह आखा और कुछ दक्षिणा बाला सुन्दरी चौक (ज्योति पर) निम्न मन्त्र से चढ़ाते हैं।

★ **आखा (अक्षत) मन्त्र** (पृष्ठ संख्या २१९ पर देखें) अत: बैठे आसन में निम्न मन्त्र से माई के ज्योत को नादि आदेश करते हैं।

★ **बाला सुन्दरी पाट पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२० पर देखें) तद्नन्तर बाला सुन्दरी चौक की चारों जोत को नादि आदेश करते हैं।

★ **बाला सुन्दरी चौक के चारों जोत पगे लागने का मन्त्र** (पृ० सं० २२१ पर देखें) अत: हिंगलाज जोत को देखते हुये बैठे आसन में निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

★ **हिंगलाज जोत पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२१ पर देखें) फिर भैरव जोत को देखते हुये निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

★ **भैरव जोत पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२१ या २२२ पर देखें)

तद्नन्तर गणेश जोत को देखते हुये निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

★ **गणेश जोत पगे लागने का मन्त्र** (पृ० सं० २२३ पर देखें)

इसी प्रकार भण्डार जोत को देखते हुये निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

★ **भण्डार जोत पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२४ पर देखें)

अत: कैलाश की गत गंगा जोत को देखते हुये निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

★ **गत गंगा जोत पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२४ पर देखें)

इस प्रकार कैलाश के चार जुग की जोत को देखते हुये निम्न मन्त्र से नादि आदेश करते हैं।

★ **चार जुग जोत पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२४ पर देखें)

(ख) (गादी) नमन विधि

अत: अनन्त गादी उसी आसन में बैठे हुए निम्न मन्त्र से बाला सुन्दरी जोत पाट को नमन करते हैं।

★ **अखण्ड जोत (बाला सुन्दरी) जोत नमन** (पृष्ठ संख्या २२५ पर देखें) अत: बाँया हाथ वक्षस्थल पर रखकर दाँया हाथ (अंगुलियाँ) माई के चौक की भूमि को स्पर्श करते हुए यही हाथ वक्षस्थल (छाती पर) स्पर्श कर इसी हाथ से मस्तक त्रिपुण्ड पर स्पर्श करते हुये नमन करते हुये कहते हैं।

"श्री बाला सुन्दरी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: पीर गद्दी की ओर देखते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **पीर गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२७ पर देखें) फिर उपरोक्त हस्त स्पर्श विधि नमन करते हुये कहते हैं।

"पीरजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: जोगन गादी को देखते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **जोगन गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२७ पर देखें)

पुन: उपरोक्त हस्तस्पर्श विधि नमन करते हुये कहते हैं।

"माता जोगन का आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: साखियाँ गादी को देखते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **साखियाँ गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२८ पर देखें)

फिर उपरोक्त हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुये कहते हैं।

"साखियाँ को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: वीर गद्दी को देखते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **वीर गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२८ पर देखें) पुन: उपरोक्त हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुये कहते हैं।

"वीर गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: भण्डार गद्दी को देखते हुये निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **भण्डार गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२९ पर देखें)

फिर उपरोक्त हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुये कहते हैं।

"कुबेर भण्डार गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: अनन्त गद्दी को देखते हुये निम्न मन्त्र कहते हैं।

★ **अनन्त गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृ०सं० २२९ पर देखें)

पुन: उपरोक्त हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुये कहते हैं।

"अनन्त गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: बैठे आसन (टैलुवा आसन) को देखते हुये निम्न मन्त्र कहते हैं।

★ **टैलुवा गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २२९ पर देखें)

पुन: पूर्वोक्त हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुए कहते हैं।

"टैलुवा को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

अत: आवश्यकता अनुसार कैलाश में कोतवाल गद्दी को देखते हुये निम्न मन्त्र कहते हैं।

★ **कोतवाल गादी पगे लगाने का मन्त्र** (पृ० सं० २३० पर देखें) पुन: पूर्वोक्त हस्तस्पर्श विधि से नमन करते हुए कहते हैं।

"कोतवाल गादी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।"

इस प्रकार पूर्वोक्त विधि के अनुसार अनन्त गादी की ज्योतियों को नादी आदेश एवं मानधारी गादी नमन विधि करते हैं। अत: उन्हें सबके अन्त में पुतले को शंख ढालना होता है।

(ग) पुतले को शंख ढालना विधि

अत: टैलुवा अनन्त गादी के कन्धों पर गिरेवान बड़े आदर से मान देते हुए रखते हैं और हाथ पकड़कर कैलाश के ठीकरे सन्मुख आसन पर बिठाता है।

अनन्त गादी ठीकरे के ऊपर तथा गत गंगा ज्योत पूजन तथा दान दक्षिणा का चढ़ावा चढ़ाते हैं और कोतवाल उनके नाम, गुरुजी का नाम तथा पंथ, पता, कितनी दक्षिणा आदि विवरण को अपने कॉपी में नोट करता है।

अत: अनन्त गादी पूजन पात्र में से कुशा की दोनों पवित्रियाँ अपनी अंगुली में पहनते हैं तथा निम्न मन्त्र पीरजी या टैलुवा बोलता है।

★ **टहल पवित्री .....** (पृष्ठ संख्या २३१ पर देखें) अत: पृ० संख्या २३२ के अनुसार पूर्वोक्त विधि से पुतले के ऊपर शंख ढालने के लिये पात्र में से शंख लेते हैं और पीर जी या टैलुवा निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ **अथ शंखबाला** (पृष्ठ संख्या २३२ पर देखें)

अतः पीरजी या टैलुवा या खुद अनन्त गादी निम्न धर्म शंख मन्त्र का उच्चारण करते हुये कुण्डा जल से शंख में जल लेते हुये पुतले के ऊपर पहला शंख दोनों हाथों से ढालना शुरु करते हैं।

अथ् धर्म शंख

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो आदेश ओं सों ओकारे त्रिभुवन नाथ अनाद धर्म के बान्धो पांव सत स्वरुपी पाई बुध कथो कथो श्री स्वामी जी आद धर्म की सुध तथा न होती धर्ती आकाश तथा न होता गर्भ सांस तथा न होता माई न बाप, तिस काले कौन कर्ता, श्री शम्भु योगी तुम्हारे दिवान तथा न होते देवी न देव तथा न होती पुजा न पाती तथा न होती जात न जाती तपि मध्ये शम्भु योगी आये आप भया प्रकाश धर्म शंख भडंता ईश्वर जोगी पडंता पढ गुणंता सुफल फलंता पढ़ गुड़ संख रहा भरपूर सत धर्म नेडे ओवेंगे देवी पार्वती जी पाप परलो हो जावे दूर पढ़ संख पावे मोक्ष सेवा पूजा करे शिवपूरी का लोक पहला संख सम्पूर्ण भया।

(अतः दूसरा शंख कुण्डा जल से भरकर ढालना शुरु करते हैं।)

ॐ दूसरा संख निरन्जन देव अनन्त कोट सिद्धां मिल पाया भेव, बाण मुक्ता आवे न जावे परम जोत मध्ये अजूनी शम्भू रहा समाय, शम्भू अजुनी आय आप आप भया प्रकाश, धर्म संख भडंता ईश्वर जोगी पढंता पढ गुणंता सुफल फलंता पढ़ गुड संख रहा भरपूर सत धर्म नेड़े आवेगें देवी पार्वती जी पाप परलो होता दुर पढ़ संख पावे मोक्ष सेवा पूजा करे शिवपूरी का लोक। दूसरा संख सम्पूर्ण भया।

(अतः तीसरा शंख कुण्डा जल से भरकर ढालना शुरु किया।)

ॐ तिसरा संख पुनश्विर भया अदृष्ट अगोचर जाता रहा ऐ निसमार पछम लीना जरा मरन सिद्धां इस जीवड़े को दीना शम्भू जोगी आय आप भया प्रकाश धर्म संख ..... पूर्ववत।

(अतः चौथा शंख कुण्डा जल से भरकर ढालना शुरु किया)

ॐ चौथा संख आकासे फनिअर जहाँ शब्द साखी सुनी पर शब्द सुनिया मन पाया भेव ब्रह्मज्ञानी सुध सुखदेव शम्भूयोगी आय आप भया प्रकाश धर्म संख ..... पूर्ववत।

(अतः पांचवा शंख ढालना शुरु करते हैं।)

ॐ पांचवा शंख पंज मूर्ती भया अदृष्ट अगोचर, जाता रहा सत गुरु वचने होमी काया तहां श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथजी ने शब्द बताया शम्भू योगी आय आप भया प्रकाश धर्म शंख ... पूर्ववत।

(अतः छटवाँ शंख ढालना शुरु किया।)

ॐ षष्टवा संख बिचारो लोई तीन भवन में कौन कौन चीना चिसपत निसपत वाहि नध शम्भू योगी आय आप भया प्रकाश धर्म शंख ..... पूर्ववत।

(अतः सातवाँ शंख ढालना शुरु किया।)

ॐ सातवाँ संख श्री देवी आद भवानी जीर लिया तहा तहा देवी सहजे जानी मायारुपी आप दिखानी शम्भूयोगी आय आप भया प्रकाश धर्म शंख भडंता ईश्वर योगी पढ़ंना पढ़ गुणंता सुफल फलंता पढ़ गुड़ संख रहा भरपूर सत धर्म नेड़े आवेगी देवी पार्वती जी पाप परलो होजा दूर पढ़ संख पावे मोक्ष सेवा पूजा कर शिवपूरी का लोक ओं हर-हर-हर एक सत संख ढाले।

ओं पंच संख का पूतला सत गुरु उपदेश मूलचक्र रक्षा करे सिद्ध गौरी नन्द गणेश ओं हर-हर-हर .....

[**विशेषः**- इस धर्म शंख मन्त्र का सवा वर्ष नित्य पाठ करने पर धर्म, अर्थ, मोक्ष की प्राप्ति होगी।

अपने इष्ट के नाम चौकी पर कलश स्थापित करें। धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्पादि पूजन करें। श्री गणेश वन्दना फिर गुरु वन्दना तत्पश्चात् इसका पाठ करें।]

इस प्रकार अनन्त गादी पुतले के ऊपर पांच-सात शंख ढालते हैं तथा इसी मन्त्र से वह १०८ शंख भी ढाल सकते हैं। अगर योगमाया शंखढाल कर्म करने में मृत योगेश्वरों के उत्तराधिकारी नहीं हो तो यह १०८ शंख पुतले के ऊपर उपरोक्त मन्त्र से ढालने का काम अनन्त गादी को ही करना पड़ता है।

अतः निम्न मन्त्र द्वारा अनन्त गादी पुतले की अन्तिम पूजन, तिलक, सिन्दूर, बेलपत्र, लालपुष्प, आटे का पिण्ड, सुपारी, ताम्बूल कंगन आदि साहित्य से पूजन करते हैं और निम्न मन्त्र अथ संख्या ढाल अन्त कर्म पीरजी या टैलुवा या स्वयं अनन्त गादी बोलते हैं जो कि पुतले के रुप मृत योगेश्वर काल के ऊपर विजय पाकर परम हंस बनकर मोक्ष मुक्ति पथ पर आरुढ़ हो जाये।

प्रथम काल की प्रसन्नता के लिये वह काल गायत्री का पाठ करते हैं।

काल गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ काल सों काल काल महाकाल अजर काल वज्र काल जून काल, भवर काल अमर काल अनभय काल निर्भय काल जोत काल सर जीवन काल हम को रख दुष्ट को भख दुष्ट मर जाई काल परम हंस का

सुमरण करे तीन चूल्लू पानी के भरे संसार झरे संसार फिरे निर्भय योगी अनभय तरे बारह काल हमारे भाई हमको छोड़ और को ले जाई जीवन मोक्ष काल की पाई, इतना काल परम हंस गायत्री जाप मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह मन्त्र शिवरात्री, सोमवती अमावस्या, काली चौदस या प्रदोष रात्री में अपने सन्मुख कलश स्थापना कर गौघृत दीपक लगायें यहां सामुपचार पूजन करें, मिष्ठान भोग लगायें और उपरोक्त मन्त्र का १००८ बार जाप करें, रुद्राक्ष माला, १००८ चावल एक पात्र में लेकर एक-एक मन्त्र बोलकर एक-एक चावल कलश पर छोड़ें, मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। तथा स्वरक्षा व स्थान रक्षा होगी। इसी मन्त्र से जल देने पर रोगी की रक्षा होती है। कठिन से कठिन संकट से आप स्वरक्षा कर सकते हैं।]

अतः शंख ढालने का अन्तिम कर्म कारण निम्न अथ संख्या ढाल अन्त कर्म मन्त्र बोलते हुये पूजन करते हैं।

अथ संख्या ढाल अन्त कर्म

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं काल, सोहं काल महा काल बज्र काल जल मध्ये सुर काल, पांच काल हमारे पास पांच काल हमारे गुरु हमरे कारण दुनिया मरे जरे सोंकार परम हंस कौन जपन्ते, शिव जपन्ते शक्ति कालाय बिद्य महे महाकालाय धीमहि तन्नो कालाय परम हंस गायत्री प्रचोदयात्।। ओं तो शिव सोहं तो शक्ति आद लो बीज तत तो अलील परम हंस तत शिव ओं हर हर हर हर .....श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अतः पुतला पूजन पश्चात् अनन्त गादी अपने अंगुली की पवित्रियाँ निकाल कर पूजन पात्र में रख देते हैं।

कोतवाल जुगती अमृत कुण्डा उन्हें पीने को देकर उन्हें अमर करवाते हैं। कोई-कोई इस अमृत के बून्दमात्रेण चटवा लेते हैं। कोई अमृत के छींटे अपने ऊपर लगवाते हैं। तो कोई अमृत का मात्र मस्तक पर टीका लगाते हैं।

(घ) कुछ नियम

(१) अनन्त गादि का आदेश, नमन एवं शंख ढाल विधि सभी के अन्तिम समय में होता है।

(२) अनन्त गादि शुरु से लेकर अन्तिम आदेश नमन शंख ढाल तक एक ही आसन पर बैठता है वह आसन छोड़ नहीं सकता। अर्थात् कर्मकाण्ड का एक रात्र अनुष्ठान करना पड़ता है।

(३) उत्तराधिकारी उपलब्ध नहीं होंगे तो पुतले के ऊपर १०८ शंख ढालने के अधिकार अनन्त गादि को ही है।

(४) अपेक्षित मन्त्रोच्चार भी अनन्त गादि बोल सकते हैं।



पूजन साहित्य

(१९) उत्तरार्ध-आरती विधि

अत: पुन: माई की आरती करते हैं इसे उत्तरार्ती कहते हैं तथा भोग विधि भी की जाती है। यहां से योगमाया पूजन के उत्तरार्ध भाग की शुरुआत होती है। (साधारणता यहां मध्य रात्रि होती है।)

इस प्रकार यहां पुतले का शंख ढाल कर्म पूर्ण होता है। अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"आरती की तैयारी करो।"**

टैलुवा आरती की तैयारी करता है। धूप, दीप जलाकर पंच आरती कर्पूर आदि तैयारी करते हैं।

अत: कक्ष में सभी मानधारी, उत्तराधिकारी, उपदेशी नाथ तथा भक्त खड़े होते हैं। टैलुवा धूप, दीप पंचारती कर्पूरादि चेतन करते हुये माई की आरती शुरु करते हैं।

(क) आरतीयाँ

यहाँ पर "आरती माता हिंगलाज की" ..... पृष्ठ संख्या १९० पर की भी कर सकते हैं।

या

ॐ आरती योगमाया की

माता तू है जोता वाली, जय हो जय खप्परवाली।
तेरे ही गुण गावे आरती, ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।ऽ।।
सत्य सनातन सिद्ध योगीणी, तु है ब्रह्मा स्वरुपा।
तू ही सतचित सुन्दरी बाला, तु ही हिंगलाज माता।
सुन्दर रुप सुहानी, मन को मोहने वाली, मन को हरने वाली,
सिद्धो को हर्षाने वाली, सुन्दरी .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।१।।

तेज अनन्त ज्योति ज्वाला, आत्म ज्योति को माना।
चर्तुजुगो का चौका माण्डा, चर्तुज्योत का कोना।
तु है तु शक्ति शाली, कमलासन बैठने वाली, अष्टसिद्धी देने वाली, जती सतीओ को सवारती .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।२।।

नाथ सिद्ध का योगमाया से बड़ा है निर्मल नाता।
तन्त्र मन्त्र सब सिद्ध हुये पर तुम बिन कैसे माता।
शिव भक्ति शक्ति वाली, गत गंगा लाने वाली, अमृत बरसाने वाली, मुक्ती दिलाने वाली सुन्दरी .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।३।।

कैलास गीरी पर खड़े तुम्हारे लेकर भक्ति सारी।
फेरे लगाये नाम तुम्हारे मिटा दे यम की फासी।
सौ सौ सिंहबलशाली, तुम रक्षा करने वाली, सत सतवन्तीवाली,
कैलास पर्वत वासनी .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।४।।

घोर अघोर काल गायत्री रुप तुम्हारा न्यारा।
हे बीज बाला, हे सत् बाला बान्दे यम जंजिरा।
शंख ढालने वाली, स्वर्ग चढ़ाने वाली, मुक्ति ही देने वाली सिद्धा को जाके सवारी .....
ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।५।।

कलश पाट में अखण्ड जोती, महामाया का मन्त्र।
हूकम पीर का जोगणी बोले अमर बाला का तन्त्र।

तू है सूरजिवन वाली, मन्त्र की कौली वाली जोग जुगती वाली

साध सन्त को प्यारी सुन्दरी

ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।६।।

सप्त पौडियाँ स्वर्ग चढ़ाई माता तुम हो बलशाली।

धर्म शंख की नाद सुनाई बाला तुम शक्तिशाली।

नाद ब्रह्मावाली, तन्त्र मन्त्रों वाली, सप्त पूरीया वाली

अपरम्पार वाली सुन्दरी

ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।७।।

नहीं चाहिये धन और दौलत ना चान्दी ना सोना।

हम तो मांगे तेरी शरण में बस मुक्ति का एक कोना।

माया से बचाने वाली, बिगड़ी बनाने वाली, पाप पूण्य से न्यारी

ऋद्धि सिद्धियों वाली सुन्दरी

ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।८।।

चरण शरण में पड़े तुम्हारे दे दो हमको मुक्ति।

वरद हस्त सिस रख दो माना योग की शक्ति।

भर दो भक्ति रस प्याली, नव निध भक्ति वाली,

सिद्धो के काज सवारी .....

ओ बाला हम उतारे तेरी आरती।।९।।

माता तू है जोता वाली, जय हो जय खप्पर वाली,

तेरे ही गुण गावे आरती, ओ बाला हम उतारे

तेरी आरती ..... ओ बाला हम उतारे तेरी आरती.....

या निम्न आरती भी कर सकते हैं।

ॐ माई के जोत की आरती

ॐ गुरुजी पूर्व दिशा में तुझे माई स्मरु सूरज है आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सूरा बजावे सरस्वतियाँ अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।१।।

ॐ गुरुजी पश्चिम दिशा में तुझे माई स्मरुँ चन्द्रमा अगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ, अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।२।।

ॐ गुरुजी दक्षिण दिशा में तुझे माई स्मरुँ हनुमन्त वीर है आगुआनियाँ चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।३।।

ॐ गुरुजी उत्तर दिशा में तुझे माई स्मरुँ गणपति आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।४।।

ॐ गुरुजी इशान्य दिशा में तुझे माई स्मरुँ महेश आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।५।।

ॐ गुरुजी अग्नेय दिशा में तुझे माई स्मरुँ भैरु आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी

पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।६।।

ॐ गुरुजी नैवृत्य दिशा में तुझे माई स्मरु विष्णुजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।७।।

ॐ गुरुजी वायव्य दिशा में तुझे माई स्मरु ब्रह्माजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।८।।

ॐ गुरुजी आकाश दिशा में तुझे माई स्मरु इन्द्रजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।९।।

ॐ गुरुजी पाताल दिशा में तुझे माई स्मरु शेषजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।१०।।

ॐ गुरुजी नव खण्ड मैं तुझे माई स्मरु श्री गुरु गोरक्षनाथजी आगुआनियाँ। चौसट योगिनी मंगल गावे सुरा बजावे सरस्वतियाँ। अपने धनी पर चवर ढुलाऊ करु माई तेरी आरतियाँ।।

ॐ हर हर करुँ नाथ तेरी आरतियाँ।।११।।

[**विशेषः**- माई की स्थापना-पूजन-भोग करके प्रातः और संध्या नित्य यह आरतियाँ करने पर माता सकल मनोरथ पूर्ण करेगी।]

इस प्रकार आरती होते ही टैलुवा सभी ज्योति, माई का चौक, कलश, कैलाश को अचवाते हैं और मानधारी उत्तराधिकारी, नाथ, भक्तजनों को आरती देते हैं।

(ख) भोग विधि

आरती के पश्चात् भोग विधि होती है। पीरजी हुक्म करते हैं - **"भण्डार से भोग ले आवो"** और निम्न मन्त्र पीरजी या टैलुवा भी बोलते हैं।

(भण्डार में से) भोग लाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ फुरो ऋद्ध फूरो सिद्ध फूरो अनादि मायी। पांच महेश्वर आज्ञा करे तो भण्डार भोग को ले आयी। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: टैलुवा भण्डार कक्ष से एक (थाली) पात्र में बढ़िया नमकीन चना एवं एक थाली पात्र में बढ़िया मीठा हलवा ले आते है। यह पात्र लाल वस्त्र से ढककर लाते हैं और भण्डारी को दे देते है।

पीरजी हुक्म करते हैं - **"भण्डारी पात्र स्थापना करो।"**

भण्डारी प्रथम माई चौक सन्मुख भूमि पर जल के दो स्वास्तिक बनाते हैं और उस पर दोनों पात्रों को निम्न मन्त्र से स्थापित करते हैं।

"पात्र स्थापन मन्त्र"

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कहो सिद्धो यह पात्र कहासे आया। यह पात्र पांच तत से आया, यह ऋद्धि सिद्धि कहा से आयी, यह ऋद्धि सिद्धि पाताल लोक से आयी। थापे पात्र अलिल पुरुष की दुहाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार दोनो पात्र स्थापना के बाद भण्डारी निम्न मन्त्र से पात्र का लाल परदा हटाते है।

परदा भोग (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नमो चक्राय, पीरजी बोल्या, क्या देखा भण्डारी बोल्या ऋद्धि सिद्धि भण्डार भरपूर पडदा सरकावो माई योगन हजूर। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

तद्पश्चात निम्न मन्त्र से भण्डारी दोनों हाथ के पंजे ऊपर पंजे रखकर हंस मुद्रा से दोनों थाली ऊपर कर पखालते है और भोग शुद्धि करके प्रार्थना करते हैं।

कर पखालने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ नीमी तलाई नीम सार, नीम बान्धी पाल सत्गुरु कर पखालिये, जम्बू द्वीप मंझार मैं भाइड़ा सच मन करके जोड़ो हाथ-पावो मोक्ष मुक्त द्वार।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: भण्डारी प्रथम चना पात्र के ऊपर तीन बार आचमनी से जल घुमाते हैं। तीन बार आचमनी से (१) मुख शुद्धी, (२) हस्त शुद्धी, तीसरी बार भूमि पर जल छोड़ते हैं और हाथ से अचवाते हैं और निम्न मन्त्र बोलते हैं। या निम्न मन्त्र पीरजी बोलते हैं।

अथ नीम मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं आओ ब्रह्माजी करो विचार, असंख्य भुजा में कर लनो बास तुम हो देवी हम है देव चले करें देवल की सेव बड़े बड़े स्वामी जी आय, नाथजी के उपदेश इस कलिया में पांचों बसे नीम हरिया नीम

भरिया नीम सब सन्तन में तरिया जो नीम सूं करे हेत सो प्राणी सत अमरापुर चेत जो नीम सूंकरे भ्रांत उस को देवी चामुण्डा काली के दांत एता निम जाप सम्पूर्ण भया श्री नाथजी गत गंगा को पठ कथ के सुनाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- होली, दीपावली, अमावस्या, दशहरा या अमृतसिद्ध योग के दिन इस मन्त्र का आख पेड़ के पास १५१ बार जप करें। मिष्ठान भोग उपरोक्त पेड़ को लगायें। उन पेड़ों की जड़ निकाल कर लायें। वह घर में पूजा स्थान में रखें या दुकान गल्ले में रखें या साथ जेब में रखने पर अपेक्षित कार्य सफल होता है।]

अतः दूसरे मीठा हलवा के पात्र को भी उपरोक्त विधि से आचमनी से जल घुमाकर मुख, हस्त शुद्धि कर भूमि पर जल छोड़ते हैं और दायें हाथ से अचवा कर निम्न मन्त्र भण्डारी या पीरजी बोलते हैं।

मिठ्ठी माई मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। अनहद पुरुष की पावली, आदी अंत की बात, मन की भ्रांति निवार के, भई अलष पुरुष की जात, ऐसी महिमा देख के लई सन्तन की जूठ अपने बन्धन काटके, गई चौरासी छूट, मिठ्ठी माई-सदा सहाई, भर खप्पर ले आई। इतना मिठ्ठी माई मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अतः प्रथम आदिपात्र दक्षिण दिशा पीस समीपे संस्थाप्य।

अतः भण्डारी पहले चना पात्र को दक्षिण के तरफ अचवाते हुए जल छोड़ते हैं, पीरजी निम्न नीम का बीज मन्त्र बोलते हैं।

नीम का बीज मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। आदि अनादि अनहद रुप पीत पवन पानी-धर्ती अमर मुखबानी-आपे निरन्जन

आपे बाला आपे किया सीस पर उजियाला, ब्रह्मस्वरुपी बुद्धि उपजी, मुख से उपजे महामाया, महिमा महिमा करन्ती आई-आप ही पीवे आप ही जरे ब्रह्मा विष्णु महेश पैदा करे-कहे महामाया-मों को करो निरन्जन देवा-आदि युगादि करुं तेरी सेवा-अण्ड फोड़ ब्रह्माण्ड रचाया-लै सिन्दूर ललाट चढ़ाया-अन्त समय भया प्रकाशा दत्तो रे ललाट निवासा-आसा देवी-मनराघव -आज्ञा करो-प्रगट करो-आवो देवी झेलो भार-अष्ट भुजी में हुआ निवास तुम हो देवी हम है देवा-चलो करो गुरु देव की सेवा-झाड़ खड़ग नर ऊठा फूटा अण्ड भया ब्रह्माण्ड, नीम धर्ती नीम आकाश-नीम अठाराभार बनस्पति का नूर, पहली अलष निरन्जन अविनाशी को दिनी, मोक्ष मुक्त परमार्थ किया। दूसरी नीम विष्णु को दिनी वैकुण्ठ कढेव तिलक सिद्ध को किया तिसरी नीम शिव को दिनी, ऋद्धि सिद्धि भण्डार कुबेर भरपूर किया। चौथी नीम ब्रह्मा को दिनी, चार वेद का उच्चारण किया। पांच नीम पांच तत्वों को दिनी अजर अमर परमार्थ किया। छटी नीम छटे नारायण को दिनी खण्डदर्शन का स्वार्थ किया। सातवी नीम सात समुद्र को दिनी सुध बुध प्रकाशे किना। आठवी नीम अष्ट भैरो को दिनी चौरासी लख जीया जून का परमार्थ किया। नौवी नीम नवनाथों को दीनी चौरासी सिद्धा को प्रगटया किया। दसवी नीम दस अवतारों को दिनी, राक्षस असुरो का संहार किया। ग्यारवी नीम ग्यारह रुद्र को दिनी, शिव प्रसन्न द्वादश किया, बारहवी नीम बारह पंथ को दीनी भेद निरन्जन गुप्त प्रगट किया, तेरवी नीम तारा त्रिकुटा भवानी को दीनी, उत्तराखण्ड में आसन किया। चौदवी नीम चौदा भूवन को दीनी तिनलोक स्वर्ग मृत्यु पाताल में उजेला हुवा। पंद्रवी नीम पंद्रह तिथिन को दीनी, ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य शुद्र चार वर्ण का उच्चारण किया। सोलहवी नीम सोलह कला सम्पूर्ण को दीनी,

अखण्ड जोत को उजाला हुवा। सतरहवी नीम नीमनाथ को दीनी, नीम भीम दो पंथ चलाया। अठारहवी नीम अठारह पुराण को दिनी, जाति भेद का उच्चारण किया। उन्नीसवी नीम अलष निरन्जन अविनाशी को दीनी, शेष समुद्र गिरी पर्वत से मथ्थायी, बिसवी नीम बिस भुजा भस्मन्ती वज्रबाला भव योगीनी देवी भवानी ने लिया मच्छ मच्छन्दर दलन्ती अटल हल पान किया, इक्किसवी नीम इक्कीस ब्रह्माण्ड समाया, स्वर्ग मृत्यु पाताल तीन लोक माया में चलन्ती आपे निरन्जन आपे सरभंग एक अखण्ड कर धरनाथ, पंचमुखी पंच मौन आप अजूनी शंकर आया नीम से धर्म चलावे, सिद्ध योगी अमरापूर जावे। इतना नीम बीज मन्त्र सम्पूर्ण भया। अनन्त कोट सिद्ध में बैठ गुरु गोरक्षनाथजी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

भण्डारी यहां चना तथा हलुवा सभी ज्योति, पाट के सन्मुख थोड़ा थोड़ा रख देते है। तथा सभी मानधरी ओको (पीर जोगण..... आदि) हाथ में प्रथम चना देते है। और बाद में हलुवा देते हैं किन्तु मानधारी वह प्रसाद ग्रहण नहीं करते और पुनः वापस वह प्रसाद पात्र में डाल देते है और बाद में भण्डारी सभी को पुनः बांटता है।

[**विशेषः**- यह नीम बीज मन्त्र सर्व कार्य सिद्ध है। यह मन्त्र नित्य २१ बार पाठ २१ दिन करें। धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, जल से पीपल, वट वृक्ष, नीम या आख इन वृक्षों की पूजन करके इन्हीं के छाया में जप साधना करें। इक्कीसवें दिन हवन करें, हवन गौ का दूध, तुलसी पत्र, विल्व पत्र, गंगा जल, ५ लौंग कर्पूर, घी, गुड़ को मिलाकर आम की लकड़ी में ९ बार हवन करें और उपरोक्त वृक्ष की जड़ से वनस्पति अमृत सिद्धि योग पर लेकर आयें। उसे घर में या दुकान में या बाहरी काम के लिये जेब में रखें। सभी कार्य सिद्ध होंगे।]

अतः द्वितीय पात्र उत्तर दिशा योगनी समीपे संस्थाप्य।

अत: भण्डारी मीठा हलवा पात्र को उत्तर दिशा में अचवाते हुए जल छोड़ते हैं और पीरजी निम्न दश बिल पात्र मन्त्र बोलते हैं।

"अथ दश बिल पात्र"

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आदेश। गुरुजी को ओं पहली पूजा उत्तर की कीजे देवी नारदा शारदा सरस्वति ईश्वरी महामाई भर पात्र पाटण पूजा राखिजे सम्या चक्री पीर तत वीर मान महंत भंडारी कुठारी बाल गोपाल कोटवाल राजा प्रजा का बिघ्न हरीजे दाता दान पतीजे राजा प्रजा का उदर भरीजे जो बल मांगू सो बल दीजे कंटक मार खप्पर में दीजे उमा देवी सहजा नन्दी ऋद्ध सिद्ध पुगाओ सम्या मध्ये कौन रुप शिव शक्ति भई कौन रुप, अमरापुर गई कौन रुप शिव शक्ति लागो पांव पूजा लो शिव शक्ति जी गुरुजी जीया जन्त पशुनाम धर्ती मुख मण्डते तुम कारन पूजा भई हो देवी पार्वती जी मुझको दोष न दीजे एक जीव रक्षन्ते इक जीव भक्षन्ते इक जीव शून्य इक जीव स्थूल इक जीव मारे पाप न पूण्य जा जा जीया अकास तेरा होवे शिवपुरी में बास, अनन्त कोट सिद्धा मिल भरा ग्रास बल भख जती सती को रख पापी पाखण्डी तेरा भख खीरे खण्डे मद्य मांसे घृत कुण्डे सर्वाणगाधार बून्द मात्रेन कोट कोटान भैरवान भैरवी भैर्वान तुपन्ते तृपन्ते।।१।।

ओं दूसरी पूजा दक्षण दिशा की कीजे तुलजा देवी सरस्वती महामाई भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ..... पूर्ववत।।२।।

ओं तीसरी पूजा पूर्व दिशा की कीजे कामाक्षा देवी सरस्वती ईश्वरी महामाई भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ..... पूर्ववत।।३।।

ओं चौथी पूजा पश्चिम दिशा की कीजे हिंगलाज देवी सरस्वती ईश्वरी महामाई भर पात्र पाटण पूजा रखीजे .....पूर्ववत।।४।।

ओं पंचमी पूजा पाताल दिशा की कीजे काली नाग पद्म नागनी देवी सरस्वती ईश्वरी महामाई भर पात्र पाटण पूजा रखीजे .... पूर्ववत।।५।।

ओं छेवी पूजा दिल्ली तखत की कीजे चौसठ जोगन पात्र भरीजे भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ..... पूर्ववत।।६।।

ओं सप्तमी पूजा आकास की कीजे इन्द्र इन्द्राणी देवी भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ..... पूर्ववत।।७।।

ओं अष्टमी पूजा अष्ट भैरो की कीजे मद्य मांस खप्पर भरीजे भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ..... पूर्ववत।।८।।

ओं नौवी पूजा नौनाथ चौरासी सिद्ध की कीजे खीर खाण्ड पात्र पुरीजे।।९।।

ओं दशमी पूजा दसो दिशा की कीजे श्री शम्भूदेव उमादेवी पार्वती सरस्वती ईश्वरी महामाई कि कीजे भर पात्र पाटण पूजा रखीजे ..... पूर्ववत।।१०।।

इति दस बिल पात्रा मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री आदिनाथ उक्तम ओं नमो चक्र अग्रेपाच पात्र पुना।।

(ग) चक्र पूजा (नवग्रह)

इतनी विधि होने के पश्चात् जोगनी सात बार नवग्रह की चक्र गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं। (यह पाठ समय उपलब्धि के अनुसार तथा आवश्यकता के अनुसार कर सकते हैं।)

"चक्र गायत्री" मन्त्र

सूर्यदेवा - सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। सुन बा योग मूल कहे बारी बार। सतगुरु शब्द का सहज विचार।। ॐ आदित्य खोजो आवा गमन। घट में राखो दृढ़ करो मन। पवन

जो खोजो दसवे द्वार। तब गुण पावे आदित्य देवा। आदित्य ग्रह जाति का क्षत्रिय। रक्त रंजित कश्यप पंथ। कलींग देश थापना थापलो। लो पूजा करो सूर्यनारायण की सत फूरे सत वाचा फूरे। श्रीनाथजी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे भण्डार भरे ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि। सोम मंगल शुक्र शनि बुध गुरु राहु केतु सुख करे दुःख हरे। खाली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ सूर्य मन्त्र गायत्री जाप रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ ! ॐ भों सूर्यायः नमो नमः।

सोमदेवा - ॐ गुरुजी सोमदेव मन धरी बा शून्य निर्मल काया पाप ना पूण्य शशी हर बरसे अम्बर झरे सोमदेव गुण येता करे।। सोमदेव जाती का माली। शुक्त वर्ण गोत्र अत्री। ॐ जमुना तीर स्थापना थापलो कन्हेर पुष्प शिव शंकर की पूजा कर लो। सत फूरे सत वाचा फूरे श्री नाथजी के सिंहासन उपर पान-फूल की पूजा चढे। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे भण्डार भरे ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि। मंगल रवि शुक्र शनि बुध गुरु राहु केतु सुख करे दुःख हरे। खाली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ सोम मन्त्र गायत्री जाप रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। ॐ भों चंद्रमासि नमो नमः।

मंगलदेवा - ॐ गुरुजी मंगल विषय माया छोड़े। जन्म-मरण संशय हरे। चन्द्र सूर्य दो सम करे। जन्म-मरण का वाचे काल ऐसा गुण पावो मंगल ग्रह। मंगल ग्रह जाति का सोनी। रक्त रंजित गोत्र भारद्वाज। अवन्तिका क्षेत्र स्थापना स्थापलो। लो पूजा करो नव दुर्गा भवानी की।। सत फूरे सत वाचा फूरे श्री नाथ जी की सिंहासन उपर पान-फूल की पूजा चढै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे

भण्डार भरे ७ वार, २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि सोम रवि शुक्र शनि बुध गुरु राहु केतु सुख करे दुःख हरे खाली वाचा कभी ना पड़े।। ॐ मंगल मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। भो भौमायः नमो नमः।

बुधदेवा - ॐ गुरुजी बुध ग्रह सतगुरु जी दिनी बुद्धि। विवरो काया पावो सिद्धि। शिव धीरज धरे। शक्ति उनमन नीर चढै। ऐता गुण बुध ग्रह करे। बुध ग्रह जाति का बनीयाँ।। हरित हर गोत्र अत्रेय। मगध देश स्थापना स्थापलो। लो पूजा गणेश जी की करे। सत फूरे सत वाचा फूरे। श्री नाथजी के सिंहआसन ऊपर पान-फूल पूजा चढ़ै। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे भण्डार भरै। ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि। मंगल गुरु राहु केतु सुख करे दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ बुध मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। भो बुधायः नमो नमः।

बृहस्पतिदेवा - ॐ गुरुजी बृहस्पति विषयी मन ना धरो पाचं इन्द्रिय निग्रह करो।। त्रिकुटी भई पवना द्वार। ऐसा गुण बृहस्पति देव।। बृहस्पति जाति का ब्राह्मण। पीत पीला अंगीरस गोत्र। सिन्धु देश स्थापना स्थापलो। लो पूजा श्री लक्ष्मी नारायण की करो।। सत फूरे सत वाचा फूरे।। श्री नाथजी के सिंहासन उपर पान-फूल की पूजा चढ़ै।। हमारै आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे-भण्डार भरै। ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि मंगल बुध राहु केतु सुख करे दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ गुरु मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। भों बृहस्पतियः नमो नमः।

शुक्रदेवता - ॐ गुरुजी शुक्रदेव शोधे सकल शरीर। कहा

बरसे अमृत कहा बरसे नीर।। नवनाड़ी बहत्तर कोठा पवन चढ़ै। ऐता गुण शुक्रदेव करे।। शुक्र जाति का सय्यद। शुक्ल वर्ण गोत्र भार्गव भोजकट देश स्थापना थापलो। पूजो हरजत पीर मुहमद।। सत फूरे सत वाचा फूरे।। श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे -भण्डार भरे ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि। सोम रवि मंगल शनि बुध गुरु राहु केतु सुख करे दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ शुक्र मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। भों शुक्राय - नमो नमः।

शनिदेव - ॐ गुरुजी शनिदेव पांच तत देह का आसन स्थिर। साढ़े सात बारा सोलह गिन गिन धरे धीर।। शशि हर के घर आवे भाग। तौ दिन-दिन शनिदेवः गंगा स्नान।। शनिदेव जाति का तेली। कृष्ण कालीक कश्यप गोत्री।। सौराष्ट्र क्षेत्र स्थापना स्थापलो। लो पूजा हनुमन्त वीरं की करो। सत फूरे सत वाचा फूरे।। श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे -भण्डार भरे ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि। सोम मंगल शुक्र रवि बुध गुरु राहु केतु सुख करे दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ शुक्र मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। भों शनिश्चरायः नमो नमः।

राहुग्रहाय - ॐ गुरुजी राह साध अरध शरीर। वीर्य का बल बनाये वीर। धुये की काया निर्मल नीर। येता गुण का राहु वीर।। राहु जाति का शुद्र। कृष्ण काला पैठीनस गोत्र।। राठीनापुर क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा करो काल भैरो।। सत फूरे सत वाचा फूरे।। श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै।।

हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे -भण्डार भरे ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि मंगल केतु बुध गुरु सुख करे दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ राहु मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। भों राहुवेः नमो नमः।

केतुग्रहाय - ॐ गुरुजी केतु ग्रह कृष्ण काया। खोजो मन विषय माया।रविचन्दा संग साधे। काल केतु याते पावे।। केतू जाति का असुर जेमिनी गोत्र काला नूर। अन्तरवद क्षेत्र स्थापना थापलो। लो पूजा करो रौद्र घोर।। सत फूरे सत वाचा फूरे।। श्री नाथजी के सिंहासन के ऊपर पान-फूल की पूजा चढ़ै।। हमारे आसन पर ऋद्धि सिद्धि धरे -भण्डार भरे ७ वार २७ नक्षत्र ९ ग्रह १२ राशि १५ तिथि। सोम रवि शुक्र शनि मंगल राहु बुध गुरु सुख करे दुःख हरै। खाली वाचा कभी ना पड़े। ॐ केतु मन्त्र गायत्री जाप। रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। भों केतवेः नमो नमः।

ॐ गुरुजी निरन्जन निराकार चक्र गायत्री ततसार पिण्ड प्राण चराचर सो पिण्ड प्राण वैकुण्ठ तरे; नौ करोड़ नक्षत्र तारे-नौ करोड़ देवता अपने ग्रह में तपे; धर अधर चक्र चले पिण्ड प्राण अमरापूर जाये इतना चक्र गायत्री मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। दादा मत्स्येन्द्रनाथ कहे कहावे गोरक्ष सुनाये। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[विशेषः- यह चक्र गायत्री ग्रह दोष निवारण करती है। नित्य ग्रह यन्त्र का पूजन करके भोग लगाकर नित्य पाठ करें। सवा वर्ष के पश्चात् नव ग्रह हवन ग्रहानुसार दान करें। ग्रह शान्ति होगी।]

यह पाठ नवग्रह भोग विधि के लिये ज्यादातर गृहस्थ जोगी करते हैं।

ग्रह शान्ति, ग्रह दोष निवारण के लिये इस चक्र गायत्री का पाठ करना

पश्चिम

श्रेयस्कर होता है। उपरोक्त मन्त्र से पूजन-दानादि कर्म करने से नवग्रह शान्ति होती है। नाथ सिद्ध योगेश्वर भी (मृतात्मा) पुतले के ग्रह शान्ति हेतु यह पाठ जोगणी करती हैं तथा समय उपलब्धि अनुसार तथा आवश्यकता अनुसार चक्र गायत्री पाठ कर सकते हैं। इस प्रकार चक्र गायत्री के पश्चात् वह बालासुन्दरी के भोग का प्रसाद अलग जगह रख देते हैं।

(घ) कुछ नियम

(१) यह उत्तरार्ध आरती तथा भोग विधि होना आवश्यक है।

(२) यह उत्तरार्ध आरती, भोग विधि पुतला कैलाश जाने के पूर्व होना आवश्यक है।

(३) आरती में सभी योगेश्वरों का खड़ा होना अनिवार्य है।

(४) शक्यतो सभी को मिलकर माई की आरती बोलनी चाहिए।

(५) यह आरती केवल कर्पूर जलाकर किया तो भी चलेगा।

(६) भोग विधि मन्त्रोच्चार से करना उचित होगा।

(७) भोग विधि के सभी मन्त्रों की विधि करें।

(८) भोग प्रसाद अन्त विधि के बाद खाना चाहिये।

(९) चक्र गायत्री समय अनुरुप पाठ कर सकते हो।



चक्र (नवग्रह) पूजा

(२०) पुतले की कैलाश जाने की विधि

तद्पश्चात पीरजी हुक्म करते हैं - **"पुतले को हाथ में उठावो"**

टैलुवा पुतले को हाथ में उठाते हैं।

[**सूचना**- यहां केवल एक (मृतात्मा) पुतला की शंखढाल हो तो वह पुतला और एक बना हुआ भूला भटका पुतला दोनों लेकर सब विधि विधान किया जाता है। यहां और भी २, ४, ६, ८ ऐसे सम संख्या वाचक पुतले के संस्कार एक साथ किये जाते हैं। जिसमें और योगेश्वर भी योगदान करते हैं।]

अत: टैलुवा पुतलों को बायें हाथ में लेता है, और दाहिने हाथ में आखा लेते हैं। पीरजी निम्न सरजित बाला, हंस बाला तथा मृतक बाला मन्त्रोच्चार करके मन्त्रसंस्कार करते हैं।

(क) मन्त्र संस्कार

सरजित बाला मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पूरो आसन पवन की माला हृदय जाप जपो तपो श्री सुन्दरी सजीत बाला बाला कहां से आया आद अनाहद अहं शिवपुरी से आया, ॐ सोहं हृदय बसाया, अनहद की बीन शब्द का तार सुरत निरत दो तार सहजे हंस का खेल रचाया परम हंसका वास, आवो रे योगी दृढ़ कर रहना अगम निगम सुरताल ऐ का ऐ की रुप निराला, तत् निर्वाण परम पद बाला सजीत बाला सजीत होकर पढो, जन्म मरण से कभी न डरो, ॐ सजीत बाला विद्महे महा सजीव बाला धीमही, तन्नो सजीत बाला प्रचोदयात्, पढ सजीत बाला पुतला पाव ली, पर चढ़ावे, सो प्राणी अमरापुरी पावे, बिना सजीत बाला

पुतला चढ़ावे, अन्ध घोर अविगत जावे। श्रीनाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- साधना काल में इनका जप करने पर साधक मुक्ति पद को प्राप्त होता है।]

यह मन्त्र पूर्ण होते ही टैलुवा आखा (चावल) पुतलों के शीश पर डालते हैं। पुनः दाहिने हाथ में आखा लेते हैं। पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

हंस बाला मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ हंसा आप-हंसा जाप निर्मल देही हृदय रहे न पाप हंस रुपी भवर रुपी ऽऽ जूनी से न्यारा रहे, एक अलष निरन्जन आपो आप। ॐहंसाय विद्महे महाहंसाय धीमही तन्नो हंसाय प्रचोदयात। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

[**विशेषः**- हंस बाला मन्त्र का साधना में अखण्ड जप करने पर साधक परमहंस पद पर जाता है। अलख निरन्जन साक्षात्कार सवा वर्ष तक हो जाता है।]

मन्त्र पूर्ण होते ही टैलुवा आखा (चावल) पुतलों के हृदय अर्थात् वक्षस्थल पर छोड़ते हैं। पुनः दाहिने हाथ में अक्षत लेते हैं पीरजी पुनः निम्न मन्त्र बोलते हैं।

मृतक बाला मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ डरे डूँगरे रचे धर्मशाला जहां बैठकर धूप ध्यान श्री मृतक बाला, पूछू लेव व्कारी कन्या, जहां सोय पांच महेश्वर, ॐ मृतक बाला देव विद्महे, महामृतक बाला देव धीमही, तन्नो मृतक बाला देव प्रचोदयात।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह अघोरी मन्त्र सिद्धि श्मशानी क्रिया है, इसे गुरु मार्ग दर्शन में करना चाहिये।]

उपरोक्त मन्त्र पूर्ण होते ही टैलुवा आखा (चावल) पुतले के चरणों में रख देता है।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं-**"पुतला कैलास जाने को राजी हो।"** (अर्थात् तैयार करो)।

टैलुवा पुतलों के मुख सप्तसीढ़ी के तरफ करके सीढ़ी के पास पुतलों को खड़ा करते हैं। अत: पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

कैलाश जाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ जोत जोत महाजोत सर्वजोत सुन्दरी से अलील जोत का दर्शन पाया, साध सन्त ने मिल मेला किया अरुण वरुण तत सार, भाव प्राणी उतारो पार माई चले कैलाश को मन्दिर जै जै कार धरती कुलफ, आकाश कुलफ, चन्द सूर्य नव लाख तारा कुलफ कुलफ जग संसार माई का कुलफ हुक्म धनिका ..... श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धि** :- पहाड़, गुफा, कन्दरा में साधना करते समय इस मन्त्र का जप करें। इससे कैवल्यानन्द की प्राप्ति होगी। शून्य समाधि शीघ्र लग जायेगी।]

(ख) अथ पौड़ी विधि

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"पुतलों को पौड़ी चढ़ावो"**

टैलुवा पुतलों को पौड़ी चढ़ाना शुरु करता है और पीरजी या स्वयं टैलुवा मन्त्र बोलना शुरु करते हैं। टैलुवा पुतले को पहली पौड़ी पर रखते हैं।

अथ पौडी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं पहली पौड़ी दीजे पांव गणपत जी पूछे सहज स्वभाव कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना कैसे करी कमाई कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसाई बोलिये कौन दान देह स्थान, कौन शब्द ले उतरवा पार। प्राणी उवाच-स्वामी जी सत से आया संतोष से जाना सुफल करी कमाई शील हमारी माता बोलिये धर्म हमारा पिता छटवा दर्शन गुरु गोरक्षनाथजी बोलिये जल खीर दान दे स्थान पापना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास।।

(अत: पुतलों को टैलुवा दूसरी पौड़ी चढ़ाते हैं।)

ॐ दूजी पौड़ी दीजे पांव ब्रह्मा जी पूछे सहज स्वभाव कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गोसाई बोलिये कौन दान दे स्थान कौन शब्द ले उतरवा पार। प्राणी उवाच-हो स्वामी सत से आया, सन्तोष से जाना, सुफली करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता छटवा दर्शन गुरु गोरक्षनाथजी बोलिये, अन्नदानं देह स्थानं पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिव पुरी में बास।।

(अत: टैलुवा पुतलों को तीसरी पौड़ी चढ़ाता है।)

ॐ तीसरी पौड़ी दीजे पांव विष्णु जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसाई बोलिये कौन दान दे स्थानं कौन शब्द ले उतरवा पार। प्राणी उवाच-स्वामीजी सत आया सन्तोष से जाना सुफली करी कमाई शील हमारी माता बोलिये धर्म हमारा पिता छटवा दर्शन गुरु गोरक्षनाथजी

बोलिये स्वर्ण दानं देह स्थानं पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास।।

(अत: टैलुवा पुतलों को चौथी पौड़ी चढ़ाते हैं पीर जी मन्त्र बोलते हैं।)

ॐ चौथी पौड़ी दीजे पांव शिव जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया कैसे जाना कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसाई बोलिये कौन दान देह स्थानं कौन शब्द ले उतरवा पार। प्राणी उवाच- स्वामीजी सत् से आया सन्तोष से जाना सुफली करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता, छटवा दर्शन गुरु गोरक्षनाथजी बोलिये रजत दानं देह स्थानं पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास।।

(अत: टैलुवा पुतलों को पांचवी पौड़ी चढ़ाते हैं और पीरजी आगे मन्त्र बोलते हैं।)

ॐ पांचवी पौड़ी दीजे पांव श्री देवी आद भवानी जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया, कैसे जाना, कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसाई बोलिये कौन दान दे स्थानं कौन शब्द ले उतरवा पार। प्राणी उवाच-स्वामीजी सत आया सन्तोष से जाना, सुफली करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता छटवा, दर्शन गुरु गोरक्षनाथजी बोलिये स्वर्ण दानं देह स्थानं पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास।।

(अत: टैलुवा पुतलों को छटवी पौड़ी चढ़ाते हैं और पीरजी आगे मन्त्र बोलते हैं।)

ॐ छटवी पौड़ी दीजे पांव धर्म राजा जी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया, कैसे जाना, कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी

माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसाई बोलिये कौन दान दे स्थानं कौन शब्द ले उतरवा पार। प्राणी उवाच-स्वामीजी सत आया सन्तोष से जाना, सुफली करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता छटवा, दर्शन गुरु गोरक्षनाथजी बोलिये अश्व दानं देह स्थानं पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास।।

(अत: टैलुवा पुतलों को सातवीं पौड़ी चढ़ाते हैं और पीरजी आगे मन्त्र बोलते हैं।)

ॐ सातवीं पौड़ी दीजे पांव श्री बाला गोरक्षनाथजी पूछे सहज स्वभाव, कहो प्राणी कैसे आया, कैसे जाना, कैसे करी कमाई, कौन तुम्हारी माता बोलिये, कौन तुम्हारा पिता, कौन तुम्हारा गुरु गुसाई बोलिये कौन दान दे स्थानं कौन शब्द ले उतरवा पार। प्राणी उवाच-स्वामीजी सत आया सन्तोष से जाना, सुफली करी कमाई, शील हमारी माता बोलिये, धर्म हमारा पिता, छटवा दर्शन गुरु गोरक्षनाथजी बोलिये गऊ दानं देह स्थानं पाप ना छुहन्ते जा जा प्राणी तेरा शिवपुरी में बास।।

इस प्रकार निम्न मन्त्र द्वारा भी पुतलों को ७ पौड़ी चढ़ा सकते हैं।

अथ सात सीढ़ी मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पहली पौडी दीजे पांव श्री गणेश जी पूछे सहज स्वभाव कहो रे जीवन कहा से आया कहा जावोगे, कौन तुम्हारी माता, कौन तुम्हारे पिता, कौन तुम्हारे गुरु निरन्जन गुसाई जी बोलिये कैसे करी कमाई किस धर्म से आये।

प्राणि उवाच - सुनो सुनो गणपत देवजी सत्य कर आये, धर्म कर जायेंगे, दया हमारी माता, सन्तोष हमारे पिता, ज्ञान निरन्जन

हमारे गुरु गुसाई बोलिये, क्षमा हमारी कमाई, गुरु शब्द से आये यहां ताम्बा दान दीजिये, ये थां तां ये गुरु अगम जीवड़ा सहत शिवपुरी में समाय, सहज शिवपुरी भण्डारी लोई, मोक्ष परमार्थ होई, पढ़ो गुनो सिद्ध सा मता सत, बाले लोक, सत ओढंता पाप झरन्ता, तुम भी कहो श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथजी चरण कमल पादुका नमो नमः।

दूसरी पौड़ी ..... ब्रह्माजी पूछे ..... सोना दान दीजिये ..... पूर्ववत।

तीसरी पौड़ी ..... विष्णुजी पूछे ..... वस्त्रदान दीजिये ..... पूर्ववत।

चौथी पौड़ी ..... शम्भु जी पूछे ..... अन्नजल दान दीजिये ..... पूर्ववत।

पांचवी पौड़ी ..... शक्ति जी पूछे ..... गऊ दान दीजिये ..... पूर्ववत।

छठी पौड़ी ..... हनुमन्त जी पूछे ..... चान्दी दान दीजिये ..... पूर्ववत।

सातवी पौड़ी ..... आदिनाथ साहिब गुरु गोरक्षनाथ जी पूछे ..... धर्ती दान दीजिये ..... पूर्ववत।

पुतला एवं मन्त्र संजीवन परम्परा

भावार्थ - यह मन्त्र संजीवनी तथा मृत्युंजय योग हमारे नाथ सम्प्रदाय की अतिषय पुरातन परम्परा है। पूर्व काल में आदिनाथ जी के गले में मुण्ड माला देखते हुए पार्वतीजी ने उत्सुकतावश नारद जी से प्रश्न किया था कि यह मुण्ड माला कैसी ? अतः आदिनाथ जी अजर अमर एवं मृत्युंजय निरंतर है यह रहस्य नारद जी ने पार्वतीजी का

समझाया अत: पार्वतीजी ने आदिनाथ जी से यह अजर अमर का रहस्य पूछा तब आदिनाथ जी ने क्षीर सागर किनारे एकान्त में यह अमर ज्ञान पार्वतीजी को सुनाया। वहां पार्वतीजी को ज्ञान प्राप्त होकर वैराग्य हुआ। और वह उदयनाथ पार्वती बन गईं। उसी समय यह संजीवन ज्ञान मत्स्येन्द्रनाथ जी ने मत्स्यगर्भ में उसी क्षीर सागर किनारे सुना था। और शिव शक्ति के वह मानस पुत्र माया रूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ नाम से विख्यात हुए।

आगे यह मृत्युंजय मन्त्र संजीवन के द्वारा उदयनाथ पार्वती ने एक पुतला बनाकर मन्त्र संजीवन करके श्री गणेश जी का (जो नाथ सिद्धों में गजबेली गजकन्थड़नाथ नाम से विख्यात हैं) प्रादुर्भाव किया था। आगे यही मन्त्र संजीवन विद्या जो मत्स्येन्द्रनाथ जी को प्राप्त थी। वह उन्होने गुरू गोरक्षनाथ जी को प्रदान की। जो गुरू गोरक्षनाथ जी ने अपने योग मन्त्र चमत्कारों से प्रमाणित की।

एक बार गोरक्षनाथ जी इस मन्त्र संजीवन का मन्त्र जाप अर्थात मनन कर रहे थे। इतने में वहां कुछ बच्चे खेलते-खेलते पहुँचे। बच्चों ने अपनी गाड़ी (खिलौना) चलाने के लिये गोरक्षनाथ जी को एक मिट्टी का पुतला (गाड़ीवान) बनाने को कहा। अत: मन्त्र संजीवन मनन करते-करते उन्होंने एक पुतला बनाया और अचानक उस मन्त्र प्रभाव से पुतला जीवित होकर चलने फिरने लगा। आगे वह सिद्ध योगी गहीणीनाथ नाम से प्रसिद्ध हुए। इसी प्रकार से चतुर्थ शताब्दि में गुरू गोरक्षनाथ जी नेपाल देश में अधर्मी राजा महिन्द्रदेव को राज्य से पदच्युत अर्थात युद्ध करके पराभूत करने हेतु वहां एक नदी के किनारे कीचड़ द्वारा अनेकों पुतलों की सेना का निर्माण किया और मन्त्र संजीवन सिंचन कर सेना में प्राण का संचार किया। अत: अपने प्रिय भक्त वसंतदेव को इस सेना की सहायता से राजा महिन्द्रदेव से युद्ध कर

पराभूत करके वसंतदेव को राजा बनाया।

यह विद्या राजवैद्य धनवंतरी भी वनस्पति ज्ञान-तंत्र द्वारा करते हैं। नाथ सिद्धों में गुरू मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, अट्ठारह भार वनस्पति स्वरूप चौरंगीनाथ जी, चर्पटीनाथ जी, नागार्जुननाथ जी, उदयनाथ जी, आदिनाथ जी, कानिपानाथ जी, मल्लिकानाथ जी आदि नाथ सिद्धों ने मन्त्र संजीवन वनस्पति ज्ञान द्वारा प्रमाणित किया है।

मन्त्र संजीवन विद्या के कारण दैत्य गुरू शुक्राचार्य जी विख्यात थे। अत: इसका विनियोग तामसी होने के कारण वह फलीभूत नहीं रही।

कहने का तात्पर्य है कि यह पुतला संस्कार मृत संजीवन, मृत्युंजय आदि मन्त्र विद्याऐं एवं तन्त्र-मन्त्र नाथ सिद्धों की अत्यंत पुरातन-सनातन सिद्धि रूप में विद्यमान है। अत: यह योगमाया पूजन पद्धति भी इसी का स्वरूप माना जाता है। मोक्ष मुक्ति के लिये नाथ सिद्ध इस विद्या, तन्त्र-मन्त्र का विनियोग करते हैं।

[**विशेष:**- यह सप्त पौड़ी मन्त्र मृत्यु के समय उक्त व्यक्ति को पाठ करके सुनाने पर शीघ्र मुक्ति पद को जाता है। सप्त पौड़ी मन्त्र मृत्यु शय्या पर पड़े हुए व्यक्ति को सुनाना चाहिये।

(ग) परिक्रमा विधि

इस प्रकार पुतले को सप्त पौड़ी (सीढ़ी) चढ़ने के पश्चात् पीरजी हुक्म करते हैं कि **"कैलाश की परिक्रमा करने के लिये पुतलों को तैयार करो।"**

टैलुवा पुतलों को सावधान अवस्था में कैलाश के दाहिने दिशा को खड़ा करते हैं।

भावार्थ :- अपने हिन्दू धर्म एवं नाथ सिद्ध सम्प्रदाय में परिक्रमा को बड़ा महत्व है। माता पिता की परिक्रमा करके गणेश नाथ जी ने

प्रथम स्थान प्राप्त कर ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त किया, जिसका फल सम्पूर्ण सृष्टि परिक्रमा का प्राप्त हुआ। इसी प्रकार मन्दिर परिक्रमा एवं नाथ साधू सन्तों की तथा नर्मदा, गंगा नदी की परिक्रमा आदि विख्यात है। पर्वत परिक्रमायें जैसे त्र्यम्बकेश्वर ब्रह्मगिरी पर्वत, तथा कैलाश पर्वत, गोवर्धन पर्वत परिक्रमा आदि प्रसिद्ध है। ग्राम-देश परिक्रमा आदि परिक्रमायें बड़ी भक्ति से करते हैं। परिक्रमा भक्ति से करोगे तो मुक्ति मोक्ष प्राप्त होता है। परिक्रमा तन्त्र मन्त्र से करोगे तो वह चीज वश में हो जाती है। शक्यतो बन्धन में आ जाती है। परिक्रमा कर्मयोग से करोगे तो अपेक्षित कार्य सफल होगा। कोई कोई बोली लगाके या मन्नत मांगते हैं, व्रत स्वभाव से, या मांग पूरी होने के लिये करते हैं।

कुछ भी नहीं हुआ तो कम से कम अपने आप दाहिने दिशा से खुद को परिक्रमा करने से मन संकल्प एवं आत्म विश्वास दृढ़ होता है एवं मन की एकाग्रता बढ़ती है। अपने सतगुरु को परिक्रमा करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार हम देवी देवता तथा सतगुरु, सत्पुरुष, नदी, पर्वत आदि को परिक्रमा करते हैं और वो भी दक्षिण दिशा से करते हैं क्योंकि इन सत्पुरुष देवी-देवता सतगुरु आदि के सभोवार सभी दिशा में एक सत्व गुण शक्तिओं का तेजो वलय होता है। जिसको हम आभामण्डल का तेजो वलय कहते हैं यह तेजोवलय दक्षिण दिशा से घूमते हुये हैं गति शील रहते हैं। जब हम दक्षिण दिशा से उन्हें परिक्रमा करते हैं तो इस गतिशील आभामण्डल तेजो वलय का हमारे ऊपर सूक्ष्म रुप से प्रभाव (परिणाम) होकर उनके सात्विक गुण हमारे अन्दर सन्क्रमित होते हैं क्योंकि हमारे सभोवार भी हमारे गुण अनुसार कुछ शक्ति वलय होते है जो दक्षिणवर्ती दिशासे गतिशील होते हैं। अत: उनके ज्योतिर्मण्डल की दिव्य प्रभा सदैव ही दक्षिणवर्ती गतिमान होती है जो दिव्यत्व देवत्व एव

श्रेष्ठत्व दक्षिणवर्ती लहरियों का स्पंदनात्मक हमारे ऊपर टकराव होकर हमें उनसे ओज शक्ति सात्विकता दिव्य ज्ञान आदि जो गुण प्रभाव उस देवता या सत्पुरुष में होगा उसका संक्रमण होकर लाभ होता है। जितनी हम परिक्रमायें करेंगे उतना ही अधिक लाभ हमें होता है। उनके पुण्य कर्म, पवित्र गुण, सिद्धियाँ आदि का हमारे व्यक्तित्व का वलय उनसे पुनित होकर उनके दिव्य परमाणुओं से हम भर जायेंगे। अगर यही परिक्रमा उल्टी की तो विपरीत परिणाम होकर हमारा व्यक्तित्व पर हमारे परमाणु वलय को उनके दिव्य तेज परमाणु विरुद्ध दिशा के कारण टकराकर नष्ट कर देंगे और उसे महापाप कहा गया है। अत: यह दक्षिणवर्ती परिक्रमा शिव आदिनाथ शिवलिंग की नहीं मानी जाती (यहां शिव मन्दिर को परिक्रमा कर सकते हैं।) वह निर्गुण, निराकार, निर्विकार आदि गुणों के कारण उनकी परिक्रमा विचारहीन नहीं है किन्तु कैलाश परिक्रमा प्रसिद्ध है जो कि कैलाश परिक्रमा करने से व्यक्ति यहां पुतला (मृतात्मा) निर्गुण, निराकार, निर्विकार, अलख निरन्जन में विलय होकर मुक्ति को पाता है।

विज्ञान दृष्टिकोण से परिक्रमा जितनी ज्यादा होती है उतनी मैग्नेटिक (आकर्षण) शक्ति उत्पन्न होती है। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी तथा ग्रह, तारे, नक्षत्र यह भी एक दूसरे की परिक्रमा करने से सम्पूर्ण सृष्टि का यथायोग्य संचालन होता है। अत: सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र इन्हें सिद्ध एवं देवता माना जाता है यह परिक्रमा का ही फल है। अर्थात् परिक्रमा यह आध्यात्मिक, प्राकृतिक, नैसर्गिक संस्कार है।

पीरजी पुतलों की कैलाश परिक्रमा के लिये निम्न मन्त्र जम (यम) फारखती देते हुये मृतात्मा को मुक्ति की कामना से ऊर्ध्वगति देते हैं।

जम (यम) फारखती

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ओं खण्ड

खण्ड ब्रह्माण्ड बासा चलो हंस जहां निरन्जन का वासा जहां धारा सूक्ष्म धारा प्रेम पलीता जीत जो न भर जून जूनी छोड़ अजूनी में आया। अबजा, रबजा, जबारिया, जथरिया, हैदरीया, नादरिया, कौलिया, कसाइया, मैणीया, ततबीरीया, अबदुलु, गुलजाला, एते द्वादश नाम फरेस्त्यों के बोलिये। हिन्दु को राम राम मुसलमान को अललादस्तार तो नबी की कलमा तो महोमद का लेखा तो धर्मराज का आया हंस होया रुजू साहिब के दरबार जमे डन्डे राड़ीये जमे मुख से करी पुकार हंस चले घर आपणे जम के सिर दिया भार जहां अंचनापुर नगरी अमरापुर ग्राम शिवजी बसे समर्थ सूरत का सूरा अकल का पूरा ज्ञान का मूला, गुरु गोरक्षनाथ अवनाशी घट घट ज्योत प्रकाशी जम जंजीर जड़ गय गड़कोट जीत्या ईलचील नागणी सों फट् स्वाहा। इति यम फारखती सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- यह यम फारखती, मुक्ति मन्त्र है। साधक प्रातः ध्यान करते समय प्रथम श्री गणेश वन्दना करें तत्पश्चात् गुरु वन्दना करके गुरु गोरक्षनाथजी का बीज मन्त्र या गायत्री मन्त्र का १०८ बार जप करें। जप जल में बैठकर, नदी के किनारे, पीपल वृक्ष की छाया में, एकान्त पहाड़ी गुफा में करें। गुरु गोरक्षनाथ उद गुग्गल धूप, घृत ज्योत, पुष्प माला, रोट भोग, पान सुपारी, लौंग, इलायची व ताम्बूल इत्यादि से पूजन करना चाहिये। रोट सवा किलो का बनायें। दूध, रोट का भोग लगाकर स्वयं खा लें। मन्त्र सिद्धि के बाद हर प्रकार के संकट से छुटकारा हो जाता है तथा साधक मृत्यु के समय मुक्त हो जाता है।]

इस प्रकार यम फारखती होने के पश्चात् मृतात्मा अघोर में अर्थात् सूक्ष्म जगत में प्रवेश करते हैं। तब पीरजी अघोर चेतना का मन्त्र बोलते हैं। [घोर अघोर का विश्लेषण पृष्ठ संख्या - ४६, ४७ पर दिया है।]

अघोर चेतने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ शिव पूजू शक्ति पूजू, पूजू देव महेश्वरा, पांच महेश्वर आज्ञा करे तो अघोर चेतो मेहश्वरा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह मन्त्र एक ही दिन में १००८ बार जपें। जप रुद्राक्ष माला से या १००८ चावलों से, शिवरात्री, काली चौदस, प्रदोष रात्री, सोमवती अमावस्या रात्री अर्थात् सूर्यास्त से सूर्योदय तक करें। दूसरे दिन शिव मन्दिर में पूजन करके मिष्ठान का भोग लगायें, मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। इससे स्वयं की, घर, मकान तथा स्थान की सभी प्रकार से रक्षा होती है। दूसरे को मन्त्र पढ़ते हुये जल-दूध-दही-पंचामृत देने पर उसकी भी भूत प्रेतादि से रक्षा होती है।]

भावार्थ :- अघोर का अर्थ प्राकृतिक से अप्राकृतिक में प्रवेश अर्थात् नैसर्गिक से अनैसर्गिक में प्रवेश अर्थात जीव जो जड़त्व जो स्थूल अर्थात् प्राकृतिक है उसका शिव में जो सूक्ष्म में अप्राकृतिक में प्रवेश करता है। अर्थात् जीव दशा जो जन्म से लेकर मृत्यु तक क्रियायें हैं वह सब प्राकृतिक हैं। इन सबका त्याग करके सूक्ष्म में मुक्त हो जाना ही अघोर है। जो घोर से अघोर में प्रवेश करना कहा जाता है। [अर्थात् - घोर = स्थूल जीवन और अघोर = सूक्ष्म या मुक्ति]

नाथ सिद्ध की योग साधनायें अघोर कही जाती हैं। अर्थात् घोर को माया कहा जाता है जो माया (घोर) विरहित साधना हो वह अघोर साधना कही जाती है।

अतः पीरजी हुक्म करते हैं - **"पुतले को कैलाश की परिक्रमा करवावो।"**

अतः टैलुवा पुतले की कैलाश के दाहिने (अर्थात् दक्षिणवर्ती दिशा से) ओर से पांच परिक्रमा करवाता है।

परिक्रमा विशेष :- पुतले के कैलाश परिक्रमा करते समय जब पीरजी यम फारखती मन्त्रोच्चार करते हैं। तब पुतले को कैलाश परिक्रमा कैलाश की रचना की हुये नीचे चौकी पर से अर्थात् गत गंगा ज्योत से शुरुआत करें अर्थात् उस कैलाश को नीचे से परिक्रमा करते हुये ऊपर चार जुग की ज्योत तक पुतला ऐसा घुमाना चाहिये जैसे पर्वत को या पहाड़ को परिक्रमा (चक्कर) काटते हुये ऊपर पर्वत चोटी तक पहुँचते हैं। अर्थात् कम से कम पांच परिक्रमा करते हुये पुतला नीचे से लेकर ऊपर चार जुग जोत तक पहुँचना चाहिये।

(घ) समाधि विधि को ले जाना

परिक्रमा होने के पश्चात् पीरजी हुक्म करते हैं - **"पुतले को समाधि दे कर आवो।"**

[सूचना :- यह पुतला समाधि देने की विधि योगमाया पूजन कक्ष के बाहर पीपल, वटवृक्ष के नीचे या किसी नजदीक एकान्त जगह भूमि खोदकर उसमें पुतले को (दफना) समाधि देते हैं। जल उपलब्धि अनुसार जैसे गंगा, जमना, गोदावरी ..... आदि नदी हो तो जल में प्रवाहित कर जल समाधि भी दे सकते हैं।]

अत: पीरजी टैलुवा और साथ में दो उपदेशी योगेश्वर ऐसे तीनों को पुतला समाधि देने के लिये नियुक्त करते हैं इस प्रकार यह तीन योगेश्वर और दो पुतले (मृतात्मा + भूला भटका) ऐसे कुल पांच (पुतले समवेत) योगेश्वरों को समाधि क्रिया के लिये पूजन कक्ष से बाहर भेजते है।

(ङ) कुछ नियम

(१) मृतात्मा पुतले के साथ भूला भटका पुतले की भी क्रिया विधि करनी चाहिये।

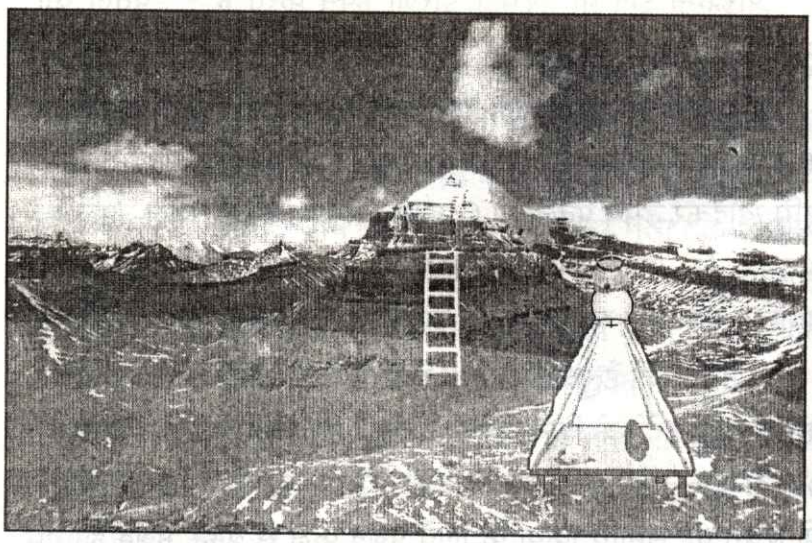
(२) सम संख्या अनुरुप २, ४, ६, ८, १० ..... इत्यादि

ज्यादा पुतलो का भी संस्कार होता है।

(३) पुतलों के ऊपर मन्त्र-संस्कार आवश्यक है।

(४) पुतले को सप्त सीढ़ी चढ़ाना तथा परिक्रमा करवाना अत्यन्त आवश्यक है यह शंख ढाल का मुख्य कर्म है। अत: यह क्रिया मन्त्रोच्चार सहित अत्यंत सावधानी से करना आवश्यक है।

(५) परिक्रमायें कम से कम पांच करना आवश्यक है।



पुतले का कैलाश-गमन

(२१) पल्लु विधान

यह पल्लु विधान मृतात्मा के नाम दान धर्म को बाँटना इस उद्देश्य से किया जाता है।

जब योगेश्वर पुतले को लेकर समाधि देने के लिये कक्ष के बाहर जाते हैं उसी वक्त यह पल्लु विधान अन्दर कक्ष में किया जाता है।

(क) पल्लु की झोली-विधि

अत: पीरजी हुक्म् करते हैं - **"सन्तों पल्लु पकड़ो।"**

अत: एक लाल लम्बा चौड़ा वस्त्र अथवा चद्दर का पल्लु स्वरुप में चार कोनों (खूंट) को चार योगेश्वर झोली बनाकर पकड़ते हैं इसमें एक कोना (खूंट) को पीरजी पकड़ते हैं। एक कोना (खूंट) को जोगणी पकड़ती है तो एक कोना (खूंट) को साखियाँ तथा एक कोना (खूंट) को वीर पकड़ता है। जिसको सभी पल्लु को झोली समान पकड़ते हैं अत: पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

पल्लु की पवित्री मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। यह पवित्री पल्लुव प्रमाण चुके, अक्षद बरसे गुरु मेहरबान, अलष पुरुष का दिवान। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं -**"हीरे जवाहरात बीजो।"**

भण्डारी निम्न मन्त्र से हीरे जवाहरात बीजाने के लिये अक्षता (आखा) अर्थात् चावल तथा सुपारियाँ डालते हैं साथ में कमल कट्टा, गांठ वाली हल्दी, जायफल, खिचड़ी (चावल + दाल), ताम्बे के पैसे, नारियल आदि पूजन सामग्री झोली में डालते हुये पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अथ जवाहरा (ज्वाहरा) बीजाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कौन नगरी कौन प्रधान कौन पुरुष न थापे थान बोओ ज्वाहरा करो जाप रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। श्री नाथ जी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- ग्रहण काल, होली, दशहरा, दीपावली, अमावस्या के किसी भी दिन यह मन्त्र १००८ बार जपकर सिद्ध करें। यह मन्त्र जल में खड़े होकर करने पर शीघ्र फलदायी होता है।

जब भी खेत में फसल के लिये बीज बोने जायें तब यह मन्त्र ११ या २१ बार पढ़कर बोने पर फसल अच्छी होती है।

मौसम बदलने पर पुनः सिद्ध करें।]

अतः पीरजी हुक्म करते हैं- **"सन्तों पल्लु झुलाओ।"**

अतः सभी मानधारी पल्लु को (झोली को) झूला समान झुलाते हैं और पीरजी निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

पल्लु झूलन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐकार निरन्जन शंकर देव, जाकि सेवते शंकरा उपजे गोरक्ष लिया अवतार, गुरु शबद से मेरा तन तरे, चन्द्र सुर्य दो साख भरे। आओ कन्टक होवो महेश, सत्गुरु शबद से लियेव उपदेश, भृगु तारा उगिया हनुमन्त मारी हांक, सत्गुरु फूका मारीया गत गंगा की साख, ॐ बाला देव विद्महे, महाबाला देव धीमही तन्नो बाला देव प्रचोदयात, बाला उत्पन्न आपो आप, बाला जाने ना माई न बाप, बाला जाने ना पुण्य न पाप, बाला जाने ना जात न पात, बाला जाने ना भाई ना बहिन, बाला तो जाने एक ओंकार, जो जाने बाला का भेव, आपे कर्ता आपे देव, वा को मिले निरन्जन देव, पहिले ओंकार मोक्ष मुक्ति,

दूसरे ओंकार, योग युक्ति, तीसरे ओंकार रचे धर्मशाला, जहां बैठकर धूप ध्यान, श्री पल्लव माहेश्वरी बाला, अमर हो योगी अमर हो काया, निरख ले जाय, परमोधे काया सवा हाथ का पुतला, गुरु साहिब ने साक्षात नजरों से दिखलाया, ततनाम, तारक नाम, निरे नाम न झारे नाम, गुरु सेवा, हरसेवा गुरु मन्त्र जपन्ते, कोटान कोट पाप काया के कटन्ते, गुरु मन्त्र जपन्ते चौरासी लाख जीया जून से टरन्ते, गुरु मन्त्र जपन्ते सो साध अमरापुरी वास करन्ते, गुरु गोविन्द दोनो खड़े किसके लागू पाव गोविन्द से गुरु बड़े जिन्होने श्याम दिया बताय, गुरु सुमरत्या गुरु शंकर, गुरु सहाई, गुरु बिन होम काज नहीं कीजै गुरु बिन संयम दया न दिज्जै मैं बलिहारी गुरु आपने मार्ग दिया बताय, नर से देवता किया, करत न लावे बार राजा है सो इन्द्र, धर्ती है सो माई, जती है सो गोरक्ष, सती है तो सीता, एता तत बीज मन्त्र सहित श्री ईश्वर ने देवी पार्वती जी के कानों में सुनाया।

ॐ सोहं होत है, अजपा के कर जाप, ॐ जाप धर्ती आप सत्गुरु शबद काया प्रकाश, पूरो आसन पवन की माला हृदय जाप जपो तपो श्री सुन्दरी पल्लु बाला, थान मुकाम की चढ़ती कला, जुमले में जागते रहे, काल भागता रहे भेष की टेक, बाणे की लाज जो जीव आया आस, करके उसकी आस पूर्ण जिस जिस साध की कमाई लगी सुफल गत गंगा में हरनाम। इतना सुन्दरी पल्लु बाला मन्त्र श्री नाथजी ने अनन्त कोट सिद्ध को पठ कथकर सुनाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[मन्त्र सिद्धिः- दीवार के ऊपर दीपावली के दिन सातों देवी की सरसों के तेल की धारा लगायें, सात घृत दीपक सात धान्य के राशि पर लगायें और यथा उचित पूजन करके इस मन्त्र का ७ बार पाठ करें, सात मिश्र मिठाई का भोग लगावें। ७ चुनरी, ७ नारियल, ७ चूड़ियाँ, ७ बिन्दी, सिन्दूर आदि से गोद

भरें। मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। घर में शान्ति रहेगी, सौख्य, धन सम्पदा तथा घर के अन्दर रक्षा होगी। यह विधि उत्तम है सर्व कार्य सिद्ध है। नित्य पाठ करने से धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का लाभ होगा।]

(ख) पल्लु पखालने की-विधि

इसप्रकार मन्त्र बोलते हुये वह पल्लु को झूला सा झुलाते रहते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"पल्लु को पखालो।"**

भण्डारी पल्लु (झोली) में दाहिना हाथ डाल कर पल्लु के हीरे जवाहरात को पखालता है मतलब हाथ से पल्लु में ही हिलाते हैं और पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अथ् पल्लु मन्त्र-१

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ जपो जाप करो पाप अन्त वेले माई न बाप गुरु सम्भालो अपना आप कर परवाले पल्लू पकड़ो जपो तपो सिद्धों का नाम जिन सतगुरु पूरा जाणिया सो जपे वाले का नाम, जले बाला थले बाला, रुखे बाला, वृक्षे बाला, बाटे बाला, घाटे बाला सत श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ जी आय आप सोहं फट् स्वाहा - श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

[**मन्त्र सिद्धि:-** पूर्वाआषाढ़ नक्षत्र में शुक्रवार शाम को आख के पेड़ को पूजन कर आमन्त्रित करें दूसरे दिन शनिवार को सूर्योदय पूर्व आख की चार जड़ें ले आवें, लाल कपड़े के पल्लु में उसे रखें। अत: धूप-दीप-पुष्प पूजा करें, रोट का, लाल बुन्दी का या हलवा का भोग लगावें और प्रथम गणेश वन्दना, गुरु वन्दना या गुरु मन्त्र का जाप करें। तद्उपरान्त १००८ बार इस पल्लु मन्त्र का जाप करें और उसी दिन शाम को खेत के चारों कोनों में चारों आख की जड़ों को रोपित करें। जैसे जैसे वह चारों आख के पेड़ फलेंगे-फूलेंगे फसल भी उतनी ही अच्छी होगी।

यही जड़ को घर में पूजोगे तो घर धनधान्य, ऋद्धि सिद्धि से परिपूर्ण होगा।]

अत: भण्डारी पल्लु के चारों कोने (खूंट) को एक करके पल्लु की झोली (गठरी) बनाकर वीर के कंधे पर देते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं- **"पल्लू अनन्त में घुमाओ।"**

और वीरजी अर्थात् महावीरजी वह पल्लु की झोली (गठरी) अपने कन्धे पर रखते हैं। तब पीरजी झोली का मन्त्र बोलते हैं।

झोली का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ कौन दिल, कुन दुरवेश कुन पुरुष ने मुण्डा केश ॐ गुरुजी दिल दरयाव मन्त्र दुरवेश। अलष पुरुष ने मुण्डा केश। झोली हमारी कामधेनु संसार हमारी बाडी। गुरु प्रताप से भिक्षा मांगू अन्तकाल में सारी। जारोबल का नगर में खबर कर। नागा निर्वाणी अवधू आया है। जाग तो जंजीर जड़ा पग जड़ा तोड़ा गले माला पैर धागा। गुरु गोरक्षनाथजी के चरण कमल में चित्त लागा। झोली जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**सिद्धि विधि:-** इस मन्त्र सिद्धि के लिये धूना चेतन करें, अग्नि साक्षी रखकर विशेषत: होली के दिन अग्नि सन्मुख गणेश वन्दना, गुरु मन्त्र का १०८ बार जाप करें, झोली मन्त्र का ११२१ बार जप करें। रोट लंगोट भोग लगावें। गोरक्ष गायत्री का १०८ बार पाठ करें। झोली सिद्ध हो जायेगी। सभी कार्य सफल होंगे। जो भी चीज झोली में रखनी हो मन्त्र बोल कर रखें या किसी को देनी हो तो मन्त्र बोलकर वह चीज झोली में से निकाल कर देवें उसका काम हो जायेगा।]

अत: झोली (पल्लू) लेकर वीर कक्ष में या शक्यतो कक्ष के बाहर घूमता फिरता है और जोर से आवाज देकर कहता है।

"हीरे मोती वाला आया है कोई लेने वाला है? ले लो रे ले लो हीरे मोती वाला आया है?" आदि बोलता है।

अन्दर से पीरजी पूछते हैं - **"कहाँ गये थे।"** वीर बोलता है - **"शिवपुरी में।" "क्या देखा?"** वीर बोलता है **"चार जूगे की बाडी भूखा भोजन प्यासा पानी, साध सन्तजन त्रिताल देखा, जुमला जागता देखा, काल कण्टक को भागता देखा।"**

पीरजी कहते हैं **"क्या लाया।"** वीर जवाब देता है **"हीरे जवाहरात सतयुग के लाये, मानिक मोती त्रेता के लाये, चान्दी सोना द्वापर के लाये, पैसा टक्का कलयुग के लाया"** और फिर से आवाज देता है।

"हीरे मोती वाला आया है लेने वाला कोई है?"

अन्दर से पीरजी बोलते हैं - **"हाँ ऽ ऽ हाँ कैसा है? ले आना,"**

अत: वीर कक्ष के अन्दर आकर झोली पल्लू खोलकर चावल, सुपारी, कमल कट्टा आदि दिखाता है। पीरजी बोलते हैं।

"ठिक है ऽऽऽ ठिक है।"

अत: वीर आकर खड़ा होता है। पीरजी पुन: मन्त्र बोलते हैं।

अथ् पल्लू मन्त्र-२

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आखा आया शाम का मेरी बे अनतड़ी सचियार, सो क्यो फिरन अकेलड़े जिनका बोली कर्तार, जेते आखे ते ते राख ॐ भूर भूर महा भूर रात का राखा चन्द्रमा दिन का राखा सूर राध होके राह चले कुराह चले कुभै सरा पांच महेश्वर आज्ञा करे तो चक्कर छोड़ महेश्वरा ॐ गंगा जमना सरस्वति काशी और केदार उदक चेतो कलश का पाओ मोक्षद्वार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

(ग) वीर की कमाई शोधन विधि

अत: पीरजी हुक्म करते हैं "**सिद्धों करो कमाई**" अर्थात् "**शिव गोरख, शिव गोरख रटो नाम।**" सिद्ध नाम को एक साथ रटते हैं।

अत: वीर कन्धे पर पल्लू (झोली) लिये हुये (हनुमान) महावीर के समान खड़ा होता है पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

वीर झेलने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। हांक हांक पुकारे बीर, कवली आवे घात की सतगुरु रहम आपकी चेते हनुमन्त वीर।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

[**मन्त्र सिद्धि:-** अनुराधा नक्षत्र में आक के पौधे के सन्मुख बैठें, आक के पत्ते तोड़कर एक पत्ते पर आटे का दीपक जलाकर एक पत्ते पर उद गुग्गल का धूप जलायें, एक पत्ते पर रोट का भोग लगायें या खोबरा शक्कर का भोग लगायें। यह मन्त्र १०८ बार जप करें और बबूल के पेड़ के २१ काँटे लें और मन्त्र २१ बार पढ़कर काँटे से पौधे को खोच दें। सब सामग्री वहीं जमीन में गाड़ कर स्थान पर आयें और आसन लगाकर शान्त बैठ जायें वीर कानों में बात करेगा उसे काम बतायें काम हो जायेगा। वीर को २४ घण्टे काम देना पड़ेगा अन्यथा वह परेशान करेगा। उसे ऐसा काम दें जो खत्म न हो या तो कागज पर वीर का नाम लिखें। इमली के पेड़ पर गुरु गोरक्षनाथ जी की कसम डालकर उसे वापस भेज दें।]

अत: वीर हनुमान के समान अपना दाहिना पैर उठाकर भूमि पर जोर से मारता है और उसके मुख में भण्डारी या पीरजी एक लड्डू डाल देते हैं और वीर नीचे भूमि पर हनुमान के वीरासन में बैठता है। अत: पीर जी मन्त्र बोलते हैं।

कमाई शोधन मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। किस का

पूत, किस का नाती, कौन शबद से बैठा पाती, कौन शबद से जूठ मूठ खाई, कौन शबद से अमरापूर पाई, शिव का पूत, शक्ति का नाती, गुरु शब्द से बैठा पाती, गुरु शब्द से जूठ मूठ खाई, गुरु शब्द से अमरापूर पाई, चेतो बरतो करो कमाई सांधा तुरठी आदि शक्ति महामाई। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।।।

अत: वीर उस पल्लु में जो भी हीरे जवाहरात .....आदि सामग्री होता है वह सब वीर का दान होता है और वह सब वीर लेते समय निम्न मन्त्र से लेता है।

कमाई चेतने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। नाग नाग महा नाग, धर्ती नाग मेघला जटाधारी गादी बैठे ऋद्धि चेतो महेश्वरा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धि:-** यह मन्त्र दीपावली अमावस्या की रात्री को शिव मन्दिर में रुद्राक्ष माला से १००८ बार जपें। शिव पूजन पंचामृत, बिल्व फल, कमल पुष्प से करें तथा शिव को जायफल चढ़ायें। वही जायफल वापसी में प्रसाद रुप में ले आयें वह घर में, दुकान में या जेब में रखने पर धन लाभ होता है।]

और इस मन्त्र एवं विधि के साथ सब दान अपनाते हुये वीर अपने वीर गादी पर जाकर बैठ जाता है।

इस प्रकार मृत योगेश्वर के वैराग्य भाव से हीरे, मोती, जवाहरात, पैसा, टका, धनधान्यादि सब दान किया जाता है। सब कुछ दान करके मोह माया से वैराग्य भाव होने के लिये यह पल्लू वाला विधि कराया जाता है। यहाँ तक कि वह पल्लू (झोली) भी दान की जाती है। पूर्ण वैराग्य बिना मुक्ति नहीं मिलती, नाथ सिद्ध महात्मा मृत्यु से पूर्व ही अपनी सभी सम्पत्ति (माया) ऋद्धि, सिद्धि, प्रतिष्ठा, शिष्य, भक्तों के प्रति मोह आदि का त्याग कर देते हैं अन्त में अपने को अजर अमर

माननेवाली काया का भी त्याग करना पड़ता है क्योंकि हर किसी को शरीर काया के प्रति अत्यन्त मोह होता है। उसे वह छोड़ना नहीं चाहता। किन्तु त्याग वैराग्य की अन्तिम परीक्षा शरीर को छोड़ते हुये होती है। ऐसे स्थिति में ही वह मुक्ति को प्राप्त कर सकता है।

विशेष दर्शन :- पूर्व काल में अर्थात्, मत्स्येन्द्र, गोरक्ष, नवनाथ इन सिद्धों के समय काल में जब यह पल्ल् झुलाते थे, पखालाते थे तब सिद्धों के मन्त्र तन्त्र चमत्कारों से पल्ल् के अन्दर की सभी पूजन सामग्री परावर्तित होकर हीरे-जवाहरात, माणिक मोती बन जाते थे और यही सिद्धों की पहचान होती थी। आज भी योग्य तन्त्र मन्त्र अथ कर्म विधि करने पर भी कोई विरला सिद्ध यह चमत्कार कर सकता है फिर भी कलयुग माया प्रभाव से यह झगड़े की जड़ हो सकती है। कदाचित इसी उद्देश्य के कारण यह हीरे, जवाहरात, माणिक, मोती चमत्कार से बन जाना लुप्त हो गया है।

कमाई शोधन का भावार्थ साधु सन्तों के प्रति स्पष्ट है कि श्री मद् भगवान गोरक्षनाथजी के नाम का जप, तप मन्त्र करना ही सच्ची कमाई है जो हीरे, जवाहरात, माणिक, मोतियों से भी बड़ी कीमती कमाई है और ऐसी भजन तपस्या एवं साधना की कमाई ही करने पर मोक्ष मुक्ति की शोधन अर्थात् खोज होती है। इसलिये कमाई शोधन के विधि समय सन्तों ने धन दौलत प्रतिष्ठा आदि का त्याग (दुर्लक्ष) करके भजन करना चाहिये। यह इस कमाई शोधन का बोध है।

(घ) कुछ नियम

(१) पल्लू विधान पुतला समाधि के लिये ले जाने के बाद ही करना होता है। यह विधान पूर्ण होने तक वह अन्दर नहीं आ सकते हैं।

(२) अपेक्षित दर्शाये हुये सभी साहित्य झोली में अर्थात् पल्लू में अवश्य डालना चाहिये।

(३) पल्लू के अन्दर हाथों से पखालते समय तथा पल्लू झुलाते समय मन्त्रोच्चार होना आवश्यक है।

(४) जब वीर पल्लू (झोली) लेकर वीरासन में बैठता है तब कमाई शोधन सभी सन्तों ने करना चाहिये अर्थात् शिव गोरख, ॐ शिव गोरख योगी, ॐ गोरक्षनाथ नमः आदि भजन जाप करना चाहिये यहां वह अपने सतगुरु मन्त्र का जाप भी कर सकते हैं।

(५) वीर झेलने का अर्थात् पल्लू विधि का हकदार केवल वीर ही होता है। इसे हनुमन्त का स्वरुप मानते हैं।

(६) पल्लू का सभी साहित्य दान रुप में वीर को ही देना चाहिये। यह उसी का अधिकार है।

(७) यह पल्लू विधि कर्म सभी मानधारी तथा दर्शणार्थी योगेश्वरों को संगमत एक ही भाव तथा सहयोग भाव से होना चाहिये।

(८) मुख्यतः यह पल्लू विधि, प्रातः चौथे पहर में ही होना अनिवार्य है। ना ही यह तीसरे पहर में हो ना ही सूर्योदय के समय हो क्योंकि इस समय बाहर से पुतले को समाधि संस्कार करते हैं जो कि यह पुतला समाधि संस्कार भी बिल्कुल इसी समय अर्थात् चौथे पहर में होना चाहिये।

(९) कुछ क्षेत्र नाथ मर्यादा है कि यह पल्लु विधि या पूतला समाधि विधि रात्र चन्द्र उदय होने से पहले होना चाहिये अर्थात् यह योग माया पूजन चन्द्रोदय होने के पूर्व होना चाहिए।

भावार्थ :- पुतला समाधि संस्कार तब होता है जब आकाश गंगा में तारा मण्डलों में शुक्र तारा का आगमन हो। यह शंख ढाल विधि का नाथ सम्प्रदाय का विशेष नियम है और यह शुक्र तारे का आगमन चौथे पहर में होता हैं यह शुक्ल वर्णी या पिका शुक्र तारा मृत्युन्जय विद्या जानने वाले शुक्राचार्य का ही प्रतीक माना जाता है जिनके अमृत विद्या

से अमरता प्राप्त होती है। अत: मृतात्मा को मुक्ति मार्ग में शुक्र तारा शुभ सूचक माना जाता है। इस शुक्र तारा आगमन एवं पुतला समाधि विधि करते समय आत्मसाक्षात्कारी योगेश्वर को मृतात्मा के मुक्ति का एहसास एवं अनुमान लग जाता है यहां आसमान में तारा भी टूटते हुये दिखाई देता है। या आकाश में प्रकाश वलय (जैसे बिजली चमकती है) भी दिखाई पड़ता है। जिससे मृतात्मा की आत्म मुक्ति पथ कैलाश जाने का अनुमान लग जाता है। इसी कारण यह शंखढाल कर्म एक आध्यात्मिक तन्त्र मन्त्र का एक प्रायोगिक अनुभव है। अर्थात् आकाश (मण्डल) तत्व में पुतला समाधि के योग्य समय में कोई भी हलचल या चमत्कार होना यह उस आत्मा की मुक्ति का संकेत होता है।



वीर (अन्जनी का हनुमान) का पल्लू विधि

(२२) पुतले पर समाधि संस्कार (चौथा प्रहर)

इस प्रकार जब यह पल्लू विधि अन्दर कक्ष में होती रहती है तब उसी समय पीरजी द्वारा पुतले को लेकर बाहर भेजे हुए नाथ उपदेशी योगेश्वर पुतला समाधि विधि निम्न प्रकार से करते रहते हैं।

(क) समाधि विधि

समाधि विधि चाहे कोई भी हो उसका मतितार्थ यह है कि आत्मा परलोक में जाने के बाद मृत (स्थूल) काया को पंच तत्व में विलीन किया जाता है। कोई भूमि में दफनाते हैं, धरती तत्व में, तो कोई अग्नि दाग देके अग्निदाग गृहस्थ लोगों में प्रचलित है जो कि नाथ सिद्धों में या किसी भी साधु-संत सम्प्रदाय में यह अग्नि दाग मान्य नहीं है या वायु तत्व में, तो कोई जल में प्रवाहित करते हैं तो जल तत्व में काया विलय हो जाती है। अत: टैलुवा पुतला लेकर बहते जल, गंगा जी में प्रवाहित करते हैं या एक नियोजित भूमि में गड्ढा करके थल समाधि दे देते हैं।

प्रथम पुतले के आकार का गड्ढा खोदा जाता है। पुतलों के शीश पर ठीकरा या आखा (अक्षत) रखते हुये टैलुवा निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अथ: ठीकरे का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पढ़ो पढ़ो सुणो महेश्वरों करनी से उतरो पार करनी होय तो पौड़ी चढ़े बिना करनी कहो गुरुजी कैसे तेरे ओं ठिकरा नहीं कोई ठाठ है, पांच तत का घाट है धरत मुख उत्पन्ना पवन मुख सूका अग्न मुख जरा सो ठिकरा सब सन्तन के आगे चला हाथ में चलावे राजा प्रजा को चितवे सिर पर धरे तां समाधि करे सूधा करे तां अमरापुर चढ़े ओं सोहं ठिकरा जाप सम्पूर्ण भया अनन्त कोट सिद्धों में श्री शम्भूजती

गुरु गोरक्षनाथजी ने कहा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

गड्ढे में एक गुफा सा विवर बनाकर उसमें पुतलों को रख देते हैं एक नारियल गोले में घी भरकर उसका भोग निम्न मन्त्र बोलते हुये लगाते हैं।

अघोर बाला मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोने की इन्द्री रुपे की धार धरती माता तेरे को नमस्कार, धर्म की धोती, अलील का प्याला अजरी बजरी चेते गुरु गोरक्षनाथ बाला धर्त की डिब्बी शक्त ने बाली ब्रह्मा विष्णु ने लकड़ी जाली, शिव ने रान्धी शक्त ने खायी अन्नपूर्णा महामाई हाथ खप्पर गले रुण्ड माला शिव शक्ति जपो तपो श्री सुन्दरी बाला।

ॐ अमर बान्धे अम्बरी बज्र बान्धे काया, हाथ जोड़ हनवन्त खड़ा बान्ध ल्याऊ शरीर सारा नौ मणसार भस्म कर डालो सोने की सुराई रुपे का प्याला भर भर पीये भैरो मतवाला, भजो भजो अलील भजो अनाद फुरो ऋद्ध फूरो सिद्ध भजो अलील गुसाई जी की चरण कमल पादका को नमस्ते नमस्ते नमस्कार एता अघोर बाला जपे तपे बारा कोस काल निकट नहीं आवे।

ओं आद अलील पुरुष की माया जपो इक शब्द अमर रहे काया आद अघोर, अनाद अघोर, श्री अघोर, पिण्ड अघोर, प्राण अघोर, शक्ति अघोर, ब्रह्मा अघोर, विष्णु अघोर, चन्द्रमा अघोर, सूरज अघोर, मेरी बजर की काया जुगता सो मुक्ता आवे सो जावे सिद्ध होय वहा काल न खाय एता अघोर बाला पढ कथ के टिल्ले बाल गुन्दाई लक्ष्मण जती को श्री गुरु गोरक्षनाथ जी ने सुनाया।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- यह मन्त्र शिवरात्री, कृष्ण चतुर्दशी, काली चौदस, सोमवती अमावस्या की रात्री में १०८ बार जपने से सिद्ध होता है। फिर इसे एक बार पढ़कर जल पर फूंक मारकर खुद पियें या अन्य को पिलाने पर अनिष्ट से रक्षा होती है।]

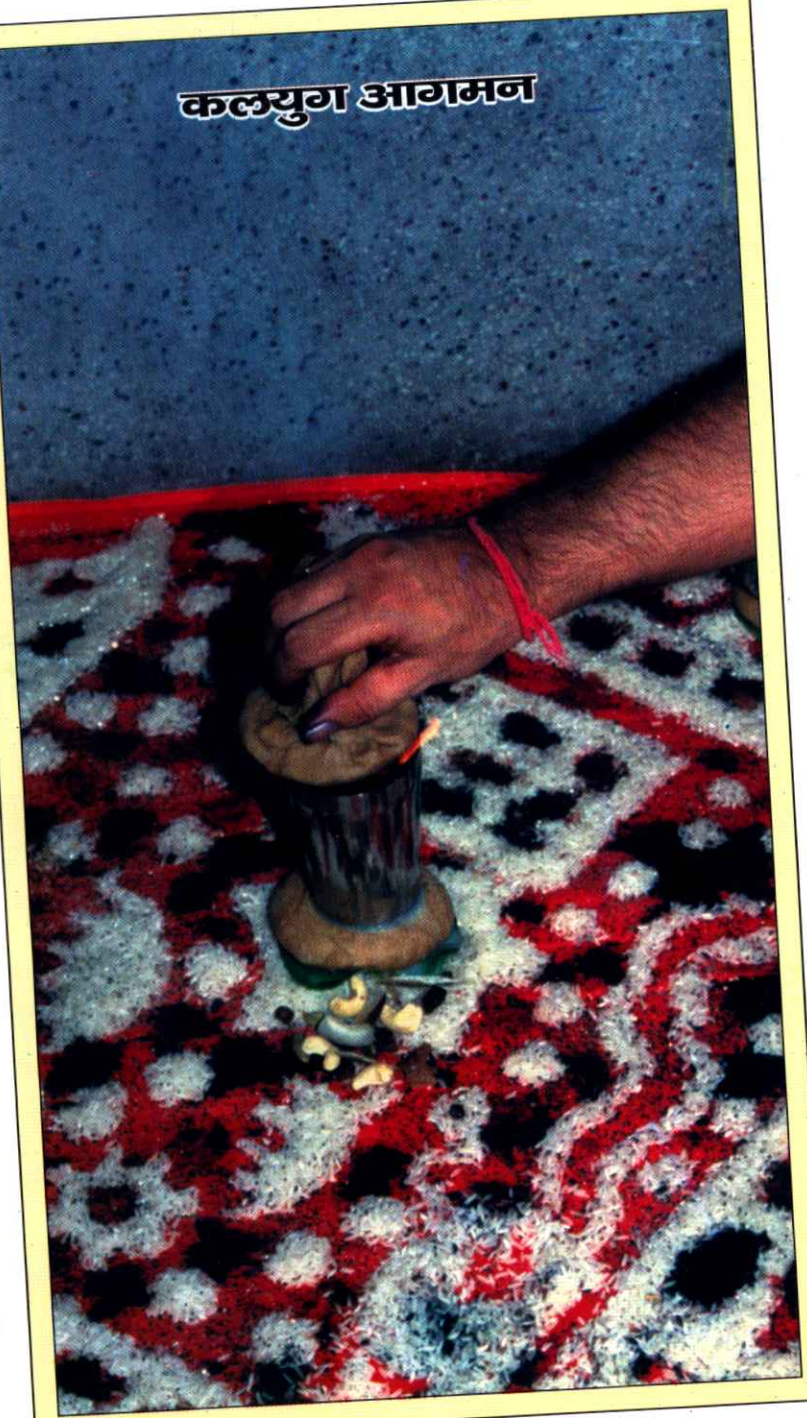
अतः पुतलों को भस्मी लगाई जाती है अर्थात् त्रिपुण्ड भस्मी लगाते हैं तथा एक घी का दीपक चेतन करके रखते हैं। गड्ढे में (गुफा में) डौने से ढककर रखते हैं या गड्ढे के बाहर भी रख सकते हैं।

टैलुवा इस समय निम्न मन्त्र का पाठ करते हैं।

अथः अघोर गायत्री

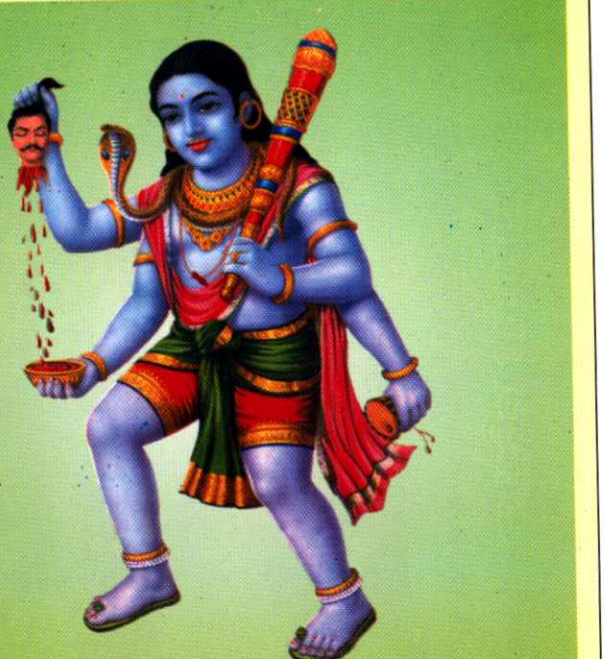
सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ जौ प्रमाण भक्षन्ते, तिल मात्रा तिलक करन्ते आद धर्म पार ब्रह्मा बाला श्री सुन्दरी बाला नमो स्तुते। अघोर अघोर महा अघोर ब्रह्मा अघोर, विष्णु अघोर, शिव अघोर, शक्ति अघोर, पवन अघोर, पाणी अघोर, धरती अघोर, आकाश अघोर, चन्द्रमा अघोर, सूरज अघोर पिण्ड प्राण हमारे बजर अघोर आदन्त साधन्त अघोर मन्त्र स्थिरन्त उठा हाथ की काया आद का जोगी अनाद की भबूत सत का नाती धर्म का पूत बिंद होणा आई नाद भूर नाद न किसे का धीयान किसे का पूता पाणी सेत न गुद गुद सेत न हाड, हाड सेत न चाम चाम पड़े ता धरती माता लाजे पिण्ड पड़े तो सत गुरु राखे ऐसे पद को पुजन्ते योगी आद अलील अनहद बरसे अमरी साधे अमर काया बजरी साधे बजर काया हांक मार हनुमन्त आया लोहे का कोट घाव न आवे रक्षा करे अचल बनखण्डी पीर काला खिन्था काला टोप काला है ब्रह्माण्ड धर्म धूप खेवन्ते वासना गई इक्कीसवे ब्रह्माण्ड, धर्म गुसाई जी धोती पाखलो, सातवे पाताल पाताल परम तत, तत मध्ये जोत, जोत मध्ये परमजोत, परमजोत मध्ये उत्पन्न भई माता अघोर गायत्री अजपा

कलयुग आगमन





पद्मावती देवी



भैरवनाथ जी

जपा जपन्ति पचास लाख कोट धरती मध्ये फिरन्ती, कुष्टी को कोड तरंति अचल चल चलन्ती अभेद मण्डल भिदन्ति छिदन्ति आछिन्त को पिवन्ति पीव पीव करन्ति रुद्र देवता के बचने बचने आप के काज कुवारी आपे के पशु भरता तीनों जाय तीन पुत्र-ब्रह्मा विष्णु महेश अमर रहे सेना सुमरे पटण सुनो देवी पार्वती जी आप कहे आप कहावे, आप सुने आप सुनावे पद्मावती पार्वती श्याम को सलाम गुरां को प्रणाम पण्डित को प्रमोद करी मूख के हिर्दे न भावी फूरो ऋद्ध फूरो सिद्ध सत श्री शम्भू यती गुरु गोरक्षनाथ जी अनन्त कोट सिद्धां ले उतरेगी पार मुझको भी ले उतरेगी पार श्री नाथजी की चरण कमल पादका को नमस्ते नमाम्याहय इति अघोर गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**मन्त्र सिद्धिः**- होली, दीपावली, अमावस्या, दशहरा, नवरात्रि या ग्रहण इनमें से किसी भी दिन इस मन्त्र का १००८ बार जप करके सिद्ध करें। एक दशांश हवन करें। हवन में गौ घृत, हवन सामग्री, काले तिल, जौ, उड़द, पंचमेवा आदि सुगन्धित द्रव्य मिश्रण की आहुति दें।

सात मिष्ठान, रोट का भोग लगायें। दही और पुराना गुड़ का मिश्रण करके पांच बूंद हवन में डालें, अन्त में गीला नारियल "**ॐ बाला सुन्दरी फट् स्वाहा**" कहकर नारियल फोड़कर वहाँ छोड़ दें।

हवन पश्चात् हवन की भभूति लें यह असाध्य बिमारी तथा पितृदोष तथा सब कार्य सिद्ध करेगी।]

अत: सभी उपदेशी योगेश्वर तथा टैलुवा गड्ढे में माटी डालते हैं व टैलुवा निम्न समाधि गायत्री मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

पुतले को समाधि देने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ निरन्जन निराकार निराकारले प्रथमे घौल, घौल पै धर्ती, द्वितीये धर्ती, धर्ती

पै आकाश तृतीये शुन्य में किया प्रकाश चतुर्थे भैरो पांचवै धर्मराजा धम गुसाई जी छटे ब्रह्मचण्डीका, सातवे सत्संग से हम तुम बीज तीनो गुरु भाई, जागे जोत अखण्ड बिन बाती, जहां योगीश्वरों ने थापना थापी, मुख ठौर वैकुण्ठ, हाथ आसन देऊ पूजा करु देव करो विश्राम बन बन खण्डी पीर कहावे, तपो बल जीव से जीव छुड़ावे मन का भय भागे जीव जाय यम लोक से आगे हंस उडन्त काया गढन्त हंस हसं निरन्जन साढे तीन हाथ तीन अंगुल समाधि गुफा बनी खोबरा मिट्टान्न भोग लगाया साध सन्त ने मुठ माटी का किया जै जै कारा। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इसी प्रकार टैलुवा निम्न समाधि गायत्री मन्त्र बोलते हुये मिट्टी डालते हैं।

अथ समाधि गायत्री

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आद की धरतरी अनाद की माटी सत का जोगी शब्द से खाटी ओ प्रथमे ओंकार उपाया, भूत का गुटका बनाया अलील परम हंस हुये प्रकाश जोत कला प्रकाश नौ नाथ चौरासी सिद्धां ने समाध गायत्री का किया प्रकाश, ओ ब्रह्मानें कही ईश्वर खुदाली ईश्वर गौरा माटी डाली आओ ब्रह्माजी करो बिचार इस प्राणी को दीजे मोक्ष मुक्त फल द्वार ओ प्रथमे माटी दिजे साथ, यमराजा पूछे सहत स्वभाव कहो योगीश्वर कहा से आया कहा जाओगे, कहा करो निवास प्राणी कथन्ते धर्मराजा सुणन्ते ओ आद का जोगी अनाद से आया सत का योगी बजर की काया तले चक्र उपर चक्र गले रुण्डन की माला हाड़ मास की मड़ी बणाई पवन की काया, आद हंस परमहंस

चिन्मय सच्चिदानन्द महादेव पार्वती को सुनाया एती समाध गायत्री सम्पूर्ण।

ॐ धरती माई "आई" मैल मोती काड़ धर्म को ध्याई मैं तेरा पुत्र तू मेरी माई चार अंगुल की देही जाई, जहां बैठे धर्मराज धर्म गुसाई तले षट चक्र ऊपर षट चक्र जहां श्वेत हाड़ शिव शंकर की मढ़ी बनाई सार का मस्तक शिव शंकर की काया, जपो जुगीश्वर अमर होय काया।।

ॐ काने कुण्डल सिर जटा आद कुमारी का उपदेश पहला पात्र मुख का पात्र रक्षा करे गणेश।

ॐ किसका पूत किस का नाती, किस शब्द से बैठा पाती, किस शब्द से रल मिल खाय किस शब्द से अमरापुर जाय। ॐ शिव का पुत्र, शक्त का नाती गुरु प्रसादी बैठा पाती, गुरु प्रसादी रल मिल खाय गुरु प्रासादी अमरापुर जाये चेतो वरतो करो कमाई आधा पर त्रुठी आद शक्ति महा माई भैरवी ॐ ध्याया पात्र करो सुपात्र चेते नर सुगरा चातुर। एता समाध गायत्री मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

[**विशेषः**- नाथ सिद्ध महात्माओं को मृत्योपरांत समाधि देते हुये इस मन्त्र का पाठ करने पर महात्मा मुक्ति रुप हो जाते हैं।]

इसी प्रकार से जल समाधि भी दे सकते हैं। इसमें केवल समाधि गायत्री की जगह जल गायत्री या अलील गायत्री का उच्चारण करना पड़ता है।

[**विशेष** :- जल गायत्री पृष्ठ संख्या ५ पर देखें, अलील गायत्री श्री नाथ रहस्य प्रथम खण्ड पृष्ठ संख्या १७६ पर देखें।]

अतः पुतलों को समाधि देकर टैलुवा और वह दोनों साथी वापस योगमाया (शंखढाल) पूजन कक्ष के द्वार पर आते हैं और खड़े हो जाते हैं।

(ख) कुछ नियम

(१) पुतले को कक्ष के बाहर ले जाते ही समाधि विधि तुरन्त करनी चाहिये क्योंकि उसी समय कक्ष के अन्दर पल्लू विधान शुरु होता है। इस नियम के साथ-साथ समय की बचत भी होती है।

(२) पुतला समाधि विधि चौथे पहर शुक्र तारा दर्शन होने पर ही करना उचित है।

(३) पुतले की जल समाधि हो या थल समाधि यथाशक्ति मन्त्रोच्चार विधि से करना उचित होगा।

(४) साथ में भूले बिसरे पुतले का भी संस्कार करना चाहिये।

(५) पुतला संस्कार पीपल या वट वृक्ष के नीचे करना उचित होगा।

(६) पुतला समाधि संस्कार के पश्चात् योगमाया कक्ष के द्वार पर अन्दर से आवाज या जवाब आने तक खड़े रहना अनिवार्य है।

(७) समाधि क्रिया योग संजोग एवं सहकार्य भाव से करना चाहिये।

इस प्रकार पुतले समाधि देकर आये हुये योगेश्वर (टैलुवा आदि) द्वार पर खड़े होते हैं। अतः अन्दर योगमाया पूजन कक्ष में कलियुग आगमन की तैयारी तथा विधि करते हैं।

विशेष :- पुतला (शिव लोक) मुक्ति मोक्ष पथ को जाते समय अर्थात् कैलास जाते समय वहाँ के महात्माओं विशेषतः आत्म साक्षात्कारी नाथ महात्माओं को उस पुतले में से आदेश। आदेश।। आदेश।।। बोलने की आवाज आती है।

(२३) कलयुग आगमन विधि

अत: कक्ष के अन्दर पीरजी दाहिने हाथ में आटे का बड़ा पिण्ड (पेड़ा) लेते हैं और निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए घृत के सभी ज्योतियों को आटे के पिण्ड से ऊपर से दबाते हुये ज्योतियाँ बुझा देते हैं।

कलयुग जोत समाप्ति मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। शुन्न में शून्न, शून्न में पिण्ड शून्न में ढक्कन ढाक्या, जोत में महाजोत, महाजोत में जोत समाई संत चले कैलास को मन्दर जय जय कार करायी।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

मन्त्र पूर्ण होते ही ऊंची आवाज में पीरजी कहते हैं - **"कलयुग आया ऽऽऽ रे ऽऽऽ कलयुग आया"**

इस प्रकार सभी जोत बुझाते हैं वहां मात्र भैरव जोत को नहीं बुझाते अत: तेल जोत चेतन ही रहती है। [चित्र क्र० (कलयुग आगमन नाम से) देखें]

भावार्थ :- कलियुग आने पर ज्योतियों को बुझाया जाता है। अर्थात् कलियुग जैसे अधर्म युग आने पर पूर्व काल के सिद्ध पुरुष, दिव्य आत्मायें तथा देवी देवताओं ने अपने तेजस्वी तथा दिव्य अवतार समाप्त कर कलियुग आने से पूर्व ही स्वर्ग लोक, देवलोक में चले गये थे। क्योंकि कलियुगी अनीति, असत्य, अधर्म, पाप, कूटनीति, कपट, राग-द्वेषादि भावनायें आदि कलियुगी माया से बचने के लिये वह मृत्युलोक से चले गये थे। उन्होंने इस कलियुग में भवसागर तरने के लिये केवल नामस्मरण, नाम भजन, नाम जप अत: सीधी सादी भक्ति को ही छोड़कर चले गये।

यहाँ ज्योतियाँ बुझाने का यही उपरोक्त आशय होता है कि ज्योति स्वरुपी देवी देवता और जती सती सिद्ध महात्मा जन अपने अपने स्थान को चले जाते हैं अर्थात् ज्योतियाँ बुझ जाती है और पीछे कलियुग में रक्षा एवं सुरक्षा के लिये भैरव जोत को छोड़कर जाते हैं। अत: यहां सभी घृत दीपक बुझाने पर भैरव की तेल ज्योत नहीं बुझाते। अत: वास्तव में जब सारी ज्योत बुझायी जाती हैं तब उस कक्ष में एक अजीब सा अनुभव होता है। सारा कक्ष अन्धकार सा लगता है कैलाश तथा माई का चौक (पाट) भी धुन्धला सा नजर आता है। पीर जोगण आदि मात्र मनुष्य स्वरुप भासते हैं दिव्यता, तेजस्विता प्रकाश चैतन्य, कर्म की एकाग्रता आदि सब कुछ खत्म हुआ है ऐसा लगता है और एक अजीब सी उदासीनता अनुभव में आती है।

इस प्रकार कलियुग आगमन होने पर पीरजी द्वार परदे की ओर आते हैं और बाहर पुतलों को समाधि देकर वापस आये हुये टैलुवा तथा उपदेशी (तीन योगेश्वरों) को पूछते हैं।

"कितने गये थे। कितने आये है।"

बाहर से जवाब आता है - **"समाधि देने गये थे, पांच गये थे, दो कैलाश को चले गये, तीन वापस आये हैं।"**

(क) सिद्धि (प्रसाद) विधि

अत: यह तीनों अन्दर प्रवेश करते हैं। फिर सारे इकट्ठा बैठते हैं। पीरजी हुक्म करते हैं- **"अलील लावो, सिद्धि लावो"**

टैलुवा लोटे में जल एवं माई का और भैरव का सभी (पंचमेवा, केशरी, हलवा, चना) जुगती का कुण्डा (अमृत प्याला) आदि लाकर पीरजी के सन्मुख रखते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"सब सिद्धों को सिद्धि बँटवाओ।"**

(अर्थात् प्रसाद बँटवाओ)

अत: कोतवाल या टैलुवा सभी को पीर गद्दी, जोगन गद्दी, साखियाँ गद्दी, वीर गद्दी, भण्डार गद्दी, अनन्त गद्दी, टैलुवा गद्दी, कोतवाल गद्दी तथा अन्य सभा में बैठे हुये साधु सन्तों को बराबर हिस्से में प्रसाद बांटते हैं। अपने इच्छा अनुरुप वह प्रसाद ग्रहण करते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"सिद्धों अलिल नख डुबाओ।"** (अर्थात् सभी ने अपने हाथ धो लो)

सभी जल में नख (हाथ) डुबाकर धो लेते हैं और तब पीरजी मन्त्र बोलते हैं।

नख का मन्त्र

ॐ गुरुजी नख नूर हाथ भये हाजारा हूजूर। सिद्धां नेडा काल कन्टक से दूर। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"मुर्ला बोलो।"** (अर्थात् चिलम भरो)

कोतवाल या टैलुवा चिलम भरते है। चिलम चेतन करके सभी को दम मारने को देते है। तब पीरजी मुर्ला मन्त्र का उच्चारण करते हैं।

अथ मुर्ला मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सोहं धुँदू कारा पांच तत का किया पसारा उल्टी पवन गगन में डोले गुरु परसादी मुर्ला हर हर बोले आया मुर्ला करो उपाय रक्षा करे श्री शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

सन्त दम मारते हैं - कोई कहते हैं = **हर, हर महादेव, भोला बम्ब,** तो कोई कहते हैं = **बोलो बम्ब, बोलो बम्ब, लागे दम, मिटे गम औरो कहते है कायामाया तिजैदम। मनसा बोलो भोला बम**

बोलो बम बोला बम आदि उक्तियाँ बोलते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"सभी माया जुटावो"**

टैलुवा सभी ज्योतियों के दान, ठीकरा (गत गंगा जोत का) दान, माई के चौक का दान आदि सब पैसे इकट्ठा करते हैं और सभी मानधारियों में समान रुप से बाँटे जाते हैं। सभी के आसन नीचे रखे हुये दान (पैसे) अपने अपने मानधारी उठा लेते हैं।

(ख) चक्र छूटने की विधि

अत: पीरजी हुकम करते हैं - **"कुण्डा उठाओ, ठीकरा उठाओ"**

अत: कोतवाल ठीकरा तथा कुण्डा उठाते हैं। पीरजी मन्त्र बोलते हैं।

कुण्डा उठाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। कुण्डा कुण्डा कुण्डाला, कुण्डे बैठे गोरक्ष बाला, कुण्डे बैठे सिरीया माई, जिसने परदे बात छुपाई, कुण्डे बैठे कुन्तामाई, पांचो पाण्डव लिये बुलाई, पांचो मन में बात विचारी, जग में लिये वरताय, काजी वरजा सूरा, ब्रह्मा वरजी गाय, इस विध कुण्डे में खाय, कुण्डा हाल्या न हले कूण्डा चाल्याने चले, कुण्डा रहे अनठोठ, कुण्डा चले शब्द की ओट, जपे जाप कुण्डे में खाय सो सांध अमरापुर वास पास जो नर करे कुण्डे से भ्रांत सो नर चढ़े काली माई के दांत, जो नर करे कुण्डे की सेवा, सो नर पावे मीठा मेवा।

अत: कोतवाल कुण्डा, ठीकरा, पूजा पात्र, कैलाश साहित्य आदि निर्मल्य में रखता है जो कि दूसरे दिन बहते जल में प्रवाहित कर देवें।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"श्री फल उठाओ।"**

कोतवाल प्रथम (गत गंगा का) अर्थात् कैलाश का नारियल तथा कलश का नारियल को तथा कुछ आखा उठाकर पीरजी के हाथ में

थमा देते हैं। पीरजी श्रीफल (नारियल) का मन्त्र बोलते हैं।

''श्रीफल (मन्त्र)''

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। पीरजी बोले एक ओंकार योगन मनमे किया विचार, आखा श्रीफल कर पर धरे, नीचे से पर्वत, ऊपर से चीन्हा कहे महादेव अनन्त कोट सिद्धो को दिना। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"कलश को उठाओ।"**

कोतवाल दोनों हाथों से कलश उठाते हैं और पीरजी मन्त्र बोलते हैं।

कलश उठाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। उठन्त कलश, रहन्त धर्तरी, अटल योग गोपीचन्द भरथरी, उल्टी गंगा पल्टे नीर कलश उठावे गादी पीर। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"सभी आसन उठावो।"**

कोतवाल सभी आसन के ऊपर के नारियल उठाकर पीरजी को देते हैं। अत: पीरजी मन्त्र बोलते हैं।

आसन उठाने का मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ तरो तरो महेश्वर करणी उतरो पार, सन्त चले घर अपने मन्दिर जय जय कार। श्रीनाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

और मन्त्र होते ही सभी आसन उठाकर निर्माल्य स्थान पर रखते हैं। फिर वह सभी नारियल सभी को अन्त में प्रसाद रुप में बांट देते हैं।

अत: सभी मानधारी-उत्तराधिकारी तथा उपदेशी नाथ योगेश्वर आदि खड़े होते हैं। पीरजी खड़े खड़े सभी को आखा (चावल) देते हैं,

और अन्त में यह योगमाया पूजन अर्थात् शंख ढाल कर्म समाप्त होने की अर्थात् शंखढाल चक्र छूटने की घोषणा निम्न मन्त्र से पीर जी करते हैं।

चक्र छूटने का मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। भूर भूर महाभूर, रात को राखे चन्द्रमा दिन को राखे सूर, सन्त तो सुधा चले कुला चले चले कुटेश्वर पांच महेश्वर आज्ञा करे तो चक्र छूटे महेश्वर।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार चक्र छूटने के उपरान्त सभी मानधारी एवं उपदेशी योगेश्वर अपना अपना दान सामग्री लेकर कक्ष छोड़कर अपने स्थान आसन में चले जाते हैं।

(ग) कुछ नियम

(१) चित्र में दर्शाये विधि से भी घृत ज्योति आटे के पिण्ड से बुझाना चाहिये।

(२) भैरव की तेल ज्योत नहीं बुझाना चाहिये।

(३) बाहर से पुतले को समाधि देकर आये हुये योगेश्वरों ने बड़ी सावधानी से अन्दर से पूछे हुये प्रश्न का जवाब देना चाहिये। जिसमें अमुक कैलाश को गये यह वाक्य सोच समझकर जितनों को समाधि दी है उनके विषय में ही जवाब देना चाहिये। यहां पर गलत जबाव देने पर उसका गलत परिणाम भुगतना पड़ता है।

(४) सिद्धि प्रसाद सभी को सम प्रमाण में बांटना चाहिये।

(५) जल में हाथ धोना चाहिये।

(६) यह सिद्धि (प्रसाद) केवल उपदेशी योगेश्वर ही खा सकते है।

(७) चिलम पीना यह कोई प्रसाद नहीं है और इतना आवश्यक भी नहीं है। नाम मात्र पी सकते हैं। इस समय कोई कोई इस चिलम

नशादेवी को (हस्तस्पर्श) नमन करते हैं किन्तु उसे पीते नहीं।

(८) सभी मानधारी के आसन के नीचे जो दान दक्षिणा रखी हुई होती है वह सब उनकी अपनी ही होती है।

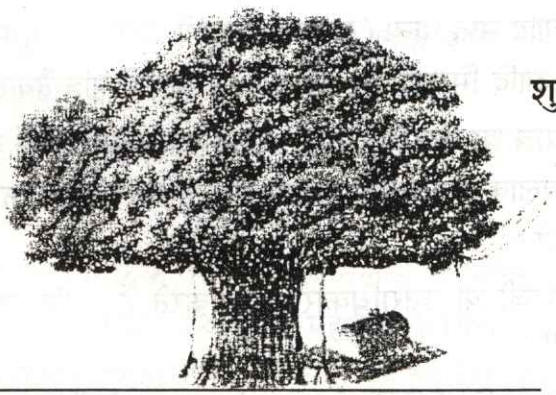
(९) बाकी दक्षिणा इकठ्ठा करके सभी उपदेशी योगेश्वरों को सम भाग में बाँटी जाती है।

(१०) यह सोना चान्दी की कोई चीज हो जैसे सीढ़ी, बर्तन, नादी, जनेऊ, कुण्डल आदि तो इसका लिलाव करके या हिसाब करके वह पैसा सभी को सम भाव में बाँटना अनिवार्य है।

(११) चक्र छूटने के उपरान्त योगमाया पूजन का सभी साहित्य इकठ्ठा करके रखें और बाद में बहते जल में प्रवाहित करना चाहिये।

(१२) यह सब क्रिया सूर्योदय होने से पूर्व समाप्ति होना अनिवार्य है।

(१३) दूसरे दिन हवन विधि भी करते हैं। किन्तु नाथ सिद्ध परम्परा में अब यह प्रथा नहीं है। सिद्ध एवं आत्मसाक्षात्कारी योगेश्वरों को इस योगमाया विधि का हवन करने की कोई खास आवश्यकता नहीं होती।



शुक्रतारा

☆

पुतले की समाधि विधि

(२४) हवन विधि (प्रातः)

मुख्यतः गृहस्थ नाथ जोगी अपने योगमाया कर्मकाण्ड में यह शक्ति तथा भैरव नाथ-हवन विधि का कर्म करते हैं। विशेषतः दक्षिण पश्चिम दिशा के गृहस्थ नाथ योगेश्वर यह कर्मकाण्ड करते हैं।

अतः पूर्ण रात्री में योगमाया पूजन विधि होने के पश्चात प्रातः चौथे पहर में यह हवन विधि अपनाते हैं। जो कि अब तक योगमाया पूजन की भैरव ज्योत अभी तक चेतन ही रहती है।

(क) पूर्व तैयारी

साहित्य - ताम्र या लोहे का हवन कुण्ड, या ईंटों का, संक्षिप्त छोटा सा कुण्डा बना सकते हैं। लकड़ियाँ, एखाद कण्डा (गोबरी या गोसा) आचमनी, ताम्र पात्र, हवन सामग्री, घृत, कर्पूर, गुग्गल, बूरा, केशर, आखा (अक्षत) लाल पुष्प या पुष्प माला, नारियल (पानी वाला), दही, शहद, जल, सिन्दूर, कर (सप्त धान्य)।

हवन सामग्री- एक पात्र में हवन सामग्री डाले उसमें कर अर्थात् सप्त धान्य, जौ, काले तिल, काले साबुत उड़द, मक्की, मठ, सरसा (काली) इत्यादि सप्त धान्य (अनाज) मिलाये, उसमें घी, गुग्गल, बूरा, शहद, केसर आदि मिलाये इस प्रकार हवन सामग्री पात्र तैयार करें।

अमृत पात्र या कड़वा प्याला - यह एक ताम्र पात्र में दही और पुराना गुड़ मिलाकर आचमनी से उसे मिश्रण करें। इस प्रकार अमृत पात्र तैयार करें।

अतः पीरजी या उत्तराधिकारी हुक्म करते हैं - **"हवन कुण्डा तैयार करो।"**

अतः टैलुवा निम्न विधि से हवन कुण्डा बनाते हैं।

हवन कुण्डा - यह भैरव जोती के सन्मुख ताम्र या लोहे का यज्ञ

कुण्डा रखें या ईंटों से छोटा सा यज्ञ कुण्डा बनायें। कोई कोई माई का पाट हटाकर उसी स्थान पर कुण्डा बनाते हैं।

अत: हवन कुण्डा में एक कण्डा (गोबरी) और लकड़ियों को रचाकर उस पर कर्पूर डलियाँ रखते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"अग्नि चेतावो"**

टैलुवा भैरव ज्योत से कर्पूर चेतन कर अग्नि प्रगट करते हैं। पीरजी या उत्तराधिकारी अपने योगमाया पूजन के उपदेशी सद्गुरुजी ने दिये हुये **"उपदेशी मन्त्र"** मनमें या प्रगट मन्त्रोच्चार करते हैं जब अग्नि प्रज्वलित होती है तो पीरजी हुक्म करते हैं - **"अग्नि पुजावो"**

टैलुवा सह सभी मानधारी इच्छानुरुप अग्नि का पूजन करते हैं।

प्रथम यज्ञ वेदी पर आचमनी से जल छोड़ते हैं। पीरजी निम्न जल गायत्री (संक्षिप्त) बोलते हैं।

जल गायत्री (संक्षिप्त)

ॐ गुरुजी। अलख निरन्जन तेरी माया, जल बिम्बाय निल पुरुषाय धी महि तन्नो अलिल प्रचोदयात्।

पीरजी हुक्म करते हैं - **"अग्नि को तिलक करो।"**

टैलुवा केशर या सिन्दूर का तिलक करते हैं।

पीरजी निम्न तिलक मन्त्रोच्चार करते हैं।

तिलक मन्त्र

ॐ गुरुजी। तिलक, तिलक महातिलक, महातिलक कहा से आया, कौन कौन लाया। ॐ गुरुजी महातिलक गिरी पर्वत कैलाश से आया गौरी पुत्र गणेश लाया, अन्जनी पुत्र हनुमन्त लाया, काली पुत्र भैरु लाया, तारा त्रिकुटा तोतला तीनो बैसे आकाश, तिलक दान मस्तक कु तिलक सिन्दूर कुरु कुरु साधु सन्त रहे निहाल, पढ़

मन्त्र तिलक चढ़े पिण्ड पड़े अमरापुर जावे। इतना तिलक मन्त्र सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

सभी तिलक दान करते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"अग्नि को पुष्प-आखा चढ़ावो"**

टैलुवा लाल पुष्प तथा आखा चढ़ाते हैं तथा पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

★ आखा मन्त्र (अक्षत मन्त्र)

ॐ गुरुजी उत्तर दिशा से जोगन आयी आद कुवारी का उपदेश। अक्षत बरसे जोगन माई रक्षा करे गणेश। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

सभी पुष्प आखा चढ़ाते हैं।

अत: पीर जी हुक्म करते हैं - **"अमृत भोग लगावो"**

अत: टैलुवा अमृत पात्र में से आचमनी से अमृत लेकर बून्दमात्रेण अग्नि मुख में डालते हुये अग्नि को अमृत भोग लगाते हैं इस वक्त पीरजी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

अमृत बून्द (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पद्मावति, पद्मावती पद शखनी भरवै मद अमृत वास। भैरु के हाजर खड़ी है देवी के साथ। बम बम बटुक नाथ। श्री नाथ गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

सभी बून्दमात्रेण अमृत चढ़ाते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"हवन की तैयारी करो"**

टैलुवा हवन सामग्री पात्र सभी को (अलग अलग पात्रों में) बाँटकर हवन की तैयारी करते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"सन्तों - शक्ति हवन करो"**

और पीरजी या उत्तराधिकारी निम्न शक्ति बीज मन्त्रोच्चारण शुरु करते हैं और सभी स्वाहा बोलते हुये घृत तथा पूर्व तैयार की हुयी हवन सामग्री अग्नि मुख में छोड़ते हैं।

(ख) शक्ति हवन

शक्ति (हवन) मन्त्र

(१) ॐ गं गं गणपतेय नम: स्वाहा

(२) ॐ अलख लखाई विद्महे महा अलख लखाई धी महि तन्नो अलख लखाई प्रचोदयात्। ॐ अलख लखाई फट् स्वाहा

(३) ओं सोहं इलीं क्लीं श्रीं सों श्री सुन्दरी बाला नम: स्वाहा

(४) ॐ, आ, ई, ठ, ह्री, ह्री महामाया नम: स्वाहा

(५) ॐ लृ, औं, श, ह योगमाया नम: स्वाहा

(६) ॐ ह्रिं ह्रिं हूँ हूँ हिंगूला नम: स्वाहा

(७) ओं ऐं ह्रीं क्रीं हूँ फट् स्वाहा

(८) श्री उ आनन्दी नम: स्वाहा

(९) ॐ श्रीं ह्रीं भुवनेश्वरी यै नम: स्वाहा

(१०) ॐ ऐं ह्रीं बीजबाला नम: स्वाहा

(११) ॐ ऐ म य र ह हंसबाला नम: स्वाहा

(१२) ॐ क्ष अमरबाला नम: स्वाहा

(१३) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सुरजित बाला विच्चे नम: स्वाहा

(१४) ॐ शं शंख बाला नम: स्वाहा

(१५) ॐ घ घोर बाला नम: स्वाहा

(१६) ॐ अघोराय विद्महे महा अघोराय घी महि तन्नो

अघोराय प्रचोदयात्। ॐ ओं अं हं अघोर बाला फट् स्वाहा।

(१७) ॐ ह्री ओ ल मृतक बाला नमः स्वाहा

(१८) ॐ ह्री गत गंगायै ॐ ह्रीं स्वाहा

(१९) ॐ श्री ह्री नमो भगवती प्रसन्न पारिजातेश्वरी अन्न पूर्णे स्वाहा

(२०) ॐ आखा माई ब्रह्मरुपाय धी महि तन्नो अन्नपूर्णी प्रचोदयात्। ॐ आखा माई नमः स्वाहा

(२१) ॐ ई ई खीरे माई फट् स्वाहा

(२२) ॐ ह्रिं ह्रिं जुगती बिजीया फट् स्वाहा

(२३) ॐ निम तलाई चामुण्डा काली रुपाय धीमहि तन्नो मिठी माई प्रचोदयात्। ॐ निम तलाई नमः स्वाहा

(२४) ॐ ऐं ह्रिं आ अमिया नमः स्वाहा

(२५) ॐ कालाय विद्महे महाकालाय धी महि तन्नो कालाय परम हंस गायत्री प्रचोदयात्। ॐ परम हंस कालाय नमः स्वाहा

(२६) ॐ जम जंजीरा जड़ गय गड़ कोट जीत्या ईलचील नागणी सों फट् स्वाहा

(२७) ॐ ह्रां क्रों ह्रीं ऐं क्लीं हसौं श्री पद्मावती दैव्ये नमः मम सर्व विघ्नोपशांति कुरु कुरु स्वाहा।

(ग) भैरव हवन

इस प्रकार शक्ति हवन पूर्ण होने के पश्चात् पीरजी हुक्म करते हैं कि **"सन्तो भैरव हवन शुरु करो।"**

और पीरजी निम्न मन्त्रोच्चार करते हैं सन्त केवल मात्र हवन सामग्री से हवन करते हैं।

भैरव मन्त्र पाठ

प्रथम पाठ मन्त्र

ॐ गुरु जी बम् बम् बटुक नाथ, जाग जाग जहा लगाऊ तहा ही लाग गुरु की शक्ति मेरी भक्ति ॐ फट् स्वाहा:

द्वितीय पाठ मन्त्र

ॐ हूं ख्रों जं रं लं बं क्रों ऐं ह्रीं महा काल भैरव सर्व विघ्न नाशाय ह्रीं फट् स्वाहा:

तृतीय पाठ मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ काल भैरो लाल भैरो घोर भैरो अघोर भैरो जल भैरो थल भैरा, बाल भैरो, भैरव चौकी रम रंगा, श्मशान फिरे भैरो चंगा भय करे निर्भय फिरे नवखण्डा की चौक पूरे। उत्तर दिशसि जोगन आवे काली चण्डी खप्पर भरे हाथ खड़ंग भर पूरे, दस दिशा चौका बान्धू चेतली काली रात बान्धू जले बले काल जजाल बान्धू, छल चले, बल चले काली दन्त का खडांग चले भैरो बली के आगे धरे। भैरो नाथ की माया चले आद युगादि त्रिकाल भैरो कदली काल देश में आवागमन। भैरो नाथ काशी वार्ता बनारस थम्भ क्षेत्रपाल सदा रहे हम पर कृपाल। लो भैरव पूजा जोत पाट जहां सिमरु तथा भैरव हाजिर हूजूर खड़ा। आओ सिद्धो भैरोनाथ जी की पूजा ना मिटे जोगी मेटे ज्ञान ध्यान से जाय। प्रजा मेटे खाया पिया व्यर्थ जाय राजा मेटे राजपाट से जाय। श्री नाथजी गुरुजी नम: स्वाहा:

चतुर्थ पाठ मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ भैरो भैरो आओ भैरो डगर भैरो सहस्त्र मना कि माला फेरु फेर फेर कर

किया तलाशु, चढ़े बंग तेल, मस्तक पर सिन्दूर लाल गल पुष्प माला काली का पूता रहे सदा मतवाला संकट पड़े रक्षा करे तुम हो क्षेत्रपाला, प्रथम पूजा अलील की कीजे सुध बुध भैरो क्षेत्रपाल की कीजे दूसरी पूजा ईश्वर महादेव की कीजे ईश्वर महादेव भैरव क्षेत्रपाल की कीजे तीसरी पूजा मत्स्येन्द्रनाथ जी की कीजे मत्स्येन्द्र भैरव क्षेत्रपाल की कीजे चौथी पूजा चौरंगीनाथजी की किजे चौरंगी भैरव क्षेत्रपाल की किजे पांचवी पूजा सतनाथजी की कीजे ब्रह्माजी भैरव क्षेत्रपाल की किजे। सातवी पूजा शेषनाग की कीजे बासुकि भैरव क्षेत्रपाल की कीजे। अष्टम पूजा शम्भूजती गुरु गोरक्षनाथ जी की कीजे। गोरक्ष भैरव क्षेत्रपाल की किजे। श्री भैरव भैरवी नाथ साहिबा पूजा तेरे कारण रचीजे। कारज हमारा पूरा करीजे। कोटान कोट भैरो भैरवी तृप्यन्ते तृप्यन्ते। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। अष्ट भैरव नमः स्वाहाः

पंचम पाठ मन्त्र

ॐ गुरुजी। ॐ ह्रीं बटुकाय आप उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रिम् स्वाहाः

षष्टम पाठ मन्त्र

ॐ गुरुजी ॐ ह्रीं काल भैरवाय नमः स्वाहाः ॐ गुरुजी ॐ ह्रीं महा विक्राल भैरवाय नमः स्वाहः

सप्तम पाठ मन्त्र

ॐ गुरुजी काल भैरव काले केश कन्नी मुद्रा भगवा भेष राजा प्रजा करते आदेश। ॐ भैरो तू काली का पूता सदा रहे मतवाला चढ़े तेल सिन्दूर गल पुष्प माला, जिस किसी पर संकट पड़े जो सुमिरे तुम्हे उसकी रक्षा करे तुम हो रक्षपाल भरी कटोरी

तेल की धन्य तुम्हारा प्रताप, काल भैरो अकाल भैरो लाल भैरो जल भैरो थल भैरो बाल भैरो आकाश भैरो, पाताल भैरो क्षेत्रपाल भैरो सदा रहे कृपाल एता भैरो नमः स्वाहाः

अष्ठम पाठ मन्त्र

ॐ गुरुजी काल भैरु कालिया वीर जा बैठा समुन्दर तीर, साध सन्त तुझे मनावे सुमरे सो तु हाजर आवे। हाजर नहीं आवे तो माता का दूध पीया हराम करे। ॐ भैरवाय नम स्वाहाः

नवम पाठ मन्त्र

ॐ गुरुजी ॐ आदि भैरु जुगादी देवा, ब्रह्मा विष्णु महेश करती सेवा, सप्त सागर ध्यान लगाये, कोटी कोटी मन पर क्या हंस हंसारे भैरु तेरे जुग की माया, थापर पानी बाब पण्डु पाया। भैरु मार भैरु त्यार। भैरु सुध बुध में खेले, भैरु अमरापुर में खेले, भैरु गति मुक्ति दाता लख चौरासी राखो जाता। भैरुनाथ भक्त के प्यारे। साचा केशर खाया है। कन्नी मुद्रा भगवा भेष अंग भबूती रमेता जोग। सुन्य में नाद बजाया है। सदा रहे रंगरुप सहराजी सोना ना सुहाया है। पाट छोड़ आदर नहीं भया टीची नमा लगाया है। पार्वती उठ पांवा लागी सुन भैरु तेरी माया, किस कल्प से भैरु खेला माता पिता थारा केशरिया कवर किन विधि नाम लगाया। अमर लोक में आप लेखा तीन लोक में शक्ति माना, राजद्वारा बैठता समरु भैरु काला। बैरिया न बहरा करके, नैना जड़दे ताला। सात समुन्दा से आपड़े जूग में जोत सवाई समरा। फिर हाजर नहीं आवे पिता जुग थम्भण की करोड़ दुहाई। इता मन्त्र पाठ, भैरु ध्यावो अटल ज्योत की छाया जावो ॐ सोहं शिव भैरु नमः स्वाहाः

दशम पाठ मन्त्र

ॐ गुरुजी काली काली महाकाली घोर काली अघोर काली, पुत्र तुमरा बड़ा कंकाल। दुष्ट मुष्ट के खैचे बाल, मै जोगी जुगती से आया हाथ जोड हाजर हूजूर खड़ा, कहे भैरु मेरी भक्ति को चलावो उठ सबेरा जल नहाओ चोख। चावलिया को ले आओ ऊपर पूरा घृत घुलाओ, भैरुजी को भोग लगावो जद भैरु का दर्शन पाओ, राखो राखो लाज हमारी मैं जोगी का बाल लीले का असवार भेष भगवान का ग्वाल सब सिद्धों को आदेश भैरवनाथ को आदेश नमः स्वाहाः

ग्यारह पाठ मन्त्र

ॐ गुरुजी कर कलीत कपाल कुण्डल दण्ड पाणि शत्रुणी तिमिर नीलो बिमल नाद जनेऊ। तस्मैये सप्रिय बान्धु। वांछित फल देई तु जयति बटुक नाथा सिद्धि देव साधका नमः स्वाहाः

बारह पाठ मन्त्र

ॐ सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी मैं तुममें सुमरु काला भैरु तु खेल, बावन वीर तापर मेलु बचनो का तीर, काल भैरु कवल की जटा भैरु खेले चार दशा, गाजता आव, घोटत आव साध चीर बन्ध करता आव, जाग जाग भैरव की चौकी आयी आओ भैरव करो विचार म्हारा काम जल्दी से करो, छोडु सवा शेर की कर भैरु आया रुप कड़ा छोडु दुध की धार। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश।

(घ) बली पूजन

इस प्रकार सभी अग्नि मुख में अष्ट भैरव बारह पाठ को हवन सामग्री से हवन करते हैं।

अत: पीरजी हुक्म करते हैं - **"भैरु बली पूजन करो"**

टैलुवा पानी वाला नारियल (कच्चा) लेता है उसपर लाल सिन्दूर तथा लाल पुष्प रख कर उसे यज्ञ विधि सन्मुख दक्षिण मुख करके फोड़ता है।

अत: नारियल फटने पर यज्ञ वेदी के पूर्व और पश्चिम दिशा में दो दो बून्द नारियल का जल धरती पर छोड़ते हैं और दक्षिण दिशा में तीन बून्द नारियल का जल धरती पर छोड़ते हैं। इसी समय पीर जी निम्न मन्त्र बोलते हैं।

"पद्मावती" (मन्त्र)

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। पद्म पद्म पद्मावती, परम सुन्दरी बसे मढ़ी, मसाने में कारा कैरा डीमरु शिव शक्ति के पास सुं सुं मन कर कुलालन अलष पुरुष की नार-अलष गये कैलाश, कैलाश का काला गोरा बटुकनाथ, भटक नाथ ने दीनी गुरां के हाथ गुरां ने दीनी हमरे हाथ जल सोधू थल सोधू सोधू सुन्दर काया तीर्थ भरी पद्मावती सोधू तीर्थ का दूध करो महामाया, चार बान सोधू कर धरु शीश काट पात्र में धरु तीनों का वैकुण्ठ वासा, दो बून्द धरती पर पड़े नौ करोड़ दुर्गा तृप्तवान, दो बून्द धरती पर गिरे अष्ट भैरव तृप्तवान तीन बून्द धरती पर पड़े बटुक नाथ भैरो तृप्तवान बम बम बटुक नाथ इतना मन्त्र पद्मावती सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

सभी हवन वेदी को नमस्कार करते हैं और अपने स्थान में वापसी होते हैं।

सूचना:-

(१) बली पूजन का नारियल खाना नहीं चाहिये। विर्सजन के पश्चात् सभी योगमाया पूजन सामग्री बहते जल में प्रवाहित की जाती है।

[**सूचनाः**- यहां (कर) अर्थात् सप्त (धान्य) अनाज के आटे का प्राणी (मुर्गा इ०) बनाकर भी बलि देते हैं। किन्तु यह नाथों में निषिद्ध माना जाता है।]

(२) यह हवन कोई कोई भैरव सहस्र नाम से भी करते हैं।

(ङ) विसर्जन विधि

इस प्रकार सभी योगमाया पूजन अर्थात् जोग जुगती कर्म या शंखढाल कर्म तथा भैरव हवनादि सभी कर्म पूर्ण होने पर पीरजी या उत्तराधिकारी उपस्थित सभी मानधारियों को हाथ में अक्षत (आखा) देते हैं और निम्न विसर्जन मन्त्रोच्चार करते हैं।

"विसर्जन (मन्त्र)"

ॐ गुरुजी जोत जगावा हो रहा जोग जुगति के माहि। सत गुरु शब्द पिछानिया जोत में जोत समाई।। अखा दीजै पलव का लीजै द्वीकर जोड़। जितनी अखा उतनी रख्या सिर कण्टक का तोड़।। तरो तरो महेश्वरा गुरु मति उतरो पार। साध संत चले थान आप जै जै मंगलाचार।। जम्बु दीपरे भायरा फेर मिली जो आय पग धोवा पायल पिवाँ मुख जोवाँ सुखदाय।। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

इस प्रकार विसर्जन मन्त्रोच्चार के साथ जल हाथ में लेकर धरती के ऊपर छोड़ते हैं और सभी सन्त, सिद्ध, साधक अपने अपने स्थान पर चले जाते हैं।

[**सिद्धि विधिः**- यह हवन विधि अलगसा, दीपावली, होली, सोमवती अमावस्या, नवरात्री (चैत्री-अश्विन) में करने पर मनवांछित कार्य सफल होते हैं। हवन से पूर्व जप साधना करनी चाहिये। प्रथम गणेश वन्दना फिर गुरु वन्दना फिर उपरोक्त मन्त्रों का १००८ बार जाप करना होता है।]

इति समाप्त

(च) कुछ नियम

(१) यह हवन विधि शक्यतो गृहस्थ जोगी करते हैं।

(२) नाथ सिद्ध योगेश्वर भी हवन विधि कर सकते हैं।

(३) आत्मसाक्षात्कारी नाथ सिद्धों को हवन करने की आवश्यकता नहीं है।

(४) पूर्व तैयारी दर्शित अनुसार सहयोग से तैयारी कर लेनी चाहिये।

(५) अग्नि पूजन तथा हवन सभी उपदेशी = नाथ योगी, जोगी, नर-नारी कर सकते हैं।

(६) बली पूजन में केवल गीला (छिल्के वाला) नारियल का ही उपयोग करना अनिवार्य है।

[प्राणी बली देना निषिद्ध माना गया है।]

(७) अमृत भोग दर्शित (ताम्र पात्र में दही और गुड़ डालकर अच्छी तरह घोलकर) तैयार हुये में से अमृत बून्द मात्रेण भोग लगावें।

(८) विसर्जन के पश्चात् सभी को स्नान करना चाहिये या हाथ पैर मुख धो लेवें।



हवन विधि

चतुर्थ रहस्य

(२५) योगमाया शक्ति का सम्मान

पूर्व काल से नाथ सिद्धों में यह योगमाया पूजन नाथ सिद्ध महात्माओं का गुप्त एवं रहस्यमय कर्मकाण्ड है। जिसमें यथा उचित मन्त्र तन्त्र साधना के द्वारा इस शंखढाल क्रिया में कुछ चमत्कारी अनुभव आते हैं। अत: शील-सन्तोष-संयम आदि सतगुणों से तथा आत्मसाक्षात्कार सम्पन्न महात्मा द्वारा यहां कार्य यथा उचित कार्य सिद्ध हो जाते हैं। आगे आगे यही कर्म काण्ड गृहस्थ जोगी समाज ने अपनाया अत: आज यह कर्मकाण्ड सर्वत्र साकार रुप में सिद्ध करते हैं। विभिन्न दिशा में देश-काल-भाषा-आचरण परिस्थिति के अनुसार कर्म काण्ड होते हैं। कर्मकाण्ड अलग अलग होते हुये भी उनका उद्देश्य मात्र (जन कल्याण) मुक्ति मोक्ष ही हैं।

इस परम्परा में नारी (शक्ति) पूजन को बड़ा ही मान सम्मान से सँवारा जाता है। अर्थात् इस कर्मकाण्ड में बालिका या कुमारी या नारी या सुहागन आदि पूजन को महत्व दिया गया है। जिससे शक्ति साम्प्रत प्रसन्नता को प्राप्त होती है। अत: चारों दिशा में भिन्न भिन्न प्रथा या विधि से कर्मकाण्ड किया जाता है।

(क) पूर्वकाल की चतुर्दिशा योगमाया पूजन विधि

(१) पूर्व दिशा - यह कामाक्षा क्षेत्र दादा मछिन्द्रनाथ जी की तपस्थली जो कौल ज्ञान एवं कुलाकुल तन्त्र विधि अपनाते हैं यहां योगमाया कर्म चक्र पूजा तन्त्रों की विधि से करते हैं तथा षोडष चक्र पूजन में सोलह साल की कन्या (एक या नौ कन्या) का पूजन करते थे।

(२) पश्चिम दिशा - यह माता हिंगलाज क्षेत्र में योगमाया पूजन

विधि में सुहागन (नारी) का पूजन करते थे।

(३) दक्षिण दिशा में – यहाँ दक्षिणेश्वरी माता तन्त्र की देवी का क्षेत्र है योगमाया कर्मकाण्ड में देवदासी को पूजने की परम्परा थी।

(४) उत्तर दिशा में – यहाँ गुरु गोरक्षनाथ जी ने नौ दुर्गा के रुप में नव बालिका (जिनकी आयु ५ वर्ष से १० वर्ष तक हो) पूजन बाला सुन्दरी के रुप में योगमाया पूजन पद्धति प्रारम्भ की थी।

इस प्रकार चारों दिशाओं में नारी या शक्ति को सम्मान करके पूजा करने की यह विधि परम्परा अब नहीं रहीं क्योंकि नाथ सम्प्रदाय योग साधना मर्यादा के कारण यह प्रथा बन्द हो गयी।



नारी या बालिका पूजन

(२६) विशाल भण्डारा (आठमान भण्डारा)

इस प्रकार समाधि विधि, तिया विधि, हरड़ पूजन और योगमाया अर्थात् शंखढाल रात्रि का पूजन होने के पश्चात् दूसरे दिन नियोजित विधि से आठमान भण्डारा को साकार करते हैं। मृतात्मा की मूर्ति समाधि स्थान पर प्रतिष्ठान करते हैं। मृतात्मा के प्रतिष्ठा, सिद्धियाँ, कर्मयोग, ध्यान ज्ञान योग आदि विशेषताओं को विचाराधीन करके शिष्य भक्त एवं सम्प्रदाय के इच्छानुरुप वहाँ मन्दिर का भी निर्माण करते हैं।

मूर्ति प्रतिष्ठा के विशेष अवसर पर सम्प्रदायिक सतनाथ पंथ के योगेश्वर मूर्ति की प्रतिष्ठा पूजन अभ्यंग अभिषेक किया जाता है तथा यज्ञ-हवन विधि आदि नाथ सम्प्रदाय के परम्परानुसार विधि विधान से किया जाता है।

(क) रस्म गद्दी

अत: मृतात्मा योगेश्वर अगर पीर पदवी के होंगे तो उनके योग्य, चरित्र सम्पन्न शिष्य को भी योगी सम्प्रदाय के मान्यवर अधिकारी तथा आठ अलग अलग क्षेत्र के आठ पीरजी तथा महन्तों और अन्य नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वर एवं गाँव पंचायत मिलकर उसे पीर बनाते हैं। मृतात्मा पीरजी के कोई शिष्य ना हो या योग्य शिष्य नहीं होवे तो नाथ सम्प्रदाय अर्थात् योगी महासभा उसी मृतात्मा के पंथ के योग्य योगेश्वर की नियुक्ति करके उसे पीर या महन्त बनाया जाता है और उसकी रस्मगद्दी विधि करते हैं। यहाँ नियुक्त किया हुआ, महन्त या पीर बनने वाले शिष्य को मठाधिपति भी कहा जाता है। उसी प्रकार नाथ सम्प्रदाय का बारह पन्थ के बारह पीर प्रत्येक पंथ की पीरी या मत्था टेक इत्यादि कहा जाता है। ऐसे पद ग्रहण करने वाला योगेश्वर,

सर्वसिद्ध, मर्यादा का पालन करने वाला, योग युक्तिवादी, निरोगी, सशक्त सर्वसमदर्शी मित्र और मधुर भाषी, सत्यप्रिय निरपक्षपाती आसन, आहार, निद्रा में दृढ़, धर्मज्ञ, पवित्र आचार-विचार, सनातन विचारी, साधू सन्त सिद्ध नाथों में, गुरु महन्त पीरों में योग्य भाव श्रद्धावान, सुलक्षणी, सुगुणी, साम दाम दण्ड युक्त इत्यादि सर्व गुण सम्पन्न होना आवश्यक है।

अत: ऐसे गुण सम्पन्न नियुक्त किये हुये शिष्य या योगेश्वर को सर्वाधिकार देकर पीरजी के राज सिंहासन पर बिठाते हैं।

मृतात्मा के स्थान नाथ सम्प्रदायक १२ पन्थों में से किसी पंथाई के सिर मत्था टेक की गद्दी हो या उनकी अपनी रुढ़ी परम्परा हो तो वहां पात्र देवता भी स्थापना करते हैं जो ढाई घण्टे की पात्र देवता की स्थापना करते हैं।

(ख) अभिषेक पूजन

अत: पूरा स्थान मकान या टिल्ला इन दिनों बहुत सजाया जाता है। आम्र पत्तों, मालाओं तथा सुन्दर रोशनी से अत्यंत सुन्दर सुशोभित करते हैं। भावी पीरजी के लिये बढ़िया सिंहासन, छत्र चँवरादि सब तैयारी करते हैं। अत: नियुक्त पीरजी को सिंहासन पर बिठाकर उनके गोद में पात्र देवता रखते हैं और पात्र देवता का तथा पीरजी का पूजन करते हैं। पूजन, अभिषेक जिस प्रकार राज्याभिषेक करते हैं वैसे अभिषेक करते हैं राज केशर तिलक, भेंट पूजा, पुष्प वर्षा व जलामृत वर्षा आदि विधि विधान शाबर मन्त्रोच्चार से होता है।

[पात्र देवता = यह एक नाथ सिद्धों की इष्ट देवता मानते हैं। पूर्व काल में राजा परशुरामजी को गोरक्षनाथ जी ने पापक्षालन के लिये पात्रदेवता रोटक व्रत दिया था इसका पूर्ण विवरण श्रीनाथ रहस्य ग्रंथ

खण्ड -३ में पृष्ट सं० ५३८ विस्तृत रुप से किया है।]

इस समय सभी मानधारी तथा अष्ट पीरजी प्रथम नये पीरजी को चादर ओढ़ाते हैं और दान दक्षिणा या चढ़ावा चढ़ाते हैं। फिर नाथ सम्प्रदाय की जमात रमतो के १८-१२ के महन्त और बाद में महन्त गद्दी धारी आश्रम मठाधीश अपने प्रतिष्ठा अनुरुप नये पीरजी को चादर ओढ़ाकर चढ़ावा देकर तथा आदेश कराके सम्मानित करते हैं और भी आये हुये नाथ सम्प्रदाय के योगेश्वर भी कोई कोई चादर ओढ़ाते हैं तो कोई दान चढ़ावा करते हैं। नादि आदेश करके नये पीरजी को बधाई देते हैं। गाँव वाले, पंचायती शिष्य, भक्त, सेवक भी अपने अपने इच्छानुरुप नये पीरजी को सम्मानित करते हैं सभी जय जय कार करते हैं।

अत: वह पात्र देवता ढाई घण्टे गोद में रखते हुये उपरोक्त सभी कार्यक्रम होने के पश्चात् पात्र देवता को रोट का भोग लगाकर अर्थात् मुक्ता कराकर पात्र देवता उठाई जाती है और नियोजित स्थान पर रखकर नित्य दिन पूजा आरती करते हैं।

[इतरत्र स्थानों में केवल पीरजी का अभिषेक होता है।]

यह स्थानीय पंख आवाज देकर चादर और चढ़ाने वाले योगेश्वर का नाम गुरु का नाम, पंथ, स्थान तथा कितना दान दिया आदि का विवरण आवाज देकर सभी को कहता है। रजिस्टर में उनकी नोट होती रहती है। इसप्रकार सभी की ऐसी ही नोट होती है।

(ग) भोज (प्रीती भोजन) भण्डारा

अन्त में रोट मुक्ता के बाद पंख सभी पीर महन्त योगेश्वरों को हाँक लगाकर **"पंगत हरी हर हाजिर हो"** आदि कहते हैं, नागफनी बजती है। रमतों के महन्त, १८-१२ के महन्तों तथा योगेश्वरों को भी हाँक लगाते हैं तथा नागफनी बजते ही सभी योगेश्वर भोज भण्डार में पंगत लगात

हैं। भोजन अत्यंत स्वादिष्ट, मिष्ठान तथा सभी प्रकार से सन्तुष्ट करने वाला बनाते हैं। वहां भोजन पंगत में सभी योगेश्वरों को चिप्पी बांटते हैं। वस्त्रदान करते हैं, धातु, सोना, चांदी (उदाहरण सोना-चांदी के कुण्डल या नादि पवित्री) इत्यादि दान रुप में बांटते हैं। यहाँ पात्र देवता को चढ़ी हुयी सभी दान पूजा को गिनकर सभी योगेश्वर अर्थात् भेष भगवान को सम भाग में बांटा जाता है और यह नियम सभी स्थानों पीठों में मढ़ी, टिल्ला, शक्ति पीठ जहां जहां पात्र देवता स्थापना होती है वहां वहां पात्र देवता की पूजा सभी नाथ योगेश्वरों में सम प्रमाण में बांटी जाती है। यह अखिल भारतवर्षीय नाथ सम्प्रदाय के भेष भगवान की मर्यादा है।

(घ) बिदाई

इस प्रकार सभी योगेश्वर योगी महा सभा के मानधारी, सभापति, उपसभापति, महामन्त्री तथा सदस्य, पीरों, महन्त, मठाधीश, टिल्लाधीश, स्थान अध्यक्ष, कोठारी, भण्डारियों, पुजारियों और अन्य नाथ योगेश्वरों को रहना, खान पान तथा दान आदि करके सबको विदाई देते हैं और अन्त में सभी योगेश्वर अपने अपने स्थानों में सुख सन्तोष से वापसी आते हैं।

(ङ) कुछ नियम

(१) नाथ सम्प्रदायी सभी साधु सन्त नाथ सिद्धों को तथा अन्य सम्प्रदाय को भी आमन्त्रित करना चाहिये।

(२) सभी के अपने अपने अधिकार पद प्रतिष्ठा इत्यादि के अनुरुप यथा योग्य मान सम्मान देना तथा लेना चाहिये।

(३) पूजन, भोजन चिप्पी बिदाई सभी कार्य एक दूसरे के सहयोग से करना चाहिये।

पंचम रहस्य

(२७) मोक्ष-मुक्ति

कहते हैं कि यह सृष्टि, यह संसार का उत्पादन अथ निर्माण ऊँकार से हुआ है। कोई कहते हैं कि यह संसार शिव-शक्ति ने बनाया है। तो कोई बताते हैं कि सृष्टि का निर्माता परमपिता ब्रह्माजी है, तो कोई कहते हैं सृष्टि का कर्ता रचयिता भगवान विष्णुजी हैं। कोई कहते हैं गणेशजी ने सृष्टि का सुस्वागतम प्रारंभ किया, आदि अनन्त विचार हैं। इसी प्रकार कहने वाले बताते हैं कि इस जगत सृष्टि को बनाने वाला कोई महा ईश्वर है, विधाता है, तो कोई कहता है वह एक परमतत्व है। कोई सुनाते हैं यह पांच तत्व का गोला है, पिण्ड, ब्रह्माण्ड आदि है। वास्तव में सत्य को कोई नहीं जानता और ना ही कोई कह सकता है कि इस सृजन सृष्टि की उत्पत्ति कब हुयी, कैसे हुयी, क्यों हुयी या किसने बनायी? या यह स्वयं होकर आयी है या इसका कोई निर्माता भी है। इसका मूल क्या है, कौन सा बीज है, इसका विस्तार कैसे हुआ, आखिर इस सृष्टि की क्या महिमा है? सत्य क्या है कोई भी नहीं जानता और नाही कोई कुछ कह सकता है।

वेद, शास्त्र, पुराण, ग्रंथ, नर-नारी, देवी-देवता, सुर-असुर, ज्ञानी-ध्यानी, साधु-सन्त सभी इस सत्य को ढूंढ रहे हैं, खोज रहे हैं। अभी तक नहीं मिला, जो भी मिला, समझा, जाना वह अपने अपने अनुभवों के अनुरुप, अनुमान ही मिला, तर्क मिले, वितर्क मिले जो भी खोजने जाता है वह इस विशाल विस्तृत में ही खो जाता है।

लेकिन एक सत्य अनुमान अवश्य मिला और वह है कर्म, जब सृष्टि का जन्म हुआ तो तत्क्षण साथ-साथ कर्म का भी जन्म हुआ, सृष्टि की उत्पति यही उसका कर्म रुप जन्म है। वह परिवर्तन बदलना,

बढ़ना, घटना आदि प्रकृति परावर्तित सृष्टि कर्म प्रधान है। कर्म प्रणेता है और इस कर्म प्रणाली रुप-रेखानुसार जब जीव जन्म लेता है, तो उसका काया शरीर एवं प्रकृति, गुण-धर्म से भूख प्यास, शीत-उष्ण, सुख-दु:ख आदि तत्वों को साथ ले जन्मा है। अत: भूख प्यास मिटाने के लिये, शीत उष्ण से बचने के लिये अर्थात् अपने सुख प्राप्ति एवं दु:ख निवारण के लिये उस जीव को कुछ न कुछ कर्म करना ही पड़ता है। जीव की इच्छा हो ना हो उसे कर्म करना ही पड़ता है कर्म किये बिना किसी का भी छुटकारा नहीं है।

ऐसे प्राकृतिक गुण विशेष में बन्धे हुये होने के कारण कर्म करना (कर्म बन्धन) विवशता हो गयी और कर्म करना है तो उसके फलों का भोग भोगना भी विवशता वत है। अर्थात् किये गये कर्म का भोग भोगना ही पड़ेगा शुभाशुभ कर्म के फल भी शुभाशुभ होते हैं ऐसे कर्म फल दो प्रकार के हैं-

(१) इह लौकिक कर्म फल = यह कर्म फल आहार व्यवहार से उदित होता है। जो शुद्ध सात्विक आहार एवं सद्व्यवहार करते हैं उन्हें फल स्वरुप सुखी जीवन प्राप्त होता है। तथा जो दूषित आहार एवं निकृष्ट व्यवहार कर्म करते हैं वह फल स्वरुप रोग, बीमारी, अशान्ति, अपयश तथा दु:ख को प्राप्त होते हैं।

(२) परलौकिक कर्म फल = यह कर्म फल व्यक्ति के धर्म-संस्कृति आचार विचार पर आधारित होता है। अत: शुभ आचरण सात्विक वृत्ति अर्थात् महादान-पुण्य संचय सेवा धर्मानुरागी, भगवत भजन आदि करने वालों को अगले जन्म में सुखी जीवन-सुख सम्पदा प्राप्त होती है। या स्वर्ग में दिव्य भोगों की प्राप्ति होती है इसी प्रकार निकृष्ट आचरण, अधर्म, कूट, कपट, हिंसा आदि करने से अगले जन्म में महारोगी, दरिद्रता, कुपुत्र आदि दु:खी कष्टी जीवन के फल प्राप्त

होते हैं। या निकृष्ट, कूकर, सूकर आदि अधम योनियों में जाकर नरक यातनायें भोगनी पड़ती है। अर्थात् किये कर्म चाहे अच्छे हों या बुरे हों चाहे इस जन्म में या आगामी जन्म में स्वर्ग में या नरक में कर्मों के फल भोगने ही पड़ते हैं।

मुख्यतः भोगयोनियाँ तीन प्रकार की मानते हैं:-

(१) स्वर्ग (देवयोनि), (२) मृत्यु (मनुष्य योनि), (३) पाताल (अधम योनि)

(१) स्वर्ग (देवयोनि)- यह सूक्ष्म योनि है यह स्वर्ग से लेकर ब्रह्मलोक तक अनन्त योजन फैला हुआ है। यहां केवल भोगयोनि है, जहां महान-श्रेष्ठ-सात्विक आचरण-पुण्य संचय के फलों का दिव्यानन्द भोगने के लिये प्राणी आते हैं और जब तक पुण्य संचय है उतने भोग भोगने पर पुनः मृत्युलोक में जन्म लेते हैं और मनुष्य योनि में आकर पुनः नये कर्म करने लगते हैं।

(२) मृत्युलोक (मनुष्य योनि) - यह स्थूल रुप में हमारी धरती पर भोग भूमि या कर्म भूमि रुप में माना जाता है। यहाँ कर्मानुसार इच्छानुसार पुनः पुनः जन्म लेते हैं और नये-पुराने सभी कर्म के भोग भोगते हैं। जो भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों में जन्म जन्मान्तर कर्म करते रहते हैं और भोग भोगते रहते हैं।

(३) पाताल लोक (अधम योनि) - यह भोग योनि या भोग भूमि कहते हैं जो स्थूल और सूक्ष्म रुप में विद्यमान होती है। अत्यंत घृणित कर्म-पापाचारी कर्म के प्राणी यहां अधम योनि पशु पक्षी जलचर सर्प आदि योनि में आकर नरक यातनाऐं भोगते हैं। पाप संचयानुसार भोग भोगने पर मनुष्य योनि में जन्म लेकर नये कर्म करते हैं और इस प्रकार कर्म और फल भोगना पुनः पुनः जन्म लेना पुनः पुनः नये कर्म करना इसी को आवागमन-जन्म मृत्यु का भव सागर - माया चक्र आदि कहते

हैं। अत: बस कर्म किये जाओ और फल भोगे जाओ इस कर्म चक्र को कर्म बन्धन संसार सागर-भवसागर-मायासागर आवागमन आदि कहा गया है।

अत: ऐसे कर्म बन्धन का यह चक्र चलता ही रहेगा अर्थात् कर्म भोग जन्म मरण चलता ही रहेगा। अत: इसका कोई अन्त नहीं होगा। इस कर्म बन्धन चक्र से छुटने के लिये, इस जटिल समस्या से इस दुस्तर संसार चक्र जन्म मरण से अर्थात् इस आवागमन से इस कर्म बन्धन से छुटकारा पाने के लिये, इसके परे जाने के लिये अपने धर्म ग्रंथ अध्यात्मिक सिद्धान्त तथा साधु सन्तों ने एक मार्ग, एक निष्कर्ष, एक सिद्धान्त एक उपाय का निर्माण किया और वह है मोक्ष, वह है मुक्ति-

(क) मोक्ष-मुक्ति के मार्ग

ऐसे कर्मबन्धन-आवागमन से मुक्त होने के लिये निम्न प्रकार की साधना है।

(१) निष्काम कर्म

(२) श्री मद् भगवद् या परमात्मा भक्ति

(३) त्याग-वैराग्य-तपस्या (तन्त्र-मन्त्र आदि) उपासना

(४) योग साधना-वैराग्य-आत्मज्ञान

मोक्ष मुक्ति के लिये वैराग्य-योग साधना द्वारा आत्मज्ञान तथा भगवत् भक्ति यह सर्व श्रेष्ठ अत: उत्तम साधन है तथा निस्वार्थ अर्थात् निष्काम कर्म यह अत्यन्त सरल साधन है। त्याग वैराग्य तपस्या योग साधना आत्मज्ञान आदि से मुक्ति प्राप्ति के लिये जीवन के सभी सुख ऐश्वर्य एवं संसार की सभी सुख सम्पदा को त्यागना पड़ता है और तीव्र वैराग्य एवं सन्यास लेना पड़ता है। यह सर्वसाधारण प्राणी के लिये अतिषय दुस्तर है, कठिन है, कोई कोई विरला ही इस मार्ग पर चलने

का साहस करता है।

अत: सर्व साधारण प्राणी के लिये भी ऐसे मोक्ष मार्ग की आवश्यकता है कि जो संसारिक सुखों का त्याग किये बिना या सर्व सुखों को उपभोग करते हुये जीव कर्म बन्धन से मुक्ति प्राप्त कर सके। अत: ऐसे प्राणियों के लिये निष्काम कर्म सर्वोत्कृष्ट मार्ग है और यह निष्काम-निस्वार्थ कर्म निम्न प्रकार से कर सकते हैं। (१) फल की अपेक्षा किये बिना कर्म करना, (२) अहंकार मिटाकर कर्म करना, (३) सब कर्ता धर्ता परमात्मा या प्रकृति है यह भावना रखते हुये कर्म करना, (४) समस्त कर्म को करते हुये परमात्मा ईश्वर या अपने इष्ट को समर्पण करना, या (५) द्रष्टा होकर कर्म करना उसमें लिप्त लिपायमान आसक्त नहीं होना।

निष्कर्म का सार = मनुष्य प्राणी कर्म करते हुये ही अनेक वर्ष जीने की इच्छा करे किन्तु उन कर्मों से अवश्य बचे जिनका सम्बन्ध कर्म बन्धन-आवागमन से हो, अर्थात् जीव ऐसे कर्म नहीं करे जिससे पुन: पुन: जन्म लेना पड़े अत: किये गये कर्म का भोग भोगने के पश्चात् जब नये जन्म दाता कर्म किये ही न जायेंगे तो उसे मोक्ष की प्राप्ति अवश्य होगी।

सारांश = प्राणी इच्छा, कामना तथा वासनाओं का त्याग करके कर्म करने से आवगमन में नहीं फँसता और वह मोक्ष मार्ग की ओर जाता है।

(ख) मोक्ष मुक्ति-एक विवेचन

हर प्राणी चाहता है केवल सुख। किन्तु जब तक दु:ख निवृत्ति नहीं होती सुख नहीं मिलता। अत: दु:ख की निवृत्ति कैसे हो इसके लिये अनेकों धार्मिक ग्रंथ, पुराण, वेद, सत्संग, ज्ञान योग, उपासना आदि का

विस्तार हुआ। सन्त, महात्मा, ऋषि, मुनियों ने दु:ख निवृत्ति के अनेक उपाय बताये हैं। अत: प्रचार करते हैं। अत: सुख प्राप्ति या दु:ख निवृत्ति के अनेक भिन्न-भिन्न मार्ग हैं किन्तु सभी मार्ग अन्त में मोक्ष मुक्ति की तरफ ही ले जाते हैं। अर्थात् अति उत्तम कहो या सर्वोत्कृष्ट कहो या सत्य या शाश्वत सुख की प्राप्ति कहो या दु:ख का समूल-नाश, इसको मोक्ष कहते हैं। अत: मोक्ष मुक्ति के कुछ महापुरुषों ने अपने सिद्धान्त बताये हैं-

महर्षि वेद व्यासजी ने ईश्वरोपासना को ही मुक्ति कहा है और उसे परमानन्द प्राप्ति कहा है।

जैमिनी धर्मानुष्ठान को मुक्ति कहते हैं जिसे स्वर्ग सुख कहते हैं।

कपिल मुनिजी ने २५ तत्वों (प्रकृति-पुरुष) के विवेक को मुक्ति कहा है जिसे वह दु:ख निवृति कहते हैं।

गौतम ऋषि ने प्रमेय, प्रमाण, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, छल, जाति निग्रह आदि सोलह तत्व ज्ञान से मुक्ति कही है उसे वह अपवर्ग कहते हैं।

पतन्जली जी चित्त वृत्ति-निरोध को मुक्ति कहते हैं। जिसे वह कैवल्यानन्द कहते हैं।

इसी प्रकार और भी सिद्धान्त बताये गये हैं जिन्हें मुक्ति, अमृतत्व, ब्रह्मप्राप्ति, परमपद, निर्वाण पद इत्यादि नाम दिये गये।

हमारे नाथ सिद्ध सम्प्रदाय में, मुक्ति का मार्ग अत्यंत सरल है, सहज तथा अनुकरणीय है। उपरोक्त साधना सिद्धान्तों के अनुसार चाहे दु:ख का निर्मूलन कहो अथवा दु:ख का नाश कहो या चाहे सुख की प्राप्ति कहो या आनन्द की प्राप्ति कहो, है तो दोनों में ही अटकना या फँसना, चाहे पापों को कटावो चाहे पुण्य कमाओ है तो उसमें अटकना

या फँसना। कहो तो यह कैसी मुक्ति हो सकती है। हमारे नाथ सिद्ध सिद्धान्त तो कहते हैं। **"अवधु योगी पाप पुन्य से न्यारा रहे"** अर्थात् मुक्त वही होता है जो पाप पुण्य से न्यारा है, अर्थात् वह सुख-दु:ख से परे हो अर्थात् वह दुनियाँ के समस्त माया जगत में न पुण्य में आसक्ति करे ना पापों को धोये वह ना सुख चाहता है ना दु:ख दोनों हाँ-ना में वह एक द्रष्टा बने, साक्षी बने, दार्शनिक बने अर्थात् वह दोनों के परे हो जाये और यही मुक्ति का सक्षम मार्ग है। इसके लिये उसे निस्वार्थ होना निष्काम होना, कर्म करते हुये ही विरक्त होना, तटस्थ होना, द्रष्टा होना अनिवार्य है। अर्थात् जल में होते हुये भी जल नहीं पीना-इसके संयम, आत्म प्रशिक्षण, विवेक, आत्मनिर्भयता, इष्ट के प्रति समर्पण आदि गुणों की आवश्यकता है। और यह सब जीवन जीने के अनुभवों द्वारा, उसके ज्ञान द्वारा सत्य को ढूंढते हुए करना चाहिये। अब सहज भाव से बताते हैं कि प्रथम बुराई त्यागो अच्छाई अपने आप आयेगी फिर अन्त में अच्छाई को भी त्यागो, विरक्ति आयेगी, फिर विरक्ति को भी त्यागो ज्ञान हो जायेगा और इसे भी त्यागो मुक्ति आयेगी मुक्ति वह है जहां हम जाकर हम या मैं का भाव भी विलीन होना है। मुक्ति में जाकर मुक्ति ही हो जाना है।

जैसे पानी में मिल के पानी अन्जाम उसका पानी। सागर में नदी मिले तो वो भी सागर हो जाती है। इसी को कहते हैं मुक्ति। इस प्रकार हमारे नाथ सम्प्रदाय में ॐकार आदिनाथजी से लेकर मत्स्येन्द्रनाथजी -गोरक्षनाथजी..... इत्यादि नवनाथ से चौरासी सिद्ध से अनन्त कोट सिद्ध होते हुये आज तक सिद्धों ने अपने अपने अनुभव तथा साधना प्रणालियों के द्वारा मुक्ति का मार्ग दर्शाया है। चाहे वह योग प्रणाली हो, चाहे साधना हो, चाहे उपासना, चाहे गुरु भक्ति, चाहे तंत्र मंत्र कर्म काण्ड हो, चाहे आत्मज्ञान कहो, चाहे घोर अघोर कहो, चाहे

सात्विक, चाहे कापालिक हो सभी का एक ही उद्देश्य होता है और वह है मुक्ति मोक्ष। अत: हमारे नाथ सिद्धों के कुछ मुक्ति मार्ग के सिद्धान्त दिये हैं-

(१) शब्द - गुरु शब्द - गुरु शिष्य प्रणाली

(२) आत्मज्ञान - योग साधना प्रणाली इसमें ज्ञान योग, लय योग, नाद योग, ध्यान योग, कुण्डलिनी योग, भक्ति योग आदि जो सभी योग एक दूसरे से जुड़े हुये हैं।

(३) उपासना - निष्काम सेवा, मन्त्र तन्त्र, कर्मकाण्ड जनमानस की सिद्धियों द्वारा निष्काम सेवा इत्यादि।

अत: चाहे इहलोक हो या चाहे परलोक हो सतगुरु बिना उद्धार नहीं होता है। चाहे तुम कितना ही सतसंग करो, भक्ति करो, निष्काम कर्म करो या अनुकरण करके साधना करो या ग्रंथ पुराण पढ़ो, जब तक गुरु कृपा नहीं होती यह सब निष्फल है बिना फलों का वृक्ष है।

(१) शब्द - सतगुरु शब्द - गुरु का शिष्य होना अनिवार्य है। शिष्यत्व की पूर्णता होने पर ही वह शिष्य गुरु पद प्राप्त कर सकता है अर्थात् बिना गुरु तुम गुरु नहीं बन सकते।

गुरु अर्थात् ज्ञान, सत्य, शाश्वत आदि। शिष्य अर्थात् अज्ञान, असत्य, अशाश्वत आदि। गुरु शिष्य को अर्थात् ज्ञानी अज्ञानी को ज्ञानी, असत्य को सत्य, अशाश्वत को शाश्वत बनाता है तब वह सत्य-शाश्वत-ज्ञान को प्राप्त हुआ शिष्य इस माया जगत में तरकर मुक्ति को प्राप्त होता है। अर्थात् यहां गुरु ही ज्ञान, गुरु ही मुक्ति है, गुरु ही सत्य है। यहां शिष्य को मुक्ति की प्राप्ति उस शिष्य के समर्पण, गुरु भक्ति-सेवा आदि गुणों पर निर्भर होती है।

(२) आत्म ज्ञान - पूर्वजों ने कहा है कि ज्ञान के सिवाय मुक्ति

नहीं मिलती। जिसे सत्य, शाश्वत, निरंजन, निराकार, निर्विकार आदि स्वरुप में जाना जाता है। दु:ख का मूल अज्ञान ही है। अत: अज्ञान का परदा हटते ही ज्ञान द्वारा सुख-आनन्द और मुक्ति मोक्ष की प्राप्ति होती है और अज्ञान को नष्ट कर ज्ञान को प्राप्त करना अर्थात् अन्धकार हटा कर प्रकाश दिलाना इसे सतगुरु कहते हैं। (गु = अन्धकार, रु = प्रकाश) अत: सतगुरु प्राप्ति ही मोक्ष-मुक्ति की प्राप्ति है। यह नाथ सिद्धान्त है। अत: सद्गुरु जी अपने सतसंग साधना-विवेक-कर्मकाण्ड-ध्यान ज्ञान आदि मार्गदर्शन करते हुये शिष्य को मुक्ति पथ पर ले जाते हैं।

साधना - अपने विश्वास पात्र शिष्य को सद्गुरु सूर्य नमस्कार से लेकर

यमनियम - सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, क्षमा, धृति, दया ऋजुता (सरलता), युक्ताहार, निर्भयता

योगासन - स्वास्तिक, गोमुख, वीर, कूर्म, कुक्कुटा, उत्तान, कर्मा, धनुरासन, मत्स्येन्द्र, पश्चिमो, मयूर, शवासन, सिद्ध पद्मा, भद्रा, गोरक्षा इत्यादि अनेकों आसनों का अभ्यास

षटकर्म - धौति, वस्ति, नेति, त्राटक, नौलि, कपालभाति, गजकर्णी का अभ्यास

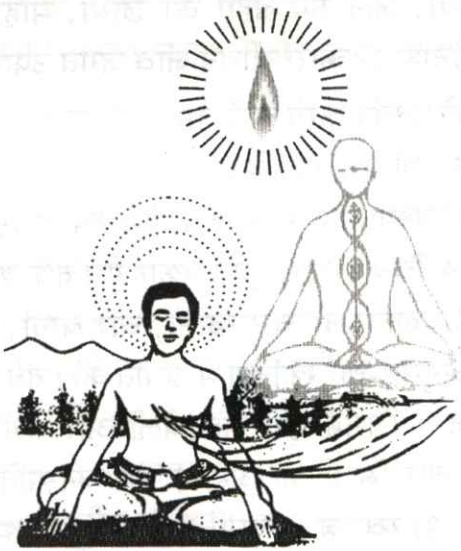
प्राणायाम - कुम्भक भेद - सूर्य भेदन, उज्जायी, सीत्कारी, शीतली, भस्त्रिका, भ्रामरी, मूर्च्छा, प्लाविनी इत्यादि।

मुद्रा तथा बन्ध - महा मुद्रा, महा बन्ध, महावेध, खेचरी, उड्डीयान, मूलबन्ध, जालन्धर बन्ध, विपरीत करनी, बज्रोंली मुद्रा, सहजोली, अमरोली, शक्ति चालन मुद्रा आदि मुद्राओं तथा बन्ध अभ्यास ध्यान, धारणा, समाधि तथा लय योग, नाद योग, इत्यादि प्रक्रियाओं का निरन्तर अभ्यास सिखाते हैं यहां शिष्य की योग्यता पर निर्भर है। शिष्य उपरोक्त आसन प्राणायाम ... आदि का अभ्यास तथा उपदेश अनुवर्ती

होकर ऋद्धि सिद्धियों को प्राप्त करता है और त्याग वैराग्य तथा परिपक्व योग साधना जो ध्यान-धारणा-समाधि-आगे उत्तरोत्तर प्रगति होने पर निर्विकल्प समाधि-साम्प्रत समाधि-हंस- परमहंस तथा अन्त में शून्य समाधि जो निरन्जन-निराकार-निर्विकार होती है।

इस शून्य निरन्जन निराकार समाधि साधना काल में उन्हें आत्मदर्शन-आत्मानुभुति-साक्षात्कार होकर सत्य का ज्ञान होता है। इस अवस्था में वह मृत्यु पर भी विजय पा लेता है। मृत्यु से वह डरता नहीं अपितु मृत्यु के समय वह स्वेच्छा से स्थूल शरीर का त्याग करके सत्य ज्ञान द्वारा मोक्ष मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

इस प्रकार सतगुरुजी अपने शिष्य (साधक) को साधना काल में साधना के साथ-साथ ज्ञानामृत का पान भी कराते हैं। स्थूल जगत सूक्ष्म तथा कारण, द्वैत, अद्वैत, सृजन, सृष्टि, उत्पति, स्थिति तथा लय और ब्रह्माण्डीय ज्ञान विज्ञान इत्यादि ज्ञान द्वारा से शिष्य को पूर्णता प्राप्त करवाते हैं।



योग द्वारा आत्मा मुक्ति की ओर

(२८) नाथ सिद्धों का सृष्टि सृजन सिद्धान्त

हमारे नाथ सिद्ध सम्प्रदाय के सिद्धान्त के अनुसार यह सृजन सृष्टि की उत्पति सर्व प्रथम (शब्द अनहद) "ॐ" कार स्वरुप नाद से हुयी है। जिसमें रज-सत-तम जैसे त्रिगुण (प्रणव) विद्यमान हैं। अर्थात् ॐकार स्वरुपी आदिनाथ जी जो नाथ सम्प्रदाय के आदिगुरु माने जाते हैं। वह परम ईश्वरीय सत्ता हैं। इन्होंने रज स्वरुपी ब्रह्माजी (सत्यनाथजी) सत्य स्वरुपी विष्णुजी (सन्तोषनाथजी) और तम स्वरुपी रुद्रजी (रुद्रनाथजी) का प्रागट्य किया। अतः ॐकार से आकाश तत्व, आकाश से वायु तत्व, वायु से तेज तत्व, तेज से जलतत्व, जल से पृथ्वी तत्वों का निर्माण होकर इस पृथ्वी (धरा) पर सृजन उत्पति होने लगी और इस ब्रह्माण्ड में सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र, असंख्य तारामण्डल तथा जड़चेतन जीव जन्तु प्राणी आदि का विस्तार हुआ। सिद्धों में कहते हैं **आकाश रुप नाद ॐकारा, पवन रुप ईश्वर की काया, तेज रुप विष्णन की माया, जल रुप ब्रह्मा की छाया, महि रुप शक्ति लाया। कृपाऽदीनाथ ॐकारा जीवन जीव जगत उपाया।**

इस सृष्टि को उत्पति करने वाले उस परम ईश्वर ने सृष्टि उत्पति के साथ शक्ति का भी प्रादुर्भाव किया। जो प्रथम निजा शक्ति, फिर परा शक्ति-अपरा सूक्ष्म और कुण्डलिनी, ऐसे रुप अवस्था में शक्ति स्वरुपा का प्रागट्य किया। अतः इस ॐकार गुण तथा शक्ति स्वरुपा सहाय से रजोरुपी ब्रह्माजी ने **"चार खानी, चार बानी, चन्दा सूरज पवन पानी"** के अनुसार चार खानियों में उत्पति की। तब इस भूमि पर प्रथम **(१) उद्विज** = जिसमें वृक्ष लता बेली और सभी प्रकार की वनस्पति अर्थात् नाथ सिद्धों की अठारह भार वनस्पतियाँ अंकुरित हुयीं। तद्पश्चात **(२) स्वेदज** = जिसमें असंख्य सूक्ष्म तथा स्थूल रुपी कृमि, जूं, दीमक आदि का निर्माण होने लगा उसके बाद **(३) अण्डज**

= जिसमें पंछी, सर्पादिक जो अण्ड से जन्म लेने वाले जीव जन्तु उत्पन्न होने लगे और बाद में **(४) पिण्डज** = जो नर नारी तथा पशुओं को जो गर्भ पिण्ड रुप में जन्म लेता है उन्हें उत्पन्न किया। इस प्रकार से चार खानियों का प्रादुर्भाव होते हुये प्रथम महाकारण का प्रारम्भ हुआ। महाकारण से कारण बना, कारण से अति सूक्ष्म बना, अति सूक्ष्म से सूक्ष्म हुआ और सूक्ष्म से स्थूल अर्थात् स्थूल रुप में जीव प्रगट हुआ। अतः जब स्थूल रुप में मनुष्य की निर्मिति हुयी तब भी कारण रुप में परमात्मा (परमतत्व) तो सूक्ष्म रुप में उसका आत्मा एवं स्थूल स्वरुप में जीवात्मा अर्थात् जीव (शरीर) जिसमें प्राकृतिक ॐकार के रज, सत, तम, रुपी गुण विद्यमान हैं। जिनका मूल ॐकार आदिनाथजी जो मनुष्य के शीश में (सहस्रागार चक्र) में स्थित है। इसे हम परम ईश्वरीय सत्ता भी कहते हैं। इस सत्ता से रज रुपी ब्रह्माजी जो लिंगस्थान (स्वाधिष्ठान चक्र) में विद्यमान हैं और सत्व रुपी विष्णुजी जो नाभि स्थान में (मनीपूर चक्र) में विराजमान हैं एवं तम रुपी रुद्रनाथजी मनुष्य के हृदय (अनहद चक्र) में ज्ञान रुपी जती गोरक्षनाथजी मनुष्य के शीश (सहस्रागार चक्र) में अपने शक्ति सह विराजमान हैं।

इस प्रकार कारण-सूक्ष्म-स्थूल अर्थात् परमात्मा-आत्मा तथा जीव इस पृथ्वी पर प्रगट होते समय कारण स्वरुपी परमात्मा जो परमईश्वरीय सत्ता इस सृष्टि ब्रह्माण्ड में सर्वत्र कण कण में व्यापक रुप में विराजमान हैं जो निर्गुण निराकार है अतः कारण-महाकारण रुपी परमात्मा सूक्ष्म-अति सूक्ष्म रुप में परिवर्तित होने के लिये सर्वत्र क्रियाशील परमशक्ति या आद्यशक्ति सृष्टि में अनु, रेनु एवं परमाणु रुप में प्राकृतिक शक्ति रुप में निर्माण होने लगी तब सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश स्फुरन हुआ और इस प्रकाश रुपी ब्रह्माण्डीय या प्राकृतिक पंच तत्वों के आकर्षण विकर्षण क्रिया होने से एक प्राकृतिक चुम्बकीय ऊर्जा का निर्माण हुआ। इस

तजोमय अनन्त प्रकाशीय पृथकरण ऊर्जा से परमतत्व परमात्मा प्रगट होने लगा। जिसमे ॐकार प्रणव के सत (सत्य) रुप में आत्मा जिसका पीला रंग स्फुरण हुआ। राजस गुण से मन बना जिसका नीला रंग स्फुरण हुआ तथा तामस गुण से चित्त (बुद्धि) हुआ जिसका लाल रंग निर्माण हुआ। अर्थात् यहाँ कारण शरीर से सूक्ष्म शरीर बनने लगा, अत: इस सूक्ष्म शरीर से इस परम ईश्वरीय या ब्रह्माण्डीय या प्राकृतिक ऊर्जा से तथा आकर्षणीय शक्ति से पीला-नीला-लाल इन रंगों के प्रकाशीय सूक्ष्म (कणों से) अणुओं से या इन बिन्दुओं द्वारा प्रकाश पुन्ज, या प्रकाश स्त्रोत या प्रकाश समूह या प्रकाश सन्च बनने लगे जो ज्योति स्वरुप को प्राप्त हुआ और यह सूक्ष्म शरीर (आत्मा रुप ज्योतिरुप) बना। अत: ज्योति स्वरुप आत्मा सूक्ष्म शरीर बनते ही कारण स्वरुपी परमात्मा अपनी त्रिगुणात्मक (रज, सत्व, तम) गुण सत्ता से ब्रह्माण्डीय, इन प्रकाश पुन्जों, ज्योतियों द्वारा आत्मा-मन-चित्त का स्थूल रुप में गतिमान (परावर्तित) होकर सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर दोनों (मिलकर) एकत्र होकर अर्थात् इनका योग होकर स्थूल शरीर प्रगट होता है और यही स्थूल शरीर गर्भ-पिण्ड से प्रगट होकर मानव जन्म ले लेता है। अर्थात् पंचतत्वादि गुण विशेष इन्द्रीय बनकर जन्म लेता है।

पूर्व प्रारम्भिक काल में सृष्टि सृजन जीव उत्पत्ति हुयी और प्रथमत: नर-नारी, हिंसक जंगली प्राणी (जानवर) जैसा था। अर्थात् उसका रहन सहन तथा खान पान विचार आदि जंगली प्राणी जैसा था। आगे आगे समय परिवर्तन अनुसार तथा जीवन यापन तथा आवश्यकता के अनुसार उनका बौद्धिक विकास (विचारों में परिवर्तन) तथा मानसिक विकास (संस्कारों का परिवर्तन एवं आत्मिक विकास) ऐसे बौद्धक, मानसिक और (साधना अर्थात् कर्म परिवर्तन) ऐसे बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक उत्तरोत्तर विकास होकर कर्म धर्म संस्कार बनते गये,

सुधरते गये तथा अविष्कार होते गये और इन संस्कारों कर्मो तथा उनके फलों से वह पुनः पुनः जन्म लेते रहें और मृत्यु को अपनाते रहें। इस प्रकार **"पुनरपी जनमम् पुनरपी मरनम्"** में संस्कारों में विकसित होकर मनुष्य (मानवता) जैसी सर्वोत्तम उपाधि को प्राप्त किया।

जन्मोजन्मी जैसे जैसे उच्चतम् संस्कार को वह प्राप्त होता गया वैसे वैसे वह उच्चतम अवस्थाओं में पहुँचता गया और यह सब प्राकृतिक ब्रह्माण्डिय उस परम ईश्वरीय सत्ता के अनुसार होता गया। जिसमें वह प्रथम, प्रथम पुरुष फिर उत्तम पुरुष (मानवता) तदपश्चात् महापुरुष (विद्वान, ऋषि, मुनि) तदनन्तर दिव्य पुरुष (योगी, महायोगी, नाथ-सिद्ध, साधु-सन्त) फिर सिद्ध पुरुष (परम योगी नाथ योगेश्वर) और आगे हंस-परमहंस-शून्य महाशून्य योगी तथा सर्वोच्च सतगुरुत्व महाज्ञानी योगियों की उच्चतम अवस्था में आ पहुँचा।

अतः इन उच्चतम अवस्थाओं में अनेक महात्माओं ने संस्कारों, विचारों, ज्ञान, विज्ञान, शास्त्र, विषेशतः योग साधनाओं में विशेष अविष्कार किया। जिनमें ऋषि, मुनि, मनिषियों, संन्यासी, त्यागी, तपस्वी तथा महायोगी थे। तब हमारे नाथ सिद्ध योगेश्वर जो कि नवनाथ चौरासी सिद्ध अनन्त कोटी सिद्धों ने मूलतः योग सिद्धान्त अपनाया और उसमें ब्रह्माण्ड-सृष्टि-जीव-जंतु-पिण्डादि विषयों में अपने यौगिक अनेक सिद्धान्त प्रस्थापित किये। विशेषतः श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथजी के योग साधना के अनुभव ज्ञान तथा योग सिद्धियों द्वारा अपने सत्य सनातन सिद्धान्तों को सिद्ध कर दिखाया। आगे गुरु-शिष्य परम्परा से यही ज्ञान, यही सिद्धान्त, यही योग प्रणाली उत्तरोत्तर बढ़ती गयी।

(क) पिण्ड ते ब्रह्माण्ड

अतः ऐसे पूर्वज सतगुरुजन तथा नाथ सिद्ध योगेश्वर एवं विशेषतः

गुरु गोरक्षनाथजी कहते हैं कि यह सृजन सृष्टि उत्पन्न करने वाले परम ईश्वर ने अपने अनन्त, अखण्ड, अपरिमित चमत्कार से इस सृष्टि में पिण्ड ते ब्रह्माण्ड और ब्रह्माण्ड ते पिण्ड की इतनी सुनिश्चित-संयमित और सत्य सनातन रचना की है कि उसे प्रकृति खुद स्वत: पिण्ड ब्रह्माण्ड में संयम तथा समतोल तथा संचालन करती रहती है।

अत: सृजन सृष्टि में सर्वप्रथम इन प्राथमिक निजा शक्ति उत्पन्न हुयी फिर परा-अपरा-सूक्ष्मा और कुण्डलिनी जैसे गुण शक्तियाँ उत्पन्न होकर उनके संयोग से सगुण साकार परमेश्वर के पिण्ड तथा परपिण्ड अवस्थायें उत्पन्न हुईं।

अत: परपिण्ड के गुण विशेष में-

(१) अपरम्पर गुण - जो शक्ति स्फुरण है जिसमें अकुलत्व, अनुपमत्व, अपरात्व, अमूर्त, अनुदय आदि गुण हैं।

(२) परम्पद गुण - परम्पद अर्थात् भावना जिनके निष्कल, अनुत्तर, अचल, असंख्य गुण हैं।

(३) शून्य - यह सर्वसत्ता है जिसमें लीनता, पूर्णता, उन्मन, लीनता, मूर्च्छा यह गुण विद्यमान हैं।

(४) निरन्जन - यह साक्षात्कार है इसके सत्य सहज, समरस, सावधान, सर्वांगत से गुण हैं।

(५) परमात्मा - इसके अक्षय, अभेद्य, अच्छेद्य, अविनाशी, अदाह्य ऐसे गुण हैं।

इस प्रकार परपिण्ड से अनादि पिण्ड की उत्पत्ति होती है जिसमें-

(१) परमानन्द, (२) प्रबोध, (३) चिदुद्य, (४) प्रकाश (५) सोहम ऐसे गुण हैं। इस अनादि पिण्ड से आद्य पिण्ड की उत्पति होती है। जिसमें

(१) आकाश - अवकाश, अछिद्र, अस्पृशत्व, नीलवर्ण शब्द के गुण हैं।

(२) वायु - जिसमें संचार, संचालन, स्पर्श, शोषण, धूम्रवर्ण यह गुण हैं।

(३) तेज - जिसमें दाहक, पाचक, उष्ण, प्रकाश, रक्तवर्ण यह गुण हैं।

(४) जल - अलील - जिसमें प्रवाह, आप्यापन, द्रव रस, श्वेत वर्णत्व के गुण हैं।

(५) पृथ्वी - जिसमें स्थूलता, नानाकारता, काठिन्य, गन्ध, पीतवर्ण के गुण हैं।

अत: ऐसे पंचतत्व गुणों से महासाकार पिण्ड बने जो जीव प्राणियों के इष्ट बन गये।

महासाकार पिण्ड - यह अष्टमूर्तियाँ हैं।

(१) शिव (आदिनाथ) (२) भैरवनाथ, (३) श्री कण्ठनाथ, (४) सदाशिव, (५) ईश्वर, (६) रुद्र, (७) विष्णु, (८)ब्रह्मा।

अत: उपरोक्त महासाकार पिण्डों ने प्रकृति पिण्ड का निर्माण किया। जो चातुर्थ खानी में उत्पन्न हुये। अण्डज, पिण्डज, स्पेदज, उद्विज।

(१) अण्डज - सर्प पक्षी आदि।

(२) पिण्डज - नर नारी, पशु।

(३) स्वेदज - जूं, खाली दीमक आदि।

(४) उद्विज - वृक्ष, वनस्पति आदि।

अत: त्रिगुण (रज, सत्व, तम) तथा पंचतत्व गुण विशेष एवं चन्द्र सूर्य तथा अग्नि इन सबके संयोग से प्रकृति पिण्ड का निर्माण हुआ।

प्रकृति पिण्ड

(१) पंचतत्व के अंश

(१) **पृथ्वी** = अस्थि, त्वचा, माँस, रोम, नाड़ियाँ।

(२) **जल** = लार, मूत्र, स्वेद, शुक्र, शोणित

(३) **अग्नि** = क्षुधा, तृष्णा, निद्रा, कान्ति श्री

(४) **वायु** = थावन, भ्रमण, प्रसारण, आकुन्चन, निरोध

(५) **आकाश** = राग-द्वेष, भय, लज्जा, मोह

(२) पंच अन्तःकरण

(१) **मन** = संकल्प, विकल्प, मूर्च्छा, जड़ता, मनन

(२) **बुद्धि** = विवेक, वैराग्य, शान्ति, संतोष, क्षमा

(३) **अहंकार** = अभिमान, मदीप, ममसुख, ममदुःख, ममेदंभ

(४) **चित्त** = मति, धृति, स्मृति, त्याग, स्वीकार

(५) **चैतन्य** = विमर्श, शीलन, धैर्य, चिन्तन, निस्पृहत्व

(३) प्राणकुला पंचक

(१) **सत्व** = दया, धर्म, क्रिया, भक्ति, श्रद्धा

(२) **रज** = दान, भोग, श्रृंगार, वस्तु ग्रहण, स्वार्थ ग्रहण

(३) **तम** = विवाद, कलह, शोक, वध, वंचन

(४) **काल** = कलबा, कल्यणा, भ्रान्ति, प्रमाद, अनर्थ

(५) **जीव** = जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, तुरीयातीत

(४) व्यक्ति पंचक

(१) **इच्छा** = उन्माद, वासना, वान्छा, चिन्ता, चेष्टा

(२) **क्रिया** = स्मरण, उद्योग, कार्य, निश्चय, स्वकुलाचार

(३) **माया** = मद मात्सर्य, दंभ, कृतियत्व, असत्य

(४) **प्रकृर्ति** = आशा, तृष्णा, स्पृहय, कांक्षा, मिथ्या

(५) **वाक** = परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी, मातृका

(५) अप्रत्यक्ष करण पंचक

(१) **कर्म** = शुभ, अशुभ, कीर्ति, अपकीर्ति, अदृष्यफल साधना

(२) **काम** = रति, प्रीति, क्रीड़ा, कामना, आतुरता

(३) **चन्द्र** = उल्लोला, कल्लोलि, उच्यलन्ती, उन्भदीनी, तरंगणी, शोषणी, लम्पटा, प्रवृति, लहरी, लीला, लौलीहाणा, प्रसरन्ती, प्रवाह, सोभ्या, प्रसन्नता, प्लवन्ती, निवृति इ० १६ कला

(४) **तापिनी** = ग्रासिका, उग्रा, आकुंचनी, शोषिणी, प्रबोधिनी, स्मरा, आकर्षिणी, तृष्टिवर्धिनी, उमरेखा, किरणवती, प्रभावती, निजकला, स्व प्रकाशता

(५) **अग्नि** = दीपिका, रजिका, ज्वलिनी, विष्फुलिगनी, प्रचण्डा, पाचिका, रौद्री, दाहिका, रागणी, शिखावती, ज्योतिसपनिजकला

इस प्रकार उपरोक्त गुण तत्व अंश से मुख्यत: नर नारी स्वरुप में शरीर बनता है जो पिण्ड रुप में गर्भ पिण्ड कहा जाता है।

(१) **दश वायु** - (१) **प्राण** (हृदय में श्वास-निश्वास रुप में)

(२) **अपान** (गुदा के नजदीक अशुद्ध वायु निकालना)

(३) **समान** (नाभी में - पाचन शक्ति)

(४) **उदान** (कण्ठ में - सन्तुलन क्रिया)

(५) **व्यान** (समस्त शरीर रक्त संचार में संतुलन क्रिया)

(६) **नाग वायु** - शरीरव्याप्त

(७) **कुर्म वायु** - नेत्रों को खोलना बन्द करना

(८) **कृकल वायु** - डकार करके गैस बाहर फेंकना

(९) **देवदत्त वायु** - जंभाई देकर शान्ति प्रदान करना

(१०) **धनंजय वायु** - व्याप्त शरीर में नाद उत्पन्न करना

(२) **दश धातु** - रक्त, माँस, चर्म, अस्थि, मेद, मज्जा, शुक्र, वात, पित्त, कफ

(३) **दश द्वार** - मुख, दो नासिका, दो कर्ण, दो चक्षु, दो पायु, उपस्थ ब्रह्मरन्ध्र

(४) **दश प्रधान नाड़ी** - ईड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, गान्धारी, हस्तिजिह्व, शंखनी, पूषा, अलम्बूषा, सरस्वति, कूहू।

(५) **अस्थियाँ** - तीन सौ साठ

(६) **आस्थियाँ जोड़** - तीन सौ साठ

(७) **रोम एवं रोमकूप** - साढ़े तीन करोड़

अत: इस नर नारी पिण्ड में समूची पूर्ण ब्रह्माण्ड का समरस्य, को बताते हैं जो कि पिण्ड ते ब्रह्माण्ड अर्थात् बिन्दु ते सिन्धु भी कहते हैं जो कि पिण्ड यह ब्रह्माण्ड का एक छोटा स्वरुप है। ऐसे गुरु गोरक्षनाथजी अपने साधना प्रणाली अनुभव से सिद्ध सिद्धान्त बताते हैं।

पिण्ड में सृष्टि के विभिन्न लोक

पिण्ड	लोक	देवता
(१) मूलाधार (चक्र) में	भू:लोक (पृथ्वी लोक)	

(२) लिंग प्रदेश में	भुव: लोक	इन्द्र
(३) नाभी देश में	स्व: लोक	शासक
(४) मेरुदण्ड मूल में	मह: लोक	
(५) मेरुदण्ड कुहर में	जन: लोक	अधिपति
(६) मेरुदण्ड नाल में	तप: लोक	ब्रह्मा
(७) मूलधार कमल में	सत्य लोक	
(८) कुक्षि नाभि (उदर में)	विष्णु लोक	विष्णु देवता
(९) हृदय में	रुद्रलोक	रुद्र देव
(१०) वक्षस्थल में	ईश्वर लोक	तृप्ति रुप ईश्वर
(११) कण्ठ के मध्य में	नीलकण्ठ लोक	नीलकण्ठ
(१२) तालु द्वार में	शिव लोक	शिव आदिनाथजी
(१३) जिह्वा मूल	भैरव लोक	भैरव
(१४) ललाट देश	अनादि लोक	अनादि शिव
(१५) भृकुटी के ऊपर श्रृंगार स्थान में	कुल लोक	कुलेश्वर शिव
(१६) शंख नाड़ी के ऊपर	कुल लोक	अकुलेश्वर
(१७) नलिनी स्थान में	'अ'	देवता
(१८) ब्रह्मरन्ध्र में	परब्रह्मलोक	अखण्ड पूर्ण परब्रह्म
(१९) ऊर्ध्व कमल सहस्त्रगार में	परापरलोक	पराभाव स्वरुप परमेश्वर
(२०) सहस्रार के ऊपर त्रिकुटी में	त्रिशिखर लोक	सर्व नियमिका पराशक्ति
पिण्ड के अन्दर	**सप्तपाताल**	
(१) पैर के अंगूठे में	तलातल	

(२) अंगूठे के अग्रभाग में	महातल
(३) पाद पृष्ठ में	रसातल
(४) गट्टे (गुप्फ) में	सुतल
(५) जाँघ में	वितल
(६) जानू में	अतल
(७) पाद तल में	पाताल

सप्तद्वीप

(१) मज्जाओं में	जम्बूद्वीप
(२) हड्डी में	शाक द्वीप
(३) प्रवाहिका नाड़ियों में	सूक्ष्म द्वीप
(४) त्वचा में	क्रौच द्वीप
(५) रोमों में	गोमय द्वीप
(६) नखों में	श्वेत द्वीप
(७) मांस में	प्लाक्ष द्वीप

सप्त समुद्र

(१) मूत्र में	क्षार समुद्र
(२) लार में	क्षीर समुद्र
(३) कफ में	दधि समुद्र
(४) मेद मज्जा में	घृत समुद्र
(५) चर्बी में	मधु समुद्र
(६) रक्त में	इक्षु समुद्र
(७) वीर्य (शुक्र) में	अमृत समुद्र

अष्टकुल पर्वत

(१) मेरु दण्ड में	सुमेरु पर्वत
(२) मस्तक में	कैलास पर्वत

(३) पीठ में	हिमालय पर्वत
(४) बायें कन्धे में	मलय पर्वत
(५) दायें कन्धे में	मन्दरांचल पर्वत
(६) दायें कान में	विन्ध्याचल पर्वत
(७) बायें कान में	मैनाक पर्वत
(८) ललाट में	श्री शैल
(९) सभी अंगुलियों में	अनन्य उपपर्वत

इसी प्रकार **नवखंड** भी पिण्ड में दर्शाये हैं-

(१) मूल गुदाद्वार में	भारत खण्ड
(२) उपस्थ (लिंग छिद्र) में	काश्मीर खण्ड
(३) मुख में	कर्पर खण्ड
(४) नासिका (दाहिने रन्ध्र में)	श्री खण्ड
(५) नासिका (बायें रन्ध्र में)	शंख खण्ड
(६) बायें नेत्र में	एक पाद खण्ड
(७) दायें नेत्र में	गान्धार खण्ड
(८) बायें कान में	कैवर्त खण्ड
(९) दाहिने कान में	महामेरु खण्ड

इसी प्रकार **नव नदियाँ तथा उपनदियाँ** भी पिण्ड के अन्दर समरस है।

(१) ईड़ा	गंगा नदी
(२) पिंगला	जमुना नदी
(३) सुषुम्ना	सरस्वती तथा पीनसा नदी
(४) अन्य प्रधान नाड़ियों में	चन्द्रभागा, पिपासा, शतरुद्रा, नर्मदा
(५) शेष बहत्तर हजार नाड़ियों में	छोटी एवं पतली उपनदियाँ

अत: ब्रह्माण्ड की ग्रह तिथि आदि का घट पिण्ड में ही दर्शन होता है।

नक्षत्र-ग्रह-तारे-तिथि आदि

(१) मांस पेशियों, उर्मि पुन्जों में	सताइस नक्षत्र, बारह राशि, नव ग्रह पन्द्रह तिथि
(२) हड्डियों में	तारा मण्डल
(३) रोम छिद्रों में	तैंतिस करोड़ देवता
(४) हड्डियों के जोड़ों में	दानव, यक्ष, राक्षस, पिशाच, भूत-प्रेत
(५) पेट के बालों में	अनेक दूसरे पर्वत
(६) उदर में	गन्धर्व, किन्नर, किंपुरुष, अप्सरायें
(७) वायु के वेग में	आकाश में विहार करने वाले उग्र देवता, लीलारुप मातृ शक्तियाँ
(८) बुद्धि के प्रकाश में	असंख्य सिद्ध
(९) बायें नेत्र में	चन्द्रमा
(१०) दाहिने नेत्र में	सूर्य
(११) जांघ के रोमों में	वृक्ष, लता, गुल्म, तृण आदि
(१२) विष्ठा में	कृमी, कीट, पतंग आदि

इस प्रकार गुरु गोरक्षनाथजी ने पिण्ड को सृष्टि ब्रह्माण्ड कारी संक्षिप्त स्वरुप कहा है ऐसे अपने योग सिद्ध प्रणाली अनुभव से सिद्ध किया है। अर्थात् साधक तथा योगी अपने योग की उच्चतम अवस्था में जाते हुये इस पिण्ड रुपी ब्रह्माण्ड का ज्ञान होता है। इस शरीर पिण्ड के सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के साक्षात्कार के अलौकिक सत्य की खोज के चरम बिन्दु पर योगी/साधक तभी पहुँच जाता है जबकि समाधि के

उच्च से उच्चतर अवस्था में उठकर काया के अन्तर्गत सूक्ष्म तत्व में बड़ी गहरायी से प्रवेश करता है और तब वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की आत्मभिव्यक्तियों का प्रत्यक्ष अनुभव करने में समर्थ होता है। यह सूक्ष्म से सूक्ष्म आत्मभिव्यक्ति अनुभव विज्ञान नहीं कर सकता, इसे योगी अपने गुरु के मार्गदर्शनानुसार ही कर सकता है। तब वह मोक्ष मुक्ति के मार्ग पर आरुढ़ होता है। इस प्रकार गुरु मार्गदर्शन, आसन, प्राणायाम मुद्रा, बन्ध आदि सक्षम यौगिक साधना जो प्रत्यहार, धारणा, ध्यान, समाधि इन विभिन्न माध्यम से शरीर काया पिण्ड के अन्दर ब्रह्माण्ड स्थित द्वीपों, समुद्रों, खण्डों, पर्वतों, ग्रह, तारों, देवी-देवता, यक्षों, पिशाच, भूत-प्रेत, गन्धर्व, अप्सराओं आदि का प्रत्यक्ष अनुभव करता है और ऐसी अवस्था में वह स्वयं शिव के ब्रह्माण्ड शरीर में तथा शिव ब्रह्माण्ड को अपने में अन्तर्लीन पाता है।

(ख) आत्मा-ज्ञान

आत्मा या जीवात्मा, या अन्तरआत्मा या योगियों का इष्ट या परमात्मा, या चैतन्य या परमतत्व आदि ऐसे नामों से आत्मा को जानते हैं। आत्मा सम्पूर्ण शरीर का स्वामी है, इष्ट है, इस भौतिक शरीर के प्राकृतिक किसी भी परिवर्तन का तथा पांचों तत्वों का इस आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं होता वह इस शरीर में तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्यापक रुप में स्थित है, नित्य है, शाश्वत है, सत्य है, अविनाशी है एवं प्रकाशी है। सम्पूर्ण शरीर के रोम रोम में इसका अनुभव तथा साक्षात्कार किया जाता है। शरीर नष्ट होता है किन्तु आत्मा नष्ट नहीं होती। गोरक्षनाथजी कहते हैं यह सर्वत्र व्यापक है। यह एक परम सत्ता है मन बुद्धि के परे, माया ब्रह्म के परे, चित्त के परे अन्तर अनन्त आत्मा है। समस्त माया के परे वह पर ब्रह्म है। पंच तत्वों के परे परम तत्व, परमात्मा है।जो इन पंचभूतों के परे चिन्मय परम सत्ता है।

वस्त्र बदलते हैं वैसे शरीर बदलता है आत्मा ऐसे यह अदाह्य, अक्लेद्य, अशोध्य, नित्य, सर्वव्यापक, अचल और सनातन है।

हमारे नाथ सिद्ध परम योगी - विरक्ति, त्यागी, ज्ञानी तथा निष्काम पुरुष अपनी साधना प्रणाली से उस आत्मा को देख सकता है उसका अनुभव कर सकता है और सुख दु:ख के परे जाकर मुक्त हो सकता है। आत्म ज्ञान एक सच्चे जिज्ञासु ध्यानस्थ योगी परिपक्व साधक को ही बोध गम्य है। सच्चाई तो यह है कि ज्ञान का आधार आत्मा ही है, एवं मुक्ति का आधार भी आत्मा है। आत्म ज्ञान, आत्म बोध, आत्म साक्षात्कार के लिये अन्त:करण शुद्ध होना अनिवार्य है। जो संयम से जगत माया में द्रष्टा हो जाये। सद्गुरु कृपा एवं मार्गदर्शन से आत्म साक्षात्कारी सभी विकारों से मुक्त होकर, अनन्त, अलौकिक आनन्द, अगम्य, सर्व सम्पन्न, शुद्ध, पवित्र, सर्व श्रेष्ठत्व को प्राप्त होता है जो आत्म देश में जाता है वह आत्मा में ही खो जाता है।

आत्मा स्थूल रुप में नहीं दिखता, आत्मज्ञान में स्थूल दृष्टि का काम नहीं है और ना कोई विशेष नियम है। वहां न कार्य, ना कारण ना भाव है। वहां ना प्राप्ति, ना अप्राप्ति भाव है, ना गम्य, ना गमक भाव है। किन्तु वहां अनन्त, अखंड समानाधिकरण और ज्ञान अधिकारण भावना रहती है, वहीं आत्म भाव से परिचित हो सकते हैं। अर्थात् आत्म ज्ञान, आत्म-साक्षात्कार के लिये सूक्ष्म से सूक्ष्म दृष्टि, विवेक तथा अन्तर मुखता होनी चाहिये ऐसे सूक्ष्म शक्ति सम्पन्नता प्राप्ति के लिये साधना, आसनों, प्राणायाम, ध्यान धारना, समाधि इत्यादि साधनो में सक्षम एवं परिपक्व होना चाहिये। 'ॐ' या ॐ सोहं या ॐ शिव गोरक्ष योगी, या ॐ शिव गोरक्षाय नम: या ॐ नम: शिवाय ऐसे मन्त्र या अपने सतगुरुजी से प्राप्त हुआ मन्त्र या अपने इष्ट के प्रति मन्त्र इनका ध्यान धारना समाधि में अखण्ड तैल धारवत जप, मनन, चिन्तन

करते करते मन चित्त का निरोध होकर शून्य में अवस्थित होना होगा, जो लोग, महात्मा ज्ञानाग्नि में अपने शरीर तथा गुण-अवगुण सबकी आहुति देकर काया, वाचा, मन निर्मल बनाते हैं वह शिवलोक, मुक्ति धाम में अनायास ही जाते हैं। समूची साधनायें, तपस्यायें, हठयोग अर्थात् खडेश्वरी, जटाधारी, फलाहारी, मौनी, रमतेश्वरी, व्रतधारी, तन्त्र मन्त्र उपासनायें इत्यादि आत्म चिन्तन, आत्म ज्ञान, आत्मानुभव, आत्मानन्द की आभ्यान्तर साधना के बिना सूखे पेड़ जैसे हैं। यह बाह्य साधनायें इन्द्रिय संयम होता है। मन प्रत्याहार से वश में होता है। प्राणायाम द्वारा नाड़ी शोधन, कुण्डलिनी चक्र भेदन तथा सिद्धियाँ भी प्राप्त होती हैं। किन्तु आत्मसाक्षात्कार नहीं हुआ तो सब निरर्थक एवं यन्त्रवत रह जाता है। एवं ज्ञान प्राप्ति न होने के कारण मुक्ति मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है। अतः आत्मचिन्तन, आत्मदर्शन, आत्मानुभव, आत्म साक्षात्कार यही मोक्ष-मुक्ति का सर्व श्रेष्ठ साधन, मार्ग एवं उपाय है।

इस प्रकार ज्ञान एवं आत्मसाक्षात्कार करके मुक्ति को पाना यह हर एक व्यक्ति कर सकता है। मानव प्राणी मात्र का यही सच्चा ध्येय है तथा अधिकार भी है। किन्तु यही ज्ञान योग एवं आत्मसाक्षात्कार सभी नहीं कर पाते इसलिये हमारे नाथ सिद्ध महात्मा एवं पूर्वजों, ऋषि मुनियों ने उपासना करके मुक्ति प्राप्ति मार्ग सर्व साधारण प्राणियों के लिये दर्शाया है।

(ग) उपासना

उपासना अर्थात् ..... के पास में बैठना (उप + आसन) उसका मन उस वस्तु के पास में रहता है। उसी की उपासना होती है और वह वस्तु कुछ भी लोक या परलोक की हो सकती है। उपासना सत्य-शाश्वत परमात्मा की करनी चाहिये अतः यह उपासना तीन प्रकार की होती है। जो साधू सन्त, नाथ योगीजन एवं भक्त नर-नारी

सभी कर सकते हैं। (१) कर्मयोग, (२) भक्ति योग, (३) ज्ञान योग।

(१) कर्म योग - कर्म योग के अनुसार ममता, आसक्ति, कामना का सर्वस्व त्याग करके अपने कर्तव्य के आचरण द्वारा तथा तटस्थ या द्रष्टा या साक्षी होकर निष्काम कर्म करने को कर्मयोग उपासना कहते हैं।

(२) भक्ति योग - भक्ति योग के अनुसार भगवान को अपने इष्ट को मनाकर तथा विश्वास करके एवं पूर्ण समर्पित भाव से उपासना की जाती है। भक्त भगवान की भक्ति में एकरुप भाव, तादात्म भाव एकी भाव सम्पूर्ण विश्वास युक्त हो जाता है इसे भक्ति उपासना कहते हैं।

(३) ज्ञान योग - ज्ञान योग के अनुसार परमात्मा को जानकर-सत्य को जानते हुये विरक्ति या वैराग्य होकर उपासना की जाती है। अर्थात् इस भव सागर की माया से हटकर निस्वार्थ भाव से सत्य को जानते हुये परमात्मा के पास बैठकर उपासना अर्थात् साधना करना ताकि मोक्ष मुक्ति की प्राप्ति हो जाये। इनमें कर्म करने वाले जन कल्याण हेतु पूजन यज्ञ आदि कर्मकाण्ड, तपस्या तथा जन सेवा, सन्त सेवा तथा क्रान्तिकारी, समाज सेवक आदि होते हैं। भक्ति योग में साधु सन्तों की भूमिका होती है। ज्ञानयोग के अन्तर्गत साधना करने वाले साधक योगेश्वर नाथ, सन्यासी, विरक्त, वैरागी तथा जिज्ञासु आदि होते हैं।

कर्मयोग और ज्ञान योग दोनों भी भक्ति योग में समन्वय हैं। ज्ञान हीन कर्म या कर्म हीन ज्ञान यह कृत्रिम अर्थहीन तथा शक्ति हीन होता है। अत: भक्ति पूर्ण उपासना ज्ञान और कर्म इन दोनों से सहज सुलभ एवं आनन्दप्रद है। अर्थात् भक्ति योग में कर्म योग और ज्ञान योग दोनों की एकता है। जब कि (१) निष्काम, निस्वार्थ कर्मयोग से स्वर्ग प्राप्ति तथा (२) ज्ञान योग से सच्चिदानन्द एवं कैवल्यानन्द प्राप्त होता है और (३) निस्वार्थ भक्ति या निष्काम भक्ति योग के आश्रय से कर्मयोग, ज्ञानयोग, मोक्ष और मुक्ति मार्ग पर ले जाते हैं। अत: निष्काम भक्ति

योग सर्व श्रेष्ठ मोक्ष मुक्ति मार्ग है।

भक्ति योग अर्थात् भगवान की या ईश्वर की या अपने इष्ट की उपासना है जिसमें विश्वास, श्रद्धा, सेवा, समर्पण भाव इत्यादि का विकास है। यह भक्ति योग दो प्रकार का है। (१) सगुण भक्ति, (२) निर्गुण भक्ति।

भगवान सगुण भी है और निर्गुण भी है वह सर्व व्यापक सत्ता है। सगुण भगवान की भक्ति सगुण भक्ति कहलाती है तथा निर्गुण भगवान की भक्ति निर्गुण भक्ति। अतः निस्वार्थ या निष्काम सेवा या उपासना को ही भक्ति कहा गया है। किन्तु यह उच्च आदर्श भक्ति योग साधारण या सर्व सामान्य व्यक्ति के लिए कठिन है। यह अति और यथार्थ भक्तों के लिये है। सगुण भक्ति के अनन्य प्रकार हैं। इनमें

(१) सनिमित्त भक्ति - यहां भक्त जीवन में कोई कठिनाई या संकट आने पर ही आर्त भाव से परमेश्वर की भक्ति करता है। और अपने समृद्धि प्रसिद्धि के लिये भी वह यथार्थ भक्ति करता है।

(२) आकर्षण या चुम्बकीय भक्ति - यहाँ उपलब्धि अनुसार भगवान से आकर्षित होकर भक्ति करते हैं।

(३) श्रद्धापारायण भक्ति - यहाँ भगवान पास हो या दूर अन्यत्र हो भक्त बिना किसी वजह या निमित्त भगवान की उपासना, भक्ति करता है।

(४) सह-भक्ति - वृक्ष से लिपटी हुयी लता के समान भक्त भगवान से सह भक्ति या उपासना करता रहता है। किन्तु इसमें द्वैत भाव रहता है।

(५) समरसता भक्ति - जैसे सागर में नदी मिलकर सागर बन जाती है। वैसे ही भक्त भगवान भक्ति में लीन होकर भगवान में एक रुप हो जाता है। और यही सर्व श्रेष्ठ भक्ति है।

इस प्रकार उपरोक्त पांचों सगुण भक्ति में पांचवीं अर्थात् समरसता भक्ति करते करते भक्त निर्गुण भक्ति में प्रवेश करता है।

निर्गुण भक्ति -

निर्गुण ब्रह्म के प्रति की जाने वाली उपासना या भक्ति निर्गुण भक्ति कही जाती है। इसमें शुरु शुरु में भक्त (मनुष्य, प्राणी) अपने आपको ब्रह्म से अलग मानता है। किन्तु सतगुरु कृपा से जब साधना उपासना में लीन होते हुये मन, चित्त, अहंकार जैसी माया हटने पर तथा अनुभव ज्ञान द्वारा जब भक्त जान जाता है कि मैं ब्रह्म से अलग नहीं हूँ। अर्थात् सर्व व्यापक ब्रह्म, पिण्ड ते ब्रह्माण्ड मैं आत्मा हूँ इत्यादि अहंब्रह्मास्मि स्वरुप में वह भक्ति करने लगता है। वह सत्य को जान जाता है और अद्वैत रुप से वह निर्गुण भक्ति करने लगता है। जो कि यह निर्गुण भक्ति योग अवस्था भी मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करवाती है।

अत: भक्तों में भी प्रकार हैं। जैसे (१) आर्त, (२) जिज्ञासु, (३) अर्थार्थी, (४) ज्ञानी।

(१) आर्त भक्त - यह अपने विपत्ति, कष्ट निवारण के लिये भगवान को भजते हैं।

(२) जिज्ञासु - यह भगवान को जानने की इच्छा से भगवान की भक्ति करते हैं।

(३) अर्थार्थी - यह सिद्धियाँ प्राप्ति के लिये या इच्छा प्रयोजन के लिये भगवान की भक्ति करते हैं।

यहां आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी तीनों ही सकाम या स्वार्थ भक्ति हैं जो मोक्ष मुक्ति प्रद नहीं है। किन्तु यह सगुण भक्ति करते करते ज्ञान को पाने के पश्चात् भक्त निर्गुण भक्ति में प्रवेश करता है। जो मोक्ष प्रद होती है।

(४) ज्ञानी - यह भक्त विवेकशील, एवं कर्तव्यनिष्ठ होने की प्रेरणा से भगवान की भक्ति करते हैं और यह भगवान को ही सब कुछ मानकर निस्वार्थ या निष्काम भक्ति करते हैं और यही मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करवाती है।

आज सर्वत्र मानव समाज, अशान्त, अस्वस्थ और अस्थिर है। वह बड़े संघर्ष के साथ शाश्वत शान्ति को खोज रहा है। एक ओर विज्ञान प्रकृति के ऊपर विजय पाना चाहता है दूसरी ओर अनन्त प्रकार के भोग विलास वासनाओं की चकाचौंध में आनन्द प्राप्त करना चाहते हैं। आज के विचारक, साधु सन्त, विद्वान शास्त्री, पण्डित, वैज्ञानिक तथा समाज सुधारक सभी इस कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग, योग साधना तथा उपासना इस सत्य को स्वीकारते हैं तथा अपने आचरण में उसका विनियोग करते हैं, प्रयोग करते हैं एवं समाज को ज्ञानोपदेश एवं मार्गदर्शन भी कराते हैं और यह उपदेश पुरातन काल से चलता आया है। फिर भी आज समाज पुनः उसी स्थिति अर्थात् अशान्त, अस्थिर, भ्रमित, दिशाहीन आदि से व्यस्त है। अतः समाज के आचरण में उनके संस्कारों में योग साधना, ज्ञान, निस्वार्थ भक्ति, कर्मयोग आदि का समन्वय इनको योगदान करना आवश्यक हो गया है। वास्तविक ज्ञान का दीपक सभी के हाथ में है। शाश्वत शान्ति सभी के अन्दर प्रकाशमान है किन्तु फिर भी यह सत्य अन्धकार में विलीन हो रहा है।

संसार के महापुरुषों ने जैसे गुरु गोरक्षनाथ, नवनाथ चौरासी सिद्ध, बुद्ध महावीर शंकराचार्य, रामानुज, येशुक्रिस्त, मुहम्मद, नानक, कबीर आदि सत्य सनातन महापुरुषों ने प्राणी मात्र को दुःख, निवारार्थ, सुख-आनन्द की प्राप्ति प्रित्यर्थ एवं मोक्ष मुक्ति के अनेक मार्ग दिखाये अनेक दीपक प्रज्वलित किये अनेक धर्म अनेक उपासना भक्ति कर्म, ज्ञान, अनेक विधियाँ, पंथ आदि का मार्ग दर्शन तथा आदर्श प्रस्थापित

किया। किन्तु कोई भी मानव किसी मानवता का, किसी निश्चित पंथ का, किसी धर्म का अवलम्बन कर नहीं सके और ना ही निर्णय ले सके। भौतिक विज्ञान के अविष्कारों द्वारा सुख देने का प्रयास किया किन्तु मानव प्राणी ज्यादातर आलसी, स्वैराचारी, व्यसनी, धर्मभ्रष्ट हो गये हैं। पाश्चात्य संस्कृति का अवलम्बन करके हमारी धर्म संस्कृति विच्छेद हो गयी और शाश्वत सुख, सच्चा आनन्द और शाश्वत शान्ति लुप्त होने लगी है और ऐसे में मानव समाज व्यर्थ बातों में व्यर्थ जीवन यापन कर रहे हैं और एक दिन मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे। आज अध्यात्म, माया, संसार और इनका सत्य, ज्ञान, साधना, भक्ति आदि सब शास्त्रार्थ तथा वाद विवाद का ही विषय बन गया है। निजी स्वार्थ लोलुपता और भोग पिपासा में लिप्त होकर अपने धर्म को, भगवान को और अपने पूर्वज साधु सन्त, महात्माओं के सिद्धान्त विचारों को अपने निजी स्वार्थ के लिये केवल इस्तेमाल कर रहे हैं। स्वार्थ के लिये इनका प्रचार धन के लिये इनका व्यापार तथा वृढ़िवाद करके ठगना, व्याभिचार आदि में लिप्त होने लगे। कुछ अधार्मिक तो कुछ असामाजिक वृत्ति के लोग धर्म संस्कृति का सहारा लेकर साधु सन्यासी रुप में गुरुओं का व्यापार, चेलों का बाजार तो भक्तों का स्वैराचार को पनपा रहे हैं और मानवता, सच्चा धर्म, सुसंस्कृति, परमात्व तत्व, आत्मतत्व, योग साधना आदि का भ्रमित नौटंकी रुप में प्रतीत हो रहा है। प्रामाणिक सज्जन तत्व के लोग ज्यादातर भ्रमित दिशा हीन परावलम्बी होने लगे हैं। अनेक संस्कृति के धर्म, विविध प्रकार के वृढ़ियाँ, वृथा उपदेश तथा विचित्र जटिल नियम इन सबसे लोग अस्वस्थ, अस्थिर और भ्रमित हो रहे हैं।

समय समय पर हमारे नाथ योगियों ने खड़तर सक्षम तथा ज्ञान, विवेक, यौगिक चमत्कारों इत्यादि द्वारा तथा अनेक साधु सन्त, ऋषि मुनियों ने अच्छे आदर्श प्रस्थापित तथा प्रचार करके धर्म को बचाने की चेष्टा की तथा जनमानस को सँवारा किन्तु फिर भी हमारी संस्कृति पर

पाश्चात्य देशों का एक धूमिल वातावरण आया है और स्वार्थ भोग का विशाल नर्तन शुरु हो गया है। अतः जनता में सत्संग, योगसाधना, भक्ति कर्म आदि तत्वों की नितांत आवश्यकता है। ऐसे समय उपासना भक्ति द्वारा सगुण से निर्गुण में जाने के मोह माया एवं विकारों से मुक्त होकर मोक्ष मुक्ति की तरफ जाने की उनके मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

इस संसार में मृत्यु जैसे सत्य को और मोक्ष मुक्ति जैसी प्राप्ति को उजागर करना आवश्यक है। इस मृत्यु के ऊपर विजय पाकर, अमरत्व पाने के लिये हमारे नाथ सिद्ध योगेश्वरों ने एवं साधु सन्त, महात्माओं ने इस संसार सागर में सर्वत्र भ्रमण करके रम्मत करते अपने योग सिद्धियाँ, साधना, तपस्या एवं ज्ञान द्वारा इस संसार सागर का मन्थन किया जिसमें विष के रुप में तम, मदिरा के रुप में रज और अमृत के रुप में सत्य को खोजकर निकाला ऐसे भवसागर में नाथ सिद्धों को अमृत का घट (नर नारी का शरीर) योग साधना के रुप में मिला जिससे समस्त प्राणी योग साधना के द्वारा अमृतपान करके अमर हो सकते हैं। जिस घट-पिण्ड में स्थूल शरीर के लिये, हठयोग साधना, आसन प्राणायामादि वनस्पति शास्त्र, रसायन शास्त्र, आयुर्वेद इत्यादि का अविष्कार किया तथा सूक्ष्म रुप में मन चित्त बुद्धि अहंकारादि का निरोध कर अन्तरआत्मा का ध्यान आत्मसाक्षात्कार को प्रगट किया। जिससे मनुष्य अनेक वर्षों तक अमर रहकर अपने सौन्दर्य-यौवन एवं (मन) आत्मा की शाश्वत शान्ति को जीवित रख सकते हैं। सोमरस अर्थात् अमृतपान से तेजपुन्ज काया तथा ब्रह्मचर्य एवं योग साधना के द्वारा आत्मानुभूति अर्थात् आत्मसाक्षात्कार कर सकते हैं।

अतः नाथ सिद्धों का निर्देश है कि उपासना चाहे कोई भी हो, किसी की भी हो, कैसे भी हो वह भक्ति प्रधान होनी आवश्यक है। जो कि भक्ति योग के बिना कर्मयोग में और ज्ञान योग में परिपूर्णता नहीं

आती है। चाहे प्रथम सकाम या सगुण भक्ति करो आगे प्रगति करते हुये व निष्काम कर्म या निर्गुण भक्ति करते हुए मोक्ष मुक्ति को जाना ही मनुष्य प्राणी का धर्म है। अत: नाथ सिद्ध का प्राथमिक सिद्धान्त दर्शाता है कि सगुण भक्ति द्वारा अर्थात् हठयोग साधनायें, विभिन्न उपासनायें, तन्त्र-मन्त्र योग से कर्मकाण्ड इत्यादि साधनायें करते-करते निर्गुण भक्ति में जाना चाहिये जो मन चित्त अहंकार का निरोध होकर भक्त या साधक शून्य में जाना चाहिये और ऐसी अवस्थाओं में उन्हें आत्मसाक्षात्कार होते ही ज्ञान की उपलब्धि हो जाती है, जिससे वह मोक्ष मुक्ति को प्राप्त हो जाते हैं। इसके अन्तर्गत यह योगमाया पूजन अर्थात् नाथ सिद्धों की शंखढाल यह एक विशिष्ट कर्मकाण्डादि योगमाया शक्ति का भक्ति विकास या विशेष भक्ति विश्लेषण किया गया है। ऐसे भक्ति स्वरुप और योग ज्ञान स्वरुप एवं तन्त्र मन्त्र योग स्वरुप और भी विभिन्न कर्मकाण्ड, नाथ सिद्धों में है। जो कि गोरख तन्त्र, मत्स्येन्द्र तन्त्र, कौल ज्ञान, कापालिक साधनायें, मल्लीकार्जुन तन्त्र, बाला सुन्दरी तन्त्र अर्थात् योगमाया इत्यादि नाथ सिद्ध योगेश्वर अपने सिद्धान्त अनुसार दार्शनिक कर्म करते हुए मोक्ष मुक्ति को पा लेते हैं।

अत: प्राणी मात्र को आत्मसाक्षात्कारी सतगुरु की प्राप्ति करके उनके मार्गदर्शन, निर्देशन अनुसार योग साधना प्रणाली, अध्यात्मिक ज्ञानार्जन एवं भक्ति स्वरुप कर्मकाण्डादि को अपनाते हुये मोक्ष मुक्ति को पाने का प्रयास करना चाहिये। क्योंकि मनुष्य प्राणी मात्र की प्रगाढ़ भक्ति भावना तथा श्रद्धा रुप कर्म शक्ति उस व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार करवा सकती है। और ऐसी प्रगाढ़ अभिव्यक्तियाँ, आवान्तर एवं निरर्थक अधर्म मार्ग पर खर्च नहीं होनी चाहिए। अत: यही भक्ति भाव, शक्ति की अभिव्यक्तियाँ, सत्य सनातन प्राप्ति अर्थात् आत्मसाक्षात्कार एवं मुक्ति के लिये विनियोग होना यथार्थ एवं आवश्यक है।

(२९) मृत्यु

ईश्वर-परमात्मा सत्य है या नहीं किन्तु मृत्यु एक अटल, ध्रुव सत्य है। जन्म से मृत्यु के समय तक की यात्रा को हम सच्चा जीवन कहते हैं तो हम सत्य से वंचित हो जायेंगे। सत्य जीवन तो वह है कि हम हमारे जीवन को सुगंधित करे। जैसे हमारे गुण, कर्म, साधना, तपस्या आदि से परमात्मा की सुगंध निकलनी चाहिये। जैसे गुरु गोरक्षनाथ-नवनाथ-सिद्ध, कृष्ण, राम, बुद्ध, येशु, महावीर आदि महापुरुषों ने अपना जीवन सुगंधित किया। जीवन में यश, कीर्ति, धन-सम्पत्ति, मान-प्रतिष्ठा आदि सब मृत्यु समय में व्यर्थ है। इस समय तो केवल मात्र सत्य-सनातन-आत्मज्ञान जो हमारे भीतर विद्यमान है, जो कभी व्यर्थ नहीं होता, जो पूर्ण वैराग्य त्याग की भावना करके हमें मुक्ति दिलाता है। अत: यह आत्म स्वरुप, यह एक परमात्मा शक्ति साक्षात्कार है। जो परा-अपरा शक्ति है। जब योग साधना, तपस्या, ज्ञान, वैराग्य अर्थात् काया, वाचा, मन, अन्त:करण से हम निर्मल हो जाये तभी यह आत्मतत्व, परमशक्ति का अनुभव होता है। यह हमारे जीवन की सुगंध है। यह अन्तरआत्मा स्वतन्त्र है, आत्मा का रिश्ते नातो से कोई सम्बन्ध नहीं है। हम हमारे निजी स्वार्थ के लिये रिश्ते नाते बनाकर मोह माया में भ्रमित हो जाते हैं। इस सत्य सनातन तथा सर्वत्र व्यापक आत्मा ने न जाने कितने शरीर बदले हैं। अत: काया तो माया है आत्मा तो ब्रह्म है, मुक्ति है, मोक्ष है।

(क) क्या है मृत्यु?

यह मानव शरीर स्थूल अर्थात् काया, सूक्ष्म अर्थात् मन, कारण अर्थात् आत्मा इन तीनों से बनता है। जब मनुष्य श्वास द्वारा प्राण (प्राणवायु) भीतर लेता है तो काया मन आत्मा को अर्थात् स्थूल सूक्ष्म

कारण को जोड़कर चेतन होता है। मृत्यु के क्षण जब यही प्राण शरीर से निकल जाता है तो यह तीनों अवस्थायें अलग अलग हो जाती है तब शरीर स्थूल अवस्था में मर जाता है। और कारण रुपी आत्मा एवं सूक्ष्म रुपी मन, यह दोनों उस मनुष्य की अच्छे बुरे निहित संस्कारों को अपने साथ लेकर वह शरीर छोड़ कर अनन्त यात्रा करने निकल पड़ता है और इसी को मृत्यु कहते हैं।

मृत्यु के मुख्यत: दो प्रकार हैं (१) प्राकृतिक, (२) अप्राकृतिक

(१) प्राकृतिक मृत्यु - यह मृत्यु प्रकृति के नियमानुसार शरीर क्षीण होने के बाद अर्थात् वृद्ध अवस्था में अर्थात् व्यक्ति की निहित आयुष्य खत्म होने के बाद होती है।

(२) अप्राकृतिक मृत्यु - यह मृत्यु प्रकृति के नियम के पहले ही हो जाती है। जीवन के किसी भी क्षण अचानक मृत्यु होती है इसमें शरीर क्षीण होना ही है ऐसा नहीं है। विशेषत: यह मृत्यु अचानक अपघात, मरनाशक्त बिमारी (हृदय विकार, कैन्सर इ०) जलकर या जल में डूबकर या फांसी लगाकर या आत्महत्या इत्यादि।

कहते हैं मृत्यु आने से पूर्व व्यक्ति को अहसास हो जाता है कि मुझे मृत्यु होने वाली है। यह व्यक्ति के शुद्ध-अशुद्ध आचरण, योग, ध्यान, तपस्या तथा साधना इत्यादि के ऊपर निर्भर है। इसमें साधु, सन्त, योगी, तपस्वी, कर्मकाण्डी, पण्डित यहां तक कि सर्व साधारण व्यक्ति को भी मालूम हो सकता है। इसमें कोई तो छ: महीने पहले ही आने वाली मृत्यु जान जाते हैं। तो कोई तीन मास पूर्व तो कोई कुछ दिन पूर्व तो कोई कुछ घण्टे पूर्व ही जान जाते हैं कि अब हमें मृत्यु को प्राप्त होना है।

(ख) कैसे होती है - मृत्यु ?

इस संसार सागर में सर्व साधारणता मनुष्य अपने नासिका द्वारा

प्राण काया भीतर लेता है। जिसे ॐ-सोहं प्रणापान, श्वांस प्रश्वांस या इसे श्वसन क्रिया कहते हैं। यह श्वसन क्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चौरासी लाख बार ली जाती है। साधारणत: सौ साल की उम्र तक अन्दाज है। अर्थात् जीवन के ८४ लाख श्वांस खत्म होने पर मृत्यु अवश्य आती है। अत: जीवन के प्रत्येक श्वांस जैसे जैसे खत्म होती है। वैसे वैसे मनुष्य मृत्यु के समीप जाता है। इस मृत्यु को काल भी कहते हैं और यह मृत्यु यह काल सभी को ग्रसित करता है। जहां शरीर है वहां मृत्यु अवश्य है। चाहे कोई भी या किसी का भी शरीर हो काल आना ही है।

(ग) मृत्यु के क्षण और मृत्यु के पश्चात्

प्रथम मनुष्य को मृत्यु का आभास होने लगता है। उस मृत्यु के अन्तिम क्षण कालान्तर के समय उसके मन तथा चित्त में घबराहट होने लगती है। हमें मृत्यु आ रही है मैं यह मेरा संसार, मेरा घर, मेरे रिश्ते इत्यादि छोड़कर जा रहा हूँ। अपनी धन सम्पदा, मान-प्रतिष्ठा, सुख-दु:ख का जीवन छोड़ना पड़ेगा ऐसे विचारों से वह अत्यन्त अस्वस्थ होने लगता है और वह अपनी ही धुन्द में जीवन की अच्छी बुरी घटनायें जो मस्तिक के सूक्ष्म कोष्टकों में सुषुप्त अवस्था में होती है (यह स्थान कपाल के ऊपर के मस्तक में होता है) वह सब प्रसंग रुप से एकत्र होकर उसके सामने आने लगती है और जाग्रत होकर फटाफट उसके आँखों के सन्मुख चलचित्र के भांति दिखायी पड़ते हैं और अत्यंत थोड़े ही समय में उसके जीवन की अनन्त घटनायें देखता है। वह सब उसके जीवन के संस्कार-पूर्ण-अपूर्ण इच्छायें, कामना, संकल्प आदि से भरी होती है और इन्हें वह छोड़ना नहीं चाहता, शरीर छोड़कर अलग नहीं होना चाहता और उसे अत्यन्त मानसिक यातनायें होने लगती है। वह तड़पता रहता है और यह उसकी स्थूल शरीर तथा जाग्रत अवस्था होती

है और जब वह धुन्द होकर जीवन में अच्छे बुरे संस्कारों के प्रसंग चलचित्र के भांति देखता है तब वह स्वप्न अवस्था में जाता है पर मस्तक कोष्टकों में चेतना होने से वह चेतनीय स्वप्न अवस्था में होता है।

अत: उस मनुष्य के प्राण की गति धीरे-धीरे कम होने लगती है। शरीर के अन्दर की नसें नाड़ी का खिंचाव शुरु होता है। जब कि उसकी नाभि में कम्पन होने लगते हैं। नाभि से कण्ठ तक दुर्बलता आने लगती है। क्योंकि वहां काया के अन्दर प्राण और अपान वायु का आपस में टकराते हुये संघर्ष होने लगता है।

इसी कारण नाभि स्थित समान वायु के साथ प्राण अपान वायु का संघर्ष होता है और समान वायु भी असन्तुलित होकर दुर्बल हो जाता है और यह प्राण-अपान-समान वायु ऊर्ध्वरता होकर (इसे ऊर्ध्वश्वास भी कहते हैं) कण्ठ के तरफ चलती है। अत: मनुष्य हाथ-पैरों को झटके या कम्पन होकर झटपटाने लगता है। प्राण अपान समान वायु के दुर्बलता के कारण वह मनुष्य बैचेन, चिड़चिड़ा, संताप, घबराहट आदि से ग्रसित होने लगता है। क्योंकि यहां श्वास असंन्तुलित होकर उसकी गति बिगड़ती है।

अत: धीरे-धीरे बाह्य चेतनायें लुप्त होने लगती हैं और बिगड़े हुये प्राण-अपान-समान वायु कण्ट के तरफ उदान वायु को संघर्ष करके धक्का देने लगते हैं और उदान वायु क्षीण होने लगती है। मनुष्य का (कण्ठ) गला सूख जाता है और उसे प्यास भी लगती है अत: वह ठीक से बोल नहीं पाता कुछ समय के बाद वह मौन होने लगता है और इसी समय व्यान वायु भी उद्दाम होकर सन्तुलन खोती है और खून की गति मन्द होने लगती है। धीरे-धीरे अन्तरमुखी और बर्हिमुखी नसें नाड़ियाँ खिंचकर प्राण सहित आन्तरिक अन्य वायु लेकर स्थूल शरीर के बाहर

जाने लगती है। जहां शरीर का भाग दुर्बल हुआ उदाहरणार्थ आँखें, कान, नाक, मुख या गुदा आदि इन्द्रिय द्वार से प्राण बाहर जाने लगता है। इस प्रकार मनुष्य को मानसिक और शारीरिक अत्यंत असह्य वेदनायें होती हैं। यह पीड़ा अत्यन्त कष्ट दायक होती है यह दर्दनाक पीड़ा जैसे सौ बिच्छू काटने पर एक नाग दंश होता है ऐसे हजार नाग दंश होने पर जो वेदना होती है ऐसी वेदना प्राण (आत्मा) शरीर छोड़ते वक्त होती है। इस समय मनुष्य को एक गहरी मूर्छा आने लगती है। अब शरीर हाथ पैरों सहित ठण्डा होने लगता है और मनुष्य पूर्ण बेहोश या मूर्छित होने लगता है। यह मनुष्य को प्राकृतिक देन है या प्रकृति स्वयं यह शारीरिक व्यवस्था करती है जो कि जब भी किसी व्यक्ति को कोई भी गहरा जख्म हो जाये या बहुत गहरा धक्का लग जाये, या गहरा सदमा पहुँच जाये तो वह पीड़ा, वह दु:ख या वह वेदना जब मनुष्य के मन चित्त के अर्थात् सहन शक्ति के परे होती हो तो वह मनुष्य मूर्छित या बेहोश हो जाता है। अत: इस मृत्यु के समय आत्मा या प्राण शरीर छोड़ते वक्त बहुत ही गहरी, बहुत कष्टदायक बहुत तीव्र वेदना या पीड़ा होती है जो उसके सहन शक्ति के परे हो जाती है वैसे ही उसकी शारीरिक मानसिक सहन शक्ति नष्ट हो जाती है और वह बेहोश या मूर्छित हो जाता है। यह उसकी जाग्रत और स्वप्न अवस्था पार होकर सुषुप्ति अवस्था होती है और वह गहरी निद्रा में जाने लगता है। इस समय उसके सभी अन्तरंग और बहिरंग वायु (नौ वायु) शरीर को छोड़ देते हैं। केवल धनन्जय वायु ही शरीर पर रहती है। यह धनन्जय उसे निद्रा प्रदान करता है। जो कि शरीर जलने तक या पूर्ण रुप से नष्ट होने तक या शरीर सड़ने तक यह वायु शरीर पर रहता है। इस अवस्था में हम उसे मृत समझते हैं किन्तु यह मृत्यु की दूसरी अवस्था होती है पहली अवस्था में शरीर का छूट जाना, दूसरी अवस्था में मन चित्त को छोड

जाना, तीसरी अवस्था में मनुष्य का शरीर निष्क्रिय होता है। रक्त संचालन और हृदय गति दोनो ही बंद हो जाती हैं और आन्तरिक शारीरिक क्रियायें बन्द हो जाती हैं। तदपश्चात् मानसिक शक्ति भी अपना संतुलन नहीं रख पाती इसी समय स्थूल देह छोड़कर आत्मा और मृतात्मा के अच्छे बुरे सभी संस्कारों को लेते हुये मन यह दोनों सूक्ष्म रुप धारण करके (यह वासना रूपी एक शरीर होता है) बाहर अनन्त यात्रा करने निकल पड़ते हैं और मृत्यु की अन्तिम तीसरी अवस्था होती है। अतः यह मनुष्य की सही निश्चित मृत्यु होती है और यह प्राकृतिक मृत्यु कहलाती है। जिस समय मन और आत्मा सूक्ष्म शरीर धारण करके मृतात्मा का शरीर छोड़ता है तो वह इस समय मृतात्मा के दश इन्द्रियों के द्वारा बाहर निकलता है। अगर यह प्राण आत्मा मृतात्मा के लिंग या गुदा द्वारा बाहर निकलता है तो इसे अधोगति कहते हैं। जोकि मृतात्मा मरते समय पिशाब या टट्टी कर देता है। इसी प्रकार आत्मा आंखों द्वारा गया तो आँखें खुली रहती है, मुख द्वारा बाहर गया तो मुख भी खुला रहता है अगर नाक या कान द्वारा प्राण गया तो नाक और कान टेढ़ा हो जाता है। इसे ऊर्ध्वगति कहते हैं। विशेषतः योगी, साधु सन्त, महात्मा हो तो उसके कपाल (मस्तक) के आज्ञाचक्र जो दोनों आंखों की भौवों के बीच होता है यहां आज्ञाचक्र का भेदन करके सीधा आत्मा ब्रह्माण्ड में यात्रा करने चला जाता है। यह उत्तम गति कही गयी है। इसीप्रकार आत्मसाक्षात्कारी योग पारंगत परिपक्व योगी महात्मा हो तो उसके मस्तक में स्थित चोटी प्रदेश जहां सूक्ष्म छिद्र होता है और यहां सहस्रगार या ब्रह्मरन्ध्र का भेदन करके यह आत्मा अन्तरिक्ष परमतत्व में मोक्ष मुक्ति को चला जाता है यह सर्वोत्तम या कैवल्य गति कहलाती है। यहां आत्मा मस्तक या कपाल के आज्ञा या सहस्रगार चक्र का भेदन करके बाहर जाता है इसे कपाल मोक्ष भी कहा जाता है। यहां योगी का

शरीर छुटते समय मुक्त अवस्था होती है। इस कारण मृतात्मा या योगी के शीश पर ठीकरा भी पलटा मारकर रखा जाता है। तथा गृहस्थ मृतात्मा को अग्निदाग संस्कार करते समय उसकी खोपड़ी (कवटी), मस्तक फूटने तक लोग वहीं रुकते हैं। या कभी कभी तो मृतात्मा के कपाल को फोड़ भी देते है जिसे कपाल मोक्ष या कपाल क्रिया कहा जाता है। कपाल मोक्ष या खोपड़ी (कवटी) फोड़ने का अन्य कारण यह भी है कि अघोरी तांत्रिक लोग मृतात्मा की अर्ध जली हुयी (कवटी) या खोपड़ी लेकर तांत्रिक क्रिया करते हैं। अत: उसी कारण वह खोपड़ी फोड़ी जाती है। इसे कपाल मोक्ष कहते हैं।

सूक्ष्म शरीर = इस प्रकार जब मृत देह अर्थात् स्थूल शरीर छोड़कर मृतात्मा के इच्छा, कामना, संकल्प तथा वासना इत्यादि को लेकर मन और आत्मा इन संस्कार के अनुरुप वासना शरीर, या इच्छा शरीर या कामना शरीर आदि युक्त सूक्ष्म शरीर बनता है। यह सूक्ष्म शरीर बिल्कुल स्थूल शरीर जैसा ही होता है। वह अपने मृत देह को देखता है। किन्तु लोक उस सूक्ष्म शरीर को नहीं देख पाते। मृतात्मा को बड़ा आश्चर्य होता है। अब उसे किसी भी प्रकार की वेदना नहीं होती और नाही उसे कोई दर्दनाक पीड़ा होती है। उसका यह सूक्ष्म रुप, अत्यंत हलका फुलका बन जाता है। वह इच्छानुरुप जहां मर्जी वहां क्षण भर में या पल भर में जाता है और वह किसी भी कठिन या सख्त चीज का भेदन कर जा सकता है। उसके मन के विचार की इतनी गति होती है। वह हवा में तैरता है। अत: उसे यह शरीर अच्छा लगता है किन्तु मृत देह का मोह होने के कारण वह अपने मृत शरीर के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। प्रियजनों से प्रेम-मोह-वासना के कारण उन्हें रोते देखकर वह आश्चर्य में पड़ता है वह उन्हें चुप करने की कोशिश करता है, वह बोलता है, चिल्लाता है। अरे क्यों रोते हो ? मैं जिन्दा हूँ, इत्यादि किन्त

उन्हें वह चिल्लाना सुनाई नहीं देता वह बहुत प्रयास करता है किन्तु वह नाही उन्हें छू सकता है नाही सुना सकता है। ऐसे में वह कुछ नहीं कर पाता, स्थूल शरीर अवस्था में वह बहुत डरता था, बेचैन, गुस्सा आदि होता था किन्तु अब उसे सूक्ष्म शरीर, वासना शरीर मिलने से कोई डर नहीं लगता जो कि वह सूक्ष्म शरीर उसे हर प्रकार से अच्छा लगता है।

अत: मृत शरीर की अन्त्येष्टी कर्म होता है। लोग अग्निदाग देते हैं तब यह देखकर मृतात्मा निराश होती है अब वह जान जाता है कि मैं मर चुका हूँ। इस जीवित दुनिया से मैं अलग हो चुका हूँ। किन्तु वासना, प्रेम, मोह जब तक होती है वह श्मशान, घर, सगे सम्बन्धी प्रियजनों के पास आदि प्रिय जगह चक्कर काटता रहता है वह कुछ भी कर नहीं सकता केवल देख सकता है और यह उसकी इच्छा, कामना, वासना के ऊपर निर्भर होता है साधारणत: वह सवासाल या २ साल तक इस चक्कर (अवस्था) में रहता है। इस प्रकार यह प्राकृतिक मृत्यु होती है।

अप्राकृतिक मृत्यु = यह मृत्यु अचानक होने के कारण चेतनता शून्य होना और मूर्च्छा आना एक समय में ही एकदम से अचानक हो जाता है और अधूरी स्थूल शरीर क्रिया होते हुये आत्मा शरीर छोड़कर चली जाती है। इसे अकाल मृत्यु कहते हैं। यह अत्यन्त दर्दनाक और खतरनाक होती है कभी कभी यहां चेतना कम होती है मूर्च्छा जल्दी होती नही इसमें उस मृतात्मा को कम से कम बारह घण्टे तक बचा भी सकते हैं और इसमें वह बच गया तो वह बाद में सूक्ष्म अवस्था में वृत्तान्त स्वप्नवत बताता है। अगर पूर्ण बेहोशी में मृत हुआ तो उसके चेहरा विकृत हो जाता है।

ऐसी अकाल मृत्यु अर्थात्-अपघाती, अग्नि में जलकर, जल में डूबकर, जहर खाकर, शस्त्र से मारे हुये, आदि से जब वह मृत होते हैं

तो प्राण शरीर छोड़ते समय उन्हें अत्यन्त उग्र वेदना होकर, कुछ सावध कुछ असावध अवस्था में सूक्ष्म शरीर के साथ स्थूल शरीर के कुछ अवयवादी, इन्द्रियादि परमाणु तथा मोह, वासना, काम, क्रोधादि सभी संस्कार लेकर सूक्ष्म शरीर बनकर स्थूल शरीर छोड़ता है। इसलिये मरने के बाद वह शरीर कुछ जीवित, कुछ मृत, तो कभी स्थूल कभी सूक्ष्म, तथा कुछ जाग्रत तो कुछ स्वप्न अवस्थाओं में मृतात्मा रहने के कारण वह अतृप्त आत्मा, या प्रेतात्मा बन जाता है और वह भूत प्रेत रुप में दिखाई पड़ते हैं। इनका स्थूल सूक्ष्म रुप से इस मृत्युलोक (धरती) में सम्बन्ध सत्तारुप से जुड़ा रहता है। वह कभी प्रगट होते हैं तो कभी दिखते नहीं। किन्तु जो प्राकृतिक अवस्था में मरते हैं वह प्रगट नहीं हो सकते। उन्हें बहुत प्रयास करना पड़ता है।

यह भूत-प्रेत-आत्मायें अतृप्त-वासनामय होते हुये भ्रमण करती हैं। यह अत्यन्त क्रोधी कपटी लोभी आदि अवगुणों से भरी हुई होती हैं। भटकते भटकते अनुकूल गर्भ मिलते ही वहां जन्म ले लेते हैं। किन्तु इसमे काफी समय लगता है। अर्थात् वह पूनर्जन्म लेते हैं। यह तामसी प्रवृति के होते हैं। कुछ प्रेतात्मायें या वासनामय शरीर, राजसी प्रवृत्ती के होते हैं यह लोभी एवं स्वार्थी होते हैं। यह बुद्धिमान, चतुर आदि संस्कारों से भटकते हैं। विशेषतः राजनेता, कवि, लेखक, उच्चतम कलाकार इन्हे पूनर्जन्म लेने में बहुत दिक्कत आती है वह इंतजार में व्याकुल होते हैं। आम व्यक्ति जो अच्छे संस्कार, पुण्यवान होते हैं यह पूनर्जन्म जल्दी ले सकते हैं यह मृत होते ही पूनर्जन्म ले लेते हैं।

ऐसे अतृप्त प्रेतात्मा भूतात्माओं को २-३ घण्टे में, २-३ दिन में, २-३ वर्ष के काल समय में पुनर्जन्म लेना ही पड़ता है। क्योंकि इन्हें अपने इच्छापूर्ति, वासनापूर्ति के लिये स्थूल शरीर की नितान्त आवश्यकता होती है। यह भूत प्रेतात्मायें शक्यतो नदी किनारे, जलाशय, पीपल क

पुराने वृक्ष पर निवास करते हैं। क्योंकि मृत्यु के समय मृतात्मा के गला, नाभि एवं हृदय सूख जाने पर वह पीने को जल मांगते हैं और इसी में उन्हें मृत्यु आती है और भूख प्यास की अवस्था में वह उपरोक्त स्थान पर निवास करते हैं और जब तक उनका तिया या दस क्रिया तथा वर्ष श्राद्ध इत्यादि कर्म नहीं होता तब तक यही जल पीकर निवास करते हैं। पीपल के वृक्ष में सूक्ष्म चेतना भरी रहती है यह पीपल वृक्ष में ऑक्सीजन वायु अर्थात् प्राण वायु ज्यादा उत्सर्जित करता है अत: यहां प्राण शक्ति प्रबल होती है। अत: अतृप्त आत्माओं को यहां विशेष प्रकार से प्राण शक्ति-प्राकृतिक ऊर्जा एवं नितान्त शान्ति प्राप्त होती है। अत: आम जनता पीपल वृक्ष की पूजन-परिक्रमायें करने पर उनकी मनोकामनायें सफल होती है तथा साधु सन्त, योगी इस वृक्ष सान्निध्य में कुछ उच्च स्तरीय साधना भी करते हैं। अघोरी तन्त्र मन्त्रादि कर्मकाण्ड भी इस वृक्ष सान्निध्य में यशस्वी होते हैं। अत: अघोरी कर्म करने के लिये श्मशान में स्थित पीपल वृक्ष होना चाहिये।

इन भूत-प्रेत-योनियों में अतृप्त आत्माएँ, वासना शरीर, कामना इच्छा शरीर बनकर रहते हैं। इनमें अच्छे-बुरे, आस्तिक-नास्तिक तथा पापी-पुण्यवान इत्यादि दोनों प्रकार के मृतात्मायें यहां निवास करते हैं और जहां कही भी अपने इच्छा, कामना, वासनाओं को अनुकूल परिस्थिति या गर्भ मिलता है यह पुनर्जन्म ले लेते हैं। या किसी कमजोर मनचित्त वाले व्यक्ति के शरीर में बड़े आसानी से प्रवेश करके अपने इच्छा, वासनाओं के अनुसार अच्छे संस्कारों से जगत कल्याण या बुरे संस्कारों से जगत का अकल्याण करते हैं। जो अपने स्थूल जीवन में भगवत् भजन दान पूण्यादि कर्म तथा निष्काम कर्म करते हैं वह दैवी गुण सम्पन्न मृतात्मायें किसी अच्छे भोले भाले कमजोर शरीर में प्रवेश अर्थात् परकाया प्रवेश करके देवी देवताओं के नाम लेकर जनमानस

का कल्याण करते हैं। कुछ दैवी गुण सम्पन्न आत्मायें इच्छा कामना पूर्ण होने पर सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करके अपने निष्काम भाव संस्कार से स्वर्ग लोक या मुक्ति की तरफ अग्रसर होते हैं। ऐसे अतृप्त आत्मायें प्रथम स्थूल शरीर छूटने पर अपने इच्छा, कामना, वासना, संस्कारों के कारण इच्छा शरीर, या कामना शरीर या वासना शरीर में प्रवेश करते हैं और अपनी इच्छित कामनाओं को पूर्ण करने के बाद सूक्ष्म शरीर में जाते हैं। यहां इच्छानुरुप पुनर्जन्म लेते हैं या मनोमय शरीर, चेतन शरीर में प्रवेश करके अनन्त यात्रा करते हुये मोक्ष मुक्ति की तरफ चले जाते हैं। अर्थात् वह स्थूल देह (मृत्युलोक) छोड़ने के बाद अतृप्त आत्माएँ अपनी इच्छा कामना वासना के संस्कारों से भूत योनी या प्रेत योनी में वासना या इच्छा कामना शरीर बनकर घूमते हैं। आगे संस्कारों को भोग कर पूर्ण होने के बाद वह सूक्ष्म शरीर में प्रवेश करते हैं यहां वह पूनर्जन्म लेते हैं। या परकाया प्रवेश भी करते हैं। या इस सूक्ष्म शरीर का भी त्याग करने पर मनोमय शरीर में प्रवेश करते हैं। यहां भी वह पूनर्जन्म ले सकते हैं या निष्काम संस्कार से स्वर्ग तथा मुक्ति की तरफ चल पड़ते हैं।

यह मृतात्मा जिस संस्कारों से प्राण छोड़ते हैं शक्यतो उसी संस्कार से उसी योनी में जन्म ले लेते हैं मृतात्मा शक्यतो तीन प्रकार के होते हैं- (१)सत गुणी, (२) रजो गुणी, (३) तमोगुणी। इसमें मनुष्य इन तीनों गुण से भरा हुआ जीवन जीता है। किन्तु जिसमें जो गुण ज्यादा विकसित या संस्कारित होता है उसे वही गुण युक्त आत्मा कहते हैं।

(१) सत गुणी मृतात्मायें = इन मृतात्माओं में सत गुण संस्कार अत्यंत ज्यादा प्रमाण में होते हैं जो कि वह अपने जीवित जीवन में अच्छे कर्म ज्यादा करते हैं। इनका मनोबल अर्थात् आत्मविश्वास ज्यादा होता है। यह निस्वार्थ, दयावान, पुण्यशील, शान्त, धार्मिक प्रवृति के विशेषत:

ज्ञानी आदि सत गुण सम्पन्न होते हैं। इस कारण यह मृतात्मायें ज्यादा शान्त एवं एकान्त जगह निवास करते हैं। जन मानस जगत में वह आसाध्य कार्य तथा जनता को उपकारक कार्य कर सकते हैं। यह सात्विक, धार्मिक, निस्वार्थ व्यक्ति को सहकार्य मार्गदर्शन एवं साक्षात्कार भी कराते हैं तथा दुष्ट स्वार्थी पापियों को दण्डित भी कराते हैं। अगर वह पूनर्जन्म लेते हैं तो ऊर्ध्व लोक अर्थात् अच्छे सात्विक और सम्पन्न लोग में पूनर्जन्म लेते हैं। या स्वर्ग लोक में स्वर्ग सुख भोगते हैं। इन्हें ज्ञान की उपलब्धि होने के कारण वह सूक्ष्म शरीर छोड़कर मनोमय शरीर में प्रवेश करते हैं। यह वह विदेही आत्मा चेतन आत्मा रुप में रहते हैं। आगे कुछ समय पश्चात् इसका भी त्याग करके वह मुक्ति के मार्ग या अपने इष्ट के साथ एक रुप होकर मोक्ष मुक्त रुप हो जाते हैं यह शक्यतो ज्यादा भावनात्मक भाव में रहते हैं। यह स्वर्गीय उच्चस्तरीय वातावरण में रहते हैं। देवी देवता रुप में रहते हैं। साधु सन्तों की भूमिका में रहते हैं।

(२) रजोगुण मृतात्मायें = इन मृतात्माओं में राजसी गुण ज्यादा बलवान होते हैं जीवित जीवन में उन्होंने सभी कर्म निजी स्वार्थ संस्कारों से किये होते हैं। इस कारण यह मृतात्मायें अत्यन्त मोह आसक्त तथा लोलुपता से युक्त होते हैं और वह अतृप्त, अशान्त होते हैं। अपनी इच्छा या विशेषत: महत्वाकांक्षी भी होते हैं। कामना वासनाओं के साथ सूक्ष्म रुप में घूमते हैं और अपनी इच्छा, कामना, वासना की पूर्ति के लिये वह अपने अनुकूल स्वभाव के शरीर में प्रवेश करके उनसे कार्य करवाते हैं वह व्यक्ति के चित्त पर ज्यादा प्रभाव डालकर उसके शरीर में प्रवेश करते हैं। यह दयावान और कृपालु भी होने के कारण उस व्यक्ति को व्यापार में धन लाभ, दान धर्म, कलाकारों को उत्कृष्ट प्रेरणा और अति उच्च सफलता प्राप्त करा देते हैं। यह अतृप्त आत्माओं का ज्यादातर

मृत्युलोक से सम्बंध रहता है इसलिये इन्हें मुक्त मोक्ष रुप होने को बहुत ज्यादा इंतजार करना पड़ता हैं शक्यतो यह पुनर्जन्म लेते हैं, जन्म मृत्यु के आवागमन में ही रहते हैं। क्योंकि यह प्राणमय रुप में ही रहते हैं और प्राण शरीर धारण कर सूक्ष्मता में रहते हैं। यह आत्मायें यक्ष, गन्धर्व, किन्नर इत्यादि रुप में रहते हैं। शक्यतो पूनर्जन्म लेकर आत्मज्ञान को प्राप्त करके मुक्ति के तरफ जाते है।

(३) तमोगुणी मृतात्मायें = इनकी अधोगति होती है क्योंकि यह मृतात्मा अत्यंत तामसी वृत्ति के निकृष्ट, अस्थिर, अशान्त, प्रबल वासना, कपटी, हत्यारे, पापी आदि वासनाओं से भरे रहते हैं। यह मृतात्मायें व्यक्ति मस्तिष्क पर प्रभाव करके उसे वशीभूत करते हैं और उनसे निकृष्ट कार्य करवाते हैं, चोरी, चपाटी, स्त्रीगमन, हत्या, लूट, झगड़े, गन्दे-गन्दे नशे आदि कार्य प्रेतात्मा बनकर करवाते हैं। भयंकर अपघात, तूफान, दंगा-फसाद आदि करने में वह खुशी मानते हैं। यह वासना शरीर में रहते हैं इन्हें प्रेतात्मा या भूतात्मा कहते हैं यह अपने मनइच्छा को ही प्राधान्य देते हैं अज्ञान होने के कारण इन्हें पता नहीं चलता कि ये क्या कर रहे हैं। इन्हें नरक यातनायें भी भोगनी पड़ती हैं। तमोगुण मृतात्मायें जैसे बेताल-पिशाच, लम्बी आयु के प्रेत, हाकिनी, डाकिनी, शाकिनी इत्यादि होते हैं। यह हमेशा प्रकृति के नियमों का उत्पात करते रहते हैं।

मृतात्मा = मृतात्मा प्रकृति के साथ प्राण के सूक्ष्मतम कणों से बनते हैं और अन्तरिक्ष की गहराइयों में रहते हैं। इनका मृत्यु लोक से कम सम्पर्क रहता है।

प्रेतात्मा = यह शरीर के रचना वासना की कणों से बनते हैं वह धरती आवास में रहते हैं। मृत्यु लोक मानव वातावरण में रहना चाहते हैं और ज्यादा समय तक रहते हैं।

इस प्रकार सत्व, रज, तमो गुणी मृतात्मायें पृथ्वी (मृत्युलोक) तत्व परमाणु से संघटित होकर प्रगट भी होते हैं तथा सूक्ष्म रुप में भी इच्छित कार्य करते हैं, यह पुनर्जन्म भी लेते हैं और इच्छित कार्य करते रहते हैं या किसी कमजोर व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर अपनी कामनाओं, वासनाओं को पूरा कर सकते हैं। यह प्रथम स्थूल शरीर छोड़ने के बाद इच्छा शरीर या वासनामय शरीर या कामना शरीर में अर्थात् भूत शरीर, प्रेत शरीर में प्रवेश करते हैं और इच्छा कामना पूर्ण होने के बाद सूक्ष्म शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। बाद में मनोमय शरीर में प्रवेश करके कुछ दिन पश्चात् त्याग करके कारण परमाणुओं में चले जाते हैं और आत्मतत्व में प्रवेश करके मोक्ष मुक्त हो जाते हैं। किन्तु इसमें त्याग, वैराग्य, ज्ञान जैसे उच्चतम संस्कार होना आवश्यक है। इसलिये वह अनेक बार जन्म भी लेते हैं और त्याग वैराग्य ज्ञान के उपलब्धी होकर मृत्यु होने के बाद मुक्ति प्रद होते हैं।



मृत्यु

(३०) नाथ सिद्धों की मुक्ति

यह नाथ सिद्धों की गुरु शिष्य परम्परा पुरातन काल से चलती आयी है जो ज्ञान, वैराग्य मुख्यत: योग प्रणाली सिद्धान्तों पर आधारित है। परम ईश्वर आदिनाथजी ने सर्व प्रथम उदयनाथजी (पार्वती) को महायोगज्ञान का उपदेश देकर गुरु शिष्य परम्परा का प्रारम्भ किया आगे यह ज्ञान मत्स्येन्द्रनाथजी को मिला उन्होंने गुरु गोरक्षनाथजी को सुनाया आगे इस महायोग ज्ञान का प्रचार प्रसार नवनाथ चौरासी सिद्धों ने किया और आगे अनन्त कोट सिद्धों का निर्माण हुआ। अत: आज भी यह गुरु+शिष्य परम्परा योग प्रणाली का उजागर है। वही परम्परा, वही ज्ञान, वही योग साधना, वही तन्त्र मन्त्र कर्मकाण्ड जैसी उपासनाएँ एवं भक्ति आज भी बड़े ही रोचक, प्रेम श्रद्धा से, भक्ति भाव से नाथ सिद्धों में तथा जनमानस भक्तों में चलती है। बस समय काल अनुरूप थोड़ा परिवर्तन होता है। इसलिए इसे सनातन सिद्ध परम्परा कहते है।

कहते हैं कि यह धरातल पर साधु सन्त ऋषि-मुनि, सन्यासी, वैरागी, ज्ञानी, त्यागी, तपस्वी, योगी, नाथ सिद्ध और समस्त सतपुरुष कि पुण्याई पर यह संसार टिका है। इनके उपदेश, संस्कार एवं मार्गदर्शन से एक परम शक्ति का लाभ होता है अत: यह सत्पुरुष महापुरुष बनते रहेंगे। यह प्राकृतिक परिवर्तन है। जब व्यक्ति साधु, सन्त, नाथ, महात्मा बन जाते हैं तो इनकी कोई उमर या वजह नहीं होती। यह किसी भी समय किसी भी कारण से बन जाते हैं।

इसमें किसी किसी को प्राकृतिक अर्थात् अपने आप वैराग्य या संसार से त्याग होकर महात्मा बनते हैं। हो सकता है कि यह उनका पूर्व जन्मों के संस्कार हो। कोई कोई साधु सन्त या नाथ हट्ट करके बन जाते हैं। हट्ट से त्याग वैराग्य अपनाते हैं। तो कोई औरों को देखते हुये अनुकरणीय वैराग्य धारण करते हैं। तो कोई परिस्थिति विवशता के

अनुसार महात्मा बनते हैं। यह इच्छा कामना महत्वकांक्षा आदि पर निर्भर है। अत: इसमें सभी यशस्वी होते हैं ऐसा नहीं है। इसके कोई अति उच्च चरम सीमा या शिखर पर यशस्वी होते हैं। तो किसी का पतन होता है। कोई इधर ना उधर (माया ना ब्रह्म) बीच में ही अटक जाते हैं। विशेषत: जो प्राकृतिक (अपने आप) वैराग्य से महात्मा बनते हैं इनका उद्देश्य केवल मुक्ति मोक्ष होता है और यही महात्मा यशस्वी होते हैं। ऐसे बहुत विरले ही महात्मा होते हैं। जो हट्ट से महात्मा बनते हैं वह शक्यतो अहम (मैं) भाव में रहते हुये पतन हो जाता है। जो अनुकरणीय महात्मा बनते हैं। वह शक्यतो फँस जाते हैं यह फक्कड़ तो बन जाते हैं, किन्तु इसे निभाना कठिन हो जाता है अत: वह फँस जाते हैं और जो परिस्थिति अनुरुप महात्मा बनते हैं वह आगे मन इच्छानुरुप परिस्थिति मिलते ही उधर ही मुड़ जाते हैं अर्थात् अपना मार्ग बदल देते हैं। अत: इन सबकी जड़ केवल ज्ञान अज्ञान ही है। विशेषत: दूसरा मुख्य आधार सत्पात्र सतगुरुजी की प्राप्ति है। शक्यतो जैसे गुरु वैसे शिष्य की गति होती है। जिन्हें आत्मसाक्षात्कारी, ज्ञानी, परम वैराग्यी, योग तपस्या पारंगत सतगुरु की प्राप्ति होती है वह शिष्य भाग्यवन्त होकर उसके पात्रता अनुसार वह संसार सागर में तर जाते हैं।

अत: जिनको मूल उद्देश्य, ध्येय, इच्छा या महत्वकांक्षा केवल मोक्ष मुक्ति होती है वही महात्मा इस फकीरी में यशस्वी माने जाते हैं। ऐसा कोई विरला ही होता है। यहां तो कोई ज्ञान प्राप्ति, तो कोई योग साधना प्राप्ति, तो कोई तान्त्रिक मान्त्रिक इत्यादि कर्मकाण्ड, तो कोई विभिन्न सिद्धियों, तो कोई चमत्कारी बनने हेतु, तो कोई जन कल्याण हेतु, कोई अघोरी बनने हेतु, तो कोई मान-पान प्रतिष्ठा पाने के लिये, तो कोई धन कमाने हेतु, तो कोई गुरु बनने, तो कोई भगवान बनने हेतु आदि अनेकों उद्देश्य से महात्मा बनते हैं और यह महात्मा केवल

अपने उद्देश्य पूर्ति, या इच्छापूर्ति तक ही सीमित रहते हैं। किन्तु वह मोक्ष मुक्ति से कोसों दूर रहते हैं। मुक्ति अर्थात् कुछ भी नहीं चाहिये वहां केवल रिक्तता है। शून्यता है। वहां एकरुप हो जाना वहां मुक्ति में विलय होना है। वह हर प्रकार से हर परिस्थिति में शून्य में जाना होता है। अर्थात् आत्मा का परमात्मा में विलय हो जाना है। जिसे जीव का शिव मिलन (शिव अर्थात् कल्याण) भी कहते हैं। यह परमात्म, परमतत्व, अलख निरंजन जो निरंजन निराकार है इन्हें प्राप्त करने के लिये प्रथम सतगुरु कृपा-त्याग वैराग्य एवं ज्ञान, शाश्वत ज्ञान की प्राप्ति होना आवश्यक है। सब कुछ करते कराते हुये उसे त्यागना और अन्त में अपनी काया को भी स्वेच्छा से त्यागने वाले को ही मुक्ति मिलती है ऐसे महात्मा जो कि नाथ सिद्ध महात्मा शक्यतो जीते जी मृत्यु को अपनाते हैं। वह योग द्वारा जीवित समाधि लेते हुये शरीर त्याग कर परमात्मा परमतत्व उस अलख निरंजन में विलीन हो जाते हैं और यही महात्मा मुक्ति को प्राप्त होते हैं। पूर्व काल में कोई कोई उच्चकोटी के महात्मा सशरीर लेकर मुक्त होना चाहते थे। किन्तु सशरीर लेकर मुक्ति नहीं हो सकती क्योंकि वहाँ मैं का भाव रहता है। अतः वह अमर हो सकते हैं। मुक्ति अर्थात् अलख निरन्जन, अलक्ष्य निराकार, निर्विकार परमात्मा, परमतत्व, शून्य, महाशून्य, परम शून्य आदि की अवस्था होती है। एक बात अवश्य सत्य है कि जो भी महात्मा या साधु सन्त या नाथ या मनुष्य नर नारी हो जो किसी भी परिस्थिति या किसी भी कारण या उद्देश्य से अगर महात्मा बनता है और उसका अन्तिम ध्येय केवल मोक्ष मुक्ति ही है तो वह व्यक्ति अपने निहित एवं प्रामाणिक प्रयासों से अवश्य यशस्वी होगा। क्योंकि मुक्ति को पाना यह प्राकृतिक निसर्ग सृष्टि का मूल है जो कि हम वहीं से निरंजन निराकार से आये हैं और पुनः वहीं जाना है। नाथ सिद्ध हमेशा कहते हैं अगम से आये हैं

निगम को जाना है। जो कि यह मुक्ति का स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्राकृतिक उद्देश्य तथा ध्येय अवश्य पूर्ण होता है और ऐसे प्रामाणिक निस्वार्थ उद्देश्य पूर्ति को यह प्रकृति जो स्वभावता निस्वार्थ एवं प्रामाणिक है यह स्वयं उसको मदद, सहयोग करती है। अत: मुक्ति यह हर एक प्राणी का मूलभूत अधिकार भी है।

इस मोक्ष मुक्ति के सत्य को अर्थात् मृत्यु को अर्थात् स्थूल काया-माया त्यागकर मुक्ति को प्राप्त होना सब जानते हैं। या समझाने पर समझ भी जाते हैं। किन्तु उसे अपनाना नहीं चाहते हैं। आजमाना नहीं चाहते उस सत्य मुक्ति मोक्ष से एकरुप नहीं होना चाहते। आखिर क्यों नहीं होना चाहते?

इस संसार में माया जगत में व्यक्ति माया मोहवश एकरुप हो जाते हैं। स्वार्थ में एकरुप हो सकते हैं काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ, ईर्ष्या आदि में एकरुप होते हैं। कलाकार अपनी कला में एकरुप होते हैं। नाटककार नाटक में, गायक गायन में, चित्रकार चित्रों में एकरुप होता है। चींटी से लेकर बड़े बड़े प्राणी नर-नारी प्रत्येक जीवन अपने काम क्रीड़ा में एकरुप हो जाते हैं। अर्थात् सभी अपने अच्छे बुरे कर्म में एकरुप हो सकते हैं। वहां ना उपदेश कि जरुरत है, ना मार्गदर्शन, ना शिक्षा वह सब कुछ एकरुप होकर होता है। किन्तु मोक्ष-मुक्ति में एकरुप नहीं हो सकते? जो कि यह प्राकृतिक सत्य-शाश्वत, आनन्द, सनातन मुक्ति में इस परम शान्ति में इस शाश्वत सुख में एक रुप, एक रस होना नहीं चाहते? युगों युगों से साधु सन्त महात्मा इस सत्य को समझाते आये, बताते आये, किसी किसी विरले ने तो प्रत्यक्ष जीवित समाधि लेकर शरीर का भी त्याग कर मुक्ति को जाना भी है एवं दिखाया भी है। फिर भी इन्सान वहीं का वहीं है। यह इन्सान भगवत् प्रति कर्म करेंगे, दान धर्म करेंगे, मठ मन्दिर चर्च मस्जिद बनायेंगे। इस

प्रकार सब कुछ करेंगे किन्तु अपने अपने स्वार्थ के लिये ही करेंगे, कामना से करेंगे, प्रत्यक्ष भगवान सन्मुख आ जाये तो भी कुछ ना कुछ स्वार्थ वश मांग ही लेंगे। क्षणिक सुख, क्षणिक आनन्द को ही वह समाधान मान बैठे शाश्वत सुख-शाश्वत शान्ति एवं शाश्वत आनन्द के समाधान ही भूल बैठे हैं, गवा बैठे हैं। सतगुरु बनायेंगे, गुरु बनेंगे, चेले शिष्य बनायेंगे, धर्म कर्म जप ध्यान अनुष्ठान करेंगे तप-तपस्या पूजा पाठ सब कुछ करेंगे कुछ ना कुछ स्वार्थवश ही करेंगे। किन्तु इन्हें मुक्ति नहीं चाहिये। वह इस आवागमन से छूटना नहीं चाहते इस माया जगत के भ्रम से भ्रमित होकर इसी भ्रममय में शान्ति आनन्द सुख को खोज रहे हैं। किन्तु यह माया जगत का सुख दु:ख आवागमन का चक्र क्षणिक है। नाशवन्त है और बस यह चलता ही रहेगा। कहने का तात्पर्य यही है कि इन्सान को निस्वार्थ होकर केवल मोक्ष मुक्ति के लिये प्रयास करने चाहिये। जिससे सभी शंकायें सभी भ्रम, सभी जातिवाद, सभी धर्मवाद, सभी ऊँच-नीचता, झगड़े-फसाद अपने आप ही खत्म हो जायेंगे। अत: इन्सान को निस्वार्थ दार्शनिक दृष्टात्मक तटस्थ, तथा आत्मसाक्षात्कारी होकर आत्मानन्द में रहना चाहिये। ऐसे स्थिति में वह मृत्यु से नहीं डरेगा, अच्छी बुरी परिस्थिति को भी निभायेगा और मृत्यु उपरान्त उस परमतत्व परमात्मा में विलीन होकर मुक्ति को पायेगा।

(क) नाथ सिद्धों का महा प्रयाण

यह सत्य रुप मृत्यु सभी जीव प्राणीमात्र को अवश्य आती है। इसमें साधु सन्त, महात्मा एवं नाथ सिद्ध योगेश्वर को भी मृत्यु के समय यह स्थूल शरीर त्यागना पड़ता है। इन महात्माओं ने अपने विशेष गुण, विशेष सिद्धियाँ तथा सामाजिक उत्थान कर्म, तो कुछ क्रान्ति तथा कुछ नये धर्म का निर्माण आदि गुणों से मरने के उपरान्त अमर हो जाते हैं। तो कोई महात्मा अपने योग बल से विशेषत: नाथ सिद्ध योगेश्वर

सकाया लेकर गये और अमर हो गये। या कोई परकाया प्रवेश (शरीर बदलकर) करके अमरता में रहते हैं। तपस्या-साधना -समाज कल्याण आदि करते हुये प्रकृति पर विजय पाने का संकेत करते हैं। मृत्यु यह प्राकृतिक देन है। जैसे वस्त्र बदलते हैं वैसे आत्मा शरीर बदलती रहती है। जिस प्रकार काम होने के बाद खराब हुयी चीज-वस्तु को हम फेंक देते हैं। उसी प्रकार हमारा शरीर जीवन साधना में विनियोग करते करते जब वृद्ध या जर्जर या रोगग्रस्त हो जाता है तो उसे स्वेच्छा से त्यागना चाहिये और निर्मोह अनासक्त होकर मुक्ति प्रद हो जाना चाहिये।

(ख) योग साधना के द्वारा मुक्ति

हमारे नाथ सिद्ध योग परम्परा में आत्मसाक्षात्कारी सतगुरु अपने योग्य शिष्य को सब कुछ देकर मोक्ष मुक्ति के तरफ अग्रसर हो जाते हैं। जब कोई शिष्य अपने सतगुरुजी के मार्गदर्शन अनुसार योग साधना में रत रहते हैं तो उत्तरोत्तर साधना में प्रगति करते हुये एक एक अवस्थाओं को पार करते हुये मोक्ष मुक्ति की तरफ चले जाते हैं। प्रथम वह स्थूल शरीर अवस्था में पद्मासन या सिद्धासन में बैठकर सदगुरुजी के दिये हुये मन्त्र जाप घंटों तक करते हैं। कुछ दिन पश्चात् आसन सिद्ध होने पर अर्थात् ज्यादा समय बैठने की पात्रता आने पर धीरे धीरे सूर्य नमस्कार या विभिन्न योगासनों का अभ्यास करते हैं। तदनन्तर प्राणायाम करते हैं जब उनमें एकाग्रता का भाव बढने लगता है तो विभिन्न प्राणायाम द्वारा कुम्भक करने का अभ्यास बढ़ाते हुये सूर्य भेदन, उज्जायी, सीत्कारी, शीतली, भस्त्रिका, भ्रामरी, मूर्च्छा प्लाविनी इत्यादि प्राणायाम का सक्षम अभ्यास करते हैं। साथ में मुद्रायें और बन्ध जैसे महामुद्रा, महाबन्ध, महावेध, खेचरी, उड्डीयान, मूलबन्ध, जालन्धर विपरीत करणी, वज्रोली, सहजोली, अमरोली, शक्ति चालन इत्यादि का भी सक्षम अभ्यास करते हैं। [उपरोक्त एक दो प्राणायाम या एक दो मुद्रा तथा

बन्ध भी साधक को परिपूर्ण आने तक भी कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो सकती है। कुण्डलिनी जाग्रति या चक्र जाग्रति यह योग शक्ति का तन्त्र है इसे कुण्डलिनी योग की उपासना या योग साधना, कर्म योग, तन्त्र योग, मन्त्र योग या उपासना भी कहते हैं।] सतगुरुजी शिष्य की उत्तरोत्तर साधना में प्रगति करवाते हैं तथा योग का ज्ञान भी देते हैं। जब शिष्य योगासनों प्राणायाम तथा मुद्रा-बन्ध करने में सक्षम होता है तो साधक भक्ति योग तथा श्रद्धा विश्वास इत्यादि द्वारा इच्छा या संकल्प शक्ति को प्रबल करके प्राणायाम करते हुये प्राण को दीर्घ कुम्भक करते हुये अपने मूलाधार चक्र अर्थात् गुदा स्थान पर इच्छा शक्ति या संकल्प शक्ति अथवा प्राण शक्ति से बार बार ताड़न करता है। यहां अगर मूल बंध लगाया तो प्राण और अपाण वायु में संघर्ष छिड़ता है और साधक के गुदा स्थान में बार बार अकुंचन प्रसारण (लुहार के धमनी जैसा) करना पड़ता है और यह बार बार करने पर उसकी इच्छा शक्ति संकल्प शक्ति के साथ प्राण अपाण की संघर्ष शक्ति संवेदना शक्ति को प्रबल करती है और जब साधक इस चक्र के तत्वबीज "लँ" का अखंड मनन जप करे तो मन्त्र शक्ति वहां सहकार्य करती है। इसे मूलाधार को आधार चक्र भी कहते हैं। जो कुण्डलिनी का मूल स्थान है यहां चतुर्दल वँ शँ षँ सँ बीज अक्षरों से जाप करने पर यहां की कालधामिनी और पून्तला नामक नालीकायें पल्लवित होकर शक्ति संक्रमित होती है। इस मूलाधार चक्र का अभ्यास उत्तरोत्तर प्रगति करने पर लाल रंग की छटायें दिखती है। इस समय योगी आँखें बन्द करके नासिकाग्रभाग पर लक्ष केन्द्रित करता है तो चक्र दर्शन भी हो सकता है यह लाल रंग का चतुष्कोण पुष्प नजर आता है। यह चक्र पृथ्वी तत्व का होने पर साधक को जड़त्व आकर धरती आसन पर वह दृढ़ हो जाता है। अत: साधक की श्वास क्रिया दोनों नाक छिद्र से शुरु होती है तब वह मूलाधार जाग्रत

होने का संकेत पाता है। अत: साधना में पुन: पुन: प्रगति करते हुये वह संवेदना शक्ति महापद्म चक्र जो गुदा और लिंग के बीच में होता है। यहां यह संवेदनाशक्ति जिसमें इच्छा, संकल्प और प्राण अपाण शक्तियाँ होती है। अत: इन शक्तियों का महापद्म चक्र में कामना शक्ति में परिवर्तन होता है। यहां अर्थात् गुदा और लिंग के बीच में अब बुदबुदा सा स्पन्दन होने लगता है यह कामना शक्ति की संवेदना होती है बार बार अभ्यास करने पर महापद्म चक्र जाग्रत होता है यहां काम संस्कार जाग्रत होता है किन्तु प्राणायाम द्वारा उसपर संयम करना पड़ता है इसमें जितना काम भाव पर संयम करोगें उतनी कामना शक्ति बढ़ेगी अत: इसकी पहचान साधक को प्राकृतिक अपने आप संसारिक मोह माया से विरक्ति होने लगती है। किसी बहिर्मुख क्रिया कलापों में उसकी दिलचस्पी नहीं रहती। वह मनुष्यों में श्रेष्ठ विद्या शास्त्र में रुचि लेता है आरोग्यवन्त होकर आनन्द चित्त में रहने लगता है। मुख्यत: वह अंतर्मुखी हो जाता है। आगे योगावृढ़ होकर अभ्यास को बढ़ाते हुये प्राणायाम द्वारा प्राण-अपान शक्ति, चिन्तन से संकल्प शक्ति मनन से मन्त्र शक्ति इस प्रकार इच्छा शक्ति से परावर्तित कामना शक्ति का संक्रमण आगे स्वाधिष्ठान चक्र पर होता है। यहां उपरोक्त कामना शक्ति संवेदना का वासना शक्ति संवेदना में परिवर्तन होकर बार बार साधना प्रयास से लिंग स्थान प्रभावित होकर अंडकोष जड़ में सूई चुभन जैसी संवेदना होती है। यहां का परिपक्व वीर्य, पुष्ट, वीर्य शक्ति भी कार्य करना प्रारम्भ करती है। यहां ब्रह्मचर्य पालन करने वाले साधक को वीर्य शक्ति अत्यंत पुष्ट और बलशाली एवं प्रबल होती है।

मृत्यु दो प्रकार से आती है एक खर्च हुये श्वास और दूसरा काम भाव (भोग) यह दोनों शक्तियाँ जैसे जैसे क्षीण होती है मृत्यु वैसे वैसे नजदीक आती है। अत: योगी इन दोनों शक्ति का विनियोग (भोग में)

ना करते हुये उसपर संयम करके उसका विनियोग योग साधना (अर्थात् अध्यात्मिक भाव शक्ति) में परावर्तित करके करता है। इसी प्रकार जीवन की काम वासनाएँ, कामनाएँ, इच्छायें, संकल्प-विकल्प, मद मोह, मत्सर, क्रोध आदि शक्तियों पर संयम (योग द्वारा या तपस्या द्वारा) करके उन शक्तियों का साधना में विनियोग करते हैं। यह शक्तियाँ काया अन्दर संचित करके उसे साधना काल में उपयोग में लाते हैं।

इस प्रकार यहां प्राण अपाण शक्ति कामना शक्ति के साथ वासना शक्ति की संवेदना से स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रत होकर वीर्य ऊर्ध्वरिता होकर कुण्डलिनी शक्ति का कार्य करता है। नाथ सिद्धों में ऊर्ध्वरिता वीर्य को ही कुण्डलिनी शक्ति मानते हैं। इसी प्रकार मन विचार, भाव, भावनाओं को ऊर्ध्वरिता करने को उनमन अवस्था कहते हैं और यह सभी शक्तियाँ चक्र जाग्रति का कार्य करवाती है। अत: जब वीर्य स्त्रोत ऊर्ध्वरिता होने को प्रारम्भ होता है। यहां शरीर में कम्पन आने लगते हैं। तब सक्षम प्राणायाम तथा मूलबंध लगाकर साधक कामना, वासना के ऊपर संयम करते हैं जिससे भोगबहिर्मुख शक्तियों का अन्तरमुख शक्ति में परिवर्तन करते हैं और इस प्रकार इन शक्तियों द्वारा स्वाधिष्ठान चक्र के सूत्रा एवं शारिदनी नलिकायें जाग्रत होकर संक्रमित होता है। यहां साधक 'वँ' इस जल तत्व बीज का जाप करने पर सिन्दूर रंग के षट दल कमल का यह चक्र संचलित होता है। जिसके बँ भँ मँ यँ रँ लँ यह अक्षर है। इनका इष्ट विष्णु देवता तथा शक्ति शंकिनी कार्य करती है। यह चक्र जाग्रत होने पर योगी के जबान पर अनेक प्रकार के स्वाद आने लगते हैं। जल तत्व के दृश्य दिखने लगते हैं नदी, समुद्र, जल प्रपात, बारिश आदि और वीर्य रुपी कुण्डलिनी शक्ति सुषुम्ना के ब्रह्माण्डी में प्रवेश कर ऊर्ध्वरिता होने लगती है। यहां साधक के अहंकार और अन्य समस्त

विकारों का नाश होता है। योगी नम्र होकर मोह माया के प्रति नीरस हो जाता है और त्याग वैराग्य की प्राप्ति होती है और वह एकान्त और शान्ति को चाहने लगता है। शुद्ध चेतनायें प्रेरणायें उत्पन्न होकर वह गद्य पद्य रचना भी करने लगता है और योगी ब्रह्मानन्द में रहता है। इस प्रकार साधक योग और ध्यान में एकाग्र अन्तर्मुख होकर प्रगति करता हुआ प्राणायाम से सक्षम कुम्भक करके मूलबन्ध लगाकर कुण्डलिनी शक्ति [कुण्डलिनी शक्ति = वीर्य शक्ति, वासना शक्ति, कामना शक्ति आदि सभी शक्तियों की संवेदना है।] अत: यह कुण्डलिनी शक्ति कुम्भक करके ऊर्ध्वरिता अर्थात् ऊपर खींचकर प्राण छोड़े ऐसा बार बार करने पर कुण्डलिनी शक्ति स्वाधिष्ठान चक्र से मणिपुर चक्र की ओर आती है। यह नाभि स्थान में दस दलों वाला पुष्प है जिनके डँ से लेकर फँ तक बीजाक्षर है। यह चक्र अग्नि तत्व का है और इनका 'रँ' बीजाक्षर का अखण्ड जप करने पर चक्र जाग्रत होता है। अत: प्राणायाम से यहाँ की नसें तारा, तारका, माधवी, अनीता शुद्ध होती है और यहा उड्डीयान बन्ध लगाने से अग्नि तत्व से नाभि में उष्णता निर्माण होती है और युक्ता, इसीका, शुक्रा, काली, विजोली, काइल्ता यह नलिकायें चेतन होकर पल्लवित होती है तब कुण्डलिनी शक्ति मणिपूर में प्रवेश करती है। यहां रुद्र देवता और लंकिनी शक्ति कार्य करती है। यहां मूलबन्ध उड्डियान बन्ध और शाम्भवी मुद्रा एक ही समय कुम्भक करने पर चक्र दर्शन भी हो जाता है। मेष राशी के व्यक्ति यह चक्र शीघ्र जाग्रत कर सकते हैं। साधक को नीला प्रकाश दर्शन होता है। यहां भ्रामरी प्राणायाम करने पर नाभि स्थान कम्पन होकर उष्णता निर्माण होकर साधक को पसीना (सुगंधित) आता है। पसीना कपड़े से पोंछना नहीं चाहिये यह पसीना शरीर पर ही मलते हैं। कुण्डलिनी और (वीर्य) शक्ति से बल मिलता है यहां अब संकल्प या इच्छा शक्ति का प्रबल

विचार में परिवर्तन होता है। इस चक्र में समान वायु से प्राण-अपान वायु संघर्ष (प्राणायाम-उड्डियान बन्ध के कारण) करते हैं। इस प्रकार कुण्डलिनी शक्ति, वीर्य, बल, प्रबल विचार शक्ति तथा प्राण-अपाण समान वायु बल इन सभी शक्तियों द्वारा कुण्डलिनी उत्थान अर्थात् ऊर्ध्वरिता हृदय स्थान के तरफ निकलती है। यहां योगी अत्यंत संयमी बोलने में चतुर, पालन स्थिति संहार में सक्षम होता है। यह सटीक और सत्य, सक्षम वचन लिखता या बोलता है।

अतः पुनः प्राणायाम, बन्ध मुद्राओं का अभ्यास बार बार करने पर जब कुण्डलिनी हृदय स्थान, अनहद चक्र में प्रवेश करती है तो यहां कुम्भक प्राणायाम करने पर शारदा, वृन्दा, नीला और पीता नलिकायें शुद्ध स्वच्छ होकर चेतन होती है। यह द्वादश दलों का पुष्प जिनके बीजाक्षर 'कँ' से 'ठँ' तक है। यह मुख्यतः वायु तत्व का चक्र है जिसका बीज 'यँ' होने से इसका जाप करने पर अनहद चक्र जाग्रत होता है। इसका इष्ट ईशान रुद्र तथा काकिनी शक्ति कार्य करते हैं। यहां कुण्डलिनी (वीर्य) शक्ति कार्य करती है प्राण-अपाण और समान वायु इन तीनों वायु बल व्यान वायु पर आघात करते हैं। इस समय यहां संघर्ष छिड़ता है और यहां इच्छा शक्ति, संकल्प, कामना तथा वासना इन शक्तियों का भाव (भावना) शक्ति में परिवर्तन होता है। यहां कुम्भक प्राणायाम करके उड्डियान बन्ध लगायें और समस्त बाहरी ध्वनियों को कान, आँखें, नाक, मुख इत्यादि बन्द कर अन्दर अनहद चक्र पर ध्यान एकाग्र करें तब वहां अनहद नाद सुनायी देता है। यहाँ हृदय की श्वासोच्छवास की गति धीमी करनी पड़ती है और बड़े ही गौर से सुनना चाहिये यह अनहद नाद प्राकृतिक ॐ सोहं का ध्वनि होता है इसे नाद ब्रह्म भी कहते हैं। नाथ सिद्ध महात्मा यह अनहद नाद सुनने पर ॐ कार शिव आदिनाथजी का साक्षात्कार मानते हैं। अनहद

चक्र जाग्रति से समस्त शरीर में रक्त संचार में उष्णता निर्माण करता है और यह शक्ति हृदय गति को संग्रही करके संयम की जाती है। इस प्रकार अनहद चक्र जाग्रति के पश्चात् साधक को महाआनन्द की प्राप्ति होती है काया तेजस्वी होती है। समस्त काया शुद्ध-पवित्र होती है। प्राकृतिक महाज्ञान की प्राप्ति एवं ईशत्व सिद्धि मिलती है। साधना में साधक का शरीर हल्का होता है, हवा में, या आकाश में उड़ रहे हैं, ऐसा अनुभव आता है। माया रुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथजी ॐकार शिव का हृदयस्थ इसी अनहद चक्र में ध्यान (तपस्या) करने पर उन्हें परकाया प्रवेश की सिद्धि प्राप्त हुयी थी।

अत: साधक विशेषत: उज्जयी प्राणायाम (कुम्भक) का अभ्यास करता है यहां प्राण नाक से कण्ठ में और कण्ठ से हृदय से जाकर स्थिर किया जाता है यहां जालन्धर बन्ध लगाने से (मृत्युजंय) मृत्यु वश में किया जाता है। वही हृदय में संचित की हुयी प्राण शक्ति भाव (भावना) शक्ति और उदान व्यान वायुओं की शक्तियाँ संक्रमित होकर यहां महाभाव (आर्तभाव) की शक्ति परिवर्तित होती है। क्योंकि यहां कुण्डलिनी (वीर्य) शक्ति उदान वायु में संघर्ष करती है और यहां का विशुद्ध चक्र जाग्रत होता है। जब साधक जालन्धर बन्ध अर्थात् कण्ठ गले के विवर को संकोचित करके ठोड़ी को वक्ष पर स्थिर करने पर कण्ठमूल का निरोध होता है और सहास्त्रागार का द्रवित अमृत नाभि स्थान सूर्य (अग्नि) मुख मे गिरकर भस्म होने से बचाते हैं और साधक उसका पान करके अमरत्व प्राप्त करता है। यहां इडा, पिंगला का भी निरोध हो जाता है और कुण्डलिनी (वीर्य) शक्ति सुषुम्ना में ऊध्वरिता होकर प्रवाहित होती है। यहां साधक अमृतरस पीकर अमरत्व पाता है तथा इसे भूख नहीं सताती, दूरी श्रवण सिद्धि, आकाश गमन सिद्धियां प्राप्त होती है जो गोरक्षनाथजी को प्राप्त थी।

साधक अपने वाक् शक्ति से सभी को आकर्षित मोहित करता है।

अत: साधक उज्जयी कुम्भक प्राणायाम तथा जालन्धर बन्ध लगाते हुये शाम्भवी मुद्रा अर्थात् मस्तक पर दोनों आंखों के भौहों के बीच में ध्यान एकाग्र करें। यहां आज्ञा चक्र दो दलों वाला हँ क्षँ बीज अक्षरों से विद्यमान है। इसका तत्व बीज 'ॐ' प्रणव है। कर्म इन्द्रिय आंखें होने के कारण आंखें बन्द करके शाम्भवी मुद्रा में ॐ कार प्रणव का अखण्ड जाप एकाग्र होकर करना पड़ेगा इस अभ्यास में प्रगति होने पर परा शक्ति रुप कुण्डलिनी शक्ति विशुद्ध चक्र से यहां प्रवेश करती है यहां काया की पंचवायु शक्ति कार्य करती है। अत: यहां महाभाव शक्ति का चेतन शक्ति में परिवर्तन होता है। यहां साधक को शिव शक्ति (अर्धनारी नटेश्वर) का दर्शन होता है तथा ओर अभ्यास प्रगति करने पर आत्म दर्शन ज्योति स्वरुप होता है यहां साधक शीतल चन्द्र मण्डल का ध्यान करने पर और सतत् ध्यान करने पर साधक सम्पूर्ण शरीर स्वच्छ पवित्र स्वच्छ और शान्त स्थिर और सौम्यता को प्राप्त होता है। आज्ञा चक्र खुलने के लिये यह शाम्भवी मुद्रा अमृतमय सिद्ध होती है शरीर के मूलाधार से लेकर सहस्त्रागार चक्र कमलों पर अन्तर्मुख होकर एकाग्र होने के लिये यह मुद्रा सिद्ध है। समस्त मन-चित तथा प्राण का लय इस मुद्रा में होता है। यह शिव आदिनाथ साक्षात्कारी मुद्रा है। यह गुरु कृपा से सिद्ध होने पर शून्य-अशून्य के परे साधक को ले जाती है। योग साधना में यह प्रसिद्ध है। अत: आज्ञा चक्र जाग्रति से साधक को अनायास अनुपम वाक् शक्ति प्राप्त होती है आत्मज्ञान की उपाधि मिलती है तथा और प्रगति पथ पर चन्द्र चक्र से अमृतपान कर अमरता सिद्ध होती है। इस मुद्रा में काकी मुद्रा भी करें तो साधक पवनहारी बनता है। भूख अत्यन्त कम लगते हुये वह अमृत पान, तब पवनाहार करता है। साधक द्वारा खेचरी मुद्रा सिद्ध करने पर तुर्यातीत

अवस्था में ध्यानस्थ समाधि लग जाती है जिस पर किसी वातावरण का शरीर के ऊपर प्रभाव नहीं होता है। विशेषत: साधक जब मूलबन्ध, उड्डियान बन्ध तथा जालन्धर बन्ध (अभ्यास से परिपक्व होने पर) एक ही समय तीनों बन्ध लगाकर दीर्घ कुम्भक करते हैं तब इस आज्ञा चक्र में ब्रह्मग्रंथी का भेदन होकर ब्रह्माण्ड दर्शन होकर आनन्द प्राप्त होता है और अभ्यास करने पर कुण्डलिनी शक्ति सुषुम्ना में प्रवेश कर ऊर्ध्वमुख होती है और कण्ठ में विशुद्ध चक्र में स्थित विष्णु ग्रंथी का भेदन होकर परमानन्द की प्राप्ति होती है और उत्तरोत्तर अभ्यास करने पर इस आज्ञा चक्र में स्थित रुद्र ग्रंथी जागृत होने पर कैवल्यानन्द प्राप्त होता है जो साधक शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता और यही चेतना सहस्त्रागार में जाती है तो साधक मुक्त हो जाता है।

इस प्रकार उपरोक्त तीनों बन्ध लगाकर शाम्भवी मुद्रा में स्थित आज्ञाचक्र की कुण्डलिनी शक्ति अर्थात् रुपान्तरित चेतना शक्ति जब सहस्त्रागार चक्र या ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश करती है तो यहां मुक्ति मोक्ष का द्वार खुल जाता है। इसे शून्य चक्र भी कहते हैं। इसे कोई कोई भ्रमर गुफा भी कहते हैं। इस सहस्त्रागार का तत्व = सतगुरु (कृपा) बीज मन्त्र गुरु मुख से प्राप्त किया हुआ शब्द है अर्थात् साधक को गुरु मन्त्र का जाप करना आवश्यक है। यहां साधक को तुर्यातीत अवस्था आती है जब शून्य समाधि में वह लय हो जाता है। जब कुण्डलिनी (चेतना) शक्ति इस भ्रमर गुफा में प्रवेश करती है और ब्रह्मरन्ध्र खुल जाता है जैसे चाबी से ताला खुलता है। यहां वह साधक, वह योगेश्वर ब्रह्माण्ड-सृष्टि ज्ञान, परम ज्ञान, परमात्मा-ज्ञान, परमतत्व को प्राप्त हो जाता है। इस साधक को सभी प्रकार की सिद्धियाँ, शक्तियाँ तथा शाश्वत ज्ञान प्रकाश प्राप्त होता है। वह यहां साम्प्रत समाधि-शून्य समाधि लगाकर अपना प्राण अपनी आत्मा (कुण्डलिनी) को इस सहस्रागार चक्र में या

ब्रह्मरन्ध्र में स्थित करता है और अमर पद पाता है। यहां साधक को प्रत्यक्ष शिव साक्षात्कार होता है नाथ सिद्धों को शिव का गुरु गोरक्षनाथजी के रुप में साक्षात्कार होता है। यहाँ जीव-शिव मिलन अर्थात् मोक्ष मुक्ति का परम पद प्राप्त होता है। यहाँ असंख्य मातृका, परम गुरु तत्व का सर्वोच्च स्थान में योगी स्थित हो जाता है। इस अवस्था को राजयोग, उन्मनी, मनोन्मयी, अजर अमर, अमरत्व, लय, लीन, अमनस्क, अद्वित, निरालम्ब, निरन्जन, निरामय, निराकार, जीव मुक्ति, सहजा, तुर्यातीत, परम पद, शून्य, परम शून्य, ज्योर्तिमय आदि नामों से सम्बोधित करते हैं। अर्थात् योगी का या साधक का अन्तिम पड़ाव यही है। इसके आगे कुछ नहीं, यही ध्येय, यही इष्ट, यही प्राप्ति इत्यादि है।

(ग) परम गति (मुक्ति की ओर)

इस प्रकार गुरु मार्गदर्शन पर नाथ सिद्ध परम्परा का साधक जब यह कुण्डलिनी (वीर्य) या चेतना को सहस्रागार चक्र या ब्रह्मरन्ध्र में समाधि अवस्था में स्थित करता है। अर्थात् अपना प्राण या आत्मा को इस भ्रमर गुफा में समाधि योग बल से स्थापित करके अनेकों वर्ष तक वह अमर अवस्था में यथास्थिति में काया सह रह सकता है तथा उसकी इच्छा होने पर परकाया प्रवेश या पूर्णजन्म भी ले सकता है। क्योंकि योगी इस समाधि अवस्था में प्रकृति के ऊपर संयम या विजय पाया हुआ होता है। यह विद्या या यह साधन, यह तन्त्र, यह चमत्कार हमारे नाथ सम्प्रदाय में श्री गुरु गोरक्षनाथजी, श्री माया रुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथजी इत्यादि नवनाथ चौरासी सिद्धों ने सिद्ध कर दिखाये हैं। अगर साधक योगेश्वर इस प्रकार से प्रकृति के ऊपर विजय पाकर अपने योगबल द्वारा प्रकृति के परे परमात्मा, परमतत्व या परम शून्य में मोक्ष मुक्ति में विलीन होना चाहता है तो वह अपने महाचेतन कुण्डलिनी या प्राण या आत्मा को अपने सतगुरु कृपा से, योग साधन बल द्वारा जो अत्यन्त

सक्षम बलोत्तर एवं परिपक्व अवस्था को उस परमानन्द, कैवल्यानन्द, महाचैतन्य, हंस, परमहंस, शून्यतम शून्य आदि अवस्था शक्ति को पुनः पुनः सन्क्रमित करता है। यहां इस मस्तक के शिखा मण्डल में एक अति सूक्ष्म अपने बाल से ही सूक्ष्म तन्तु की (नलिका) नाड़ी होती है जो असंख्य वर्तुलाकार में कुण्डली सदृष्य लिपटी हुयी होती है। जिसका अन्तिम छोर योगी के शिखा के मध्य चोटी में स्थित सूक्ष्म रन्ध्र (छिद्र) में होता है। अतः योग बल से सन्क्रमित की हुयी महाचेतनामय प्राण कुण्डलिनी या आत्मा अर्थात् चेतना इस नलिका में प्रवेश करती है और अत्यन्त वेग से उस वर्तुलाकार के असंख्य लपेटों से घूमती हुयी (इसका वेग सूर्य प्रकाश वर्ष से २० से ४० गुणा ज्यादा होता है) नाड़ी के अन्तिम मुख से अर्थात् चोटी स्थित सूक्ष्म रन्ध्र (छिद्र) से बाहर पड़ती है और ब्रह्माण्ड के परमतत्व की ओर अत्यन्त वेग से प्रवास या अनन्त यात्रा करती है। इस अवस्था को योगी कि समाधिस्थ अवस्था को जीते जी समाधि (जिन्दा समाधि) भी कहते हैं। लेकिन जिन्दा समाधि और प्राकृतिक मृत्यु इसमें अन्तर है। समाधि में मृत्यु का अनुभव मृत्यु को समझना है, तथा मृत्यु का ज्ञान होना है अर्थात् समाधि में मृत्यु स्वेच्छा से होती है तो प्राकृतिक मृत्यु प्राकृतिक इच्छा से होती है। समाधि में स्थूल शरीर से बाहर निकला हुआ [आत्मा (प्राण) का] सूक्ष्म शरीर इनका प्राण सूत्र अगोचर रुप से बना रहता है। तो प्राकृतिक मृत्यु से स्थूल और सूक्ष्म शरीर का प्राण सूत्र टूटा हुआ होता है। समाधि में आत्मा अनन्त यात्रा करके वापस देह में लौटता है। किन्तु मृत्यु में भौतिक रेखा अंश में सूक्ष्म शरीर भटकता रहता है। अतः वह स्थूल शरीर में वापस नहीं आ सकता। साधना में योगी दार्शनिक या द्रष्टा होकर सावधान होकर देखता है कि मृत्यु कैसी हो रही है। किन्तु प्राकृतिक मृत्यु में मृतक मूर्च्छा में रहने के कारण जान नहीं सकता कि

मृत्यु कैसी घटित हुयी है।

अत: साधक योगेश्वर स्थूल शरीर छोड़कर अपने आत्मबल से सूक्ष्म रुप से चेतना को लेकर ब्रह्माण्ड में निकलता है। यह अनन्त ब्रह्माण्ड उस परमतत्व, परमईश्वर, परमात्मा का आभामण्डल ही है। जो सभी दिशाओं में अनन्त योजन फैला हुआ है और इस आभामण्डलीय ब्रह्माण्ड में योगेश्वर का (आत्मा) सूक्ष्म शरीर अनन्त यात्रा करने निकलता है। यह परमात्मा परमईश्वर के प्रभाव से ही यह अनन्त ग्रह, नक्षत्र, तारे-चन्द्र, सूर्य, पृथ्वी अपने ब्रह्माण्डीय ऊर्जा तथा सौर ऊर्जाओं द्वारा गतिशील होकर अपने कर्म करते हैं और इन्हीं के परिणाम स्वरुप सम्पूर्ण प्रकृति अपना निहित कार्य यथास्थिति करती रहती है और यह सब दृष्यमान है।

इस अनन्त कोटि अर्थात् अनगिनत, अनन्त ब्रह्माण्ड दो प्रकार से विद्यमान हैं- (१) दृष्यमान ब्रह्माण्ड (स्थूल) (२) अदृष्यमान (सूक्ष्म) ब्रह्माण्ड

(१) दृष्यमान ब्रह्माण्ड - यह स्थूल रुप में दिखता है यह मर्यादित है, सीमित है, जिसमें उत्पति स्थिति संहार जन्म, मृत्यु परिवर्तन आदि गुण हैं।

(2) अदृष्यमान ब्रह्माण्ड - खुली आंखों से नहीं दिखता। यह सूक्ष्म स्वरुप में विद्यमान है। यह अनन्त, अगणित तथा अनन्त योजन विस्तार में विद्यमान है।

नाथ सिद्ध योगेश्वर जब जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति अवस्था में रहता है तो वह दृष्यमान ब्रह्माण्ड में भ्रमण करता है और जब वह सुषुप्ति से तुर्य-तुर्यातीत तथा शून्य में चला जाता है तो वह अदृष्यमान (सूक्ष्म) ब्रह्माण्ड में प्रवेश करता है। अर्थात् योगेश्वर अपने सक्षम साधना में स्थूल-सूक्ष्म-कारण-महाकारण-शून्य-महाशून्य में भ्रमण करता है।

जैसे कि हमारे नाथ महात्मा जिस प्रकार स्थूल रुप में भ्रमण (रम्मत जमात कहते हैं) करते हैं। देश-विदेश, नदी, पहाड़ों, गुफा-कन्दराओं, जंगल इत्यादि जन जनता में भ्रमण करते हैं। वह अपने इष्ट की खोज, ईश्वर की खोज, सत्य की खोज, आनन्द की खोज, शान्ति की खोज, मोक्ष मुक्ति की खोंज इत्यादि उद्देश्य से भ्रमण करते हैं। इस प्रमाणिक खोज में जब वह जान जाता है कि मेरा ध्येय सूक्ष्म जगत में मिलेगा तब वह स्थिर होकर गुरु कृपा में ध्यान साधना करता है। क्योंकि ध्यान यह एक ही साधन है जो सूक्ष्म जगत में ले जा सकती है। जो कि योग द्वारा आत्मरुप होकर सूक्ष्म जगत में घूमता है इस अवस्था में वह अदृष्यमान ब्रह्माण्ड में भ्रमण करने लगता है। यहां भी उसे पता लगता है कि मेरा ध्येय या सत्य कारण जगत में मिलेगा फिर वह कारण जगत में खोजता है फिर महाकारण में जाता है और ऐसे खोजते खोजते वह शून्य में मोक्ष मुक्ति में जाकर विलीन हो जाता है। जहां ज्योतिर्मय-शून्यमय-अलख निरंजन गुरु गोरक्षनाथजी विराजमान है। अतः नाथ सिद्ध महात्मा हमेशा कहते हैं-

नाद बाजे काल भागे, ज्ञान की टोपी गोरख साजे।।

ज्योत जागे काल भागे, आगे आगे गोरक्ष जागे।।

अर्थः- नाद बाजे (ध्यान में अनहद नाद सुनने पर) तथा ज्योत जागे अर्थात् आत्मदर्शन होने पर तथा आत्मज्ञान होने पर (काल भागे) अर्थात् मृत्यु उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती और साधक योगी आगे-आगे मुक्ति की ओर जहां ज्योति स्वरुप गोरक्षनाथजी विराजमान है। वहां गोरख जागे अर्थात् गोरक्षनाथजी की कृपा से मुक्ति रुप हो जाता है।

अतः इस दृश्य-अदृश्य ब्रह्माण्ड के पांच मण्डल में विभाजित किया गया है-

(१) तपोमण्डल, (२) तेज (अग्नि) मण्डल, (३) ज्योतिमण्डल,

(४) परम ज्योतिमण्डल या शून्य मण्डल (५) अपरम्परा मण्डल (परम शून्य) मण्डल।

इसी मण्डलों के संलग्न पांच धाम भी विभाजित हैं -

(१) आनन्द धाम, (२) परमानन्द धाम, (३) कैवल्य धाम, (४) कुलाकुल (शिव-शक्ति) धाम, (५) परब्रह्म धाम, मुक्ति धाम या परम शून्य धाम।

अत: नाथ सम्प्रदाय सिद्ध शिव स्वरुप गुरु गोरक्षनाथजी उपरोक्त मण्डलों एवं धामों की मूल रचना तथा ब्रह्माण्ड का मूल सिद्धान्त पंच पिण्डों में व्यक्त किया है और वह प्रकृति पुरुष शिव शक्ति का ही ब्रह्माण्ड विस्तार मानते हैं।

(घ) शिव-शक्ति पिण्ड विस्तार (पिण्ड-पंचक)

(१) पर पिण्ड, (२) अनादि पिण्ड, (३) आद्यपिण्ड, (४) महासाकार पिण्ड, (५) प्रकृति पिण्ड (नरनारी, जीव)

इसी प्रकार शक्ति के मूल स्वरुप योगमाया के पंचक को भी विभाजित किया है जो

(१) निजा शक्ति, (२) पराशक्ति, (३) अपरा शक्ति, (४) सूक्ष्माशक्ति, (५) कुण्डलिनी शक्ति।

इन पंच ब्रह्माण्ड, मण्डल, पंच धाम आदि के विषय में नाथ सिद्ध अपने शाबर मन्त्र श्रृंखला में करते हैं।

शिव पूजूं, शक्ति पूजूं, पूजूं गुरुजी के पांव।
पांच महेश्वर आज्ञा करें तो लागूं अखण्ड ज्योत के पांव।।

या

पांच महेश्वर आज्ञा करें तो ज्योत जगाय महेश।।

अर्थात् - हम शिव-शक्ति स्वरुप सतगुरुजी के पद पूजा करके

पंच-रचना रुपी ब्रह्माण्ड जिनका मूल शिव आदिनाथजी हैं उनकी आज्ञा से अखण्ड ज्योत अर्थात् अविनाशी आत्मा को नमस्कार करते हैं। अर्थात् ज्योति रुपी आत्मा जाग्रत होकर जीवन शिव का मिलन होकर मोक्ष मुक्ति की प्राप्त होंगे।

अत: पृथ्वी के गर्भ में सप्त पाताल विद्यमान है जहां अधोगति तथा तामसी अतृप्त आत्माएँ वास करती हैं। उनकी वासनायें पूर्ण होने पर वह मृत्यु लोक में पुन: जन्म लेते हैं और कर्म करते हैं मृत्यु लोक में सभी प्रकार के कर्म साधना अर्थात् राजस सात्विक तामसी प्रवृति के जीव रहते हुये कर्म करते हैं यह कर्म भूमि-भोग भूमि कही जाती है अत: मृत्युलोक के ऊपर स्वर्ग लोक है उसे सप्त स्वर्ग कहा गया है यह पृथ्वी के बाहरी सात आवरण में विभिन्न अनुरेणु तथा ऊर्जाओं में वायु मण्डल के सात पट्टे हैं, सात परत हैं और यह सप्त स्वर्ग के हर एक पट्टों में या परत में अलग अलग प्रकार के उच्च कोटी के ज्ञान (शब्द या अनुरेणु) रुप में संचित है जो पूर्वकाल में साधु सन्त महात्माओं के ज्ञान है और यह सप्त आवरण में वह ज्ञान उत्तरोत्तर बढ़ते हुये सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान के पट्टे विद्यामान है। यहां जो जीव जिस ज्ञान को पाता है। वह उस स्वर्ग परत में जाकर सूक्ष्म रुप से निवास करता है।

अत: जब नाथ सिद्ध साधक अपने सहस्रागार चक्र में से आत्म रुपी सूक्ष्म शरीर होकर ब्रह्माण्ड यात्रा पर निकलता है तो प्रथम वह तपो मण्डल में प्रवेश करता है।

तपोमण्डल = यह मृत्युलोक (स्थूल जगत) के ऊपरी भाग में अर्थात् पृथ्वी के कक्ष में ही विद्यमान है यह सप्त स्वर्ग के पहला और दूसरा स्वर्ग (परत-वलय) में विद्यमान है। यहां सभी प्रकार के राजसी सात्विक तामसि प्रवृति के जीव अपने अपने ज्ञान अनुसार वास करते हैं और योग्य समय मिलने पर पुनर्जन्म ले लेते हैं तथा इनका पृथ्वी के मृत्युलोक से सम्बन्ध जुड़ा रहता है। नाथ सिद्ध सिद्धान्त अनुसार यह प्रकृति पिण्ड अर्थात् नरनारी,

जीव जिन के गुण तत्व विद्यमान रहते हैं। यहां पांच तत्व (आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी तथा इनके गुण शब्द स्पर्श रुप रस गन्ध) विद्यमान हैं पंच अन्तःकरण, मन, चित्त, अहंकार, चित चैतन्य एवं कुलापंचक सत्व, रज, तम, काल, जीव तथा व्यक्ति पंचक इच्छा, क्रिया, माया, प्रकृति, वाक तथा करण पंचक कर्म, काम, चन्द्र, तापिनी, अग्नि मुख्यतः इनसे नर नारी के स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर बनते हैं।

यहां ब्रह्मदेव आधिपति है और इन्द्र देवता शासक है इसे ब्रह्मलोक भी कहते हैं। यहां पर नाथ सिद्ध साधक आते समय उसकी स्थूल जगत की जाग्रत और स्वप्न अवस्था त्यागकर आता है। यहां वह सुषुप्ति अवस्था को पाता है और यहां के द्वितीय स्वर्ग परत को सावधान होकर दृष्टा होकर अवलोकन करता है जिसमें भूः (पृथ्वी) लोक, भुवः लोक, स्वःलोक, महाःलोक, जनःलोक, तपः लोक, सत्य लोक ऐसे सात लोक निवास करते हैं। यहां नाथ सिद्ध साधक का भाव (भावना) शरीर होता है किन्तु सावधान होता है। यहां उसका "मैं योगी हूँ" का अहम भाव रहता है। यहां सभी प्रकार के (राजसी, तामसी, सात्विक) सूक्ष्म शरीर, जिसमें भाव शरीर, वासना शरीर कामना, इच्छा शरीर इत्यादि राजसी, तामसी, सात्विक लोग रहते हैं। इनका अवलोकन करते हुये नाथ सिद्ध साधक तपोलोक और सत्य लोक में प्रवेश करते हैं। यहां सूक्ष्म स्वरुप में सभी प्रकार के साधु सन्त महात्मा त्यागी तपस्वी वैरागी भक्त कर्मकाण्डी विद्वान पण्डित अपने कर्म अनुसार आनन्द का भोग भोगते हैं। अतः इस तपो मण्डल को आनन्द धाम भी कहा है। अतः नाथ सिद्ध साधक के कुण्डलिनी शक्ति कार्य करती रहती है। जब वह आत्म रुप होकर साधक इस तपो मण्डल का त्याग करके आगे तेज मण्डल में प्रवेश करता है।

तेज मण्डल = इसे अग्नि मण्डल भी कहा जाता है। यह सप्त स्वर्ग

के तीसरे और चौथे स्वर्ग परत में विद्यमान रहते हैं यहां तामसी, सात्विक एवं राजसि प्रवृति की आत्मायें वास करती हैं। इच्छा होने पर वह पुनर्जन्म भी लेते हैं। यहां भगवान विष्णु का अधिकार है। अत: इसे विष्णु लोक या वैकुण्ठ धाम कहते हैं। यहां विशेषत: भगवत भक्त-अनुरागी, निष्काम कर्म भक्ति करने वाले आत्मायें यहां निवास करके भक्ति, ज्ञान, भजन, साधना करते हुये परमानन्द भोगते हैं अत: इसे परमानन्द धाम भी कहा जाता है। अनुरागी भक्त भक्ति का आनन्द तथा कर्म करने के लिये पुन: पुन: पूर्णजन्म लेते हैं। शक्यतो भक्त मुक्ति को नहीं चाहते अत: वह मोक्ष (अर्थात् इष्ट का मिलन) तक जाकर भक्ति आनन्द में रहते हैं या पुनर्जन्म लेते हैं। यहां यक्ष किन्नर गन्धर्व लोग जो तीनों तन्त्र कर्म से गायन वादन नृत्य कर्म करते हैं यह इच्छा धारी आत्मा रुप में रहते हुये विभिन्न कला के लिये पुनर्जन्म या कि जीव काया में प्रवेश करके कला का आनन्द लेते हैं। इस तेज मण्डल में नाथ सिद्ध सिद्धान्त अनुसार साकार पिण्ड भी विद्यमान है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, ईश्वर, रुद्र आदि का वास रहता है। जो सत्यलोक, विष्णु लोक तथा ईश्वर लोक, रुद्र लोक एवं नीलकण्ठ लोक निवास करते हैं। यहां भी सत्व गुणी साधु सन्त महात्मा योग तपस्या साधना सूक्ष्म रुप से करते हुये परमानन्द भोगते हैं। अत: इनके अवलोकन करते हुये नाथ सिद्ध साधक परमानन्द भोगता है क्योंकि यहां उसका सूक्ष्म शरीर भावना या मनोमय शरीर में परावर्तित होता है। किन्तु जहां शरीर या भाव है वहां "मैं हूँ" का भाव रहता है (चाहे वह सूक्ष्म या स्थूल शरीर क्यों न हो) साधना रुप से नाथ सिद्ध साधक का यहां सुषुप्ति से तुर्या अवस्था में परिवर्तन होता है। अत: उसके कुण्डलिनी शक्ति का सूक्ष्मा शक्ति में परिवर्तन होता है और इस शक्ति के कारण वह इस तेज मण्डल परमानन्द धाम या साकार पिण्ड का भी त्याग करके ब्रह्माण्ड के तृतीय मण्डल ज्योर्तिमण्डल में प्रवेश करता है।

ज्योति मण्डल - यहां सप्त स्वर्ग के पाँचवा तथा छटा स्वर्ग लोक विराजमान है। यहां राजसी सात्विक तथा तामस प्रवृति के साधु सन्त महात्मा विराजते हैं उनकी साधना तपस्या, ध्यान, धारणा तीनों गुणों से (रज, तम, सत) शिव के प्रति होती है। यह स्वर्ग का पांचवा (परत) स्वर्ग होता है। यहां शिव भक्त गण साधक सूक्ष्म रुप से बिराजते हैं। यहां के छटे स्वर्ग परत में राजयोगी महा सिद्ध ज्ञानी महात्मा विराजते हैं यह शिव के प्रिय होकर कैवल्यानन्द भोगते हैं। इसे कैवल्यधाम भी कहते हैं या शिव धाम भी कहते हैं। यहां दिव्यभाव के महात्मा मोक्ष स्वरुप में रहते हैं। शिव भक्ति तथा ध्यान, तपस्या साधना करके कैवल्यानन्द भोगने हेतु यह पुनः अवतार रुप में जन्म लेते हैं। यह ज्ञान से परिपूर्ण होकर आत्मभाव में रहते हैं।

यहां नाथ सिद्धों का सिद्धान्त अनुसार आद्यपिण्ड स्थित रहता है जिसमें प्रथम महाकाश अपने अवकाश, अछिद्र, अस्पृशत्व, शब्दत्व गुणों से तथा नील वर्ण से विद्यमान है। फिर महावायु जो संचार, संचालन, स्पर्शन, शोषण, गुणों से तथा धूम्रवर्ण रंग से विद्यमान है और महातेज - अपने दाहकत्व, पांचकत्व, उष्णत्व, प्रकाशत्व गुणों से एवं रक्त (लाल) रंग से विद्यमान है। इसी प्रकार महासलिल अर्थात् जल - अपने प्रवाह, आप्यापन, द्रव, रस गुणों से और श्वेत रंग से रहता है, और पृथ्वी - जो स्थूलता, नानाकार, काठिन्य एवं गन्ध गुणों से- पीत वर्ण में विद्यमान है। इन कारण रुपी गुणों से सूक्ष्म रुपी नर नारी जीव बनकर मृत्युलोक में पुनर्जन्म अथवा अवतार लेते हैं। जो उच्चकोटी के योगी, ध्यानी, तपस्वी सूक्ष्म ज्ञान रुप में रहते हैं। यहां शिव रुद्र, भैरवनाथ या भैरवलोक, अनादि शिव या अनादि लोक भी विद्यमान रहते हैं। जन कल्याण हेतु वह पृथ्वी पर पुनः अवतार धारण करते हैं या मोक्ष धाम में रहते हैं किन्तु यहां भी मैं हूँ ही उपाधि अवस्थित रहती

है। यहां नाथ सिद्ध साधक का तुर्यम् अवस्था से तुर्यातीत अवस्था में परिवर्तन होता है और उसकी आत्मशक्ति का दिव्यभाव में रुपांतरित होकर सूक्ष्मा से अपरा शक्ति में परिवर्तन होकर नाथ सिद्ध साधक अब इस ज्योतिर्मय मण्डल या कैवल्य धाम का भी परित्याग करके परम ज्योतिर्मण्डल में प्रवेश करता है।

परम ज्योतिर्मण्डल = इसे शून्य मण्डल भी कहते हैं। यहां सप्त स्वर्ग का आखरी आवरण सातवां स्वर्ग (परत) विद्यमान रहता है। यहां अत्यंत परिपक्व उच्चकोटि के महासाक्षात्कारी मुख्यता आत्मसाक्षात्कारी महात्मा अति उच्च ज्ञान उपाधि से रहते हैं। यहां शिव और शक्ति ही इष्ट है अतः इसे कुलाकुल धाम, अर्थात् कुल याने शक्ति और अकुल याने शिव को कहा गया है। अर्थात् योगी कुण्डलिनी (कुला) शक्ति मूलाधार से जाग्रत होकर ब्रह्मरन्ध्र में शिव को (अकुल) को मिलती है। तो वहां ज्ञान प्रकाश, मोक्ष धाम का लाभ होता है। अथ यह कुलाकुल साधना माया रुपी दादा मत्स्येन्द्रनाथजी ने सिद्ध की थी कुलाकुल कौल ज्ञान, कौलाचार, कौलसाधना इत्यादि की साधना उन्होंने सिद्ध की थी। वह शिव शक्ति के पुत्र ही माने जाते हैं। अथ यह मोक्ष धाम भी कहा जाता है और यह मोक्ष धाम शून्य धाम के शून्य अवस्था के नजदीक होता है। यहां केवल योग धारना परिपक्व योगेश्वर परम आत्मसाक्षात्कारी ही आ सकता है। यहां मैं का भाव छूट जाता है किन्तु हूँ का भाव (अर्थात् अस्तित्व का भाव) बाकी रहता है।

यहां नाथ सिद्धों सिद्धान्त का अनादि पिण्ड विद्यमान होता है जिसके गुण निम्न प्रकार हैं।

(१) **परमानन्द** - गुण - स्पन्द, हर्ष, उत्साह, निष्पन्द, नित्यसुख

(२) **प्रबोध** -गुण - उदय, उल्लास, अवभास, विकास, प्रभा

(३) **चिदुद्य** - गुण - सद्भाव, विचार, कर्तृत्व, ज्ञातृत्व, स्वतंत्रत्व

(४) प्रकाश - गुण - निर्विकारत्व, निष्कलत्व, निर्विकल्पत्व, समता, विग्रान्ति

(५) ॐ सोहं - गुण - अहन्ता, अखण्डैश्वर्य, स्वात्मता, विश्वानुभव, सर्वज्ञत्व

इस प्रकार इस मण्डल में या धाम में अनादि पिण्ड के गुण विद्यमान रहते हैं इससे आगे आद्यपिण्ड बनता है। यहां नाथ सिद्ध साधक कुलाकुल सामंजस्य अवस्था एवं आत्मसाक्षात्कारी तथा महा ज्ञान से ओतप्रोत हो जाता है। वह वैश्विक अवस्था में सदाशिव रुप हो जाता है। यहां कुल लोक जिनकी अकुलेश्वर (शिव) देवता अधिष्ठिता होता है। यहां नाथ सिद्ध साधक अपरा शक्ति का परा शक्ति में रुपांतर होकर सर्वज्ञत्व अवस्था में जाकर इस कुलाकुल धाम, परमज्योतिर्मण्डल का त्याग करके अपरम्परा मण्डल में आगमन करता है।

अपराम्परा मण्डल - शून्य मण्डल भी कहते हैं तथा इसे परब्रह्म (मुक्ति) धाम कहा जाता है। यह धाम पृथ्वी के परे, सप्त स्वर्ग के परे अनन्त ब्रह्माण्ड में विद्यमान रहता है। यहां केवल परब्रह्म प्राप्त योगेश्वर ही रहते हैं। यहां मैं भी नहीं रहता और हूँ भी नहीं रहता। यहां योगी पूर्ण शून्य में चला जाता है यहां नाथ सिद्ध सिद्धान्त के अनुसार पर पिण्ड विद्यमान रहता है। जिनके गुण निम्न प्रकार हैं-

(१) अपरम्पर - गुण - अकुलक्त्व, अनुपमत्व, अमुर्तित्व, अनुदयत्व

(२) परमपद - गुण - निष्कलत्व, अणुवरत्व, अचलत्व, असंख्यत्व

(३) शून्य - गुण - लीनता, पूर्णता, उन्मनी, लोलता, मूर्च्छता

(४) निरन्जन - गुण - सत्यत्व, सहजत्व, समरसत्व, सावधानत्व, सर्वगतत्व

(५) परमात्मा -गुण - अक्षयत्व, अभेद्यत्व, अच्छेद्यत्व, अविनाशित्व और अदाहयत्व

[इस पर पिण्ड गुणों से आद्य पिण्ड फिर महासाकर पिण्ड फिर ब्रह्माण्ड शरीर फिर प्रकृति पिण्ड फिर नरनारी जीव रुप तथा गर्भ पिण्ड अन्त में स्थूल जगत बनता है।]

यहां नाथ सिद्ध साधक पराशक्ति का निजा शक्ति में रुपांतरित होकर योगी ब्रह्ममय भवदीय तथा अर्थात् केवल आत्म रुप शिव रुप हो जाता है। यहा योगी की शून्य अवस्था है यहाँ परपिण्ड विद्यामान होकर अलख निरन्जन गुरु गोरक्षनाथजी अपरम्पार परमपद शून्य निरन्जन परमात्मा में रहते हैं। इस प्रकार नाथ सिद्ध साधक पूर्णत्व पाकर गुरु गोरक्षनाथ स्वरुप हो जाता है। अत: नाथ सिद्धों में कहते हैं-

सुन्य ध्यान सौलै कला सम्पूर्ण माला।
आपै आप जती गोरक्ष बाला।।

अर्थात् - शून्य ध्यान की सम्पूर्ण विधि माला जो साधक प्राप्त कर लेता है आत्मसात कर लेता है वह अपने आप ही गुरुगोरक्षनाथजी के जैसा हो जाता है।

अत: इस अपरम्परा मण्डल परब्रह्म मुक्ति धाम में भी निज शक्ति के ही आगे जहां कुछ भी नहीं है वहां न मण्डल है, ना धाम है, ना शिव है, ना शक्ति है, ना चन्द्र सूर्य तारा मण्डल कुछ भी नहीं जहां निरन्जन निराकार निरामय निर्विकार का शून्य परमशून्य जिसे मुक्ति कहा वहां से वापस आना नहीं वहीं विलय हो जाना है और यही नाथ सिद्धों की मुक्ति है। यह मोक्ष मुक्ति का ब्रह्माण्ड विज्ञान नहीं खोज सकता, यह आत्मसाक्षात्कार को भी विज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता। अत: यह परम योगी या साधक गुरु कृपा द्वारा प्राप्त कर लेता है। इसके लिए प्रकृति परमेश्वर ही प्रेरणा देता है। साधु सन्त महात्मा, साधक बनने का।

(३१) यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र योग

तन्त्र = साधना को कहते हैं जो आन्तरिक अन्तर्मुखता की अवस्थायें हैं।

मन्त्र = मनन मन्त्र द्वारा मन को अमन करना, शून्य करना इसे मन्त्र योग कहते हैं। उसके विभिन्न और अनन्त प्रकार हैं।

यन्त्र = साधन को यन्त्र कहते हैं जैसे हमारा शरीर यह एक यन्त्र है। बाहरी व्यवस्था या बहिर्मुखता योग की जितनी भी साधनायें हैं वह सब मन आत्मा प्राण इनके सम्बन्ध से होती है। साधनायें अनन्त हैं। अतः प्राणशक्ति मन शक्ति और आत्म शक्ति से चित्त शक्ति जैसी महान शक्ति बनती है। पिण्ड ते ब्रह्माण्ड अर्थात् यन्त्र रुपी शरीर पिण्ड से मन्त्र और तन्त्र द्वारा साधना करने पर ब्रह्माण्ड दर्शन-ज्ञान अथवा ब्रह्ममय यहां तक कि मुक्ति मोक्ष रुप हो सकता है। इसलिये मानव पिण्ड सभी जीव प्राणी में महान है। मुक्ति पाने का एक दुर्लभ अवसर है।

नाथ सिद्धान्त अनुसार शरीर के अन्दर षट्चक्र खड़दर्शनों में प्रत्येक चक्र यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र में विद्यमान है। जो निम्न प्रकार से हैं-

चक्र	यन्त्र	मन्त्र	तन्त्र	तत्व
मूलाधार	चतु:ष्कोन □	लँ	जप, कर जाग्रति पद्धति	पृथ्वी
स्वाधिष्ठान	चन्द्राकार ◡	वँ	------	जल
मणिपूर	त्रिकोन ▽	रँ	------	अग्नि
अनहद	षटकोन ✡	यँ	------	वायु
विशुद्ध	त्रिकोन ▽	हँ	------	आकाश
आज्ञाचक्र	त्रिकोन ▽	ॐ	------	प्रणव
सहस्रागार	स्फुटक 0	बिन्दु या शून्य	ज्ञान	गुरु

इनके द्वारा कुण्डलिनी जाग्रति की साधना एक तन्त्र है। जिसमें स्थिर होना और समाधि में जाना, शून्य में जाकर मुक्ति को प्राप्त करेगा, शून्य में आत्मदर्शन होना भी एक तन्त्र है।

तन्त्र से मुक्ति दो प्रकार से होती हैं (१) आत्मज्ञान, (२) निष्काम कर्म।

(१) आत्म ज्ञान- आत्मज्ञान में समस्त ज्ञान, पिण्ड ते ब्रह्माण्ड, तत्वमसी, अहम ब्रह्मास्मि, मैं आत्मा हूँ। आत्मा ही परमात्मा है आदि तमाम आध्यात्मिक दर्शन साक्षात्कार का समावेश है।

कर्मयोग - इसमें उपासना-जप-अनुष्ठान प्रयोग पुरश्चरण यज्ञ, हवन आदि कर्म काण्ड तथा अघोरी कर्म जैसे मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, विद्वेशण तथा शान्ति कर्म, इसमें सकाम कर्म और निष्काम कर्म का समावेश है और यह कर्म योग तन्त्र दोनों प्रकार से कर सकते हैं। किन्तु मुक्ति निष्काम कर्म से होती है।

तन्त्र शक्ति उपासना दो प्रकार की होती है एक शैव और शक्ति उपासना जिसे कुलाकुल तन्त्र भी कहते हैं। कौल तन्त्र भी कहते हैं जो मत्स्येन्द्रनाथजी ने प्रमाणित कर दिखाया।

तन्त्र में श्मशान साधना भी है जो शव के ऊपर बैठकर की जाती है इसमें शवसाधना, चिता साधना है इसमें भैरव, भैरवी, काली, बेताल आदि को सिद्ध करते हैं या वश में करते हैं इसमें मनोबल, आत्मबल, मन्त्र शक्ति तन्त्र शक्ति यन्त्र शक्ति या सुगम एवं योग्य संगम होने पर सिद्ध होते हैं।

इसमें हाकिनी, डाकिनी, शाकिनी, डंखनी, कर्ण पिशाचनी, पिशाचनी, ५२ वीर आदि अघोर शक्तियों का भी समावेश है। जिसमें कपाल पात्र (कौटी) खोपड़ी, मांस, मदिरा आदि पंचमकार द्वारा तामसी तन्त्र किया जाता है। यह अत्यन्त रहस्य मय तन्त्र गुप्तमय, गूढ़

तन्त्र होने के कारण परिपक्व सतगुरु बिना इसे करो नहीं। ज्यादातर महात्मा तान्त्रिक बनकर बीच में अटक जाते हैं या फंस जाते हैं और वह मुक्ति स्वरुप को नहीं पा सकते।

नाथ सिद्धों में यह अघोरी या औघड़ तंत्र नाम से प्रसिद्ध है। नाथ अघोरी नाथ औघड़ जब उच्च परिपक्व अवस्था में जाते हैं तो वह प्रकृति के ऊपर विजय पाकर मुक्त हो जाते हैं।

ज्यादातर तन्त्रमार्गी साधक आत्म साक्षात्कार प्राप्त करने के बजाय वह शरीर को ही साधना तथा तामस अघोरी आदि में अटक कर फँस जाते हैं। वह ज्यादा क्रोधी बन जाते हैं। समाज का ज्यादातर नुकसान ही करते हैं या दु:ख क्लेश देते हैं।

तन्त्र साधना = शरीर-मन-आत्मा-शरीर मन तो बन्धन में हैं आत्मा स्वतन्त्र है किन्तु यह तीनों एक दूसरे के बिना तन्त्र साधना नहीं हो सकती इसमें महात्मा तपस्या या साधना करते है तब शरीर से मन को अलग करते हैं। फिर मन अलग होने पर मन को आत्मा से अलग करते हैं जब मन अलग होकर आत्मसाक्षात्कार होता है वही ज्ञान है, वही मुक्ति है।

अत: कर्म करते हुये ज्ञान और भक्ति के योग को तन्त्र कहते हैं जिससे निस्वार्थ निष्काम तथा संयम या स्थित प्रज्ञता आती है जिससे आत्मज्ञान होकर मुक्ति की प्राप्ति होती है। इस तन्त्र में संयम, समानता, व्यापकता, निर्भयता, कुशलता, अनासक्ति, निर्लिप्त, निर्विकार आदि गुणयुक्त का समावेश है।

तन्त्र में जप = जप करना तन्त्र का ही मूल है एवं जप करना मन्त्र का मूल है और मन्त्र का मूल शब्द है। शब्द का मूल गुरु शब्द जो कि उसे सतगुरु मन्त्र कहा गया है। शब्द से स्पर्श हुआ, स्पर्श से रुप बना रुप से द्रव बना, द्रव से गंध बना यहां पंच तत्वों का गुण सभी शब्द से

ही अर्थात् ध्वनि से बने हैं ध्वनियों से होता है विशिष्ट कम्पन तथा विद्युत ऊर्जा उत्पन्न होती है और उसका तन्त्रोक्त या यन्त्रोक्त या मन्त्रोक्त परिणाम अवश्य मिलता है। अत: तन्त्र में ध्वनि या शब्द या मन्त्र महत्व का है पुराने जमाने में हमारे नाथ महात्मा मन्त्र से अग्नि प्रज्वलित करते थे, जल (तत्व) से वर्षा करते थे तूफान को रोकते थे, हवा में उड़ते थे यह सब तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र योग सिद्धियों का परिणाम है।

शब्द-ध्वनि-नाद इस पर तन्त्र तथा यन्त्र योग साध कर मन्त्र से साधना की तो सत्य की खोज होती है यह नाथ सिद्धों ने सिद्ध कर दिया अत: इस नाद को योग में अनहद नाद सूक्ष्म अवस्था, तथा स्थूल रुप में शंखनाद, नादी नाद, नागफनी सिंगी आदि का समावेश है।

अत: तन्त्र योग से मन्त्र का शरीर अन्दर जप करने पर मन्थन होकर आन्तरिक क्रिया-चक्र या ग्रंथी या पटल या हृदय या ज्ञान चक्र इत्यादि जाग्रत होकर फल स्वरुप सिद्धियाँ प्राप्त होती है। अन्त में परिपक्व अवस्था में ज्ञान की उत्पति होती है जो मुक्ति प्रद होती है।

योग यज्ञ = शरीर के अन्दर सभी चक्र में जप या साधना करते हुये काया अन्दर अग्नि उत्पन्न होती है तब मन्त्र जप या मन्त्रोच्चारण ही [हवन सामग्री या घृत हवन] रुप में हम हवन डालते हैं। इससे कुण्डलिनी तन्त्र से ज्ञान होकर मुक्ति प्राप्त होती है।

हमारे नाथ सिद्ध सम्प्रदाय तन्त्र मन्त्र यन्त्र साधना में पूर्व काल से प्रख्यात है जिसमें सात्विक राजसी और तामसी तन्त्र साधनायें हैं।

आध्यात्मिक तन्त्र में गुरु गोरक्षनाथजी ने पिण्ड ते ब्रह्माण्ड की खोज की है। जो कि यह मानव शरीर पिण्ड ब्रह्माण्ड के चौरासी लाख योनियों में जन्म लेकर पुन: मनुष्य पिण्ड में जन्म लेती है। जिसमें महापुरुष, युग पुरुष, उत्तम पुरुष आदि लोग जन्म लेते हैं। जिन्होंने मन चित्त आत्मा की शक्तियों द्वारा आत्मसाक्षात्कार कराके मुक्ति मार्ग

बतलाया। अत: स्वर्ग मृत्यु पाताल इस सृष्टि के भागों में स्वर्ग और पाताल भोग योनियाँ हैं। किन्तु पृथ्वी पर मृत्यु लोग में आकर या जन्म लेकर ही धर्म कर्म योग साधना इत्यादि द्वारा वह मुक्ति को प्राप्त होते है अत: मृत्यु लोक कर्म भूमि या कर्म योनी है। तन्त्र के अनुसार मानव शरीर में ग्रह तारे नक्षत्र लोक परलोक देवी देवता षट्चक्र तथा पद्म कमलों में विद्यमान है। इस प्रकार पिण्ड अन्दर यह ब्रह्माण्ड की रचना या अस्तित्व भी तन्त्र ही है तथा बहिर्मुखता में जो कर्म भक्ति, उपासना साधना, जप, तप, तपस्या, यज्ञ, योग, हवन, श्मशान साधना इत्यादि यह भी तन्त्र रुप में देखा जाता है। यहीं सभी अन्तर, बाह्य साधनायें बिन्द के प्रति केन्द्रित एकाग्रता ध्यान आदि सब कुछ तन्त्र रुप से जाना जाता है।

अत: ब्रह्माण्ड में जो मूल शक्ति स्वरुपा है जिससे मानव पिण्ड के कुण्डलिनी शक्ति से अथवा मानव शरीर षट्चक्रों से सम्बन्ध सूक्ष्म रुप से जुड़ा हुआ होता है। अर्थात् यहां नाथ सिद्धान्त पिण्ड ते ब्रह्माण्ड अथवा कुण्डलिनी शक्ति से लेकर पर अपरा तो निजा शक्ति तक अखण्ड स्त्रोत शक्ति सम्बन्ध स्थित है। यही शक्ति का योग अर्थात् जोड़ या नाथ सिद्धों की योग साधना इसे योग माया पूजन कहा है अर्थात् योग द्वारा माया देवी का पूजन अर्थात् साधना करके आत्मा दर्शन या आत्मसाक्षात्कार होकर ज्ञान की उपलब्धि से मुक्ति पाना यही नाथ सिद्धों का शक्ति तन्त्र कहा जाता है। इस योग भाव में बालासुन्दरी को ही कुण्डलिनी परा अपरा निजा शक्ति रुप माना गया है अत: ज्योति पूजन को आत्मदर्शन कहा गया है।

नाथ सिद्ध महात्मा नवरात्र शक्ति उत्सव में शक्ति तन्त्र साधनायें करते हैं। जिसमें नव दुर्गा, दशमहादिशा, चौसठ जोगिनी नाथ सिद्ध जोगिणी इत्यादि सात्विक, राजसि तथा तामसी शक्ति तन्त्र साधना

करते हैं और अपेक्षित फल को पाते हैं। ब्रह्मचर्य जैसे महत्तम गुण विशेष से नाथ सिद्धों पर माताजी की विशेष कृपा रहती है। स्त्री सम्मान नारी के प्रति कर्तव्य, नारी उत्थान एवं नारी शक्ति पूजन नाथ सिद्धों की तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र साधना की मूल परम्परा है। अतः नाथ सिद्धों ने शक्ति को अपने योग तन्त्र में मुख्य स्थान दिया है।

मुख्यता तीन शक्तियाँ हैं - (१) सात्विक - महासरस्वति, (२) राजसी - महालक्ष्मी, (३) तामसी - महाकाली।

इसमें नवदुर्गा सात्विक तथा राजसी तन्त्र की शक्तियाँ हैं। एवं दश महाविद्यायें यह तामसिक तन्त्र शक्तियाँ हैं। नाथ सिद्ध योग प्रणाली में मन प्राण आत्मा को प्राधान्य है इनसे साधना कर संयम तथा नियन्त्रण को पाकर मृत्यु पर ही विजय पाते हैं या अमर हो जाते या मुक्ति स्वरुप हो जाते हैं। अतः साधना योग पद्धति में नाथ सिद्धों ने अपने शरीर अन्तर के कुण्डलिनी शक्ति चक्र जाग्रति में शक्तिओं का बीज रुप से स्थान दिया है। जैसे-

मूलाधार में श्री गणेश एवं ऋद्धि सिद्धि देवी शक्ति डाकिनी
स्वाधिष्ठान - श्री ब्रह्माजी देवी सावत्री शक्ति शंकिनी
मणिपूर - श्री सन्तोषनाथ विष्णु जी देवी महालक्ष्मी शक्ति लंकिनी
अनहद - श्री रुद्रनाथ (शिव) देवी उमा शक्ति काकिणी
विशुद्ध चक्र - श्री हंसनाथ, देवी अविद्या शक्ति हांकिनी
आज्ञाचक्र - श्री आदिनाथ (ॐकार) देवी ज्ञान शक्ति अपरा शक्ति
सहस्रागार चक्र - श्री गुरु गोरक्षनाथ निजा शक्ति अकलेश्वरी

इस प्रकार योगमाया के विविध रुप तन्त्र योग द्वारा दर्शाये गये हैं।

अतः नाथ सिद्ध अभिचार कर्म अर्थात् मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, इन तन्त्र योग साधना में जप-ध्यान-समाधि तन्त्र में दश महाविद्याओं को स्थान दिया है। इन्हीं तन्त्रशक्तियों के बीज का जाप करते हैं। इनके बीजों तन्त्र महाकाली के कृपा से भेदों की योगी जान जाता है। प्रातः तन्त्र करने वाले मूलाधार में भुवनेश्वरी माता होती है श्मशानी तन्त्र क्रिया में बगलामुखी माता को प्राधान्य दिया जाता है। स्वाधिष्ठान चक्र में भैरवी कार्य करती है तो मणिपुर चक्र में छिन्नमस्ता शक्ति चालन करती है त्रिकुटी आज्ञा चक्र में बाला सुन्दरी जो योगमाया पूजन अथ शंखढाल क्रिया की मुख्य तंत्रिका देवी माना गया है। कुण्डलिनी शक्ति में तारा त्रिपुटा त्रिपुर सुन्दरी देवी कार्य करती है। सहस्रागार चक्र में माता मातंगी कार्य करती है। नाथ सिद्धों का धूना कार्य में माता कमला कार्य करती है। इस प्रकार नाथ सिद्धों ने अपने यौगिक तन्त्र साधना में दस महा विद्याओं को स्थान दिया है जिससे अन्त में माया के द्वारा (योग) माया का परित्याग कर आत्मरुप मुक्ति रुप हो जाना यह नाथ सिद्धान्त है।

इसी प्रकार शैव एवं शाक्त तन्त्र भी नाथ सिद्धों में प्रचलित है। यह तन्त्र साधना माया स्वरुपी मत्स्येन्द्रनाथजी ने अपने तन्त्र योग प्रणाली में सिद्ध की उसमें कुलाकुल, तन्त्र कौल, तन्त्र कौल ज्ञान, तन्त्र कौल, सिन्धु तन्त्र तथा कापालिक तन्त्र अघोर तन्त्र एवं योगमाया तन्त्र इत्यादि शाबरी मन्त्रों द्वारा इन तन्त्रों की सिद्धता की है। जिसमें वह परिपूर्ण यशस्वी प्रगाढ़ ज्ञाता थे उन्हें मायास्वरुपी कहा जाता है उनका यह तन्त्र अनुकरण सभी ने किया। किन्तु उन्हीं की माया वही जाने उनसे कोई विरला नहीं हुआ वैसे तन्त्र का सभी विषय सभी मार्ग सभी भेद केवल मत्स्येन्द्रनाथजी ही जानते हैं।

(क) मनोगत

इस प्रकार हमारे नाथ सिद्ध महात्मा स्थूल शरीर त्यागने के पश्चात् अमर हो जाते हैं एवं अपने योग सिद्धियों द्वारा सकाया अमर हो जाते हैं या मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करते हैं। अत: यह नाथ सिद्ध योगेश्वर ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग आदि उपासना मार्ग से जब परिपूर्ण एवं परिपक्व होते हैं तो अपने प्राप्त ज्ञान सिद्धियों तथा चमत्कारों को जन कल्याण हेतु द्रष्टा बनकर विनियोग करके अन्त में वह किसी योग्य शिष्य को शक्तिपात करके दे देते हैं या इनका भी त्याग कर देते हैं। अपने योग बल से ज्ञान विद्या शास्त्र कर्म काण्डादि सब कुछ माया जगत को त्यागते हुये अपने योग समाधि के उच्चतम अवस्था में शून्य में चले जाते हैं, जो कि स्थूल से सूक्ष्म में, सूक्ष्म से कारण में, कारण से महाकारण में, महाकारण से शून्य में, शून्य से महाशून्य और यही महाशून्य में जाते समय 'मैं' का (अहं ब्रह्मास्मि) का भी त्याग करके परम शून्य में अर्थात् मुक्ति में विलय हो जाते हैं। जहां मुक्ति में ही मुक्ति रुप हो जाते हैं। यह निरन्जन निराकार निरामय अवस्था होती हैं।

यह नाथ महात्मा जीते जी ही मुक्त माने जाते हैं ऐसे महात्मा शक्यतो एकान्त जंगलों गुफा कन्दरा पर्वतीय क्षेत्र, अज्ञातवास में ही वास्तव्य करते हैं ऐसे नाथ योगी महात्मा कोई कोई विरला ही होता है। इस प्रकार के मुक्ति प्राप्त नाथ महात्मा ना ही पुनर्जन्म लेते हैं, नाही अवतार लेते हैं ना ही, परकाया प्रवेश करते हैं इन सभी माया जगत झंझटों में नहीं अटकते।

धर्म अर्थ काम और मोक्ष इन उपाधियों को पाकर प्रभु श्री रामचन्द्र मर्यादा पुरुषोत्तम बन गये तथा श्री कृष्ण भगवान नरोत्तम बन गये, श्री हनुमान जी महावीर बन गये तो लक्ष्मण जति बन गये, तो पंच पांण्डवों में युधिष्ठिर धर्मराज बन गये, इसी प्रकार राजा ऋशालु राजा भागीरथ

शक्ति बिमला राजा भर्तृहरि राजा रावल तो कपिलमुनिजी राजा भिष्म भक्तपूरण इत्यादि महानुभाओं ने धर्म अर्थ काम मोक्ष को प्राप्त किया और वह भगवान बन गये अमर हुये तथा जनता के इष्ट भी हुये लेकिन जब उन्हें ज्ञात हुआ कि हमने जो पाया है उसमें 'मैं' अहंकार मात्र विद्यमान है अत: मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकतें और हमने मुक्ति को प्राप्त नही किया। तब वह अपने अपने समय में गुरु गोरक्षनाथजी के शरण में योग दीक्षा लेकर अनुग्रहीत हुये और साधना द्वारा मुक्ति को प्राप्त हुये अत: उनके समय से उनके ही नाम से हमारे नाथ सम्प्रदाय में पंथ की परम्परा (गुरुशिष्य प्रणाली) चली आ रही है जिसमें प्रभु रामचन्द्र के राम पंथ, हनुमानजी का ध्वज पंथ, लक्ष्मण जी का नटेश्वरी पंथ युधिष्ठिर जी का धर्म पंथ, राजा ऋशालु का मन्नाथी पंथ, राजा भर्तृहरि जी का भतृहरी बैराग पंथ, राजा रावल का रावल पंथ, कपिलमुनिजी का कपलानि पंथ, भक्त पूर्णमल का पाकल पंथ इत्यादि अनेकों परम्परा पंथों से नाथ सम्प्रदाय ने अर्थात् गुरु गोरक्षनाथजी के सिद्ध कर दिया कि बिना योग साधना, बिना आत्मज्ञान या बिना आत्मसाक्षात्कार कोई भी व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता।

ऐसे नाथ सिद्ध योगी अपने जीवन में उत्तम योग साधना करके अनेकों अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हुये जहां तक हो वह त्याग महात्याग करते हैं। अन्त में 'मैं' रुप अहंकार त्याग कर मुक्ति को प्राप्त होते हैं। अर्थात् प्रथम नाथ सिद्ध जप ध्यान करते हैं। फिर उत्तम साधना करके महायोगी महाज्ञानी, महात्यागी, महासिद्ध, महातपस्वी आदि अवस्था में वह देवता या भगवान बनते हैं तो जनमानस के इष्ट, या सतगुरु बनते हैं और जन कल्याण तथा मान प्रतिष्ठा या अपने पूजन अपेक्षा में रह जाते हैं और यहीं वह अटक जाते हैं। वह अपनी समाधि बनाते हैं मठ मंदिरों का निर्माण करते हैं और अमर होते हैं। किन्तु यह

मोक्ष काही भाव है। वह इस अवस्था में मोक्षरुप रहते हैं और जनकल्याण के लिये पूर्णजन्म लेते हैं या अवतार लेंगे या परकाया प्रवेश करेंगे या अपने समाधि के सानिध्य में सूक्ष्म रुप में बास करेंगे जिससे जनकल्याण करते हैं। अत: यहां मैं का नाश न होने से वह मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकतें। अर्थात् जबतक 'मैं' का अर्थात् अहंकार, महाअहंकार जब तक नष्ट नहीं होता मुक्ति उनसे कोसों दूर रहती है और वह मोक्ष रुप मे ही रह जाते हैं। अत: परिपक्व महात्मा यह सबकुछ करते हैं मात्र दार्शनिक होकर दृष्टा होकर करते जिससे वह आसक्ति में अटकते नहीं, अत: वह सबकुछ करते हुये भी उसका त्याग कर देते हैं और परमात्मा परमतत्व अलख निरन्जन मुक्ति में विलीन हो जाते हैं। यह महात्मा महागुणी होते हैं, यह महासंयमी, स्थितप्रज्ञता, समबुद्धि समज्ञानी, निष्कामता सर्वव्यापक ज्ञान आत्मसाक्षात्कारी सम भाव आदि गुणों से भरे पूरे रहते हैं। इनके गुण अपने आप प्रगट होते हैं ऐसे महात्मा अत्यन्त विरले होते हैं।

यह आत्मसाक्षात्कारी विरले महात्मा मृत्यु से नहीं डरते। वह स्वाभाविक रुप और सरलता से शरीर को त्यागते हैं। क्योंकि वह हर समय द्रष्टा निर्लेप, निर्विकार, निरन्जन एवं अनासक्त रहते हैं। जब वह योग साधना करते समय शून्य में चले जाते हैं तो कितनी ही बार शरीर त्यागकर आत्मरुप (सूक्ष्म शरीर) होकर ब्रह्माण्ड में अनन्त यात्रा करते हैं। साधना करते समय वह अपने स्थूल शरीर को आमने सामने देखते हैं और यह उनका जीवित मृत्यु होती है। ऐसा उनका अभ्यास हमेशा रहने के कारण वह मृत्यु से कभी नहीं डरते, मृत्यु उनकी परम हितैषी, परम मित्र, उपकारक के भांति लगती है। ऐसे नाथ महायोगेश्वर मृत्यु अवस्था को आनन्द, अमृतानन्द, महा आनन्द, कैवल्यानन्द, हंस परमहंस, शून्य परमशून्य स्वरुप में स्वीकारते हैं। यही उनकी मुक्ति होती हैं। ऐस

महात्मा हमारे बहुत कम सम्पर्क में आते हैं। यह महात्मा इच्छित व्यक्ति को मुक्ति पथ पर ले जा सकते हैं। इनसे आध्यात्मिक ऊर्जा, गुरुत्वाकर्षण, प्रभामंडल, पवित्रता की शक्ति वैज्ञानिक तथा नैसर्गिक ऊर्जा से भरे होने के कारण वह दृष्टिपात, शक्तिपात, स्पर्शपात, ज्ञानपात, योगपात इत्यादि आत्मासाक्षात्कार रुप में कराके जन मानस का कल्याण करते हैं। यह जो कुछ भी हो वह देते ही हैं। त्याग करते रहते हैं। ऐसे आत्मसात्कारी सतगुरु की प्राप्ति जिन्हें होती है उस भाग्यवान को सतगुरु अन्तर्मुख आत्माचिन्तन, आत्मानन्द, आत्मानुभव, आत्मासाक्षात्कार करके पाप पुण्य या सुख दु:ख के परे ले जाते हैं। नाथ सिद्ध कहते हैं-

अवधु योगी पाप पुण्य से न्यारा रहे। अथ वह अन्तर्मुखता त्याग वैराग्य ज्ञान ध्यान इत्यादि में परिपूर्ण हो जाते हैं।

अनमोल जीवन की सार्थकता मुक्ति में ही है।



(३२) आरती
ψ माता पद्मावती की ψ

ॐ जय पद्मावती माता, जय पद्मावती माता।
आरती करु मैं तुम्हरी, आत्मज्योति ज्वाला।।
ॐ जय पद्मावती माता।।ऽ।।
एक ओंकार, साम्भ सदाशिव, शिव शशि धारे
माता शिव शशि धारे।
हंसावृढ़ कमलासन, शेष वाहन साजे
ॐ जय पद्मावती माता ...।।१।।
पद्मवर्ण, पद्मासन पद्महस्त सोहे,
माता पद्महस्त सोहे
धर्म चक्र को धारे, कमल कलश ही धारे
चतुर्भुज सोहे ॐ जय पद्मावती माता ...।।२।।
पद्ममाला, बनमाला कण्ठमाला शोभे
माता कण्ठ माला शोभे,
केशर तिलक लगावे, मुकुट मणि को धारे,
त्रिभुवन की माया ॐ जय पद्मावती माता ...।।३।।
कुंकुम, कज्जल, कांच कबरी कर्ण फूल भारी
माता कर्ण फूल भारी
कंगण कर में धारे, मंगल मन को भाये
हस्तांगुली साजे, ॐ जय पद्मावती माता ...।।४।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव आरती करे माता
तेरा भजन करे माता
ब्रह्मादिक सनकादिक, नारद, शारद इन्द्रा सर्व ब्रह्म संगा
ॐ जय पद्मावती माता ...।।५।।

योग माता, योग माया, योगयुक्ति धारे,
माता योगयुक्ति धारे
मोक्ष मुक्ति की माया, अजर अमर की काया
सबकुछ तुमरी माया ॐ जय पद्मावती माता ...।।६।।
हल्दी सिन्दूर पान सुपारी, चना फूल सजधार
माता चना फूल सजधार,
धूप दीप नैव्यद्य, गन्ध चन्द व्यंजन सब भोग लगे अपार
ॐ जय पद्मावती माता ...।।७।।
रुप सुहानी नार सुहागिन इस विध पूजा रचे
माता इस विध पूजा रचे
सुख सम्पत्ति घर आवे, सब संकट ही टारे
मन वांछित फल पाये, ॐ जय पद्मावती माता ...।।८।।
ॐ जय पद्मावती माता, जय पद्मावती माता
आरती करु मैं तुमरी आत्मज्योति ज्वाला
जय पद्मावती माता ...



(३३) उपसंहार

मन मूरख समझे नहीं
अटल मृत्यु का ज्ञान।
पलख झपक देख आँखन में
पल पल काल समान।।१।।
ॐ-सोहं प्राण है
अटल योग का ध्यान।
जापऽजपे मन शून्य है
यही मोक्ष मुक्ति का धाम।।२।।
सुख दुःख संसार का
कब हुना मिटे यम फास
चरण-शरण जब सत गुरु का
भये आवागमन से पार।।३।।
सतगुरु बड़े ही ज्ञान है
शिष्य भये अज्ञान।
अज्ञानी को ज्ञान मिले
भये सतगुरुजी महान।।४।।
मोक्ष मुक्ति का मूल है
सतगुरु ज्ञान प्रकाश।
सतगुरु माही ज्ञान है
सतगुरु मुक्ति समान।।५।।
मोक्ष मुक्ति बस एक ही है
ध्येय प्राणी का महान
सती सती भाखत नाथ विलास
गुरु आनन्द का दास।।६।।
आदेश। आदेश।। आदेश।।।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा



पुस्तक प्राप्ति स्थान-

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)



अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड) फोन : 01334-226583

www.yogigorakshnath.org e-mail : media@yogigorakshnath.org

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह० जिला-रोहतक (हरियाणा)

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)		लेखक/संचालक	मूल्य
1.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	180/-
2.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	250/-
3.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	400/-
4.	श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	65/-
5.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
6.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	125/-
7.	श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	35/-
8.	श्री प्राचीन भर्तृहरी गुफा महात्म्य (देश-विदेश के नाथ सिद्धों के तीर्थ स्थलों के पते/ विवरण)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	50/-
9.	श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	6/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
10. श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	70/-
11. श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना-साधना)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	50/-
12. श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
13. श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु योगी विलासनाथ जी पुजारी)	120/-
14. योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	30/-
15. गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	12/-
16. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
17. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	10/-
18. गुरु गोरक्षनाथ शब्दावली (भजन)	महन्त सेवानाथ जी	15/-
19. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	10/-
20. भर्तृहरि निर्वेदनाटकम्	महाकवि हरिहर रचित	5/-
21. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	70/-
22. सिद्ध प्रयोग चिकित्सा	योगी वीरनाथ जी	8/-
23. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	20/-
24. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
25. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	15/-
26. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
27. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
28. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
29. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
30. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
31. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
32. गोरखबाणी	रामलाल श्रीवास्तव	50/-
33. गोरख चरित्र	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
34. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी)	अक्षय कुमार बेनर्जी	90/-
35 गोरख दर्शन	विजय पाल	50/-
36. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
37. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य	डा. दिवाकर पाण्डेय	40/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
38. आदर्श योगी	अक्षय कुमार बेनर्जी	25/-
39. योगासन	रामलाल श्रीवास्तव	30/-
40. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
41.गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह	रामलाल श्रीवास्तव	40/-
42. हटयोग प्रदीपिका	रामलाल श्रीवास्तव	35/-
43. योग बीज	रामलाल श्रीवास्तव	15/-
44. नाथ योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	15/-
45. अमनस्क योग	अक्षय कुमार बेनर्जी	20/-
46. गोरक्ष पद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
47. गोरक्ष शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
48. वैराग्य शतक	रामलाल श्रीवास्तव	20/-
49. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत	वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी	20/-
50. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)	योगी आदित्यनाथ	20/-
51. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)	मनोहर द्विवेदी	15/-
52. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
53. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
54. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)	गोरखनाथ मन्दिर	40/-
55. योगवाणी (शिव संहिता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
56. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-
57. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
58. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
59. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
60. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
61. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
62. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
63. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)	गोरखनाथ मन्दिर	25/-
64. योगवाणी (विशेषांक 1994)	गोरखनाथ मन्दिर	15/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3× 3 इंच	40/-	50/-
5×5 इंच	60/-	70/-
7×7 इंच	85/-	100/-
9×9 इंच	250/-	265/-
12×12 इंच	290/-	310/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P / C = 5 " X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B / C = 7 " X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB / C = 10 " X 5"	25/-	
बड़ा फोटो B,B,B / C = 10 " X 8 "	35/-	-

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD VCD
अमृतांजलि (भाग-1) गोरक्ष चालीसा,भजन इत्यादि	गायक-सोमनाथ शर्मा	35/-	50/-
अमृतांजलि (भाग-2) चौरासी सिद्ध चालीसा,भजन इ०	भजन रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्रीनाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)कम्प्यूटर फ्लॉपी	रचना-योगी विलासनाथ	45/-	

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5"X3.5"	3/-	-

यन्त्र- (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	5/-	65/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	5/-	65/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	5/-	65/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	20/-	250/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

विवरण	मूल्य
लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	3/-, 5/-, 6/-, 20/-, 15/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट	5/-, 8/-, 10/-, 12/-, 20/-, 30/-
(नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	25/-, 10/-, 40/-, 40/-, 20/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के	1500/-, 1800/-
आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ (धातु में)

	नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9 "	2 Kg	1100/-	800/-
2.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6 "	1 Kg.	800/-	700/-
3	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10 "	1.300gm.	1100/-	800/-
4.	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6 "	600gm.	500/-	
5.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9 "	2 Kg.	1100/-	800/-
6.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6 "	1 Kg.	800/-	700/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

विवरण	मूल्य
गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	20/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 220/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम **D. D.** भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा **V.P. L., V.P.P.** से भेजा जायेगा।
अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

सम्पर्क - योगी विलासनाथ-मो.: 09412072703



श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

राजा भर्तृहरि श्रृंगार शतक, नीति शतक तथा वैराग्य शतक के रचयिता थे, वे योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। उज्जैन–मालवा राजधानी छोड़कर राजा भर्तृहरि ने श्री गंगा भागीरथी के तट पर बसे हरिद्वार में श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण कर तपस्या की थी उस समय से यह मन्दिर व गुफा यहाँ विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हर की पैड़ी का निर्माण किया था।

हरिद्वार में
तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन
इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

–: पुस्तक प्राप्ति स्थान :–

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर

अपर रोड, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) फोन : 01334–226583

Visit us at : www.yogigorakshnath.org • E-mail : media@yogigorakshnath.org

–: प्रकाशक :–

श्री बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक (हरियाणा)

मुद्रक–शिव शक्ति प्रिन्टर्स, हरिद्वार फोन : 228796